हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका ९९ वाँ ग्रन्थ

चार कहानियाँ

लेखक

सुदर्शन

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

यह दुनिया एक कहानी है।

परमेश्वर दुख-सुख चुनता है,

दुनियाकी कहानी बुनता है

नर सुनता है, सर धुनता है

ऐसी इसमें दिलचस्पी है, ऐसी रंगीन बयानी है

यह दुनिया एक कहानी है।

भूमिका

दुनिया एक कहानी है, जिसे भगवानने कहा है। कहानी एक दुनिया है, जिसे आदमीने बनाया है। और दुनियाकी कहानी और कहानीकी दुनिया दोनों मनोहर और मधुर हैं। आदमीका मन दोनोंकी तरफ़ दौड़ता है, दोनोंके साथ रहकर खुश होता है, और दोनोंसे बिछुड़ते समय उसकी आँखोंमें दुःख और संतापके आँसू भर आते हैं।

दुनिया कब बनी और कब इसका अंत हो जाएगा, यह कोई नहीं जानता। कहानीका कब जन्म हुआ, और कब इसका अंत होगा, यह भी कोई नहीं कह सकता। हम केवल यह कह सकते हैं कि जबसे दुनिया है, तबसे कहानी है; जब तक दुनिया रहेगी तब तक कहानी रहेगी। दोनों अनादि हैं, दोनों अमर हैं, दोनों अजर हैं।

दुनिया भगवानकी कहानी है, मगर उसके पात्र असुर भी हैं। कहानी आदमीकी दुनिया है मगर उसके पात्र देवता भी हैं। भगवान अपनी कहानीके पात्रोंको बुराई-भलाईकी स्वतंत्रता देता है, और उन्हें देखकर कहानी-लेखककी दुनिया बनती है। कहानी-लेखक अपनी दुनियाके जीवोंको वचन और कर्मकी स्वतंत्रता देता है, और उन्हें देखकर भगवानकी दुनिया शिक्षा ग्रहण करती है, और अपने लिए जगत और जीवनके रास्ते ढूँढ़ती है।

जब भगवान दुनियाकी रचना करता है, तो इस इरादेसे करता है, कि उसके जीव अमन-अमान, प्यार-मुहब्बत और पवित्रताके राज-मार्गपर चलेंगे, और चार दिनके नश्वर जीवनमें अपने दिलोंको और दिलोंकी कामनाओंको आवारा न होने देंगे। मगर कई लोग अपने प्रभुकी इच्छाको भूल जाते हैं, और अपने लिए अँधेरे और अटपटे

रास्ते पसन्द कर लेते हैं। लेकिन फिर भी भगवानकी इच्छा फलती है, और दुनियामें पुण्यका प्रकाश कम नहीं होता।

कहानी-लेखक जब कहानी बनाने बैठता है, तो वह भी इस इरादेसे बैठता है कि उसकी कहानीमें अँधेरा और अँधेरेकी ठोकरें न होंगी। मगर उसके कुछ पात्र उसकी इच्छाके विरुद्ध विद्रोह करते हैं, और अपने लिए वह मार्ग चुन लेते हैं, जो प्रकाशसे शुरू होकर अथाह अँधेरेमें गुम होता है। मगर इस विरोध और विद्रोहसे भी उसका कहानी-संसार नष्ट और भ्रष्ट नहीं होता, और उसकी कहानीमें मंगल-प्रकाश जगमगाता रहता है।

दुनियामें बुरे आदमी हैं, मगर दुनियाका उद्देश्य बुरा नहीं। इसी तरह कहानीका कोई पात्र गुनाहका ग्राहक और पापका प्यासा हो सकता है, मगर कहानीका उद्देश्य पापको मधुर-मनोहर बनाना नहीं।

कई आदमी कम-समझ हैं, वे दुनियाके दुर्व्यसनोंको देखकर दुनियासे घृणा करने लगते हैं, और जंगलों और बनोंमें जाकर समझ लेते हैं, कि हम दुनियासे बाहर निकल आए। मगर वह अपने आपको धोखा देते हैं—उनका शरीर, उनका आत्मा, उनका व्यक्तित्व भी तो इसी दुनियाका भाग है। इस अपने शरीर, आत्मा, व्यक्तित्वका कौन त्याग कर सकता है? कई आदमी, जिनके स्वभावमें रंगीनी नहीं है और जिनका दिल काव्य और कलाकी कल्पनासे कोरा है, कहानीका अँधेरा देखकर घबरा जाते हैं, और कहानियोंकी किताबें पढ़ना बन्द करके समझ लेते हैं कि हमने अपने जगत और जीवनसे कहानीको निकाल दिया। मगर यह उनकी भयंकर भूल है। उनका अपना जीवन और उस जीवनकी एक एक घटना एक एक कहानी है। आदमी जब तक जीता है, और जब तक उसके नथनोंमें जीवनका साँस आता-जाता है, तब तक अपने प्राणोंसे क्योंकर जुदा हो सकता है? आदमी जब तक बीती हुई बातको याद करता है, और भावी बातका चिन्तन करता है, तब तक कहानीकी दुनियासे बाहर नहीं जा सकता। यह असम्भव है।

जब आदमी बच्चा होता है तो बड़ोंसे कहानी सुनता है, जब बूढ़ा

होता है, तो छोटोंको कहानी सुनाता है, जब मर जाता है, तो आप कहानी बन जाता है।

मगर इतना ही नहीं—

यह दुनिया भी कहानी है, कहानी-लेखक भी कहानी है, भगवान भी कहानी है।

धर्मने कहा—भगवानने कहानी-लेखकको बनाया है। अगर भगवान न होता, तो कहानी-लेखक भी न होता।

यह सुनकर कहानी-लेखकने अभिमानकी गरदन ऊँची की और मुस्कराकर कहा—तू कहता है, भगवानने मुझे बनाया है। मैं कहता हूँ, भगवानको मैंने बनाया है। अगर मैं न होता तो भगवान भी न होता।

भवानीपुर, कलकत्ता
९ नवम्बर, १९३८

सुदर्शन

पत्थरोंका सौदागर

१

दसहरेके दिन थे। सिकन्धीरकी अंधकारमय भूमि चन्द्रलोक बनी हुई थी। मकान और दूकानें दुलहिनकी तरह सज रही थीं, सड़कें शीशेकी तरह चमक रही थीं, प्रजा पंछियोंकी तरह खुश थी। क्या मजाल जो सड़कपर कहीं तिनका भी पड़ा मिल जाय। महाराजके आदमी रोज़ देखने आते थे। शहरसे बाहर सुन्दर ख़ेमोंकी दो क़तारें दूर तक चली गई थीं। इनमें हिन्दुस्तानकी मशहूर गानेवालियाँ ठहरी हुई थीं। कोई लखनऊसे आई थी, कोई इलाहाबादसे; कोई बम्बईसे आई थी, कोई कलकत्तेसे। यह सब अपनी अपनी कलामें उस्ताद थीं। किसीकी फ़ीस पाँच सौ रुपया दैनिक थी, किसीकी एक हज़ार। दो-तीन ऐसी भी थीं, जो तीन हज़ार रुपया रोज़ानापर आई थीं। ख़ेमोंके इस शहरमें हर समय रौनक़ रहती थी। हर समय खुशी खेलती थी। ऐसा मालूम होता था, जैसे एक छोटा-सा शहर बस गया है। यहाँ यौवन नाचता था, सौन्दर्य गाता था, आनंद चुहल करता था। जीवनकी ऐसी जीती जागती, ऐसी हँसती-खेलती, ऐसी फली-फूली नगरी किसने देखी होगी? नगरी क्या थी, ज़मीनपर स्वर्गपुरी उतर आई थी।

शहरके दूसरी तरफ़ एक और शहर बसा हुआ था। यहाँ ब्राह्मण और पंडित विराजमान् थे; धोतियाँ बाँधनेवाले, तिलक लगानेवाले, माला फेरनेवाले। उनमेंसे कोई भी ऐसा न था जो पचास रुपए

रोज़ानासे अधिक पाता हो, मगर उनके लिए यही बहुत था। यहाँ हर समय शांति रहती थी। न कोई बोलता था, न कोई चिल्लाता था, न कोई शोर मचाता था। सब अपने अपने खेमेमें मस्त पड़े रहते थे। उनका समय या तो भाँग रगड़नेमें गुज़रता था, या पान चबानेमें, या रियासतके गुदगुदे पलंगोंपर टाँगें फैलाकर सोनेमें। इसके सिवाय उन्हें और कोई काम न था। हवनके लिए सामग्री मिल जाती थी, तो हवन कर लेते थे, न मिलती थी, तो न करते थे। मानो वह इस दुनियाके, लोभी जीव नहीं, शांति और संतोषकी मूर्तियाँ थीं। मगर खानेके समय उनमें ऐसी हलचल मच जाती थी कि देखकर हैरानी होती थी। बढ़ बढ़ कर हाथ मारते थे। दहाड़ दहाड़कर माँगते थे। एक दूसरेसे शर्तें बद बद कर खाते थे। दिन-रातके चौबीस घंटोंमें एक यही समय था, जब वह एक दूसरेको ललकारते थे, और साबित करते थे कि वे भी जीते जागते आदमी हैं।

महाराज पृथ्वीचन्द्र बहादुर हँसमुख और उदार आदमी थे। यों उनकी सालाना आमदनी चार-पाँच लाखसे ज़्यादा न थी। रियासतका हाल भी संतोषजनक न था। उसमें न पाठशालाएँ थीं, न अस्पताल, न धर्मशालाएँ। सड़कोंने दाँत निकाल दिए थे। कर्मचारियोंको कई कई महीने वेतन न मिलता था। हर साल सैकड़ों आदमी मौसमी बुखारका शिकार हो जाते थे। जिस साल वर्षा न होती, उस साल तो किसानोंकी दशा देखी न जाती थी। महाराज यह सब-कुछ सह सकते थे और सहते थे। लेकिन दसहरेके दिनोंमें यह उत्सव न हो; यह न सह सकते थे, न सहते थे। यह उनके जीवन-सिद्धांतके विरुद्ध था। रियासतमें यह उत्सव सदासे मनाया जाता रहा है, अब कैसे न मनाया जाए? महाराजकी नाक न कट जाएगी?—किसानोंपर ख़ास लगान लगे, रियासतपर क़र्ज़ चढ़ जाए, राज-घरानेके गहने बेचने पड़ें, मगर यह वार्षिक उत्सव ज़रूर हो। सारे हिंदुस्तानकी मशहूर वेश्याएँ बुलाई जातीं, राजों-महाराजोंको निमन्त्रण भेजा जाता,—दस दिन तक रुपया पानीकी तरह बहाया जाता। महाराजकी इसी दरिया-दिलीने सिकंधीरका

नाम दूर दूर तक महशूर कर दिया था। कोई साल ऐसा न जाता था, जब उनके उत्सवके चित्र 'टाइम्स' और 'स्टेट्समैन'में न छपते हों। महाराज उन्हें देखकर किसी दूसरी दुनियामें पहुँच जाते थे, और झूमने लगते थे। इतना खर्च करके उन्हें यही मिलता था।

२

मगर कुँवर सूर्यप्रकाशचंद्र महाराजसे बिलकुल उलटे थे। उन्हें महाराजकी यह रंगरेलियाँ ज़रा भी पसन्द न थीं। वे कहते थे, यह उत्सव नहीं, रियासतकी मौत है। इन दिनों हम गाना नहीं सुनते, दुःखी प्रजाके प्राणोंकी चीत्कार सुनते हैं। हमारे पास प्रजाके बच्चोंको शिक्षा देनेके लिए रुपया नहीं, मगर आचार और सभ्यताका लहू चूस लेनेवाली वेश्याओंके लिए रुपया है! यह अंधेर नहीं तो और क्या है? वह इस उत्सवका सदा विरोध किया करते थे। उनकी युक्तियोंके सामने महाराज-का मुँह न खुलता था। मगर वह बड़े थे और कुँवर छोटे थे। बड़ा आदमी हारकर भी जीत जाता है, छोटा आदमी जीतकर भी हार जाता है। महाराज कुँवरकी युक्तियोंका जवाब न दे सकते थे, मगर उनके लिए यह उत्सव बन्द करना असम्भव था। उनके ख़्यालमें यह उत्सव उनके कुल-गौरव और मान-मर्यादाका विज्ञापन था। कुँवरके लिए यह मान-मर्यादा रियासतका काला धब्बा था। मगर वे इसे धो न सकते थे। अगर धो सकते, तो अपना लहू भी दे देते।

रातका समय था, महाराज अपने विलास-महलमें बैठे शराब पीते थे और लखनऊकी प्रसिद्ध वेश्याओंकी ग़ज़लें सुनते थे। कुँवर सूर्य-प्रकाशचंद अजमेरके चीफ़्स कालेजमें पढ़ते थे। इन दिनों कालेज बन्द हो जाता है। हर साल कुँवर साहब घर आ जाते थे; इस साल उन्होंने

लिख भेजा था, मेरा इरादा इन छुट्टियोंमें पंजाबकी तरफ़ जानेका है, इसलिए घर न आ सकूँगा। महाराजा साहब निश्चिन्त थे। स्त्री, सुरा और संगीत तीन चीज़ें थीं, जिन्हें महाराज इस संसारका स्वर्ग कहा करते थे। इस समय तीनों मौजूद थीं। महाराजका दिमाग़ आसमानपर था; मदिरा पीते थे, मोहिनी मूरतें देखते थे और मदभरी तानें सुनते थे। सहसा एक दरबारीने आकर धीरेसे कहा—कुँवर साहब आ गए!

महाराज चौंक पड़े। हाथका गिलास हाथ ही में रह गया। मन मसोसकर बोले—वे तो कहते थे, हम पंजाब जा रहे हैं। सारा मज़ा किरकिरा हो गया। अब फिर वही उपदेश सुनना पड़ेंगे।—कहाँ हैं?

दरबारीने कानके पास मुँह ले जाकर कहा—इधर ही आ रहे थे। ख़ाँ साहब करमदीनने रोक लिया और उनसे बातें करने लगे। मुझे इशारेसे इधर भेज दिया है। (वेश्याओंकी तरफ़ इशारा करके) क्या इनसे कहूँ, चली जाएँ?

महाराजने कुछ देर सोचा, और तब कहा—कोई ज़रूरत नहीं। वह मेरा बेटा है, मैं उसका बेटा नहीं हूँ। मैं आज उसे बता देना चाहता हूँ कि वह सिकंधीरमें हो या अजमेरमें, इससे दसहरेके उत्सवपर कोई असर नहीं पड़ सकता। आने दो।

दरबारीने सिर झुकाया और चुपचाप बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद कुँवर साहब आकर महाराजके सामने खड़े हो गए। अखाड़ेकी परियोंपर सहमकी दशा छा गई। वे कुँवर साहबका स्वभाव जानती थीं, उनके आते ही बाहर चली गईं। उनको बाहर जाते देखा तो महाराजके मुसाहिब भी उठ गए। देखते देखते सारा हॉल ख़ाली हो गया। अब प्रत्यक्षमें वहाँ बाप-बेटेके सिवाय कोई भी न था। मगर वहाँ मदिराकी मस्ती थी, पवित्रताका प्रकाश था; शासनकी सत्ता थी, जवानीका जोश था। और उनके बीचमें एक बाप और एक बेटा एक दूसरेके सामने खड़े थे, और इस बातपर तुले हुए थे कि आज कुछ निश्चय करके रहेंगे।

कुँवरने क्रोधकी उठती हुई लहरको दबाकर धीरेसे कहा—आपको याद है, आपने पिछले साल मुझे एक वचन दिया था ?

महाराज—(बेपरवाहीसे) मुझे कुछ याद नहीं। मैंने कोई वचन नहीं दिया था।

कुँवर—अबके फिर यह वेश्याएँ बुलाई गई हैं। इनपर कितना रुपया खरच हो जाएगा ?

महाराज—मुझसे ये बातें पूछनेवाले तुम कौन होते हो ? जितना भी खर्च हो जाए, मुझे परवाह नहीं।

कुँवर—दो लाखसे कम क्या होगा ?

महाराज—दो लाख क्या, शायद चार लाख हो जाए। बल्कि मेरा ख़याल है, इस साल पाँच लाखसे कम न होगा, ज्यादा ही होगा।

कुँवर—(और भी विनम्रतासे) मगर इसका परिणाम क्या होगा ? रियासतपर क़र्ज़ चढ़ जाएगा।

महाराज—मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं। जब तक मैं जीता हूँ यह उत्सव हर साल धूम-धामसे मनाऊँगा। इसके बाद तुम इन दिनों सोग मनाया करना, मैं तुम्हें रोकने न आऊँगा। अब मेरा राज्य है, उस समय तुम्हारा राज्य होगा। मैं तुम्हारे काममें दख़ल देने न आऊँगा, तुम मेरे काममें दख़ल न दो, और जो मैं करता हूँ, चुपचाप देखते जाओ।

कुँवर साहब सोचने लगे, अब इस बातका कुछ जवाब दूँ या चुप हो रहूँ ?

महाराज—आख़िर तुम क्या चाहते हो ? यह त्योहार बन्द कर दूँ, तो तुम खुश हो जाओगे ?

कुँवर—बिलकुल नहीं। दसहरा हमारी बहादुरीकी यादगार है। इन दिनों हमें अपना भूला हुआ ज़माना याद आता है। इन दिनों हमारे सोए हुए भाव जागते हैं। इन दिनों हमारी रगोंमें पुराना

लहू दौड़ने लगता है। मैं इन वेश्याओंको बुलानेका विरोधी हूँ। इस पवित्र उत्सवमें ये क्यों पाँव रख जाएँ ? ये समाजका लहू चूसनेवाली जोंकें हैं। ये हमारे नौनिहालोंका कलेजा खा जाने वाली डायनें हैं। ये हमारे घरोंकी शान और शान्ति मिटा देनेवाली बीमारियाँ हैं। ये हैज़े और प्लेगसे भी भयानक हैं, तपे-दिक़से भी भयानक हैं, काले साँपोंसे भी भयानक हैं। हम अपना धन ग़रीबोंसे छीनकर इनको क्यों दें ? जितना धन दस दिनोंमें ये ले जाती हैं, उससे साल-भर कई कालेज चल सकते हैं, कई अस्पताल चल सकते हैं।

महाराजके पास इसका कोई जवाब न था, लाजवाब होकर बोले—तो क्या करें ?

कुँवर—जो ब्राह्मण हैं उनके ख़ेमोंमें दिया भी नहीं जल रहा है, यहाँ बिजलियाँ जल रही हैं। मैं ऐसी अंधेरनगरीमें पानी भी नहीं पीना चाहता। इससे तो बाहर जाकर भीख माँग खाना कहीं अच्छा है। वहाँ और कुछ न होगा, चित्तकी चाँदनी तो होगी।

यह कहकर कुँवर साहब डर गए कि मुँहसे क्या निकल गया। वे चाहते थे, हो सके, तो अपने शब्द लौटा लें। लेकिन मुँहसे निकले हुए शब्द वापस नहीं आते। अब महाराजको भी क्रोध आ गया। कुरसीपर बैठे थे, जोशसे उठकर खड़े हो गए, और ईंटका जवाब पत्थरसे देकर बोले—तुम आज चले जाओ। मेरी रियासत सूनी न हो जाएगी, यह विश्वास रखो।

कुँवर—मैं भी यहाँसे बाहर जाकर भूखा न मर जाऊँगा, यह विश्वास रखिए।

यह कहकर कुँवरने बेपरवाईसे महाराजकी तरफ़ देखा और वे बाहर निकल गए।

थोड़ी देर बाद विलास-महलमें फिर नर-पिशाच जमा थे। फिर तबलेपर थाप पड़ी, फिर सुरीली तानें गूँज उठीं, फिर शराबका दौर शुरू हो गया।

३

इधर राग-रंगके ये जलसे हो रहे थे, उधर कुँवर सूर्य-प्रकाशचन्द्र गाड़ीमें बैठे दिल्ली जा रहे थे। क्या करेंगे, कहाँ रहेंगे, उनका प्रोग्राम क्या होगा, इन सब बातोंका उन्हें कुछ भी ख़्याल न था, न उन्हें इस बातकी कुछ चिन्ता थी। वे केवल यह चाहते थे कि रियासतसे निकल जाएँ। वहाँ उनका कोई मुँह न देख ले। वे अगर चाहें तो किसी भी राजासे दस-बीस हज़ार रुपया मँगवा सकते हैं। यह उनके लिए ज़रा भी मुश्किल नहीं। जिसे एक पत्र लिख दें, वही भेज देगा। मगर उन्होंने निश्चय किया कि किसीसे भी रुपया न माँगूगा। अब राजा-महाराजोंके साथ उनका कुछ वास्ता नहीं। वे अगर उन्हें रुपया भेजेंगे तो उनके बापकी ख़ातिर भेजेंगे, उनकी ख़ातिर नहीं। और यह वे किसी तरह भी न सह सकते थे। बापसे लड़कर घरसे निकलना, और फिर बापके मित्रोंसे सहायता लेना उनके सिद्धान्तके विरुद्ध था। इस समय उनके पास लगभग तीन हज़ारके नोट थे। यह सिर्फ़ एक महीनेका ख़र्च था। मगर अब वे कुँवर नहीं, मामूली आदमी हैं। अब उन्हें एक एक पैसेपर मुहर लगानी होगी, तभी गुज़ारा होगा। कुँवर साहबको ख़्याल आया कि उनके कालिजमें एक क्लर्क था। उसकी तनख़्वाह सिर्फ़ एक सौ रुपया महिना थी। और वह ब्याहा हुआ था और उसके कई बच्चे थे। आख़िर वह भी तो किसी तरह गुज़ारा करता ही होगा? मैं तो अकेला हूँ; क्या मेरे लिए एक सौ रुपया महिना काफ़ी नहीं? कुँवर साहबने कुछ देर सोचा और तब निश्चय किया कि एक सौ रुपया मासिकसे एक पाई भी ज़्यादा ख़र्च न करूँगा। तीन हज़ार रुपया है, अढ़ाई साल मज़ेसे कट जाएँगे। इस बीचमें कोई न कोई वसीला निकल आएगा। भगवानकी राहें न्यारी हैं।

अब रातका एक बज गया था। कुँवर साहबकी आँखें बन्द होने लगीं। उन्होंने पाँवसे बूट निकाल दिया, मोज़े उतार दिए, कोट उतारकर खूँटीके साथ लटका दिया और सोनेका निश्चय किया। एकाएक वे चौंक पड़े,—बिस्तरा कहाँ था? ज़िन्दा-दिल कुँवरने अपनी भूलपर पूरे ज़ोरसे क़हक़हा लगाया और वे कमरेकी चिटखनीको अन्दरसे बन्द करके ख़ाली सीटपर लेट गए। यह पहला मौक़ा था जब वे बिना सामानके सफ़र कर रहे थे। इस समय तक उन्होंने बहुतसे सामान और कई कई नौकरोंके साथ सफ़र किया था। आज उनके साथ कोई सामान, कोई नौकर न था।

जब उनकी आँख खुली, उस समय दिन निकल चुका था, और गाड़ी गाज़ियाबादके स्टेशनपर खड़ी थी। कुँवरको पहले तो संदेह हुआ कि रातकी घटनाएँ घटनाएँ न थीं,—थके हुए मनके सुपने थे। मगर फिर देखा कि वे सचमुच गाड़ीमें हैं और गाड़ी दिल्ली जा रही है, तो निश्चय हो गया कि रातकी घटना सुपना नहीं सच है, और वे सचमुच घरसे निकल आए हैं। कुँवर साहब उठते ही चाय पीनेके आदी थे। सामने चाय देखते ही उनके जीमें आया, आवाज़ देकर बुला लें। लेकिन फिर रातका फ़ैसला याद आ गया। सोचा, ऐसी फ़जूल-ख़र्चीसे सौ रुपएमें गुज़ारा हो चुका!

कुँवर साहबने चाय पीनेका विचार छोड़ दिया और वे 'स्टेट्स-मैन' का नया अंक ख़रीदकर पढ़ने लगे।

पहले उन्होंने 'वाण्टेड' के कालम देखे, इसके बाद वे ताज़ी ख़बरें पढ़ने लगे। सहसा उनके हाथोंमें अख़बार काँपने लगा। आठवें पेजके तीसरे कालममें यह ख़बर छपी थी—

पचास हज़ार रुपया इनाम

पहाड़ोंके महाराज काश्मीर-नरेशने घोषणा की है कि जो आदमी काश्मीरके पहाड़ी लोगोंके रस्म-रिवाजपर सबसे अच्छी

किताब लिखेगा, उसे पचास हज़ार रुपया इनाम दिया जायगा। यह किताब अँगरेज़ी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, किसी भी भाषामें हो, लेकिन दो सौ पेजसे कमकी न होनी चाहिए। इनामके लिए सब किताबें २२ दिसम्बरसे पहले चीफ़ सेक्रेटरीके पास पहुँच जाएँ। काश्मीर-नरेशका निर्णय अंतिम होगा।

कुँवरको आँखें मिल गईं। कई मिनट तक अख़बारको जंघापर रखे सोचते रहे। यह मामूली ख़बर न थी, उनके दुर्भाग्यके अँधेरेमें जगमगाती हुई रोशनी थी,—जैसे काले अक्षरोंमें उज्ज्वल उपमा छिपी हो। इस उपमाने उनका मन मोह लिया। भटकते हुएको रास्ता मिल गया; अटकते हुएको हिम्मत मिल गई।

उन्होंने गाड़ीकी खिड़कीसे बाहर झाँककर देखा; वृक्ष, खेत, पानीके जौहड़, बिजलीके खम्बे उड़े जा रहे थे। पता नहीं किधर, किस देशको? यही दशा कुँवरकी भी थी। वे भी गाड़ीमें बैठ उड़े चले जा रहे थे। उनकी तरह वे भी अकेले थे। उन्हें भी यह पता न था कि वे किधर जा रहे हैं। लेकिन अख़बारके समाचारने उनकी मुश्किलको दूर कर दिया। अब उनके सामने एक रास्ता, एक कर्तव्य,— एक उद्देश्य था। कितनी दूर, मगर कितना साफ़; कितना कठिन, मगर कितना मनोहर! कुँवरने आँखें बन्द कर लीं और सफलताके सुन्दर सुपनोंमें लीन हो गए। घरसे दूर जा रहे थे, कामयाबीके पास आ रहे थे।

४

तीसरे दिन वे एक हैंड-बैग लिये रावलपिण्डीसे पचास मील परे पहाड़पर चढ़ रहे थे। एक तरफ़ गगन-भेदी पहाड़ खड़े थे, दूसरी तरफ़ नीचे जेहलमका सफ़ेद पानी पारेके साँपकी तरह लहरा रहा था,

और बीचमें रस्सेकी-सी सड़क पहाड़के चारों तरफ़ चक्कर खाती हुई धीरे धीरे ऊँची होती जाती थी, और उस सड़क और नदीके बीचकी तराईमें छोटे छोटे खेत थे, छोटे छोटे झोंपड़े थे, छोटे छोटे झरने थे। कुँवर सूर्यप्रकाशको यह दृश्य ऐसा मनोहर मालूम हुआ कि उनके पाँव रुक गए। यह आदमियोंकी कारीगरी न थी, प्रकृतिका सौन्दर्य्य था। यहाँ वसन्त खेलता था, यहाँ लालित्य नाचता था, यहाँ आह्लाद गाता था। यहाँकी वायुमें मद मिला था। आकाशको उन्होंने इतना महान्, इतनी दूर तक फैला हुआ, कभी न पाया था। पहाड़पर हर साल जाते थे, मगर मोटरमें बन्द होकर। और मोटरकी सवारीमें इतनी फ़ुरसत कहाँ कि कोई कुदरतके सुन्दर दृश्योंको काव्यकी आँखोंसे देख सके। राग और रंगका यह रसभरा देश उन्होंने पहली बार देखा, और देखकर मोहित हो गए। वह इस दृश्यावलीमें खो-से गए। तंग शहरोंमें यह बात कहाँ? इस खुली जगहके सामने शहर उन्हें जेलखानेसे मालूम होने लगे जहाँ दम घुटता है, विचार घुटता है, आत्मा घुटता है।

इतनेमें हॉर्न बजा और इसके साथ ही एक मोटर पाससे निकल गया। कुँवर सूर्यप्रकाशने उसकी तरफ़ देखा और आगे बढ़े। कुछ ही मिनटमें मोटर पहाड़के चक्करदार रास्तेमें आँखोंसे ओझल हो गया। कुँवर इधर उधर देखते हुए फिर चलने लगे। सामनेसे एक लड़की आ रही थी, जिसकी पीठपर उसका छोटा भाई था। कुँवरने उसे देखा और मुस्करा कर कहा—यह तुम्हारा भाई है क्या? कैसा प्यारा बच्चा है! क्या नाम है इसका?

लेकिन लड़की डरकर पीछे हट गई। उसने भाईको पीठसे उतार दिया और दोनों हाथ बाँधकर खड़ी हो गई।

कुँवरको आश्चर्य हुआ। लेकिन यह आश्चर्य ज़्यादा देर न रहा। एकाएक उनकी नज़र अपनी पोशाकपर पड़ी,—बन्द गलेका रेशमी लम्बा कोट, सफ़ेद चूड़ीदार पायजामा, चमकदार पेटेण्ट लैदरका बूट,

सिरपर रियासती पगड़ी। कौन है जो देखते ही न पहचान ले कि यह कोई राजा-महाराजा है?—वे लोगोंके रीति-रिवाज जाननेके लिए आए हैं, लोग उनके पास भी न फटकेंगे। कुँवरने निश्चय किया, यह कपड़े, जितनी जल्दी हो सके, उतार देने चाहिएँ। आदमी जिस देशमें जाए, उसी देशका लिबास पहनकर लाभ उठा सकता है।

कुछ आगे बढ़े तो एक पहाड़ी आता दिखाई दिया। तेईस-चौबीस सालकी उम्र होगी; चौड़ा सीना, लम्बा क़द। शायद कहीं जा रहा था, इसीलिए धुले हुए कपड़े पहने था। कुँवरके मनकी मुराद पूरी हो गई। वह नज़दीक आया तो उससे बोले—इधर आओ।

पहाड़ीपर जैसे बिजली गिर पड़ी। हाथ बाँधकर बोला—क्या है सरकार! महारा क्या दोस है?

कुँवर—अपने कपड़े उतार दो।

पहाड़ी—अरे सरकार! यह लीड़े आपके किस काम आएँगे? आपके खिदमतगार भी तो न पहन सकेंगे।

कुँवर—(सुनी अनसुनी करके) तुम कपड़े उतार दो, वरना पुलिसके हवाले कर दूँगा। सुना तुमने! जल्दी करो।

पहाड़ी हैरान था। वह बेचारा समझता न था कि ये मेरे इन कपड़ोंका क्या करेंगे? वह कुँवरकी तरफ़ देखकर मिन्नत-भरे स्वरमें बोला—सरकार, मैं नंगा कैसे घर जाऊँगा?

कुँवरने देखा, सख़्तीके बिना काम न चलेगा। उन्होंने उसको गरदनसे पकड़कर झिंझोड़ते हुए कहा—कपड़े देते हो या नहीं? अगर तुमने अब भी आना-कानी की तो उठाकर नदीमें फेंक दूँगा। समझे या नहीं?

यह कहकर उन्होंने अपना बैग खोला और उसमेंसे एक धोती निकालकर पहाड़ीके हवाले की। पहाड़ीने चारों तरफ़ देखा कि शायद कोई आता हो। लेकिन वहाँ दूर दूर तक कोई न था,—न कोई मुसाफ़िर

न कोई मोटरकार। हताश होकर वह कपड़े उतारने लगा। पाँच मिनट बाद ही कुँवर साहब पहाड़ी नौजवानकी पोशाकमें खड़े थे और पहाड़ीसे कह रहे थे—मेरे कपड़े तुम ले जाओ।

पहाड़ी डरता था। उस बेचारेमें इतनी हिम्मत कहाँ कि ऐसे बहुमूल्य कपड़े पहन ले! उसने ऐसे कपड़े आज तक न देखे थे, उसे उनको हाथ लगाते भी डर लगता था। वह समझता था, यह कपड़े मेरे छूते ही मैले हो जाएँगे। डरते डरते बोला—ना सरकार, यह महारे जोग नहीं। यह तिहारे जोग ही हैं।

कुँवरने अपने उतारे हुए कपड़े और बूट लपेटकर एक रूमालमें बाँध दिए और उसे देते हुए बोले—ले जाओ। मैं आप दे रहा हूँ। कोई हर्ज नहीं। ब्याह-शादीमें पहन लेना।

मगर उसमें अब भी हिम्मत न थी। लाशको चाहे कम्बलमें लपेटो चाहे अँगीठीके पास रखो, मगर वह गरम नहीं होती। उसे आग जलाती है, गरमाती नहीं है।

आखिर कुँवरने बैग उठाया और चलनेको मुड़े। एकाएक उन्हें कोई बात याद आ गई। पहाड़ीकी तरफ़ घूमकर बोले—तुम्हारा नाम क्या है?

पहाड़ी—बेली।

कुँवर—(हँसकर) यह नाम पहले तुम्हारा था, अब हमारा है। अब हम बेली हैं।

यह कहकर उन्होंने बैगको पहाड़ियोंकी तरह पीठपर रख लिया और वे कुलियोंकी तरह नंगे पाँव काश्मीरकी ओर चले। पहाड़ी उनको पहले तो देखता रहा कि कहीं लौट न आएँ, मगर जब वे पहाड़के चक्करदार रास्तोंमें गुम हो गए, तो कपड़ोंकी गठड़ी उठाकर चोरोंकी तरह भाग गया। इतनेमें ठंडी हवा चलने लगी। आसमानपर बादल छा गए और बिजली चमकने लगी।

५

थोड़ी देर बाद चारों तरफ़ अँधेरा छा गया और वर्षा होने लगी। ऐसे ज़ोरसे जैसे आज सब-कुछ बहा ले जायगी। कुँवर सूर्यप्रकाश चारों तरफ़ देखते थे, मगर उन्हें कोई आरामकी जगह दिखाई न देती थी। क्या करें, किधर जाएँ, कहाँ आश्रय लें? चिड़ियाँ घोंसलोंमें छिपी हुई थीं, कीड़े बिलोंमें घुस गए थे, मगर एक रियासतके राजकुमारके लिए कोई जगह न थी। वे वर्षामें भीगते, अँधेरेमें ठोकरें खाते, गिरते-पड़ते चले जाते थे। उनके बैगमें तीन हज़ारके नोट थे, मगर उन नोटोंमें यह ताक़त नहीं थी जो उन्हें वर्षासे बचा सकती। यह काम शायद डेढ़-दो रुपएका छाता अच्छी तरह पूरा कर सकता, मगर इस समय वह भी न था। कुँवर साहब एक जगह ठहर गए और सोचने लगे, परदेसमें यह भी होता है।

एकाएक उन्हें एक रोशनी नज़र आई। यहाँसे कोई आध मीलकी दूरीपर एक झोंपड़ेमें एक दिया टिमटिमा रहा था और उसकी मध्यम रोशनीमें एक पंद्रह सालकी लड़की अपनी मरती हुई माँके सिरहाने बैठी उसकी सेवा कर रही थी। माँ हड्डियोंका पिञ्जर थी, जिसमें कभी जान मालूम होती थी, कभी मालूम न होती थी। अब उसमें हाथ हिलानेकी भी शक्ति न थी। ज़ाहिर था कि अब उसके बचनेकी कोई आशा नहीं। मगर लड़कीको अब भी आशा थी कि शायद बच जाए! शायद भगवानकी कृपा-दृष्टि हो जाए! उसके घरमें किस चीज़की कमी है?

बाहर वर्षा होती थी, बिजली चमकती थी और सन्नाटेकी हवा चलती थी;—मानों ये तीनों मिलकर पहाड़को उसकी जगहसे उखाड़ कर फेंक देंगे। इस तूफ़ानमें दो दिए टिमटिमा रहे थे। दोनों जर्जर

थे, दोनों पुराने थे, दोनोंका तेल धीरे धीरे समाप्त हो रहा था और दोनोंपर मृत्युके क्रूर झोंके हमले कर रहे थे। आखिर बारह बजेके क़रीब दोनों दिए बुझ गए। झोंपड़ेके अन्दर भी अँधेरा था, बाहर भी अंधेरा था। लड़की फूट फूट कर रोने लगी। अब उसका इस दुनियामें कोई भी न था। क्या करे, किधर जाए, किससे सहायता माँगे? जीवनके तूफ़ानमें कौन उसकी बाँह पकड़ेगा? दुनियाके रेलेमें कौन उसे सहारा देगा? बेगानोंके संसारमें कौन उसका अपना बनेगा? पहले बाप मरा था, आज माँ भी मर गई। आज वह अनाथ हो गई, आज वह अकेली रह गई।

उसने चमड़ेकी कुप्पीसे तेल उँड़ेलकर दीप जलाया और माँकी तरफ़ देखा। अब उसमें जीवनका कोई भी निशान बाक़ी न था। लेकिन हम अपने प्यारोंकी मौतपर जल्दी विश्वास नहीं करते। लाश देखकर भी संदेह होता है कि शायद मरा न हो, बेहोश हो गया हो, शायद सो रहा हो। कभी कभी ख़्याल आता है, अभी पानीका घूँट माँगेगा। आशा भी कितनी सख़्त-जान है। वह मरते मरते भी उठकर खड़ी हो जाती है।

यही दशा लड़कीकी थी। उसे भी सन्देह हो रहा था, शायद माँ मरी न हो। उसने अपने दोनों हाथ माँके गालोंपर रख दिए और हिलाकर कहा—माँ! ओ माँ!!

माँने कोई उत्तर न दिया।

लड़कीने उसे एक बार फिर झिंझोड़ा और कहा—माँ!

मगर यह माँ न थी; मौन, बेजान, ठंडी लाश थी। अब लड़कीको विश्वास हो गया कि माँ इस दुनियामें नहीं। वह लाशपर गिर पड़ी और सिसक सिसक कर रोने लगी।

थोड़ी देर बाद वह फिर उठी और लाशसे कहने लगी—माँ, यह तुमने क्या किया? मुझे अकेली छोड़कर कहाँ चली गई? अब दुनियामें मेरा कौन है? सभी बेगाने हैं, अपना कोई भी नहीं।

सहसा किसीने दरवाज़ेको खटखटाया। लड़की चौकन्नी हो गई। इस अँधेरी तूफ़ानी रातमें उसके दरवाज़ेपर कौन आया है? किसी दूसरे समय वह दरवाज़ा खोलनेसे पहले बीस बार सोचती, लेकिन इस वक़्त उसे ज़रा भय न था। निराशामें भय भाग जाता है।

उसने दरवाज़ेके नज़दीक जाकर आँसुओंसे रुकी हुई आवाज़में पूछा —कौन है इस वक़्त?

एक परदेसी।

आवाज़ मीठी थी, लड़कीने दरवाज़ा खोल दिया—देखा, एक देवता-स्वरूप बाईस-तेईस वर्षका लम्बा जवान खड़ा है, सिरसे पैर तक पानीमें भीगा हुआ। हाथमें बैग है, पाँव काँप रहे हैं मानों अभी गिर पड़ेगा। लिबास साफ़ है, चेहरेपर तेज है। उसने हज़ारों पहाड़ी देखे थे मगर ऐसा पहाड़ी आजतक न देखा था। उसके बाल चिकने थे, आँखें चमकदार थीं, क़द लम्बा था और पाँव,—वे भी बहुत खूबसूरत थे। उस पहाड़के लोगोंके पाँव तो ऐसे न होते थे। पता नहीं, यह किस देशका रहनेवाला है।

कुँवरने कहा—ज़रा आज्ञा हो तो थोड़ी देरके लिए यहाँ ठहर जाऊँ। मेंह बन्द होते ही चला जाऊँगा।

लड़कीने मुँहसे कुछ न कहा, लेकिन सिर हिलाकर आज्ञा दे दी।

६

झोंपड़ेके अन्दर जाकर कुँवरने जो कुछ देखा उससे उसका दिल काँप उठा। यह लड़की अनाथ, अकेली, असहाय है। दुनियामें ऐसा कोई नहीं, जिसे इसका दर्द हो, जो इसके दुःखको अपना

दुःख समझे, जो इसकी तकलीफ़में इसका हाथ बटाए। क्या करेगी, अकेली कैसे रहेगी, कहाँसे खाएगी? वे उसकी सहायता करना चाहते थे, मगर सहायता करनेका कोई उपाय न सूझता था। उनके पास तीन हज़ार रुपया था। वे सारेका सारा उसे देनेको तैयार थे। लेकिन रुपया एक नौजवान, खूबसूरत, कुँवारी लड़कीकी रक्षा न कर सकता था। इससे उल्टा उसके प्राण और सतीत्व संकटमें पड़ जानेका अंदेशा था। पाप कमज़ोरके रूप और धनपर इस तरह लपकता है जैसे बकरीपर चीता। कुँवर साहब सोच सोच कर परेशान हो गए। वे इस विषयपर जितना सोचते थे, अँधेरा उतना ही बढ़ता जाता था। रोशनी नज़र न आती थी।

प्रातःकाल आसपासके लोगोंको मालूम हुआ, बुढ़िया मर गई है। सब आकर जमा हो गए। लरजाँ (लड़कीका नाम) के पास कुछ भी न था। उन्होंने चन्दा जमा किया और नदीके किनारे लाश जला दी। इस समय लरजाँकी दीन-दशा देखी न जाती थी। चीख़ चीख़ कर रोती थी और सिरके बाल नोचती थी। सबकी आँखें भीगी थीं। स्त्रियाँ उसे धीरज देती थीं। कहती थीं, बेटा जो हो गया, वह हो गया। मौतसे किसीका ज़ोर नहीं चलता। बड़े बड़े बादशाह नहीं रहे, हम-तुम किस गिनतीमें हैं? मगर लरजाँके आँसू न थमते थे। गरम पानीका एक सोता था जो बराबर बहे जाता था। उसके सामने एक अनिश्चित, भयानक और अँधेरा भविष्य फैला हुआ था। सोचती थी, अब इस दुनियामें मेरा कौन है?

जब लाश जल चुकी तो सब आकर झोंपड़ेके बाहर बैठ गए और सोचने लगे—अब लरजाँ कहाँ रहेगी?

एक आदमीने कुँवर साहबसे पूछा—भाऊ, तुम कौन हो?

लरजाँ रो रही थी। यह सवाल सुनकर उसके कान भी खड़े हो गए।

कुँवरने गंभीरतासे जवाब दिया—परदेसी हूँ। बड़ी दूरसे आया हूँ। अब इस बेचारीके लिए कुछ सोचो। कहाँ रहेगी? यहाँ अकेले रहना तो मुश्किल होगा। रो रो कर मर जायगी।

पहाड़ियोंके चौधरीने हुक्केका कश लगाकर कुँवरकी ओर देखा और कहा—अरे नानकी मर गई है तो क्या हुआ, हम तो नहीं मर गए। लरजाँके लिए किसी चीजका टोटा नहीं। पहले यह खाएगी फिर हम खाएँगे। पहले यह पीएगी, फिर हम पीएँगे। इसे क्या फिकर है? यह मेरे घरमें रहेगी। मेरी दो छोकरियाँ पहले हैं, एक और सही। गुजर हो जाएगी। देनेवाला संकर भगवान है। कोई साला क्या दे सकता है? मैं समझूँगा, मेरी तीन छोकरियाँ हैं। लरजाँको क्या फिकर है?

दूसरेने कहा—सच कहते हो भाऊ, लरजाँको क्या फिकर है। फिकर करनेको हम बैठे हैं। इसकी माँ नहीं मरी, हमारा एक बाजू टूट गया है और टूटा बाजू गले पड़ता है।

चौधरीकी दोनों लड़कियाँ चन्दी और मल्की लरजाँके पास आ बैठीं। चन्दीने कहा—वहाँ तुझे जरा तकलीफ न होगी। चल तेरे कपड़े-बरतन उठा लूँ। अब तू हमारी बहन है।

लरजाँने रोते हुए कहा—मैं यह जगह छोड़कर कहीं न जाऊँगी। यह मेरे माँ-बापका घर है। यहीं रहूँगी।

यह कहते कहते उसकी चीखें निकल गईं। उससे और कुछ न कहा गया। अड़ोसी-पड़ोसी भी रोने लगे।

चौधरी बोला—यह तो पगली है, यहाँ कैसे रहेगी? यहाँ रातको इसकी माँका भूत आएगा। अकेली होगी तो डरके मारे मर जाएगी। चल चन्दी, इसका लीड़ा-लत्ता उठा ले। जहाँ हम, वहाँ यह।

लरजाँके आँसू थम गए। उसने दृढ़तासे कहा—कपड़ा-लत्ता बेसक ले जाओ। पर मैं यहीं रहूँगी।

एक आदमीने गुस्से होकर कहा—यहाँ रहेगी तो चार रोजमें मर जाएगी। तुझे यहाँ कौन खिलाएगा, बोल ?

लरजाँने ईंटका जवाब पत्थरसे दिया, बोली—जो तुझे देता है, वह मुझे भी देगा। मेरी माँ मरी है, मेरा परमेसर नहीं मरा। उसे सबोंका फिकर है, कुछ तुम्हारा ही फिकर नहीं है।

चौधरीने सोचा, इस समय चुप रहो, अपने आप मान जाएगी। चोट ताज़ी हो तो दर्दका अनुभव नहीं होता। पूरा अनुभव बादमें होता है। थोड़ी देर सब मिलकर सलाह करते रहे, इसके बाद अपने अपने घरको चले गए।

अब वहाँ सिवाए लरजाँ और कुँवरके कोई न था।

कुँवरने नरमीसे फटकार कर कहा—तुमने यह क्या किया ? चौधरीके घर चली जातीं, तो तुम्हें ज़रा तकलीफ़ न होती। लड़कियोंके साथ दिल बहला रहता। यहाँ इस झोंपड़ेमें तुम्हारा कौन है ?

लरजाँने कुँवरकी तरफ़ अजीब आँखोंसे देखा। वह आँखें कहती थीं, तुम्हें क्या मालूम, मैं क्यों नहीं गई ?

कुँवर साहब कुछ कुछ समझ गए। थोड़ी देर पहाड़की ऊँची चोटियोंकी तरफ़ देखते रहे। इसके बाद ठंडी साँस भर कर बोले—तो अब क्या करोगी; यह भी सोचा ?

लरजाँके पास कोई जवाब न था।

कुँवर साहब ज़रा आगे खिसक कर मीठी आवाज़में बोले—मुझे एक बात सूझी है, कहूँ ?

लरजाँकी मौन आँखोंने पूछा—क्या ?

कुँवर—यहाँ कोई ग़रीब बूढ़ी स्त्री नहीं जो बिल्कुल अकेली हो ?

लरजाँ—(कुछ सोचकर) एक बुढ़िया किरपी है। बेचारी अपने छोकरेके हाथों बहुत परेसान है। वह बेईमान उसे रोज रोज मारता है। यहाँ आया करती थी, पर अब क्या करने आएगी। माँ उसे

कभी कभी धान-चावल दे दिया करती थी। उसकी गुजर-बसर हो जाती थी।

कुँवर—उसे बुला लो। तुम्हारे खाने-पीनेका प्रबन्ध मैं कर दूँगा। कितने रुपएमें काम चल जाएगा तुम्हारा?

लरजाँकी आँखें खुलीकी खुली रह गईं। उसने एक ऐसी बात सुनी थी जिसका उसे ख़्याल भी न था। उसे अपने दिलमें एक लहर-सी उठती हुई मालूम हुई। उसे दबाकर धीरेसे बोली—मुद्दा तुम कब तक मेरी मद्दत करते रहोगे?

कुँवर—(मुस्कराकर) जब तक मैं जीता हूँ। बोलो, तुम्हें कितने रुपए महीना मिल जाएँ तो दोनोंका गुज़ारा हो जाए?

लरजाँ—(डरते डरते) पाँच छः रुपए।

कुँवर—(लरजाँकी आँखोंमें आँखें डालकर) बस, इतनेमें गुज़ारा हो जायगा? तो उस बुढ़ियाको बुला लो और मजेसे रहो। और हाँ, इस समय तुम्हारे घरमें खाने-पीनेका सामान है या नहीं?

लरजाँने शर्मसे गरदन झुका ली और जवाब दिया—नहीं। सब कुछ खतम हो गया। पर आज तो भात-वात कुछ बनेगा नहीं। कोई न कोई भेज देगा। सायद चौधरी ही भेज दे।

इतनेमें एक औरत आ निकली। वह यह कहने आई थी कि चौधरी कहता है, चली आओ। यहाँ रातको अकेली कैसे रहोगी। कुँवरने उसे एक आना दिया और कहा—जा, जाकर किरपीको बुला ला। कहना, तेरे फ़ायदेकी बात है, ज़रा जल्दी चल।

थोड़ी देर बाद किरपी आ गई। कुँवरने उससे कहा—बुढ़िया, तू इसके साथ रहे तो तुझे ज़रा तकलीफ़ न हो। तुम दोनोंका ख़र्च मैं दूँगा। यहाँ चली आ। वहाँ बेटेकी धौंस क्यों सहती है?

अन्धा क्या चाहे, दो आँखें। बुढ़िया मान गई। लरजाँको अँधेरी रातमें रोशनी मिल गई। अब उसे अपना घर न छोड़ना पड़ेगा, अब

उसे पड़ोसियोंमें हीन होकर न रहना पड़ेगा। उसके दिलसे मुसाफ़िरके लिए रह रहकर दुआएँ निकलती थीं। उसके लिए वह आदमी न था, कोई देवता था, जिसे भगवानने उसकी सहायताके लिए भेजा था। बार बार उसकी तरफ़ श्रद्धासे देखती थी, और दुआएँ देती थी।

जब रात हो गई तो कुँवर साहबने पाँच पाँच रुपएके कई नोट निकाले और लरजाँको देकर कहा—ये अपने पास सँभालकर रक्खो। जब ख़र्च हो जाएँगे तो और दूँगा। और देता तो भगवान है, आदमी वसीला बन जाता है।

यह कहकर कुँवर साहबने अपना बैग उठाया और झोंपड़ेसे बाहर निकल आए। किरपी हुक्का पीनेके लिए चिलमपर आग रख रही थी। लरजाँने कुँवर साहबसे पूछा—इस बखत कहाँ जाओगे?

कुँवर साहबने उँगलीके इशारेसे दिखाकर कहा—वह सामनेका झोंपड़ा ख़ाली पड़ा है। मैं वहीं रहूँगा।

लरजाँ चाहती थी, उन्हें जाने न दे, कहे, यहीं पड़ रहो। मगर शर्मने ज़बान पकड़ ली। एक भी शब्द न बोल सकी।

कुछ ही देरमें कुँवर साहब बाहरके अँधेरेमें ग़ायब हो गए। लरजाँने ठंडी आह भरी और कहा—भगवान इस देवताको सलामत रखे। यह न होता, तो मेरा कौन था। कोई बात भी न पूछता। माँके मुलाहज़े माँके साथ ही खतम हो गए। बेटी घुल घुलकर मर जाती।

७

दूसरे दिन यह घटना बच्चे बच्चेकी ज़बानपर थी। दोपहरके समय एक दूकानपर बैठे हुए एक आदमीने कहा—भाऊ, लरजाँकी तो

परालब्ध खुल गई। मा मरी थी, अम्बीर परदेसी मिल गया। अब उसे क्या टोटा है? रानी बनकर बैठेगी और पकी पकाई खाएगी।

जग्गू बोला—सुना है, खूब मालदार है। पाँच पाँच रुपएके कई लोट दे गया, और कहता है, और भी दूँगा। उसके पास कई लोट हैं।

खुशियाने आँखें नचाकर कहा—बदमास डाकू मालूम होता है। देख लेना, किसी दिन गिरफ्तार हो जायगा। पुलिसके डरसे छिपता फिरता है।

चौधरी हुक्का पी रहा था। खाँसते हुए, रौनक़ीकी तरफ़ चिलम बढ़ाकर बोला—यह तुम्हारी खाम-ख्याली है। आदमी बुरा नहीं मालूम होता। जरूर कोई भागवान है। अपने कामसे इधर आ निकला है। चार दिन रहकर चला जायगा। बदमास नहीं है।

रौनक़ीने चिलमपर कोयला ठीक करते हुए कहा—बदमास न होता, तो आते ही उस छोरीका महीना क्यों बाँध देता? हमारा महीना तो किसी भड़ुएने न बाँध दिया। चिकना चेहरा देखकर फिसल पड़ा। वरना लरजाँमें और क्या बात है?

खुशियाने मुस्कराकर कहा—उसका जमाना है भाऊ! तुम क्या करोगे, और मैं क्या करूँगा? परदेसीके मनमें खोट है।

सब हँसने लगे। चौधरी बोला—यह तुम्हारा भरम है। मेरा हिरदा कहता है, उसके मनमें खोट नहीं। न लरजाँकी आँखमें खराबी है। खराबी है तो तुम्हारे हिरदेमें। अगर खराब होता तो अलग झोंपड़ेमें क्यों चला जाता? चार रुपया महीना किराया देगा।

यह झोंपड़ा चौधरीका था।

जग्गूने चौधरीकी 'हाँमें हाँ' मिलाते हुए कहा—बोलो भाऊ, क्या कहते हो? चौधरीने लाख रुपएकी एक बात कह दी है। अब इसका जवाब कोई क्या दे सकता है?

रौनक़ीने नाराज़गीसे कहा—इसका जवाब हम क्या दे सकते हैं,

इसका जवाब समय देगा। मगर कोई यह तो पूछे कि वह यहाँ आया काहेको है? कोई देखने लैक सहर तो है ही नहीं यह। अमीर है, तो दिल्ली जाए, कराँची जाए, कलकत्ते जाए, यहाँ क्या करने आया है?

यह कहकर रैनक़ीने चारों तरफ़ देखा, जैसे आँखों ही आँखोंमें कहा—अब कहो, हमारा ख़्याल ठीक है या नहीं?

चौधरी जा रहा था। जाते जाते रुक गया और पीछे मुड़कर बोला—वह यहाँ सैर करने और हवा-पानी बदलने नहीं आया, काम करने आया है। कोई पत्थरोंका बहुत बड़ा सौदागर है, यह उसका गुमासता है। यहाँसे पहाड़के पत्थर ढूँढ़ ढूँढ़कर भेजेगा और इनाम-बखसीस लेगा। जब काम हो जायगा, चलता बनेगा। कराँची कलकत्तेमें क्या करता? वहाँ रेत है पत्थर नहीं हैं।

चौधरीको जाते देखकर बाक़ी लोग भी खड़े हो गए। पल-भरमें वहाँ कोई भी न था। सब अपने अपने घर चले गए।

उधर कुँवर साहब अपने झोंपड़ेमें एक तख़्त-पोशपर बैठे किताब लिखनेकी तैयारियाँ कर रहे थे। इतनेमें किरपी खाना लेकर पहुँच गई। कुँवरने क़लम हाथसे रख दिया और मुस्कराकर कहा—तुमने बहुत तकलीफ़ की। मैं इन्तज़ाम कर लेता।

किरपी थक गई थी। तख़्त पोशपर थाली रखकर परे बैठ गई और हाँपते हुए बोली—तकलीफ कोई नहीं है बेटा, रोज दे जाया करूँगी। और तुम इन्तजाम क्या करोगे? परदेसमें खाना अच्छा न मिले, तो आदमी बीमार हो जाता है। खाना अच्छा मिल जाए तो आदमीको जरा तकलीफ नहीं होती। तुम्हारे लिए तो सरीरकी जान भी हाजर है। रोज ले आया करूँगी।

कुँवर—रोज लाया करोगी? बहुत फ़ासिला है। तुम कमज़ोर हो, तुमसे चला न जाएगा।

किरपी—मुझसे खूब चला जायगा बेटा। लो हाथ धो लो, नहीं तो खाना ठंडा हो जायगा और टंडे खाने में मजा नहीं आता।

कुँवरने हाथ धोए और खाने बैठ गए। किरपी जाकर एक घड़ा भर लाई और एक कोनेमें रखकर बोली—जब प्यास लगे, पी लेना।

कुँवर खाते खाते मुस्कराकर बोले—तुमने तो मेरे लिए गिरस्तीका सामान जुटाना शुरू कर दिया।

किरपी—अरे बाबा, जहाँ पसु-पंछीका बच्चा बैठता है, वह भी चार तिनके जमा कर लेता है। तुम तो फिर भी मानस हो।

कुँवर खाना खाकर उठ बैठे। किरपीने हाथ धुलाए और कहा—तुमने तो सब-कुछ छोड़ दिया। मजा न आया होगा।

कुँवर—(कुल्ली करके मुँह पोंछते हुए) मज़ा न आता तो इतना क्यों कर खा जाता? पेट भरकर खा लिया।

किरपी बाहर जाकर मिट्टी ले आई और गिलास साफ़ करके घड़ेके पास रख दिया।

कुँवरने गिलास देखकर कहा—इसकी क्या ज़रूरत है, ले जाओ।

किरपी—प्यास लगेगी तो पानी कैसे पियोगे?

कुँवरने कोई जवाब न दिया। किरपीने कहा—लरजाँको तुमने बचा लिया, वरना रो रोकर मर जाती। चौधरीका बेटा खड़कू दारू पीता है, और घरमें जाकर हल्ला-गुल्ला करता है। लरजाँ वहाँ कभी न जाती। उसे ऐसी बातोंसे घिन है।

कुँवर—अब क्या हाल है? अभी तो बहुत उदास होगी।

किरपी—रो रही है, पर रपता रपता सँभल जाएगी। बड़ी सीधी साधी छोरी है।

यह कहकर उसने जूठे बरतन उठाए और चली गई।

कुँवर साहब तख़्त-पोशपर लेट गए।

शामके समय किरपी खाना लेकर आई, तो अपने साथ एक दिया भी लेती आई। कुँवर साहब कल अँधेरेमें सोए थे। आज दिया पाकर उन्हें बहुत खुशी हुई, बोले—यह तुमने खूब सोचा। दिएकी बहुत ज़रूरत थी मुझे। इसके बग़ैर गुज़ारा न होता।

किरपीने हाथ धुलाकर थाल सामने रख दिया। कुँवर साहब खाना खाने बैठ गए।

किरपीने कहा—लरजाँने याद दिलाया, मुझे तो ख़्याल ही न था।

कुँवर साहबके चेहरेपर मुस्कराहट आ गई।

किरपी—कहती थी, पूछ आना, कल क्या बनाएँ?

कुँवर साहबने एक हाथसे रोटी तोड़ते हुए कहा—जो मर्ज़ी हो, बना लो। मैं क्या बताऊँ? जो बनेगा खा लूँगा।

किरपी—तुम न बताओगे तो और कौन बताएगा? हम तो मिरच प्याजके साथ भी मजेसे खा लें। तुम्हारा ही फिकर है।

कुँवर—मैं भी प्याज़के साथ खाऊँगा।

एक दिन खाना खाते समय कुँवरने कहा—आज खाना बहुत अच्छा पका है। जी चाहता है खाता ही जाऊँ। किसने पकाया है?

किरपीका चेहरा उदास हो गया, बोली—लरजाँने।

कुँवर—खूब पकाती है। मेरी तरफ़से शाबाश कह देना। कहना बेली तारीफ़ करता था।

किरपी कुछ न बोली। कुँवर साहबने उसके चेहरेकी तरफ़ देखा तो सब कुछ समझ गए। बिगड़ी बात बनानेके लिए बोले—कल भात किसने पकाया था? ऐसा भात मैंने कभी नहीं खाया।

किरपीका सूखा हुआ चेहरा हरा हो गया। खुश होकर बोली—कल मैंने पकाया था।

घर जाते ही लरजाँने पूछा—क्यों चाची, दिनभर क्या करते हैं?

किरपी—बेटी, कागदपर लिखते रहते हैं। कई कागद लिख लिख-कर काले कर दिए।

लरजाँ—आज कुछ कहते थे?

किरपी—कहते थे खाना बहुत स्वादु बना है, तुम्हें साबासी दी है। लाओ पीठ ठोक दूँ।

लरजाँ—(मुस्कराकर) कूड़ क्यों तोलती हो ? उन्होंने यह बात कभी न कही होगी ।

किरपी—मुझे कूड़ तोलनेकी क्या गरज है । उन्होंने जो कहा था, वह मैंने तुमसे कह दिया ।

लरजाँने जब यह सुना कि कुँवरने मेरे हाथका बना खाना पसन्द किया है, तो उसका चेहरा खिल उठा । सारा दिन खुश रही, दोपहरके समय किरपीसे बोली—यह परदेसी न आता तो मेरा क्या बनता ! कोई मुट्ठी-भर चावलकी भी मदत न देता । क्यों किरपी ?

किरपी किसी विचारमें मग्न थी । चौंककर बोली—और क्या ?

लरजाँ—इस पराए संसारमें किसीका कौन बनता है । संकटमें अपने भी अलग हो जाते हैं । कोई किसीकी मदत नहीं करता । यह आदमी आदमी नहीं देओता है । पराएकी मदत देओता ही करते हैं ।

किरपी—जरूर देओता है । नहीं तो इस तरह मदत न करता । मेरा बड़ा ख्याल रखता है । 'माँ' कहकर बुलाता है । मैं तो उसे देखकर खुसी हो जाती हूँ । रोयाँ रोयाँ असीरबाद देता है ।

लरजाँ—परमेसर जाने, कहाँका रहनेवाला है । कहीं दूरका ही रहनेवाला होगा । ऐसे महापुरस इस नरकमें तो होते नहीं ।

किरपी—एक मेरा छोरा है, एक यह है । दोनोंमें कितना फरक है । वह अपना होकर भी रोज मारता था, यह पराया होकर भी इज्जत करता है । इसमें सरधा-धरम बहुत है ।

दूसरे दिन लरजाँने और भी मेहनतसे खाना पकाया और किरपीसे कहा—आज पूछना, खाना कैसा पका है । जरूर पसन्द करेंगे ।

जब कुँवर साहब खाने बैठे, तो किरपीने पूछा,—आज खाना कैसा बना है ?

कुँवर साहबका मुँह भरा हुआ था । खाते खाते बोले—वाह वा !

आज कलसे भी अच्छा पका है। मजा आ गया। किसने पकाया है,—तुमने या लरजाँने ?

किरपी—लरजाँने।

कुँवर—(पानीका घूँट पीकर) खूब पकाती है। मेरा ख्याल था, इधरके लोग सिर्फ़ चावल ही पकाना जानते होंगे। मगर इस लड़कीने मेरी राय बदल दी। सारा दिन क्या करती रहती है ? बेकार बैठी रहती होगी, और माँको याद करती रहती होगी।

किरपी—नहीं बेटा, बड़ा काम करती है। कभी दीवालें लीपती है, कभी सीना-परोना ले बैठती है, कभी नदीके किनारे कपड़े धोने चली जाती है। सुबह-साम खाना तैयार करती है। मुझे तो कोई काम करने नहीं देती। मैं तुम्हारा खाना ही यहाँ लेकर आती हूँ, बाकी सारा काम अपने हाथसे करती है, और खुसी रहती है।

कुँवर साहबने दिलचस्पी लेते हुए पूछा,—यह लरजाँ कुछ पढ़ी-लिखी भी है या नहीं ?

किरपी—(सिर हिलाकर) नहीं।

कुँवरको अफ़सोस हुआ, सिर झुकाकर खाना खाने लगे।

उधर लरजाँके लिए प्रतीक्षाका एक एक पल एक एक सालसे कम न था। दरवाज़ेपर खड़ी सोचती थी—देखूँ, आज क्या कहते हैं ? दिल बेचैन था, चाहती थी, किरपी झट-पट लौट आए। कभी अन्दर जाती थी, कभी फिर बाहर चली आती थी, मगर किरपी आती दिखाई न देती थी। जाने आज कहाँ बैठ रही है ? पहले तो इतनी देर कभी न होती थी, आज ही धीरे धीरे चलने लगी। आख़िर अन्दर जाकर और मुँह फुलाकर चूल्हेके पास बैठ गई, कि अब न उठूँगी। मगर दो ही मिनट बाद ख़्याल आया, शायद आ रही हो, चलकर देखूँ। लेकिन, बाहर आकर देखा तो उसका अभी पता न था। लरजाँ हताश होकर फिर अन्दर चली गई और बैठ गई।

लेकिन अन्दर बैठना आसान न था; दो ही मिनटमें फिर दरवाज़े पर थी। इतनेमें किरपी सामने आती दिखाई दी। लरजाँका कलेजा धड़कने लगा। किरपीने आकर जूठे बरतन झोंपड़ेमें रख दिये और सुस्ताने लगी। लेकिन, लरजाँके दिलको चैन न था। उधर किरपी कुछ बोलती न थी। लरजाँ सोचती थी, कैसे पूछूँ। आख़िर बहाना बनाकर बोली—क्यों किरपी, आजका खाना कैसा था? मुझे अंदेसा है, आज पसन्द न किया होगा, जरा आँच तेज हो गई थी, क्यों?

किरपीका दम चढ़ गया था। हाँपते हाँपते बोली—बहुत पसन्द किया बेटी! कहते थे—मुझे मालूम न था पहाड़ी लड़कियाँ भी ऐसा स्वादु खाना पका सकती हैं। बहुत परसंसा की, बड़े खुसी हुए। सारा खाना खा गए, जरा भी बाकी नहीं छोड़ा। बरतन खाली हैं। और खाना होता, तो और भी खा जाते।

लरजाँकी आँखें चमकने लगीं। चेहरेका रंग निखर आया, बोली—कुछ और भी कहते थे क्या?

किरपी—पूछते थे, क्या पढ़ना भी जानती है या नहीं। मैंने कह दिया 'नहीं'।

लरजाँ उदास हो गई। कई दिन सोचती रही। आख़िर एक दिन उसने पड़ोसके लड़के रामभजनूको बुला भेजा। यह लड़का चौदह-पन्द्रह सालका था और यहाँसे चार मीलकी दूरीपर एक मिडिल स्कूलमें पढ़ता था। सवेरे जाता था, साँझको लौट आता था। लरजाँने सोचा, उससे क्यों न पढ़ूँ। गरीब है, चार पैसेके लोभमें पढ़ा दिया करेगा। बोली—क्यों रामभजनू मेरा एक काम करोगे?

रामभजनूने समझा, बाज़ारसे कुछ मँगवाना होगा। उसने फ़ौरन जवाब दिया—लाओ क्या ला दूँ?

लरजाँ—लाना कुछ नहीं। मैं पढ़ना सुरू करूँगी। तुम मुझे रातके बकत हिन्दगी पढ़ा दिया करो। एक रुपया महीना मिलेगा। पढ़ जाऊँगी, तो इनाम अलग। बोलो, पढ़ा जाया करोगे?

रामभजनूने एक रुपया महीनाकी बात सुनी तो उसे दुनियाका राज मिल गया। बोला—पढ़ा दिया करूँगा। कबसे पढ़ोगी? आजसे या कलसे?

लरजाँ—कलसे। पहली किताबकी क्या किम्मत है? पैसे ले जाओ, कल आते बकत खरीद लाना।

लरजाँने एक आना दे दिया और उसे अच्छी तरह कह दिया कि वर्ण-माला लाना भूल न जाना। रामभजनू घर पहुँचा तो उसके पाँव ज़मीनपर न पड़ते थे। चारों तरफ़ नाचता फिरता था। चारों तरफ़ गाता फिरता था। उसके होंठोंसे मुस्कराहट फूट फूटकर निकल रही थी। कहता था, अब क्या परवाह है, एक रुपया महीना मिलेगा। उसके माँ-बाप भी उसकी खुशीमें शामिल थे! ग़रीबोंके लिए बेटेकी यह नौकरी तहसीलदारीसे कम न थी। उसकी तरफ़ देखते थे और फूले न समाते थे, आज उनका बेटा नौकर हो गया था। आज उसने कमाना शुरू कर दिया था। हर महीने एक रुपया कमा लिया करेगा। इतनी छोटी उम्रमें मास्टर बन गया! कितने भाग्यशाली थे वे! ज़मीनकी मिट्टी आसमन पर पहुँच गई थी।

दूसरे दिन से लरजाँने पढ़ना शुरू कर दिया।

८

उधर कुँवर साहब अपनी किताब लिखनेमें लीन थे। सारा दिन लिखते रहते थे। कभी कभी रातको भी लिखते थे। पहाड़ी लोग किस तरह रहते हैं, जीवन किस तरह गुज़ारते हैं क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, उनके रीति-रिवाज क्या हैं; त्योहार क्यों कर मनाते हैं, इन सब बातोंका पूरा पूरा वर्णन

करते थे। दोपहरको खाना खाकर निकल जाते और जंगलमें नीचे उतरकर नदीके किनारे बैठ जाते। यहाँ पानीके किनारे एक बहुत बड़ा पत्थर था, वही उनकी कुरसी थी वही उनका मेज़ था। उसपर बैठकर पानीका शोर सुनते थे, ऊपर चारों तरफ़ हरे-भरे जंगलकी तरफ़ देखते थे और फिर लिखनेमें मग्न हो जाते थे। प्रकृतिके इस मनोहर एकांतमें बैठकर उनके मनको जो एकाग्रता मिलती थी, वह अपने राज-महलोंके भीतर कमरोंमें भी न मिलती थी। और फिर, यहाँ अपने आप लिखनेको जी चाहता था। मज़मून अपने आप आकर सामने खड़ा हो जाता था। उसे बुलानेकी ज़रूरत न पड़ती थी। क़लम एक बार चलना शुरू होता, तो फिर रुकता ही न था, यहाँ तक कि शामका अँधेरा छा जाता और शब्द दिखाई देना बन्द हो जाते। तब कुँवर साहब उठकर ऊपर चले आते और अपने झोंपड़ेमें पहुँच जाते, जिसमें अब उनकी ज़रूरतकी सब चीज़ें,—लैम्प, तौलिए, खूँटी, कम्बल, चादरें मौजूद थीं। इतनेमें किरपी खाना ले आती। कुँवर साहब खाते खाते उससे बातें भी करते जाते थे। कभी पूछते—तुम्हारे यहाँ ब्याह कैसे होता है; कभी पूछते बाल-बच्चा पैदा होनेपर तुम लोग क्या करते हो? कभी भूतोंकी कहानियाँ सुनते, कभी खेतोंमें घूमते, कभी मन्दिरमें चले जाते और पूजा करनेके पहाड़ी तरीक़े देखते। कभी कभी पहाड़ी लोग उनके पास आ बैठते और इधर-उधरको बातें करते। इसी तरह कई महीने बीत गए और किताबका लिखना जारी रहा।

एक दिन किरपी बीमार हो गई। लरजाँने सोचा, किसी दूसरे आदमीके हाथ खाना भेज दूँ। मगर सब लोग अपने अपने कामपर चले गए थे। विवश होकर खुद थाल उठाकर चली, तो पाँव उठते न थे। सोचती थी, उनके सामने कैसे जाऊँगी? उसे उनके सामने जाते शर्म आती थी, मगर फिर भी चली जा रही थी। उधर कुँवर साहब सोचते थे, आज किरपीको क्या हो गया, अभी तक नहीं

आई! आज उनको अपनी किताबका सबसे दिलचस्प और रंगीन भाग, ' पहाड़पर प्रेम ' लिखना था। वे चाहते थे, जितनी जल्दी हो सके, घरसे खाना खाकर निकल जाएँ, और उस अध्यायको पूरा कर लें। यह अध्याय उनकी किताबकी जान था। आज ही वे जल्दी चले जाना चाहते थे, आज ही किरपीके आनेमें देर हो गई। कुँवर साहब झोंपड़ेके दरवाज़ेपर खड़े उसकी राह देखे रहे हो, और झुंझला रहे थे। इतनेमें वह दूर फ़ासलेपर आती दिखाई दी। मगर यह वह तो न थी। न वह चाल, न वह क़द। कुँवर साहबने ध्यानसे देखा। एकाएक उनके शरीरमें बिजली-सी दौड़ गई—यह किरपी न थी, लरजाँ थी।

कुँवर साहबका कलेजा धड़कने लगा। अन्दर जाकर चुपचाप तख़्त-पोशपर बैठ गए और मीठे विचारोंकी मीठी दुनियामें गुम हो गए।

लरजाँ बाहर आकर दरवाज़ेपर खड़ी हो गई। उसका साया देखकर कुँवर साहबने कहा—क्यों किरपी, आज क्या हो गया? बहुत देरमें आई। चली आओ अन्दर।

कुँवरने यह झूठ क्यों बोला, यह वे न समझते थे।

लरजाँने जवाबमें बोलना चाहा मगर उसकी ज़बान न खुली। क्यों, यह वह भी न समझती थी।

कुँवर साहब—(ऊँची आवाज़से) चली आओ। बाहर क्यों रुक गई? आज मुझे बड़ा काम है, खाना खाते ही भाग जाऊँगा। ज़रा जल्दी करो, देर न हो जाए।

कुँवर साहबकी आवाज़में कँपकँपी थी। मगर इससे ज़्यादा कँपकँपी उनके दिलमें थी। यह उनके लिए नया अनुभव था। ऐसा आजतक कभी न हुआ था। आंख, होंठ कान सब लाल हो गए।

बाहरसे एक मीठी और महीन आवाज़ आई—आज किरपी बीमार है, मैं आई हूँ।

कुँवर साहबने ऐसा ज़ाहिर किया जैसे उनको मालूम ही नहीं कि यह कोई दूसरी स्त्री है। हैरानसे होकर बोले—तू कौन है?

यह कहते कहते कुँवर साहब बाहर निकल आए और चौंककर बोले—कौन लरजाँ! अरे तुमने क्यों तकलीफ़ की? मुझे कहलवा भेजतीं, मैं वहाँ आ जाता। यह तुमने बहुत ज़बरदस्ती की।

लरजाँने शरमसे ज़मीनकी तरफ़ देखते देखते जवाब दिया—इसमें जबरदस्ती काहेकी है? जरा-सा तो फासला है।

कुँवर साहबने उसके शरमसे तपते हुए लाल चेहरेकी तरफ़ देखा और कहा—लाओ, थाल मुझे दे दो। तुम थक गई होगी।

यह कहकर कुँवर साहबने हाथ आगे बढ़ा दिए। मगर लरजाँ दो क़दम पीछे हट गई और थालको छातीसे लगाकर बोली—थक क्यों जाऊँगी? कोई बीमार तो नहीं हूँ।

कुँवर साहब मुस्कराकर एक तरफ़ हट गए और लरजाँको जानेका रास्ता देते हुए बोले—अच्छा भई, माफ़ कर दो, भूल हो गई।

लरजाँ अन्दर जाकर खड़ी हो गई और चारों तरफ़ देखने लगी कि थाल कहाँ रक्खूँ। कुँवर साहबने अन्दर आकर यह देखा और कहा—तख़्त-पोशपर रख दो। खड़ी क्यों हो?

मगर तख़्त-पोशपर कपड़ा बिछा था। लरजाँने वह कपड़ा ज़रा-सा हटाकर तह कर दिया और उस ख़ाली जगहपर थाल रख दिया। इसके बाद धीरेसे पूछा—पानी कहाँ है? हाथ धुला दूँ।

कुँवर साहबने उङ्गलीसे कोनेकी तरफ़ इशारा किया। इस समय उनकी उंगली भी कांप रही थी।

लरजाँने घड़ेसे पानी उँड़ेला और कुँवर साहबके हाथ धुलाए। तब कुँवर साहब खाना खाने लगे। लरजाँ बाहर जाकर धूपमें खड़ी हो गई और झोंपड़ेको बड़े ध्यानसे देखने लगी। कुँवर साहबने पुकार कर कहा—ज़रा पानी तो दे जाना।

लरजाँ लोटेसे पानी देकर फिर बाहर जाने लगी। कुँवर साहबने पानीका गिलास हाथमें लिया और मुस्कराकर कहा—बाहर भागी जाती हो। क्या तुम्हें मुझसे डर लगता है?

यह कहकर वे पानी पीते पीते कनखियोंसे लरजाँकी तरफ़ देखने लगे। लरजाँ सिर झुकाए वहीं रुक गई। इस समय वह बड़े असमंजसमें पड़ी हुई थी। दिल कहता था, ठहर जा, शरम कहती थी, भाग जा। न बाहर जा सकती थी न वहाँ ठहर सकती थी। थोड़ी देर बाद बोली—डर तो नहीं लगता। आपसे डर काहेका?

इस समय उसकी आवाज़ ऐसे काँप रही थी जैसे कोई सितारके तारोंको उङ्गलीसे छेड़ दे और वे हिलने लगें। कुछ इसी तरहका कंपन लरजाँकी आवाज़में था।

कुँवर साहबने भातसे मुँह भर लिया और खाते खाते कहा—डर नहीं लगता तो काँपती क्यों हो?

लरजाँ—जाड़ा लगता है।

कुँवर—तो वह कम्बल पड़ा है, ओढ़कर बैठ जाओ। क्या मजाल जो फिर जाड़ा लग जाए। बड़ा गरम है।

लरजाँने ज़मीनकी तरफ़ देखते हुए चोर नज़रसे कम्बलकी तरफ़ ताका और चुपकी खड़ी रही। कुँवर साहब बोले—कम्बल ले लो। जाड़ा न लगेगा।

मगर जब लरजाँ अब भी अपनी जगहसे न हिली तो बोले—यह अजीब शरम है। सरदीसे काँपती रहोगी मगर कम्बल न ओढ़ोगी।

लरजाँका मुँह शरमसे लाल हो गया। क्या कहती, क्या न कहती। कुँवर साहब धीरे धीरे आगे बढ़ चले आ रहे थे। लरजाँ सोचती थी कि औसर मिले तो भाग खड़ी हूँ। लेकिन कुँवर साहबने अभी अपना आधा खाना भी ख़त्म न किया था। मुँहका भात निगलकर बोले—भई, तुम कम्बल न ओढ़ोगी तो मैं खाना न खाऊँगा। यह कहे देता हूँ।

यह कहकर उन्होंने खानेका थाल परे सरका दिया और कहा—मैं आदमी हूँ, राक्षस नहीं हूँ कि तुम सरदीसे काँपो और मैं मज़ेसे

खाना खाता रहूँ। या तो कम्बल ओढ़ो या थाल उठा लो। बोलो, दोनोंमेंसे क्या मंजूर है? जो तुम्हें मंजूर, वह मुझे मंजूर।

लरजाँ पछताती थी कि नाहक़ जाड़ेका नाम लिया। अब क्या करूँ? उन्होंने एक बात पकड़ ली, अब उसे छोड़ते ही नहीं हैं। निचला होठ दाँतों तले दबाकर बोली—आप खाना खाइए। मैं जाड़ेसे मर न जाऊँगी।

कुँवर—तुम थाल उठा लो। मैं भी भूखसे मर न जाऊँगा।

लरजाँको हँसी आ गई, बोली—यह आपकी जबरदस्ती है। कोई देख लेगा, तो क्या कहेगा?

कुँवर—क्या कहेगा? कम्बल ओढ़कर बैठना कोई पाप नहीं है। और अगर यह पाप है तो यह पाप सारी दुनिया करती है। बोलो, मैं सच कहता हूँ या झूठ? मैं भी हर रोज़ ओढ़ता हूँ।

लरजाँके पास इसका जवाब न था, चुपचाप ज़मीनकी तरफ़ देखती रही, और मन ही मन मुस्कराती रही। समझती सब कुछ थी, बोलती कुछ भी न थी। ऐसे समयमें कोई दूसरी स्त्री होती, तो वह भी न बोल सकती।

कुँवर साहबने बनावटी रुखाईसे कहा—तो अब उठ बैठूँ? लो हाथ धुला दो और जाओ। किरपी अकेली होगी।

लरजाँने सहमकर कहा—आप खाना तो खा लें। क्या आज भूखा रहनेका विचार है आपका?

कुँवर साहब—न भई, हमें मालूम हो गया, तुम हमें खाना खिलाना नहीं चाहतीं। वरना ज़रा-सी बात है, मान लेतीं। हमारा जी खुश हो जाता।

यह कहते कहते कुँवर साहब उठकर खड़े हो गए और तख़्त-पोशसे नीचे उतरने लगे। यह देखकर लरजाँने जल्दीसे कम्बल उठा लिया और बोली—लो भई, अब तो खा लो। मैंने हार मान ली।

कुँवर साहबने देखा कि मैदान मार लिया, तो बोले—तुम ओढ़ लो, फिर खाऊँगा, पहले नहीं।

लरजाँने कम्बल ओढ़ लिया, मगर शरमसे मरी जाती थी। उधर कुँवर साहब खुशीसे किसी दूसरी ही दुनियामें थे। कितनी देर तक शौक़की दृष्टिसे लरजाँकी तरफ़ देखते रहे। मगर उसने सिर न उठाया, न उनकी तरफ़ देखा, न हिली-डुली। ऐसा मालूम होता था जैसे वह जीती जागती स्त्री नहीं, चीनीकी निर्जीव मूर्ति है; जैसे किसी दूकानदारने किसी गुड़ियाको कम्बल उढ़ाकर दूकानमें रख दिया है।

९

उस दिन कुँवर साहबका दिल किताबमें न लगा। पहले तो बारबार कुछ सोचते थे और मुस्कराते थे, बादमें ख्याल आया कि मैंने भूल की। मुझे यह करना उचित न था। लरजाँ दिलमें क्या कहती होगी? यही कि कितना ओछा और थुड़दिला है, चार पैसेसे मदद क्या कर दी सिरपर चढ़ बैठा। कभी कभी ख्याल आता, कहीं नाराज़ न हो गई हो। जाने मुझे क्या हो गया था, मेरे सिरपर कैसी सनक सवार हो गई थी। अपने-आपेमें ही न रहा। लरजाँ ज़रूर नाराज़ हो गई होगी। अगर नाराज़ हो गई है तो कैसे मनाऊँगा?—इसके आगे कुँवर साहबको कोई रास्ता दिखाई न देता था। सारा दिन असमंजसमें पड़े रहे। एक शब्द भी न लिखा गया। सुबह जैसे गए थे, शामको वैसे ही लौट आए। उनको भय था कि अब लरजाँ आप खाना न लाएगी, किसी दूसरेके हाथ भेज देगी और उनकी दुनिया, दुनियाकी बहारोंसे खाली हो जाएगी।

लेकिन उनके सारे अंदेशे ग़लत निकले। इधर दिएमें बत्ती पड़ी उधर लरजाँ खाना लेकर आ गई। कुँवर साहबने देखा उसके मुँहपर ज़रा क्रोध, ज़रा नाराज़गी न थी। यह देखकर उनकी छातीसे बोझ-सा उतर गया, मुस्कराकर बोले—मेरा ख़्याल था, तुम इस समय आप न आओगी, किसी दूसरेको भेजोगी।

लरजाँने खानेके थालको तख़्त-पोशपर रख दिया और सीधी खड़ी होकर जवाब दिया—क्यों?

कुँवर—अब इस 'क्यों' का जवाब क्या दूँ? मेरा ख़्याल था, तुम न आओगी। ज़रा पानी ले आओ, हाथ धो लूँ।

लरजाँने कुँवर साहबके हाथोंपर पानी डालते हुए कहा—अगर आप आज्ञा दें, तो कलसे मैं न आऊँ। किसी दूसरेको भेज दूँ। मैं तो आपके हुक्मकी लौंडी हूँ।

कुँवरने तौलिएसे हाथ पोंछते हुए जवाब दिया—मेरा यह मतलब न था। मैं डर रहा था, कि कहीं तुम मुझसे नाराज़ न हो गई हो। लरजाँ, सुबह मुझसे बड़ी मूर्खता हुई। मैं चाहता हूँ तुम मुझे माफ़ कर दो, अब ऐसी भूल न होगी। तुम्हें शायद विश्वास न हो, मैं सारा दिन पछताता रहा हूँ।

लरजाँने जाकर घड़ा उठा लिया और सुनी-अनसुनी करके बोली—आप खाइए, मैं पानी भर लाऊँ।

कुँवर—रातका समय है, अकेली कैसे जाओगी? तुम रहने दो, मैं आप भर लाऊँगा। इस समयके लिए तो काफ़ी होगा। है या नहीं?

लरजाँ—कलका बासी है, यह न पीजिए। अभी ताज़ा भर लाती हूँ। रात है तो क्या हुआ, कोई मुझे उठा न ले जाएगा। आप खाइए, मैं अभी आई ज़रासी देरमें।

कुँवर साहब रोकते ही रह गए, मगर लरजाँने मुस्कराकर उनकी तरफ़ देखा और चली गई। कुँवर साहब खाना खाते जाते थे और

मनमें सोचते जाते थे। कहाँ सिकंधीर और कहाँ यह पहाड़ी जगह ! कहाँ मैं और कहाँ यह लड़की ! कुदरतके खेल निराले है। ऐसी सुन्दर लड़की मैंने आज तक नहीं देखी, और फिर कितनी भोली है। ज़रा-सी धमकी दी, जाकर चुपचाप कम्बल ओढ़ लिया। अब पानी भरने चली गई है। किरपीने तो कभी न कहा था कि यह पानी बासी है, न पियो। इसे ज़रूर मेरा ख्याल है। न होता तो इस समय कभी न आती। आती तो मुँह फुलाए होती। सादा पोशाकमें भी परी मालूम होती है !

इतनेमें लरजाँ घड़ा उठाए हुए अन्दर आ गई और बोली—लो देख लो, कितनी सीघर ले आई।

यह कहकर उसने घड़ा कोनेमें रख दिया और ओढ़नीसे मुँह पोंछकर लोटा पानीसे भरने लगी।

कुँवरने खाते खाते कहा—दौड़ती हुई आई हो ना ?

लरजाँ—बिल्कुल नहीं। इस तरह हौले हौले आई हूँ।

लरजाँने धीरे धीरे चलकर दिखाया। कुँवर साहब क़हक़हा लगाकर हँस पड़े। अचानक उनकी दृष्टि लरजाँकी ओढ़नीपर पड़ी। बोले—यह तो भीग गई है। कहीं बीमार न हो जाना।

लरजाँने पानीसे गिलास भर कर लोटा तख़्त-पोशपर रख दिया और ओढ़नीका भीगा हुआ कोना निचोड़ते हुए कहा—लो, अब बीमार न हूँगी। तुम्हारे हुकमोंने तो तंग कर दिया बाबा !

कुँवरने एक ही घूँटमें गिलासका सारा पानी ख़त्म कर दिया और और पानी लेनेके लिए गिलास बढ़ाते हुए शरारती स्वरमें कहा—मेरा ख़्याल है, कि अभी तक सारा पानी नहीं निचुड़ा।

लरजाँ—(तुनककर) निचुड़ गया है।

कुँवर—जो बाक़ी है मैं निचोड़ दूँ ? ज़रा इधर आओ तो मेरे पास।

लरजाँ—(मुस्कराकर) तुम किरपा करो मुझपर !

लरजाँने गिलास पानीसे भर दिया और कुँवर साहब खाना खाने लगे। कुछ देर सन्नाटा रहा। वह सन्नाटा जिसमें कोई भी नहीं बोलता—जब हमारी बोलनेकी शक्ति जाती रहती है। सहसा कुँवरने चौंककर पूछा—अरे, किरपीका क्या हाल है ? यह तो तुमने बताया ही नहीं।

लरजाँ—जूड़ीसे बेहोश पड़ी है।

कुँवर—कुछ दवा भी दी है या नहीं ?

लरजाँ—अभी तो नहीं दी।

कुँवर—वह मेरा बैग उठा लाओ।

लरजाँने हाथ धुलाए। कुँवरने रूमालसे हाथ-मुँह साफ़ करते हुए कहा—दो गोलियाँ देता हूँ। जाकर अभी गरम पानीके साथ खिला देना। कल बुख़ार उतर जाएगा।

लरजाँने आश्चर्यसे कुँवरकी तरफ़ देखा, और आँखों ही आँखोंमें पूछा, क्या तुम डाकदर भी हो ? और बैग लाकर सामने रख दिया। कुँवर बैग खोलकर वेजीटेबल पिल्सकी शीशी देखने लगे और जो कुछ हाथ आता उसे उठाकर बाहर रखने लगे। इतनेमें लरजाँने एक लम्बी-सी लोहेकी चमकदार चीज़ हाथमें पकड़ ली और उसे उलट-पुलट कर देखते हुए पूछा—यह क्या है ?

कुँवर साहबने एक हाथसे बैगके अन्दर टटोलते हुए जवाब दिया—यह टार्च है, टार्च।

लरजाँ—टार्च क्या होता है ?

कुँवरने उसकी उँगली एक बटनपर रखकर कहा—ज़रा दबाओ।

और आप फिर बैगकी चीज़ें उलटने-पुलटनेमें लीन हो गए।

लरजाँने दबाया। एकाएक वह जल उठा। लरजाँने डरकर उसे ज़मीनपर रख दिया और आप दो क़दम पीछे हट गई। टार्च बुझ गया। कुँवरने मुस्करा कर कहा—देखा, यह भूत-विद्या है। ख़बरदार,

फिर हाथ न लगाना। वर्ना भूत आकर रोशनी कर देगा, और तुम डरकर बाहर भाग जाओगी।

लरजाँने टार्चको उठाकर फिर बटन दबाया और उसकी तेज़ रोशनी देख देखकर बच्चोंकी तरह खुश होने लगी। कभी जलाती थी, कभी बुझाती थी, कभी कुँवरकी तरफ़ देखकर मुस्कराती थी और कहती थी—यह भूत-विद्या मुझे भी आ गई। यह देखो रोशनी हो गई, यह देखो रोशनी बुझ गई। और यह देखो, मैं डरकर बाहर नहीं भाग गई।

इतनेमें कुँवरने वेजीटेबलकी दो गोलियाँ काग़ज़में लपेटकर लरजाँको दे दीं और कहा—गरम पानीके साथ आज रातको सोते समय खिला देना। समझ गई?

लरजाँने पहले गोलियाँ खोल कर देखीं, फिर ओढ़नीके कोनेमें बाँध लीं, फिर बोली—समझ गई। और वह तेल गिर क्यों नहीं पड़ता?

कुँवर साहब बैगकी सब चीज़ें उसमें ठूँस ठूँस कर रखने लगे, और लरजाँकी तरफ़ देख देखकर मुस्कराने लगे। मगर लरजाँने यह सब कुछ न देखा, और टार्चकी रोशनी बाहरके पेड़ोंपर फेंकते हुए और दिलचस्पी लेते हुए पूछा—इसमें तेल कहाँ है? और यह तेल गिर क्यों नहीं पड़ता?

कुँवर—इसमें तेल नहीं डालते। यह तेलके बिना जलता है।

लरजाँ—वाह! तेलके बिना कैसे जलता है? भला तेलके बिना भी रोशनी हो सकती है?

कुँवर—हो सकती है या नहीं, इसका तो पता नहीं। पर हो रही है। अब तुम न मानो तो कोई क्या करे? इसके अन्दर बैटरी है, उससे...

लरजाँने गला छुड़ानेके लिए कहा—चलो भई, मान लिया, हो जाती होगी। अब तुमसे झगड़ा कौन करे? तुम्हें झगड़ेकी बहुत आदत है।

यह कहकर उसने टार्च हाथसे रख दिया, लेकिन उसकी आँखें

उसीपर जमी थीं। कुँवर साहब भाँप गए कि टार्च लरजाँको पसन्द आ गया है, बोले—ले जाओ। कभी अँधेरेमें बाहर जाना पड़ता होगा। बड़े कामकी चीज़ है। मैं और मँगवा लूँगा।

मगर लरजाँने टार्च न लिया और जूठे बर्तन उठाकर चलनेको तैयार हो गई। कुँवरने एक हाथसे उसे रुकनेका इशारा किया, दूसरे हाथसे लैम्प बुझाते हुए बोले—चलो, मैं भी चलता हूँ। किरपी कहेगी मुझे देखने भी नहीं आया। तुम्हें पहुंचा आऊँगा, उसे देख आऊँगा।

थोड़ी देर बाद रातके अँधेरेमें टार्चकी सहायतासे दोनों पत्थरोंसे बचते हुए जा रहे थे। अचानक कुँवर साहबका पाँव फिसल गया, गिरते गिरते बचे। लरजाँने बचपन और सादगीसे अपना हाथ बढ़ाकर कहा—तुम तो गिर ही गए थे। लो, मेरा हाथ पकड़ लो।

कुँवरने लरजाँका हाथ पकड़ लिया और पाँव जमा जमाकर चलने लगे। ठीक उसी तरह जिस तरह आशा निराशा लोगोंका हाथ थाम कर उन्हें चलाती है।

कुँवरने कहा—तुमने मेरा हाथ पकड़ा है, अब छोड़ न देना। सारी उम्र पकड़े रहना।

लरजाँने हाथ छोड़ दिया और कहा—धत्।

१०

कुछ तो इसलिए कि पहाड़पर चोरी नहीं होती, कुछ इसलिए कि कुँवर साहब बेपरवाह आदमी थे, जब वे बाहर जाते थे, तो किवाड़ बन्द कर जाते थे, ताला न लगाते थे।

एक दिन शामको किताब लिख कर लौटे तो झोंपड़ा शीशेकी तरह चमक रहा था। हरएक चीज़ क़रीनेसे रक्खी थी, फ़र्श साफ़ था, दीवारें मिट्टीसे लेपी हुई थीं, छतपर जालेका नाम न था। कल यही झोंपड़ा मैला कुचैला था, आज नहा धोकर साफ़-सुथरा बन गया था। कल ऐसा मालूम होता था कि रो रहा है, आज ऐसा मालूम होता था, कि मुस्करा रहा है। आकाश-पातालका अन्तर पड़ गया था। काया ही पलट गई थी।

कुँवर साहब देखते ही समझ गए कि यह लरजाँका काम है। किरपीसे यह आशा न थी, न उसे सफ़ाईका इतना ख्याल था, न वह अभी इतनी दूर चलकर आ सकती थी। ज़रूर मेरी अनुपस्थितिमें लरजाँ यहाँ आकर सफ़ाई कर गई है। कुँवर साहबके सामने नया संसार खुल गया। पहले समझते थे, लरजाँ रूपवती है, भोली-भाली है, अब मालूम हुआ सुघड़ और घर-गृहस्थीके कामोंमें भी कुशल है। बिना कहे काम करती है शौक़से करती है। कुछ ही घंटोंमें मिट्टीके झोंपड़ेको शीशा बना दिया। इस शीशेमें उन्होंने लरजाँकी जो तस्वीर देखी, वह कितनी मनमोहनी थी, कितनी चित्ताकर्षक। कुँवर साहबपर जादू हो गया।

एक सप्ताह इसी तरह रंगीन सुपनोंमें बीता। इसके बाद किरपीका बुख़ार उतर गया और लरजाँका आना-जाना बन्द हो गया। अब फिर किरपी खाना लेकर आती थी। कुँवर साहबको खानेमें वह पहले-सा स्वाद ही नहीं आता था। पहले उनका भोजन घंटे-भरसे कममें समाप्त न होता था, धीरे धीरे खाते थे और शौक़से खाते थे। अब दस ही मिनटमें हाथ धोकर उठ बैठते थे। पहले थालकी हरएक चीज़ समाप्त कर देते थे, अब कुछ खाते थे, कुछ छोड़ देते थे। एक दिन लरजाँने पूछा—ये खाना क्यों छोड़ देते हैं? पहले तो खूब मजेसे खाते थे।

किरपी—अब भी मजेसे खाते हैं।

लरजाँ—मजेसे खाक खाते हैं, आधा थाल तो वापस आ जाता है। कुछ बीमार तो नहीं हैं ?

किरपी—बीमार तो नहीं हैं। हाँ, काम ज्यादा करते हैं, हर वखत कुछ सोचते रहते हैं।

लरजाँ—काम करनेसे भूख तो नहीं कम हो जाती, उलटा बढ़ जाती है। जरूर कुछ बीमार होंगे। आज खाना लेकर मैं जाऊँगी। देखूँ, क्या बात है जो खाना कम खाते हैं।

किरपीने मुस्कराकर कहा—सायद तुम्हें कुछ बता दें, मुझसे तो कुछ कहा नहीं।

उस दिन फिर लरजाँ खाना लेकर गई। कुँवर साहब लिखे हुए काग़ज़ नम्बरवार लगाकर बम्बईके किसी प्रेसको भेजनेकी तैयारियाँ कर रहे थे। उनकी आधी पुस्तक समाप्त हो चुकी थी। लरजाँको आते देखकर चौंक पड़े और मुस्कराकर बोले—अरे! आज फिर किरपी बीमार हो गई क्या ? यह बुढ़िया अब बहुत तंग करने लगी। इसे कहो, बार बार बीमार न हो। इस तरह काम न चलेगा। तुम्हें खाना लाना पड़ेगा। क्या बीमारी है उसे अबके ?

लरजाँने थाल रखनेके लिए तख़्त-पोशपर जगह बनाते हुए कहा—क्यों गरीबको फिर बीमार करते हो, अभी तो तपस्या करके उठी है। पहली कमज़ोरी भी दूर नहीं हुई। अबके बीमार हुई, तो छै महीने तक न उठेगी।

कुँवर—किसीके कहनेसे क्या होता है ? आज तुम खाना लेकर आई, तो मैंने समझा, शायद फिर बीमार हो गई। अगर वह बीमार नहीं हैं, तो आज तुम कैसे आ गई ? पर हमारा तो जलसा हो गया। वह रोज़ न आए, हमारा रोज़ जलसा हो जाया करे।

लरजाँ—(शरमाकर) चलो, हमें न छेड़ो। अपना खाना खाओ और अपनी किताब लिखो।

कुँवरने अपने कागज़ोंको चारपाईपर रख दिया और तख़्तपोशपर थालके सामने बैठकर कहा—लाओ, हाथ धुला दो।

लरजाँने हाथपर पानी डालते हुए कहा—यह आप आजकल खाना क्यों कम खाते हैं, भूख आधी भी नहीं रही पहलेसे।

कुँवरने तौलिएसे हाथ पोंछे और लरजाँकी आँखोंमें आँखें डाल कर उत्तर दिया—वाह, कम कौन खाता है, खूब डटकर खाता हूँ! यहाँ पहाड़पर आकर तो मेरी भूख बढ़ गई। जब आया था, तब दुबला-पतला था। अब मोटा-ताज़ा हो गया हूँ।

कुँवर साहब सचमुच मोटे-ताज़े हो गए थे, मुँह भी चिकना चिकना निकल आया था, शरीर भी भर गया था। मगर लरजाँ यह बात ज़बानपर न लाना चाहती थी; बोली—यह तुम्हारा भरम है। जैसे आए थे, वैसे ही हो। कहने लगे, मोटा हो गया हूँ। ज़रा शीशेमें मूं तो देखो।

कुँवरने परांठेसे एक टुकड़ा तोड़ा ही था कि लरजाँने कहा—यह नहीं, पहले कढ़ी और भात खाओ। आज कढ़ी बहुत अच्छी बनी है।

कुँवरने मुस्कराकर परांठा छोड़ दिया और चावलोंमें कढ़ी डालकर बोले—अगर किरपी भी इसी तरह खिलाती तो सारा खाना खा जाता।। वह चुपचाप बैठी रहती है। अब खाना तुम ही लाया करो। वह केवल लाती है, तुम लाती भी हो, खिलाती भी हो।

यह कहकर वे भात खाने लगे। लरजाँने जवाब न दिया।

कुँवरने पूछा—क्या सोचती हो?

लरजाँने उत्तर दिया—अगर मैं खाना लाऊँगी, तो किरपी अपने दिलमें क्या कहेगी? इतना सोच लो।

कुँवरने चावल गलेसे उतारते हुए कहा—क्या कहेगी? वह खाना लाए या तुम लाओ। इससे क्या फ़र्क़ पड़ जाएगा? मैं न तुमको इनाम देता हूँ न उसको। आज कढ़ी सचमुच बहुत अच्छी पकी है—अगर तुमने बनाई है, तो शाबाश।

लरजाँ—बड़ी बदनामी होगी। लोग तो अब भी भाँत भाँतकी बातें बना रहे हैं। तानोंके तीर ऐसे मारते हैं कि कलेजा छलनी हो जाता है।

कुँवर—मेरे सामने आकर तो कोई चूँ भी नहीं करता, पीठपर जो चाहें कहें। लेकिन लरजाँ, इससे हमारा क्या बिगड़ता है? जो बकते हैं, बकने दो, और मस्त रहो। मस्त रहनेमें बड़े फ़ायदे हैं, क्या कहते हैं वह लोग?

लरजाँकी आँखोंमें आँसू आ गए। उसने कहा—बड़ी बेसरमीकी बातें करते हैं। तुमसे डरते हैं, तुम्हारे सामने कोई नहीं बोलता। मगर मेरा किसे 'भौ' है। मेरे सामने सब कुछ कह देते हैं।

कुँवरका हाथका ग्रास हाथमें ही रह गया। क्रोधपूर्ण स्वरमें बोले—क्या कहते हैं, ज़रा बताओ तो—

लरजाँ—(कुँवर की तरफ़ दर्द-भरी आँखोंसे देखकर) अब क्या बताऊँ, क्या कहते हैं? बस इतना काफ़ी है कि सुनकर बदनमें आग लग जाती है, देख लेना किसी दिन खून हो जायगा। मैंने एक छोकरेसे पढ़ना सुरू किया है, यह भी पाप हो गया। सौ सौ दोस निकालते हैं।—तुम खाना खाओ। मैं भी कहाँका पचड़ा ले बैठी!

कुँवरने परांठेका टुकड़ा थालमें रख दिया और कहा—लरजाँ, अब मैं कुछ न खा सकूँगा। मेरी भूख भाग गई है। तुमने पहले क्यों न बताया। बोलो, तुम्हें कौन तंग करता है, मैं उसका खून पी जाऊँगा। लो, तुम नाम बताओ।

लरजाँने कुँवरके बदले हुए तेवर देखे तो घबरा गई। समझ गई, ये कुछ कर डालेंगे। बोली—अभी मुझे कहते थे, बकते हैं तो बकने दो। अब आप मरने-मारनेको तैयार हो गए। भई, मरदोंका भी कोई विसवास नहीं, इधर भी चलते हैं, उधर भी चलते हैं। इनसे परमेसर बचाए।

कुँवर पागलोंकी तरह देर तक हवामें देखते रहे, इसके बाद शांत होकर बोले—तुम रोज़ आया करो, मैं सबसे समझ लूँगा।

लरजाँने कहा—आप खाना खाइए, मैं रोज़ आया करूँगी।

कुँवर साहब फिर खाना खाने लगे। फिर हँसी-दिल्लगीकी बातें छिड़ गईं। फिर लरजाँकी पकाई हुई एक एक चीज़की प्रशंसा होने लगी। लरजाँ फिर शरमाने लगी। कुँवर फिर छेड़ने लगे। प्यार फिर पाँव पसारने लगा।

११

अब ज़रा भी सन्देह न था। वे ही लरजाँको चाहते हों, यह बात न थी। लरजाँ भी उन्हें चाहती थी,—उनके लिए बदनामीसे भी न डरती थी। उनके इशारेपर उसने पढ़ना भी शुरू कर दिया है। उनके झोंपड़ेको रोज़ साफ़ कर जाती है। जो चाहते हैं वही पकाती है। उन्हें अपना पाठ भी सुना जाती है। अब कुँवर साहब भी कभी कभी उसके झोंपड़ेमें चले जाते हैं और घंटों बैठे बातें करते हैं। किताबका मसौदा (हाथलिखी कापी) रजिस्ट्री करके बम्बई भेजनेके लिए पासके शहरमें जाते हैं तो लरजाँके लिए कोई न कोई उपहार ख़रीद लाते हैं। कभी साड़ी, कभी स्लीपर, कभी मोज़े। एक बार एक सुन्दर कम्बल ले आए, दूसरी बार टार्च ले आए। यह दोनों चीज़ें लेकर लरजाँ निहाल हो गई। अब वह आप कह देती है, मेरे लिए यह चीज़ ले आना। कुँवर साहब उसकी हरएक आज्ञाका पालन करते हैं। लेकिन कभी कभी सोचते हैं,—रुपया ख़त्म न हो जाए। ख़र्च पानीकी तरह होता है, आमदनी पैसेकी भी नहीं होती। लेकिन, इस ख़र्चसे एक लाभ भी हुआ कि पहाड़ी लोगोंपर रौब

बैठ गया। सोचते थे, जाने यह कौन है? ज़रूर कोई बड़ा अमीर है, जो इस तरह दिलेरीसे रुपया ख़र्च करता है। संभव है, कोई राजा हो। सब उसकी .खुशामद करने लगे। अब लरजाँ और उनके विरुद्ध ज़बान खोल जाए, इतना दम किसीमें न था। चौधरी तो उनका बिना ख़रीदा हुआ .गुलाम था, हरदम उनका बखान करता रहता था। उसे निश्चय हो गया था कि मेरा भाग्य इनसे ही जागेगा। यह आदमी कोई बड़ा आदमी है। कुँवर साहब अब और भी परिश्रमसे किताब लिखते थे। उन्हें अब इसी पुस्तकपर आशा थी। सोचते थे, अगर पुरस्कार न मिला तो क्या होगा? महाराजसे लड़कर निकला हूँ, अब किस मुँहसे उनके सामने जाऊँगा? लरजाँ उन्हें अभीतक पत्थरोंका सौदागर समझती है। न कुँवर साहबने यह रहस्य उसपर खोला है, न खोलना चाहते हैं। पत्थरोंका सौदागर बननेमें जो आनन्द है वह युवराज बननेमें कहाँ? इसकी शान ही कुछ निराली है।

उधर महाराज पृथ्वीचन्द्र बहादुर कुँवरके चले जानेसे बेहाल हो रहे हैं। उस समय नशे और क्रोधमें आकर आगा-पीछा न सोचा था, अब पछता रहे हैं कि क्या कर बैठे? अगर ज़रा भी सोच-विचार-से काम लेते, तो आज रोना न पड़ता। महारानी भी हर समय परेशान रहती हैं। चारों तरफ़ स्वर्गकी बहारें हैं, बीचमें उनका दिल जलता है। अब उन्हें किसीने मुस्कराते नहीं देखा। ज़रा-ज़रासी बातपर रोने लगती हैं। कोई अच्छी चीज़ नहीं खातीं, कहती हैं, जाने कुँवरको पेटभर खाना भी मिलता है या नहीं। पलंगपर लेटती हैं तो ठंडी आहें भरती हैं, कहती हैं, शायद कुँवरको चारपाई भी न मिलती हो। किसी उत्सवमें शामिल नहीं होतीं। सोचती हैं, जिसका जवान बेटा घरसे निकल गया हो, उसके भाग्यमें हँसना-खेलना कहाँ! मुझे पता लग जाता तो कभी न जाने देती। मेरी आँखोंके दो आँसू उसके पाँवकी जंज़ीर बन जाते। राज-महलोंमें पला है, भगवान जाने कहाँ मारा

मारा फिरता होगा ! उन्हें क्या ? उनको गाना चाहिए, नाच चाहिए, लोगोंकी वाह वाह चाहिए, बस काफ़ी है। घर चाहे नष्ट हो जाए उनकी बलासे। महाराज महारानीके सामने दम नहीं मारते। जानते हैं, मैं बोला और यह गरजी। कभी कभी आप भी आँखें भर लेते हैं। सारे देशमें आदमी छोड़ रक्खे हैं कि ढूँढ़कर पता लाओ। लेकिन, अभी तक कुछ पता नहीं लगा। कुँवर भी माता-पिताको याद करके रो पड़ते हैं। फिर सोचते हैं, यह इनाम मिल जाए, तो घर जाऊँ। ताकि महाराज भी कहें, कि हाँ, बेटा घरसे निकला था, तो कुछ करके लौटा। जैसा ख़ाली हाथ गया था, वैसा ही ख़ाली हाथ नहीं लौट आया। इस तरह लौटूं, कि हिन्दुस्तान भरमें नाम हो जाय, अपने पराए सभी तारीफ़ करें।

एक दिन कुँवर अपनी किताबकी हाथ लिखी कापी भेजनेके लिए डाक-घर गए थे और लरजाँ अपने झोंपड़ेसे कुछ दूर एक पत्थरपर बैठी अपना पाठ याद कर रही थी। उसका झोंपड़ा सड़क और नदीके बीचमें चावलोंके छोटे छोटे खेतोंके किनारे था। ऊपर सड़क थी जो ऊँचे पहाड़के इर्द-गिर्द रस्सेकी तरह लिपटी हुई थी। दूर नीचे नदी बहती थी, जैसे पारेका साँप बल खाता हुआ कहीं छिपनेके लिए भागा-दौड़ा चला जाता हो। इतनेमें सड़कपर एक मोटर दिखाई दिया। लरजाँ मोटर देखकर हमेशा खुश होती थी। उसके दिलमें न जाने क्या क्या विचार पैदा होते थे। वह उसकी तरफ़ टकटकी बाँधकर देखने लगी, और सोचने लगी,—यह अभी पहाड़के चक्करदार रस्तेमें गुम हो जायगा। मैं यहीं बैठी रहूँगी, यह कहींका कहीं जा पहुँचेगा। ग़रीबोंके पास इतने पैसे कहाँ जो ऐसी चीज़ें ख़रीद सकें ? अचानक मोटर सड़कसे नीचे गिर पड़ा। लरजाँके मुँहसे चीख़ निकल गई। वह चाहती थी, किसी तरह मोटरको रोक ले, लेकिन यह बात उसकी ताक़तसे बाहर थी। मोटर बड़ी तेज़ीसे लुढ़कता हुआ नीचे आ रहा था। देखते देखते वह उससे कुछ गज़की दूरी पर आ गया। वहाँ एक बड़ी-सी चट्टान आगेको बढ़ी हुई थी, उसपर मोटरसे एक स्त्री गिरकर रुक गई। मगर मोटर नीचे लुढ़कता हुआ चला गया। कुछ

सामान भी मोटरसे निकल आया था। उसमेंसे कुछ चीज़ें मोटरके पीछे पीछे लुढ़कती हुईं कई पत्थरोंको भी साथ लिये जाती थीं। जो हल्की थीं वे राहमें रुक गई थीं। लरजाँने अपनी किताब वहीं फेंक दी और पत्थरोंपर मज़बूतीसे पाँव जमाती हुई उस चट्टानपर पहुँची जहाँ औरत गिरी थी। लरजाँने झुककर देखा; उसके शरीरपर कोई घाव न लगा था, केवल बेहोश हो गई थी। उसका पहनावा और शक्ल देखकर लरजाँको विश्वास हो गया कि यह किसी बड़े अमीर घरकी लड़की है। वह भागती हुई अपने झोंपड़ेमें गई और किरपीसे बोली—जल्दी मेरे साथ आओ। एक मोटरिया लुढ़क गई है। मगर उसपर जो स्त्री सवार थी वह बच गई है, उसे उठा लाएँ,—जल्दी कर।

किरपी चूल्हेके पास बैठी हुक्का पी रही थी। उसने हुक्का दीवारके साथ लगाकर रख दिया और खाँसकर पूछा—कहाँ गिरी है? बहुत दूर तो नहीं है वह?

यह कहकर फिर खाँसने लगी, और खाँसते खाँसते घुटनोंपर दोनों हाथ रखकर खड़ी हो गई।

लरजाँ दौड़नेके कारण हाँप रही थी, रुक रुककर बोली—पास ही है,—जल्दी करो,—बेहोश हो गई है।

दोनों मिलकर उसे अपने झोंपड़ेमें उठा लाईं और कम्बलसे लपेटकर हाथ-पाँवपर गरम घीकी मालिश करने लगीं। थोड़ी देर बाद उसने एक लम्बा साँस लेकर आँखें खोल दीं और चारों तरफ़ देखा। इसके बाद माथेपर हाथ फेरकर बहुत धीरेसे कहा—मैं कहाँ हूँ?

लरजाँ उसे होशमें देखकर बहुत खुश हुई और बोली—तुम्हारी मोटरिया पहाड़से गिर पड़ी थी। अब तुम्हारा क्या हाल है?

किरपी—कहीं चोट तो नहीं आई?

युवतीने लेटे लेटे अपना शरीर हिलाकर देखा और जवाब दिया—

नहीं। मैं सिर्फ़ बेहोश हो गई थी। अब ठीक हूँ। ड्राइवरका क्या हाल है ? बचा या मर गया ?

लरजाँने किरपीके मुँहकी तरफ़ देखकर कहा—जाओ, पता लाओ। लोग नीचे गए थे, वापस आ गए होंगे।

किरपी उठकर बाहर चली गई। जब लौटी तो दोनों लड़कियाँ पुरानी सखियोंके समान घुल-मिल कर बातें कर रही थीं। कोई बेगानगी नज़र न आती थी।

किरपीने कहा—तेरा नौकर बच गया है, मगर तेरी गाड़ी टूट गई है। उसका बुरा हाल है।

युवती—और सामानका क्या हाल है ? मिल गया या नहीं ? बैग, चमड़ेका बक्स, बिस्तर—

किरपी—सब कुछ मिल गया। तेरे नौकरने सब कुछ सँभाल लिया है। इसकी चिन्ता न कर। मगर तेरी मोटरिया टूट-फूट गई है।

युवती—चलो कोई बात नहीं। आज हम मरते मरते बचे यही शुक्र है। जान बची लाखों पाए।

अचानक उसकी दृष्टि अपनी साड़ीपर पड़ी जो लुढ़कनेके कारण एक दो जगहसे फट गई थी। लरजाँसे बोली—मेरा बक्स आ जाता तो साड़ी बदल लेती, यह तो फट गई है।

किरपी—ले आऊँ ?

युवती—नहीं, मैं आप ही जाती हूँ। ड्राइवरको भी देख आऊँ, कहीं कोई हाथ-पैर न टूट गया हो ग़रीबका।

फिर लरजाँसे मुस्कराकर कहा—मैं अभी आई, (चुटकी बजाकर) एक मिनटमें।

जब वह चली गई तो किरपीने लरजाँसे पूछा—जानती हो, यह छोरी कौन है ?

लरजाँ—किसी बहुत बड़े अमीरकी लड़की होगी। पहनावा कैसा बढ़िया है ! हाथ कैसे नरम हैं, जैसे माखनके पेड़े। और सुभाओ भी बड़ा मीठा है। बोलती है, तो मुँहसे फूल झड़ते हैं। घमंडका नाम तक नहीं। जरूर किसी बहुत अमीरकी छोरी होगी।

किरपी—किसी अमीरकी छोरी नहीं, राजेकी छोरी है, राजेकी !

लरजाँ चौंक पड़ी—राजेकी छोरी ! तुमने किससे सुना ?

किरपी—उसके नौकरसे। बेचारा डरके मारे मरा जाता है। कहता है, राजा मेरी गरदन उड़ा देगा, मुझे सूली चढ़ा देगा, मुझे गोली मार देगा। कहेगा, गाड़ी कैसे गिर पड़ी ? तू सो रहा था क्या ? अगर राजकुमारीको नुकसान पहुँच जाता, तो तेरा क्या बिगड़ता ?

लरजाँ कई मिनट तक सोचती रही और चुप रही, इसके बाद बोली—तो यह राजेकी बेटी है ! किरपी, तुमने देखा इसके कपड़े कैसे बढ़िया हैं ?

किरपी —वाह, इसके कपड़े बढ़िया न होंगे तो और किसके होंगे ? राजेकी बेटी है !

लरजाँ—इसके बापके पास तो कई सौ रुपया होगा ?

किरपी—कई सौ क्या, कई हज्जार होगा।

लरजाँ—बेलीसे भी अमीर होगी ? (कुँवरने अपना नाम उन्हें बेली बताया था।)

किरपी—तुम भी क्या बातें करती हो ! बेली इनके नौकरोंकी भी बराबरी नहीं कर सकता। वह पत्थरोंका सौदागर है, यह राजेकी बेटी है। बाहर जाकर इसके नौकरके कपड़े देखे तो तू दंग रह जाए।

किरपीके यह शब्द शब्द न थे, ज़हरमें बुझे हुए तीर थे। लरजाँने कहा—अच्छा अच्छा, बहुत बातें न बना। उसीका खाती है, उसीको गालियाँ देती है, किरतघन कहींकी। वह सुन ले तो क्या कहे ! उसकी नेकियोंका तूने खूब बदला दिया।

किरपीको अब मालूम हुआ कि वह क्या कह गई। लज्जित होकर बोली—मैंने बेलीको गालियाँ दी हों तो मेरी जबान जल जाए। कोई राजा होगा अपने घरमें होगा। हमारे लिए तो बेली राजेसे भी बड़ा है। जो उसने किया है, वह कोई राजा भी क्या करेगा।

इतनेमें राजकुमारी आ गई। उसके पीछे पीछे एक पहाड़ी उसका चमड़ेका बक्स उठाए हुए आ रहा था। लरजाँने कहा—उसे चोट तो नहीं आई? सुना है, बड़ा डर गया है। कहता है, राजा मुझे फाँसी दे देगा, गोली मार देगा।

राजकुमारीने मुस्कराकर जवाब दिया—बेवक़ूफ़ है जो डरता है। अब इसमें उसका क्या दोष? घुटनेपर ज़रा चोट आई है, और सब ठीक है।—(पहाड़ीसे) यहाँ रख दे।

पहाड़ीने बक्स रख दिया और बाहर चला गया। राजकुमारीने उसे खोला और कपड़े निकाल निकालकर बाहर रखने लगी। सोचती थी, इस समय कौनसे कपड़े पहनूँ। लरजाँ और किरपी एक एक कपड़ा देखती थीं और हैरान होती थीं। ऐसे कपड़े उन्होंने आज तक न देखे थे। देखकर दिल खुश होता था, आँखें चमकती थीं।

१२

एकाएक कुँवर साहब आकर सामने खड़े हो गए। राजकुमारीने घूमकर पीछेकी तरफ़ देखा और दोनों चौंक पड़े। कुँवर साहब बिल्कुल ग़रीब पहाड़ियोंके पहनावेमें थे, सिरपर एक हल्की-सी टोपी थी, पाँव नंगे थे मिट्टीमें लथपथ। एक साधारण लोई ओढ़ रक्खी थी। मगर राजकुमारीने उन्हें देखते ही पहचान लिया। उसे यह आशा न थी

कि जिनकी खोजमें वह इतनी दूरसे चलकर आई है, वे यहाँ मिल जाएँगे। उधर कुँवर साहबको भी यह आशा न थी कि राजकुमारी यहाँतक उनका पीछा करेगी। यह रियासत गंजनालाकी राजकुमारी थी। इसके पिता महाराज योगेन्द्रसिंह चाहते थे, कि इसकी शादी कुँवर सूर्य-प्रकाशचन्द्रसे हो जाए। कुँवर साहबके पिताको भी इसपर कोई एतराज़ न था। और राजकुमारी इन्दिरा तो कुँवर साहबपर लट्टू थी। उनकी सभ्यता, उनकी शराफ़त, उनकी योग्यताने उसका मन मोह लिया था। उसने दिलमें यह प्रण कर लिया था कि अगर उनसे ब्याह न हुआ तो सारी उम्र कुँवारी रहूँगी। उधर कुँवर साहब भी राजकुमारीको नापसन्द न करते थे। अगर वे इस तरह घरसे न निकल आते, और लरजाँकी जवानी और सुन्दरता उनकी पसन्दको बदल न देती, तो उनका ब्याह इन्दिरासे होना निश्चित था। मगर अब इसकी कोई संभावना न थी। इन्दिरा उन्हें खोजने निकली थी। उसे विश्वास हो गया था कि कुँवर किताब लिख रहे हैं, ज़रूर काश्मीरके पहाड़ोंमें होंगे। अगर मोटर-दुर्घटना न होती तो वह कहींकी कहीं जा पहुँचती, मगर अब कुँवर साहब उसके सामने थे।

हाँ, कुँवरसाहब उसके सामने थे। पहनावा वह न था, न राजकीय ठाठ था, लेकिन शक्ल वही थी। दोनों चौंक पड़े। मगर अभी उनके मुँहसे हैरानीका कोई शब्द निकलने न पाया था, जिससे उनका राज़ खुल जानेका भय हो, कि कुँवरने राजकुमारीको इशारेसे कह दिया, चुप, इन लोगोंके सामने कुछ न बोलना। राजकुमारी सँभल गई और फिर उसी तरह अपना बक्स उलटने-पुलटने लग गई। कुँवरने ऐसा प्रकट किया कि वह इस लड़कीको देखकर घबरा गया है। ग़रीब आदमी है, ऐसी अमीर लड़की उसने आजतक न देखी होगी।

लरजाँ बैठी कपड़े देख रही थी। कुँवरको देखते ही उठकर खड़ी हो गई और उनके पास आकर धीरेसे बोली—जानते हो यह कौन है?

कुँवरने अपने दिलमें कहा, तुमसे ज़्यादा जानता हूँ मगर ज़ाहिरमें

मुस्कराकर कहा—अब मुझे क्या मालूम कौन है? तुम्हारी कोई सखी सहेली होगी। बहुत अमीर मालूम होती है! कौन है यह?

लरजाँ—(ऐसे जैसे वह कुँवरको चौंका देगी) यह एक राजेकी बेटी है, राजेकी!

कुँवर—(चौंककर) अरे, राजेकी बेटी! यहाँ कैसे आ गई? क्या तुम्हारी सखी है?

लरजाँने उन्हें सारी घटना सुनाई और मुस्कराई, मानों कह रही हो—देखा, हमारे घरमें राजेकी बेटी आई है।

उसे क्या मालूम था कि इससे पहले उसके घरमें एक राजेका बेटा भी आ चुका है।

कुँवर साहबने कुछ सोचकर कहा—राजेकी बेटी है, तो कुछ ख़ातिर करो। यह भी क्या कहेगी कि किसी पहाड़िनके घरमें गई थी। कुछ खिला पिला दो!

लरजाँ उदास हो गई। उसे अब अपनी ग़रीबीका ख़्याल आया—बोली—क्या बनाऊँ? इसके लिए मेरे पास क्या है? मेरा खाना कभी पसन्द न करेगी। तुम बताओ, क्या करूँ?

कुँवर—पहले दौड़कर किसीके यहाँसे दो सेर दूध ले आओ।

लरजाँने बरतन उठाया और धीरेसे बाहर चली गई। इसके बाद उसने किरपीसे कहा—तुम जाकर बाज़ारसे बहुत बढ़िया चावल ले आओ दो आनेके। चार आनेका पिस्ता और किशमिश भी ले आना।

दोनों चली गई।

अब मैदान साफ़ था। राजकुमारी और राजकुमार दोनों आमने-सामने खड़े थे। दोनों एक दूसरेकी ओर देखते थे। दोनोंके दिलोंमें भावोंकी भरमार थी। लेकिन दोनोंकी ज़बानमें बोलनेकी ताक़त न थी।

आख़िर कुँवरने मुस्करानेकी कोशिश करते हुए कहा—ख़ूब मिले इन्दिरा, ऐसी दुर्घटनामें तुम्हारा बच जाना चमत्कारसे कम नहीं

जहाँसे तुम गिरी थीं, वहाँसे गिर कर कोई मुश्किलसे ही बच सकता है। परमात्माने बड़ी दया की। इधर कैसे आई थीं ?

इन्दिराने सिरपर साड़ी ठीक करते हुए जवाब दिया—तुम्हें ढूँढ़ने निकली थी। मैं तो इस दुर्घटनाको दुर्घटना नहीं समझती। इसने तुमसे मिला दिया। नहीं तो न जाने कहाँ कहाँ भटकती फिरती और तुम्हारा पता कब मिलता ? मुझे विश्वास तो हो गया था कि तुम इनाम पानेके लिए किताब लिख रहे हो। मगर यह पता न था कि यहाँ मिलोगे। (सिरसे पाँव तक देखकर) क्या शक्ल बना रक्खी है ! महाराज देखें तो क्या कहें ? कहाँ यह पहाड़ी, कहाँ वह राजकुमार।

कुँवर—मगर इस समय मैं पत्थरोंका सौदागर बेली हूँ, रियासत सिकंधीरका राजकुमार नहीं। राजकुमारोंका यहाँ क्या काम ?

इन्दिरा—तुम्हारे चले आनेसे महाराज और महारानीका बुरा हाल है। अब गुस्सा थूक दो और घर चलो, तुम्हें देखकर जी जाएँगे। तुम्हारी किताब ख़त्म हुई या नहीं ?

कुँवर—(सिर हिलाकर) अभी कहाँ ख़त्म हुई। कमसे कम दो महीने और लगेंगे तब जाकर ख़त्म होगी।

इन्दिरा—मगर यह काम ऐसा नहीं कि वहाँ न हो सके। तुम्हें जो कुछ देखना था, वह तो तुम देख चुके। अब तो केवल लिखना बाक़ी है, वह वहाँ भी लिखा जा सकता है।

कुँवर—नहीं, नहीं, नहीं। जो वायुमंडल यहाँ है, वह वहाँ कहाँ ? यहाँ हरएक चीज़ आँखोंके सामने है, वहाँ केवल दिमाग़में होगी। और फिर यह संतोष, यह सादगी, यह प्राकृतिक दृश्य, यह पहाड़ी सौन्दर्य वहाँ कभी न मिलेगा। यहाँपर मुझे इलहाम होता है, विचार आपसे आप उड़े चले आते हैं। लिखनेके बाद पढ़ता हूँ तो यह मालूम होता है कि ये मेरे विचार ही नहीं हैं। यहाँ आकर मैं बड़ा लेखक बन गया, जो सदा अमर रहते हैं। वहाँ जाकर फिर वही छोटा-सा राजकुमार रह जाऊँगा, जो आज पैदा होते हैं, कल मरते हैं,

परसों लोगोंको याद भी नहीं रहते। तुम देखना, लोग मेरी किताब पढ़ कर दंग रह जाएँगे। अजीब चीज़ बन रही है। और चीज़ नहीं है, चमत्कार है।

इन्दिराने कुँवरको चुभती हुई आँखोंसे देखा और साड़ीके कोनेको उँगलियोंसे मरोड़ते हुए पूछा—यह लरजाँ कौन है? तुम्हारी बड़ी तारीफ़ करती है। बात बातमें बेलीका बखान होता है।

कुँवरका कलेजा धड़कने लगा। समझ गए, जिस समयकी प्रतीक्षा थी, वह आ पहुँचा। सँभल कर बोले—एक पहाड़ी लड़की है। ग़रीबकी माँ मर गई है। अब इसका यहाँ कोई भी नहीं है, बिल्कुल अकेली है। मैं न होता तो इसे बहुत कष्ट होता।

इन्दिरा—जब चले जाओगे तो क्या करेगी?

यह कहकर उसने कुँवरकी तरफ़ ऐसी आँखोंसे देखा जो दिलका हाल भी पढ़ सकती हैं। कुँवरने कुछ मिनट सोचा कि इसका क्या जवाब दूँ, आख़िर बोले—इसे भी साथ ले चलूँगा, यहाँ रहकर क्या करेगी? अब जहाँ मैं, वहाँ यह।

इन्दिरा आकाशसे गिर पड़ी। पर एक ही क्षणमें सँभलकर उसने दूसरा वार किया—लोग क्या कहेंगे?

कुँवर साहब इस वारके लिए भी तैयार थे, बोले—मैं लोगोंके कहनेकी इतनी परवाह नहीं करता। वे जो चाहें कहें। उससे मेरा क्या बनता बिगड़ता है?

इन्दिराका यह वार भी ख़ाली गया। उसने देखा, कुँवर हाथसे निकला जाता है। उसे आश्चर्य हो रहा था कि एक मामूली ग़रीब पहाड़ी लड़की एक सुन्दर राजकुमारीसे जीत जाए और वह खड़ी खड़ी मुँह ताकती रह जाए। उसका चमकता हुआ चेहरा उदास हो गया, जैसे चाँदपर काले बादल छा गए हों। उसकी आँखोंमें आँसू भर आए जैसे फूलोंपर ओस पड़ गई हो। उसने तिलई बूटकी एड़ीसे ज़मीनको कुरेदते हुए धीरेसे कहा—महाराज कभी न मानेंगे।

इन शब्दोंमें कितनी वेदना थी ! कुँवर साहबको राजकुमारीपर बहुत दया आई। सोचने लगे, बेचारी मेरे लिए कितनी दूरसे दौड़ती हुई आई है ! दो मीठे शब्द सुनकर उसका सारा सफ़र सफल हो जाता। लेकिन उनके पास उसके लिए मान था, सहानुभूति थी, पर प्रेम न था। इस समय ज़रा भी नरम हो जाते तो फिर स्थितिको सँभालना कठिन हो जाता। दृढ़तासे बोले—मैं रियासत छोड़ सकता हूँ, इस ग़रीब लड़कीको नहीं छोड़ सकता। यह मुझे रियासतसे भी प्यारी है। और यह बातें मैं जोशमें नहीं कह रहा, समझ-सोचकर कह रहा हूँ।

कुँवरका एक एक शब्द राजकुमारीके दिलपर हथौड़ेकी चोट था। अब उसमें बोलनेकी भी शक्ति न थी। बोलती क्या, उसके जीवनका सुन्दर सुपना बिखर गया था। उसकी लहलहाती आशाओंपर पानी फिर गया था। उसने लोहेको भी चीर देनेवाली दीन आँखोंसे कुँवरकी तरफ़ देखा और ठंडी आह भरकर गर्दन झुका ली, मानो अपनी हार मंजूर कर ली। क्या वह इसी हार के लिए इतनी दूरसे चलकर आई थी ?

कुँवरने बहुत धीरेसे अपना हाथ उसके कंधेपर रक्खा और कहा—इन्दिरा, मेरी एक प्रार्थना है। मैं चाहता हूँ, तुम लरजाँसे इस मामलेमें कुछ न कहो। शायद तुम यह सुनकर हैरान होगी कि वह कुछ भी नहीं जानती। वह यह भी नहीं जानती कि मेरे दिलमें उसके लिए क्या भाव हैं। वह मुझसे बहुत स्वतंत्रतासे मिलती है। मेरे साथ मिलकर हँसती है, खेलती है। अगर तुमने उससे कुछ भी कह दिया तो मेरी सारी खुशी मिट्टीमें मिल जाएगी। यह कहकर कुँवरने राजकुमारीके सामने घुटने टेक दिए, और उनकी आँखोंमें पानी भर आया।

कुँवरने राजकुमारीसे मौन भाषामें कहा कि तुम हारकर भी जीत गई हो। मैं अब तुम्हारे सामने नाचीज़ हूँ। तुम चाहो तो मेरी सारी ख़ुशी मिट्टीमें मिला सकती हो।

राजकुमारीने सहमी हुई आँखोंसे दरवाज़ेकी तरफ़ देखा और राजकुमारका हाथ पकड़कर उठाते हुए कहा—तुमने मेरा दिल तोड़ दिया है, मगर मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे मुँहसे कोई भी शब्द न निकलेगा। मैं तुम्हारा दिल न तोड़ूँगी।

यह कहकर उसने अपना रेशमी रूमाल निकाला और आँखें पोंछने लगी। कुँवरके दिलसे धुँआ-सा निकलने लगा। मगर वह कुछ कर न सकता था। ताक़तवर होकर भी पूरा बेबस था।

१३

रातको खाना खानेके बाद दोनों सखियाँ कुप्पीकी मध्यम रोशनीमें पुआलपर अपने अपने कम्बल ओढ़कर लेट गईं और बातें करने लगीं।

राजकुमारीने कहा—तुम खाना खूब बनाती हो। तुम्हारा खाना खाकर मुझे तो मज़ा आ गया।

लरजाँ—यह तो आपकी कृपा है, नहीं तो आपके हाँ अच्छेसे अच्छे रसोइए होंगे। मैं क्या पका सकती हूँ; जो साग-पात मिला, भून भानकर रख दिया।

राजकुमारी—मगर जो मज़ा इस भूने-भाने साग-पातमें है, वह उन खानोंमें नहीं। मुझे तो तुमसे प्रेम हो गया है। सोचती हूँ, कल कैसे जाऊँगी? जी यहीं रह जाएगा।

लरजाँ—आप चली जाएँगी तो मैं आपको याद भी न आऊँगी। अलबत्ता मैं आपको कभी न भूलूँगी। आपको मेरे जैसी हज़ारों मिल सकती हैं, मुझे आप जैसी एक भी न मिलेगी। याद करूँगी और

रोऊँगी। फिर कभी इधर आओ तो ज़रूर मिलना, म राह देखती रहूँगी, इंतिजार करती रहूँगी। पर आपको कभी ख्याल भी न आएगा।

राजकुमारीने लरजाँकी ओर प्यारसे देखा और कहा—बहन, यह तुम्हारी भूल है। तुमने कुछ ही घंटोंमें मेरा मन मोह लिया है। तुम कहती हो, इधर आओ तो मिलना, मैं कहती हूँ, मैं हर साल तुम्हें मिलनेके लिए आया करूँगी और कई कई दिन ठहरा करूँगी।

लरजाँ—(खुश होकर) इकट्ठी घूमा करेंगी। कभी ऊपर पहाड़पर जाएँगी, कभी नीचे नालेके किनारे जाकर बैठेंगी। कभी सैर करेंगी, कभी नहाएँगी। खूब मज़े होंगे।

राजकुमारी—अगली बार जब आऊँगी तो तुम्हें मेरे साथ मेरी रियासतमें चलना होगा। चलोगी न ? मोटरकी खूब सैर कराऊँगी।

लरजाँ आसमानमें उड़ने लगी। बोली—ज़रूर चलूँगी। कब आओगी ? सच सच बताओ।

राजकुमारी—यह वहाँ जाकर लिखूँगी, अभी कुछ नहीं कह सकती। तुमने बेलीको खाना भेज दिया या मेरी बातोंमें उसे भी भूल गई। कौन ले जायगा ?

लरजाँ—किरपी ले जाएगी। तुम थक तो नहीं गई, कहो, तो पैर दबा दूँ ?

राजकुमारी—अरे बहन, क्यों काँटोंमें घसीटती हो। पहले ही मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ। तुमने मुझपर बड़े उपकार किए हैं।

लरजाँ लेटी हुई थी, उठकर राजकुमारीके पास आ बैठी और पाँवकी ओर हाथ बढ़ाकर बोली—क्या उपकार किया है मैंने तुमपर ? बैठने लायक जगह भी तो नहीं है यहाँ। तुमको घरमें हज़ारों सुख होंगे, यहाँ एक भी नहीं। लाओ, ज़रा पाँव दबा दूँ, घिस न जाऊँगी।

राजकुमारीको लरजाँकी इस सादगीपर बे-अख्तियार प्यार आया। उसने अपना बढ़िया कम्बल अपने शरीरके इर्द-गिर्द लपेट लिया

और उठकर बैठ गई। बोली—तुमने मेरे प्राण बचाए हैं। अगर तुम वहाँसे मुझे न उठा लातीं तो मेरा बचना असंभव था। बेहोशीमें ज़रा भी करवट बदलती तो नीचे लुढ़क जाती। कौन बचाता? सीधी मौतके मुँहमें उतर जाती।

लरजाँ—तुम्हें मैंने नहीं बचाया, भगवानने बचाया है। आदमी आदमीको क्या बचायगा?

राजकुमारी—यह तुम्हारी विनय-शीलता है। कोई और होता तो डींगें मारते न थकता, कि मैंने यह किया है, और वह किया है।

लरजाँने कोई उत्तर न दिया, चुपचाप छतकी ओर देखने लगी। राजकुमारीने प्रसंग बदलकर कहा—यह बेली कौन है?

लरजाँके मुँहपर शर्मकी लाली दौड़ गई, बोली—पत्थरोंका एक सौदागर है। यहाँ पत्थर देखने आया है।

रामकुमारी—मेरा मन कहता है कि यह आदमी तुम्हारे लिए बना हुआ है। ज़रूर यही बात है। इधरसे जाता होगा। तुम्हें देख लिया, पत्थरोंका सौदागर बन बैठा।

लरजाँ—नहीं बहन, बेली ऐसा आदमी नहीं। मुझे उसपर पूरा पूरा भरोसा है। तुम उसे जानतीं तो ऐसा न कहतीं।

राजकुमारीने दिलमें कहा, तुमसे .ज्यादा जानती हूँ, प्रकटमें बोली —मगर उसका दोष नहीं। तुम्हारा रूप ही ऐसा है कि जो देखे वही अपनी सुध बुध भूल जाए, जो देखे, वही पागल हो जाए। ग़रीब बेली क्या करता? तुम किसी राजाकी रानी होने योग्य हो, यहाँ झोंपड़ेमें रहने योग्य नहीं।

लरजाँ—वाह, बड़ी सुन्दर हूँ न! तुम्हारी तो जूतीकी भी बराबरी नहीं कर सकती। यह कहकर उसने राजकुमारीके तिलई जूतेकी तरफ देखा। इधर राजकुमारीको डाह हो रहा था कि मैं लरजाँ ही होती। उसने कहा—मैं भविष्यवाणी करती हूँ, तुम किसी दिन रानी बनोगी।

अपने मास्टरसे जल्दी जल्दी पढ़ लो, नहीं तो पीछे तकलीफ़ होगी। रानीके लिए पढ़ाई बड़ी ज़रूरी चीज़ है।

लरजाँने मुँह फुला लिया और कहा—जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती। तुम छेड़ती हो।

राजकुमारीने लरजाँके गालपर धीरेसे एक चपत लगाकर कहा—दिलमें तो प्रसन्न हो रही है, मुँहसे कहती है, तुम छेड़ती हो। लगाऊँ एक दो तीन और चपतें।

दोनों सखियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

कुछ देर बाद लरजाँने पूछा—राजा लोगोंका महल कितना बड़ा होता है ? इस झोंपड़ेसे तो बहुत बड़ा होता होगा ?

राजकुमारी पहले तो उसकी सादगी और भोलेपनपर मुस्कराई, फिर बोली—महल देखो तो दंग रह जाओ। ऐसे ऐसे सैकड़ों झोंपड़े उसके आँगनमें समा जाएँ। और फिर कमरे ऐसे सजे होते हैं कि तुमसे क्या कहूँ। देखकर दिल प्रसन्न हो जाता है। फ़र्शपर क़ालीन ऐसे सुन्दर होते हैं, दरवाज़ोंपर मोतियोंके पर्दे ऐसे क़ीमती होते हैं कि क्या कहना। फिर बिजलीके पंखे, बिजलीके लैम्प, बिजलीके चूल्हे। अभी अँधेरा है, अभी तुमने बटन दबा दिया, कमरेमें रोशनी हो गई। बटन दबाया, पंखा चलने लगा। बटन दबाया, चूल्हा गरम हो गया। एक एक आदमीपर कई कई नौकर होते हैं। कोई बीस आदमी तो हमारे यहाँ केवल कमरोंकी सफ़ाईके लिए हैं। दरबान अलग, पहरेदार अलग, खानसामे अलग।

राजकुमारी बोलती जाती थी और लरजाँ आश्चर्यसे आँखें फाड़ फाड़कर सुनती जाती थी। कभी कभी उसे संदेह होता था कि राजकुमारी झूठ बोल रही है। कभी सोचती थी, इसे झूठ बोलनेकी क्या पड़ी है ! जब इसके वहाँ जाऊँगी तब देख लूँगी। इतनेमें ग्यारह बज गए और लरजाँ सो गई। मगर राजकुमारीकी आँखोंमें नींद न थी।

कुँवरको ढूँढ़ने निकली थी, यहाँ आकर उसे सदाके लिए गँवा बैठी। निराशामें नींद कहाँ ?

दूसरे दिन इधर राजकुमारी चलनेको तैयार हो रही थी, उधर लरजाँ बैठी चुपके चुपके रो रही थी। सोचती थी, राजकुमारी चली जायगी, तो उसका दिल कैसे लगेगा ? राजकुमारीको कुँवरपर क्रोध था, लरजाँपर क्रोध न था। सोचती थी, उस ग़रीबका क्या दोष ? कुँवरने उसके घरमें जाकर उसको घेर लिया था, यह उसके पास नहीं गई। उसे तो यह भी पता नहीं, यह कौन है कौन नहीं है।

दोपहरके समय जब किराएका मोटर आ गया और ट्रंकके सिवाय राजकुमारीका सब सामान उसमें रख दिया गया तो, उसने लरजाँको गलेसे लगा लिया और भर्राई हुई आवाज़में कहा—बहन, सच कहती हूँ, यहाँसे जानेको जी नहीं जाहता। लेकिन क्या करूँ, इस समय रुक नहीं सकती। फिर आऊँगी तो कई दिन रहूँगी।

लरजाँने चुपचाप राजकुमारीकी ओर देखा और गरदन झुका ली। उसके मुँहसे एक शब्द भी न निकला।

राजकुमारीने कहा—तुमने मेरी जो ख़ातिर-तवाज़ो की है, वह मुझे सदा याद रहेगी।

लरजाँने फिर भी कोई जवाब न दिया; अपनी बड़ी बड़ी हैरान आँखोंसे राजकुमारीकी तरफ़ देखती रही।

इतनेमें ड्राइवरने आकर कहा—सरकार चलिए, मोटर आ गया है।

राजकुमारीने किरपीको बुलाकर दस रुपएका नोट दिया। गाँवके दूसरे आदमियोंमें रुपए बाँटे; किसीको एक किसीको दो। कई बच्चे आकर झोंपड़ेके सामने खड़े हो गए थे, उन सबको पैसे दिए। इसके बाद लरजाँको घसीटकर झोंपड़ेके अन्दर ले गई। वहाँ जाकर उसने अपना बक्स खोलकर उसमेंसे गहनोंका डिब्बा निकाला और उसे खोलकर लरजाँके सामने रख दिया। लरजाँ उसके मुँहकी तरफ़ देखने लगी। मानो चुपकी भाषामें पूछने लगी—तुम्हारा क्या मतलब है ?

राजकुमारीने मुस्कराकर कहा—यह तुम्हारे लिए हैं, मेरी तरफ़से प्रेमकी भेंट।

लरजाँ चौंक पड़ी। वह ग़रीब थी, उसे ठीक ठीक मालूम न था कि इन गहनोंकी क्या क़ीमत होगी, लेकिन इतना समझती थी कि उनकी कीमत कम न होगी। उसने यह भी समझ लिया कि इतना रुपया सारे गाँवमें किसीके पास न होगा। यह गहने अत्यंत सुन्दर हैं। इन्हें पहनकर वह परी मालूम होने लगेगी। सारे गाँवकी स्त्रियाँ उससे डाह करेंगी। बेलीको भी आश्चर्य होगा। कहेगा, तू ता सचमुच राजकुमारी बन गई। इसके उत्तरमें वह क्या कहेगी ? कुछ भी नहीं, केवल मुस्करा देगी, और उसकी तरफ़ कनखियोंसे देखेगी।

लेकिन दूसरे ही क्षणमें उसके विचार बदल गए। उसने डिब्बेको बन्द करके ट्रंकमें रख दिया और राजकुमारीकी तरफ़ सजल आँखोंसे देखकर कहा—बहन, यह चीज़ें तुम्हारे जैसे धनियोंके लिए हैं, हम ग़रीबोंको इनकी ज़रूरत नहीं। तुम्हारा प्रेम बना रहे, मेरे लिए यही सब कुछ है। मुझे ज़ेवर नहीं चाहिए, तुम्हारा प्रेम चाहिए।

राजकुमारीने डिब्बा निकालकर लरजाँके बिछौनेके नीचे रख दिया और ट्रंक बन्द करके कहा—देखो, अगर तुमने अब लौटाया तो मैं समझूँगी, तुम्हें मुझसे ज़रा भी प्यार नहीं। जहाँ प्यार होता हैं, वहाँ इंकार नहीं होता।

लरजाँकी आँखोंमें कृतज्ञताके आँसू आ गए। वह राजकुमारीके गलेसे लिपट गई और रोने लगी। मगर उसके दिलमें जो खुशी थी, उसे कौन बयान कर सकता है ? राजकुमारीके होठोंपर मुस्कराहट थी। मगर उसके दिलमें जो अँधेरा छाया हुआ था, उसे कौन जान सकता है ? बड़ेसे बड़ा कलाकार भी नहीं।

राजकुमारीने ड्राइवरसे कहा—यह ट्रंक ले जाकर मोटरमें रख दो।

ड्राइवरने ट्रंक उठा लिया और बाहरकी तरफ़ चला। एकाएक कुँवर साहब आकर राजकुमारीके सामने खड़े हो गए और बोले—

सारा गाँव आपको दुआएँ दे रहा है। आपने तो सबको मोह लिया। —क्या तैयार हो गईं सरकार ?

राजकुमारीने कुँवरकी ओर ऐसी आँखोंसे देखा जिनमें शिकायतोंके दफ्तर भरे हुए थे और कहा—हाँ भई, अब और क्या करें ? तुमने तो हमारी बात भी न पूछी, अपने झोंपड़ेमें जाकर सो रहे, अब आए हो !

इस वाक्यमें जो ताने छिपे हुए थे, उनसे कुँवरका दिल छिद गया। धीरेसे बोले—सरकार, आपने सारे गाँवको इनाम दिया, पर हमें तो कुछ न मिला। हमीं अभागे रह गए।

राजकुमारीने हृदयसे रोकर लेकिन होठोंसे मुस्कराकर कहा—सब्र करो। तुम्हें ऐसी बढ़िया चीज़ मिलेगी कि खुश हो जाओगे, निहाल हो जाओगे, अपना भाग्य सराहोगे।

मगर जब वह मोटरपर सवार हो गई और मोटर कुछ दूर निकल गया तो उसकी आँखें सजल हो गईं थीं और उसे पहाड़के हरे-भरे दृश्योंमें कोई हरियाली दिखाई न देती थी। पहले उसका दिल रोता था, अब आँखें भी रो रहीं थीं। आशा लेकर आई थी, निराशा लेकर जा रही थी। मगर उस निराशाको देखनेवाले कितने हैं।

उधर कुँवर और लरजाँ झोंपड़ेमें खड़े बातें कर रहे थे। किरपी पानी भरने गई थी।

लरजाँ—उसका सुभाओ बड़ा मीठा है। मेरा जी चाहता था, उसे जाने न दूँ, यहीं रख लूँ।

कुँवर—क्या कहना ! राजेकी बेटी है। गाँवके लोग उसका यश गा रहे हैं। जिससे पूछो वही तारीफ़ करता है।

लरजाँ—तुमने भी इनाम माँगा था, तुम्हारी यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी। क्या ले लिया ! साफ़ टाल गई। बिन माँगे मोती मिल जाते हैं, माँगनेसे भीख भी नहीं मिलती। और फिर तुम्हें ज़रूरत ही क्या है ? तुम्हारे पास सब-कुछ है। भगवानने सब कुछ दे रक्खा है। तुम्हें माँगना न चाहिए था। तुमने माँगकर आबरू खो दी।

कुँवर—अच्छा, मैंने तो माँगकर कुछ न पाया, तुमने तो कुछ न माँगा था। तुम्हें क्या मिला, बताओ ?

लरजाँ—(तुनककर) मुझे तो ऐसी चीज़ मिली है कि तुम देखकर दंग रह जाओगे।

कुँवर—(मुस्कराकर) तो मुझे भी ऐसी चीज़ मिली है कि तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा।

लरजाँ—बिलकुल झूठ बोलते हो। दिखाओ तो क्या मिला तुम्हें ?

कुँवर—पहले तुम दिखाओ, तुम्हें क्या मिला ?

लरजाँ—मुझे ऐसी चीज़ मिली है जो सारे गाँवमें किसीके पास न होगी। अनमोल चीज़ है।

कुँवर—सच कहती हो क्या ?

लरजाँ—बिलकुल सच।

कुँवर—तो मुझे भी ऐसी चीज़ मिली है जो उसकी रियासत-भरमें किसीके पास न होगी।

लरजाँ—बिल्कुल झूठ।

कुँवर—बिल्कुल सच।

लरजाँ—तो दिखा क्यों नहीं देते ? हमें भी मालूम हो कि तुम्हें कौन-से हीरे-मोती दे गई है।

कुँवर—पहले तुम दिखाओ।

लरजाँ—फिर तुम्हें भी दिखाना होगा, यह कहे देती हूँ।

कुँवर—ज़रूर दिखाएँगे। दिखाएँगे क्यों नहीं ?

लरजाँने बच्चोंकी तरह शोख़ीसे कहा—तो आँखें बन्द कर लो। जब कहूँ तब खोलना।

कुँवरने आँखें बन्द कर लीं।

लरजाँने अन्दर जाकर डिब्बा निकाला, फिर ज़मीनपर कपड़ा बिछाकर सारे गहने उसपर फैला दिए। इसके बाद कुँवरके कंधेपर हाथ मारकर कहा—लो, अब आँखें खोल दो और देखो।

कुँवरने आँखें खोलकर इतना ज़ेवर देखा तो सन्नाटेमें आ गए। यह क्या! राजकुमारी लरजाँको इतना कुछ दे गई होगी, उन्हें यह गुमान भी न था। वे समझते थे, शायद सौ-पचास रुपए दे गई हो। लेकिन सारे गहनोंका डिब्बा दे गई होगी यह उन्हें ख़्याल भी न था। आश्चर्यसे बोले—लरजाँ, तुमने तो राजकुमारीको लूट लिया, यह हज़ारोंका माल है, मामूली चीज़ नहीं।

लरजाँने गहनोंको शौक़से देखा और फिर कुँवरसे कहा—अब तुम बताओ, तुम्हें क्या दिया ?

यह कहकर मुस्कराने लगी, गोया कहती थी, मुझे बहुत दिया है, तुम्हें क्या दिया होगा ?

कुँवर—तो अब तुम भी आँखें बन्द कर लो। जब कहूँ तब खोलना। जिस तरह तुमने अपनी चीज़ दिखाई है, उसी तरह हम भी दिखाएँगे, तुमसे पीछे थोड़ा रह जाएँगे ?

कुँवर साहब दबे पाँव अन्दर जाकर एक शीशा उठा लाए और उसे डिब्बेके सहारे ऐसी जगह रख दिया, जहाँसे उसमें लरजाँका मुँह साफ़ साफ़ दिखाई देता था। इसके बाद आप उसके पीछे जाकर खड़े हो गए और उसके कंधेपर उसी तरह हाथ मारकर बोले—बस, अब आँखें खोल दो और देखो, हमें क्या मिला है ?

लरजाँने आँखें खोलकर देखा तो सामने केवल एक शीशा था और कुछ भी न था। मुस्कराकर बोली—कहाँ है वह तुम्हारी रियासत-भरमें क़ीमती चीज हमें तो दिखाई नहीं देती कहीं भी।

कुँवरने शीशेमें उसके सुन्दर चेहरेकी तरफ़ इशारा करके जवाब दिया—वह देखो—वह—वह—

लरजाँ शरमा गई। बोली—चलो, हटो, तुम तो हँसी करते हो।

मगर कुँवर साहब जानते थे कि यह हँसी नहीं सच है। राजकुमारी उन्हें वह चीज़ दे गई थी जिसकी कोई क़ीमत न थी।

इतनेमें किरपी पानीका घड़ा सिरपर उठाए हुए झोंपड़ेके अन्दर आ गई और प्रेम और पवित्रताका यह वसन्तपूर्ण नाटक अधूरा रह गया। दोनों चुप हो गए।

१४

डेढ़ महीना बीत गया, कुँवर साहब अब भी किताब लिख रहे थे। उसी तरह नालेके किनारे जा बैठते थे और सारा दिन लिखते थे। उसी तरह लरजाँसे मिलते थे, हँसते थे, खेलते थे। प्यारके पाँसे फेंकते थे, और भोली भाली कबूतरी जालमें फँसती जाती थी। उधर राजकुमारी इन्दिराने कुँवरके माता-पिताको यह तो बता दिया था कि कुँवर साहब अच्छी तरहसे हैं और इनामके लिए किताब लिख रहे हैं, लेकिन कुँवर साहबके कहनेके अनुसार उसने उन्हें यह न बताया था कि कुँवर कहाँ हैं ? वे चाहते थे, उनके काममें कोई विघ्न न डाले, ताकि जिस शानसे किताब शुरू हुई है उसी शानसे खत्म हो जाए। घर चले जाते तो यह बात न रहती। यहाँ तक कि किताबका आखिरी भाग भी समाप्त हो गया और कुँवर साहबने किताब छपनेके लिए बम्बई भेज दी। अब उनका समय खाली था। जो चाहें करें, जहाँ चाहें रहें। इनामका निर्णय होनेमें अभी तीन महीने बाकी थे। कुँवर साहबने सोचा, अभी घर लौटना ठीक नहीं। सब कहेंगे, बड़े अकड़खाँ बनकर घरसे निकले थे, क्या कर आए ? अगर इनाम मिल जाए तो भाग्य खुल जाए, नसीब जाग उठे, सारे भारतवर्षमें धूम मच जाए। फिर वे भी कह सकेंगे कि वे अपने पाँवपर खड़े हो सकते हैं। उन्हें केवल बाप-दादोंके धनका भरोसा नहीं है। इस समय तक लरजाँ हिन्दी पढ़ने-लिखनेमें काफी निपुण हो गई थी। अब छोटे

मास्टरको छोड़कर कुँवर साहबसे अँगरेज़ी पढ़ने लगी। उनको कोई काम न था, जी लगाकर पढ़ाने लगे। उसे पढ़नेका शौक था, जी लगाकर पढ़ने लगी। दो-अढ़ाई महीनेमें उसे अँगरेज़ीके कई छोटे छोटे वाक्य याद हो गए।—खाना खाओ। पानी पिओ। आज बहुत सरदी है। नालेमें बाढ़ आ गई। मैं तुमसे न बोलूँगी। किरपी बड़ी सुस्त है, बहुत धीरे धीरे काम करती है। ये लो, बिल्लीने चूहा पकड़ लिया—इस तरहके कई वाक्य फ़रफ़र बोलने लगी। उसकी मस्तिष्क-शक्ति देखकर कुँवर साहब दंग रह जाते थे। जो पाठ एक बार पढ़ लेती फिर कभी न भूलती। वह पढ़कर .खुश होती थी। कुँवर पढ़ाकर खुश होते थे। किरपी देख कर .खुश होती थी। उसे अब इन दोनोंसे प्यार हो गया था।

तीसरे पहरका समय था। लरजाँ नालेके किनारे एक बड़े पत्थरपर बैठी अँगरेज़ी लिखनेका अभ्यास कर रही थी और कुछ दूर कुँवर दूसरे पत्थरपर बैठे किसी गहरे विचारमें लीन थे। इतनेमें लरजाँने थककर कापी पत्थरपर रख दी और कुँवरके पास आकर कहा—मैं कहती हूँ, यह राजा महाराजा लोग तो बड़े सुखी होते होंगे।

कुँवर साहब चौंक पड़े, बोले—क्या कहा तुमने ?

लरजाँ—(हँसकर) मैंने कहा, यह राजा महाराजा लोग तो बड़े सुखी होते होंगे।

कुँवर—क्यों, केवल इसलिए कि उनके पास धन दौलत है ?

लरजाँ—आख़िर धन-दौलत ही तो दुनियामें सबसे बड़ी चीज़ है। जिसके पास धन-दौलत हो, वह क्यों सुखी न होगा ? मैं सोचती हूँ, मैं किसी राजाके घर पैदा होती तो बड़ा मज़ा होता।

कुँवर—(गंभीरतासे) यह तुम्हारी भूल है। धनमें सुख नहीं है, न संतोष है। कई आदमी ऐसे हैं जिनके पास लाखों रुपए हैं, मगर फिर भी उनके दिलको चैन नहीं। कई ऐसे हैं जिनके पास पैसा भी नहीं, फिर भी प्रसन्न हैं। और फिर राजों-महाराजोंके सिरपर तो कई

ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। बेचारे हर समय परेशान रहते हैं। उनको सुखी समझना दुनियाकी सबसे बड़ी मूर्खता है। वे सुखी नहीं हैं।

लरजाँ—(आश्चर्यसे) अच्छा! मेरा ख्याल था, यह लोग बड़े आनंद-मज़ेमें होंगे। उन्हें कोई दुःख न होगा।

कुँवर—दूसरे लोगोंकी तरह कई राजे भी ऐसे हैं जिनका जीवन आहों और गुनाहोंमें कटता है, जिन्हें दया और धर्मका विचार ही नहीं है, जिन्हें पवित्रता और पाकीज़गीकी चिन्ता ही नहीं है। कई ऐसे हैं जो अपने कर्त्तव्यको पूरा नहीं करते, न इसकी ज़रूरत समझते हैं। बताओ, उनके दिलको चैन मिल सकता है? कभी नहीं।

लरजाँ—जो ऐसे हैं, उनको चैन क्या मिलेगा? उन्हें तो शायद रातको नींद भी न आती होगी।

कुँवर—कई राजे ऐसे हैं जिनके पास जाकर तुम डर जाओ। उन्हें केवल अपना ख़्याल है, और किसीका ख़्याल नहीं।

लरजाँ—तो मैं आज तक भूलमें थी?

कुँवर—तुम उनके मुक़ाबिलेमें देवी हो। अच्छा, एक बात बताओ। तुम राजकुमारी इन्दिराको तो न भूली होगी?

लरजाँ—(सिर हिलाकर) उसे भूल जाऊँ तो मैं समझूँगी मैं औरत नहीं, शैतान हूँ।

कुँवर—वह भी सुखी नहीं है। उस दिन तुम्हारे नाम जो पत्र आया था, वह आँसुओंसे भीगा हुआ था। अब सोचो, उसके पास किस चीज़की कमी है? उसकी कौनसी इच्छा है, जो पूरी नहीं होती? पिता राजा है। नौकर-चाकर सेवा करनेको हैं। महल रहनेको है। अच्छेसे अच्छे कपड़े पहननेको हैं। अच्छेसे अच्छा भोजन खानेको है। जो चाहे मँगवा ले, जो चाहे ख़रीद ले। लेकिन, यह सब होते हुए भी उसका जीवन आनन्दमय नहीं है। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि आनन्द और शान्ति धनमें नहीं, किसी दूसरी चीज़में हैं?

लरजाँ—मगर राजकुमारीको क्या दुःख है ? मेरा जी चाहता है, उड़कर उसके पास चली जाऊँ और उसे देख आऊँ। उसने मुझे एक ही दिनमें मोह लिया। उसे घमंड तो छू भी नहीं गया। उसकी रियासत यहाँसे कितनी दूर है ? चलो चलें, मुझे देखकर वह .खुश हो जाएगी। उसे खुश देखकर मैं खुश हो जाऊँगी। चलोगे ?

कुँवर—अभी नहीं। कुछ दिन और ठहर जाओ।

इतनेमें ऊपरसे कोई उतरता दिखाई दिया। दोनों सिर उठाकर देखने लगे। यह तार-घरका चपरासी था। कुँवरका कलेजा धड़कने लगा। उन्होंने अपने एक काश्मीरी मित्रसे कह रखा था कि इनामके नतीजेका समाचार उन्हें भेज दे। जहाँ कुँवर रहते थे, वहाँ तार-घर न था। तारघर वहाँसे दस मीलकी दूरीपर था। कुँवर साहब डाकबाबूके पास तार ले जानेवालेकी फ़ीस जमा करा आए थे जिससे जो भी तार आए उनके पास पहुँचा दिया जाए। इसी क्षणके लिए उन्होंने इतनी कठिन तपस्या की थी। इसी क्षणके लिए वे उतावले थे और अब तारघरका आदमी तार लेकर आ रहा था। यह इनामका निर्णय न था, उनके भाग्यका निर्णय था। वे उठकर खड़े हो गए। लरजाँको चुप रहनेका इशारा किया और तार-घरके चपरासीसे पूछा—मेरा तार है क्या ? लाओ।

चपरासीने कुँवरके पास पहुँचते हुए झुककर सलाम किया और तारका लिफ़ाफ़ा और हस्ताक्षरोंके लिए काग़ज़ उनके हाथमें दे दिया।

कुँवरने काँपते हुए हाथोंसे लिफ़ाफ़ा लिया, फिर चपरासीसे पेंसिल ली और हस्ताक्षर करके काग़ज़ लौटा दिया। चपरासी वहीं खड़ा रहा। कुँवरने कहा—जाओ।

चपरासी उनसे डरता था। उसने फिर झुककर सलाम किया और वापस चला गया। लरजाँ दौड़ती हुई कुँवरके पास आई और उनके कंधेपर हाथ रखकर बोली—क्या है ? वह कौन था ? क्या देने आया था ? तुम्हें सलाम क्यों करता था ?

कुँवरने इसका जवाब न दिया। लिफ़ाफ़ा खोलकर तार पढ़ने लगे। पढ़ते पढ़ते उनका चेहरा खिल उठा और आँखें चमकने लगीं। उनकी मेहनत अकारथ न गई थी। उन्हें इनाम मिल गया था। इस समय उनकी प्रसन्नताका ठिकाना न था, झूमते थे।

लरजाँने उनकी छातीपर प्यारसे मुक्का मारकर उत्सुकतासे पूछा—क्या ख़बर है ? बताते क्यों नहीं ?

'कुँवरने मुस्कराकर उसकी तरफ़ देखा और उसके सिरपर हाथ फेरकर जवाब दिया—काश्मीरमें मेरा एक अमीर दोस्त रहता है। उसके घर बेटा पैदा हुआ है। इस खुशीमें श्रीमानजी जलसा करने जा रहे हैं। मुझे भी बुलाया है। जाना पड़ेगा।

लरजाँके दिलमें गुदगुदी-सी हुई। कुँवरकी तरफ़ देखकर बोली—मुझे भी ले चलो, काश्मीर देख आऊँगी।

कुँवर साहब अस्वीकार न कर सके, बोले—चलो, क्या हर्ज है, ले चलेंगे तुम्हें भी।

थोड़ी देर बाद इधर लरजाँ अपने झोंपड़ेमें हँस हँसकर किरपीसे काश्मीर जानेकी बातें कर रही थी, उधर कुँवर साहब अपने मकानमें बैठे अपने भविष्यकी बातें सोच रहे थे।

इसके पन्द्रह दिन बाद २५ सितम्बरको श्रीनगरमें बड़ा भारी जलसा था, जिसमें कुँवरको इनाम दिया जानेवाला था। इस अवसरपर महाराज काश्मीरने वायसरायको भी निमंत्रण दिया कि वे कुँवरको इनाम अपने हाथसे दें। वायसराय बहादुरने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया। इसके सिवाय भारत-भरके राज-मंडलको भी बुलाया गया था। शहरमें बड़े ज़ोरोंकी तैयारियाँ हो रही थीं। कुँवरके पिता महाराज पृथ्वीचंद्र बहादुर और उनकी महारानी तो फूले न समाते थे। उनका खोया हुआ लाल ही न मिला था, उसने उनका नाम भी रोशन कर दिया था। राजों-महाराजोंने उनको बधाईके तार भेजे,

समाचार-पत्रोंने कुँवरके चित्र छापे, कई समाचारपत्रोंने जलसेकी खुशीमें खास नम्बर निकाले। महाराज यह सब कुछ देखते थे और प्रसन्न होते थे। वे चाहते थे २५ सितम्बर जल्दसे जल्द आ जाए और वे अपने रूठे हुए बेटेको मना लें। महारानीने इस .खुशीमें हज़ारों रुपएका दान किया और एक मन्दिर बनवाना शुरू करवा दिया। कैदी छोड़े गए, नौकरोंको तरक्कियाँ दी गई।

२३ सितम्बरको कुँवरने किरपीसे कहा—तुम भी चली चलो। फिर जाने ऐसा अवसर हाथ आए न आए।

लेकिन किरपी तैयार न हुई, बोली—सब लोग चले गए तो घरको कौन देखेगा? न बाबा, मैं न जाऊँगी। तुम जाओ। मैं यहीं रहूँगी, और मकानकी चौकसी करूँगी।

लरजाँने कहा—गहने ले चलूँ?

कुँवरने जवाब दिया—क्या ज़रूरत है, यहीं रहने दो। अगर चोरीका भय है तो किरपीसे छिपाकर ज़मीनमें गाड़ दो। आकर निकाल लेना।

लरजाँने ऐसा ही किया और निश्चिन्त हो गई। कुँवरने भी एक आदमीसे कह दिया—मेरे मकानमें तुम सो रहना। किरपी घबरा न जाए।

१५

दूसरे दिन संध्या समय दोनों श्रीनगरकी एक आलीशान कोठीमें थे और महाराज काश्मीरका एक दरबारी कुँवरके सामने खड़ा उनके हुक्मकी प्रतीक्षा कर रहा था।

कुँवर साहबने कहा—देखिए, मेरे साथ जो पहाड़ी लड़की है उसके लिए लिबास और गहनोंका प्रबन्ध हो जाए। कल वह भी दरबारमें जाएगी।

दरबारीने सिर झुकाकर जवाब दिया—बहुत अच्छा।

कुँवर—(मुस्कराकर) वह लिबास पहनना नहीं जानती। किसी समझदार स्त्रीको भेज दीजिए जो उसे लिबास इत्यादि पहना दे, और अपने साथ दरबारमें ले जाए और वहाँ उसके साथ रहे।

दरबारी—बहुत अच्छा।

कुँवर—मेरे पास भी कोई लिबास नहीं है। इसका भी प्रबन्ध कर दे।

दरबारी—बहुत अच्छा सरकार, हो जायगा।

कुँवर—एक बात और। मैं इस समय किसीसे नहीं मिलना चाहता। दरबानसे कह दो, चाहे कोई आए, कह दे, इस समय नहीं मिल सकते, जलसेके बाद मिलेंगे।

दरबारी—बहुत अच्छा।

कुँवर—सब महाराजा लोग आ गए, या अभी आनेवाले हैं?

दरबारी—हुजूर, कई आ गए हैं, कई आनेवाले हैं।

कुँवर—महाराजा साहब सिकंधीर अभी आए या नहीं?

दरबारी—महाराज, वे कल पहुँचेंगे।

कुँवर—और वायसराय बहादुर?

दरबारी—वे कल नौ बजे यहाँ पहुँचेंगे।

कुँवरने छतके लैम्पकी तरफ़ देखकर कुछ सोचा और फिर दरबारीसे कहा—आप जा सकते हैं। सुबह आइए। और मेरी तरफ़से महाराज साहबको धन्यवाद दीजिएगा।

दरबारी सिर झुकाकर चला गया।

सुबह आठ बजेके लगभग जब लरजाँ नहा-धोकर निकली तो उसके सामने कपड़ोंका ढेर पड़ा था। एक एक कपड़ा देखती थी और हैरान होती थी। किसे पहने, किसे न पहने। एकसे एक बढ़कर था। एकसे एक खूबसूरत था। उसका जी चाहता था सभी रख ले, एक भी वापस न करे। लरजाँ देरतक उलट-पुलट कर देखती रही, लेकिन किसी निश्चयपर न पहुँची। आखिर मिस फिलिपने, (जिसको उसकी Companion नियत किया गया था) कहा—क्या आपको कोई भी कपड़ा पसन्द नहीं ? और मँगवा भेजूँ ?

लरजाँ चौंककर बोली—मुझे तो सभी पसन्द हैं, कोई भी नापसन्द नहीं। यह कहकर फिर उन्हें उलटने-पुलटने लगी। फिर एक एकको ध्यानसे देखने लगी। मिस फ़िलिप समझ गई कि इससे साड़ी न चुनी जाएगी। एक साड़ी उठाकर बोली—मेरे ख्यालसे यह पहन लीजिए। बहुत अच्छी चीज़ है। आपके शरीरपर खिलेगी।

लरजाँको चुननेसे कष्टसे छुटकारा मिल गया, बोली—बहुत अच्छा, यही ठीक है।

मिस फ़िलिपने उसी कपड़ेका जम्पर निकाल दिया। लरजाँने वह भी ले लिया, और कहा—ठीक है।

अब कपड़े पहननेका सवाल था। लरजाँ मिस फ़िलिपका मुँह देखने लगी। मतलब यह था, इन्हें कैसे पहनूँ ? मिस फ़िलिपने दिलमें कहा, कुँवर साहब भी पता नहीं किस जंगली लड़कीको पकड़ लाए हैं। प्रकटमें बोली—आइए, दूसरे कमरेमें चलकर पहना दूँ।

लरजाँ सिर झुकाकर उसके साथ चली गई।

आध घँटे बाद उसकी शक्ल ही और थी। कहाँ वह पहाड़ी, कहाँ यह सुन्दरी, जिसे देखकर आँखें रोशन हो जाएँ, मन नाचने लगे, तबयित हरी हो जाए। पहले मोती मिट्टीमें पड़ा था। अब मोती मखमलमें जड़ा था।

लरजाँ शीशेके सामने खड़ी हुई तो उसे सन्देह होने लगा कि शायद यह उसका प्रतिबिम्ब नहीं, शायद कोई दूसरी सुन्दरी खड़ी है। मगर नहीं, यह वही थी। राजकीय पोशाक और गहनोंने उसकी सूरत ही बदल दी थी। वह आनन्दसे झूमने लगी। वह चाहती थी, शीशेके सामने खड़ी अपनी सूरत देखती रहे। इस समय तक वह इन्दिराको बहुत सुन्दर समझती थी। उसकी शक्ल उसके मनमें समा गई थी। लेकिन, आज उसे शीशेके इस चित्रके सामने इन्दिरा भी हेच मालूम होने लगी। आज उसे पहली बार मालूम हुआ कि वह भी ख़ूबसूरत है, उसमें भी लुभानेकी शक्ति है। कभी अपनी तरफ़ देखती थी, कभी प्रतिबिम्बकी तरफ़—और मुस्कराती थी, और सोचती थी, वह क्यासे क्या बन गई ?

अचानक उसे शीशेमें कोई अपने पीछे आता दिखाई दिया। लरजाँ चौंककर पीछे मुड़ी और आनेवालेके सामने डरकर खड़ी हो गई। सोचती थी, यह कौन है ? और यहाँ क्या करने आया है ? बेलीने तो कहा था, यहाँ कोई दूसरा आदमी पाँव भी नहीं रख सकता। ज़रूर यह आदमी बेलीका अमीर दोस्त है जिसके यहाँ जलसा है। शानदार पोशाक थी, हाथोंमें मोटी मोटी अँगूठियाँ। लरजाँके पाँव काँपने लगे। न भाग सकती थी, न खड़ी रह सकती थी। क्या करे, क्या न करे। जाने वह स्त्री कहाँ चली गई ? जाने बेली कहाँ चला गया ?

उस सरदारने लरजाँके कंधेपर हाथ रख दिया और उसकी शक्ल शीशेमें देखने लगा।

लरजाँ जँगली हिरनीकी तरह चौंक पड़ी। उसने सरदारका हाथ अपने कंधेसे हटाकर सख़्तीसे परे झटक दिया और चिल्लाकर पूरे ज़ोरसे बोली—बेली !

सरदार हँसता रहा।

लरजाँ फिर चिल्लाई—बेली !

सरदारने उसकी ठोड़ीके नीचे उँगली रखकर उसका मुँह ऊपर उठाया और मुस्कराकर कहा—तेरा बेली तेरे सामने तो खड़ा है।

लरजाँ हैरान हो गई। तो यह कोई और न था उसका वही अपना बेली था। लेकिन उस बेली और इस बेलीमें कितना फ़र्क़ था। जाहिरमें उन दोनोंमें कोई समानता न थी। कहाँ वह एक कम्बल ओढ़नेवाला, नंगे सिर, नंगे पाँव रहनेवाला पत्थरोंका सौदागर, कहाँ यह राजोंकी-सी पोशाकमें सजा हुआ सजीला जवान !

दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े और देर तक हँसते रहे।

लरजाँ बोली—तुम तो पहचाने ही नहीं जाते। मैं धोखा खा गई। मैंने समझा कोई और है।

यह कहकर उसने कुँवरको सिरसे पाँव तक देखा और आँखें नचा कर मुस्कराई।

कुँवर—क्या करें, मेरे दोस्तने ज़बरदस्ती यह कपड़े पहना दिए। कहता है, आज तुम्हारा भी जलसा हो जाए। लाख बार नहीं की, लेकिन सुनता ही नहीं। हारकर मानना पड़ा।

लरजाँ—मुझे तो तुमने देखते ही पहचान लिया होगा।

कुँवर—बिल्कुल नहीं। मैं समझा, कोई रानी है। ध्यानसे देखा तो तुम थीं। क्या कहने ! कल तक लरजाँ थी, आज लरजाँ रानी बन गई। बस, ऐसे कपड़े पहना करो और मैं बाज़ी लगाता हूँ कि किरपी तुम्हें कभी न पहचानेगी।

लरजाँ—(शरमाकर) तुम किरपीकी कहते हो, मैं कहती हूँ, मुझे गाँव-भरमें कोई न पहचान सके।

कुँवर—(मुस्कराकर) सच कहता हूँ मुझे तो अब तुमसे बात चीत करते भी डर लगता है।

लरजाँ—वाह ! आए हैं बड़े डरनेवाले। अभी तो तुमने मुझे डरा दिया था। यह तुम्हारा दोस्त क्या बहुत अमीर है ? इतने कपड़े मँगवाकर मेरे सामने रख दिए कि मैं तो हैरान रह गई।

कुँवर—(रिस्ट-वाचमें समय देखकर) लेकिन तुमने साड़ी बहुत

बढ़िया पसन्द की। ऐसी साड़ी और किसीके पास न होगी। सब आदमी तुम्हारी तरफ़ देखेंगे। रानी मालूम होती हो।

लरजाँने अपने तिलई बूटकी ओर देखा और कहा—मेरा ख्याल है, तुम्हारे कपड़े बहुत बढ़िया है। सब स्त्रियाँ तुम्हारी तरफ़ देखेंगी। (मुस्कराकर) राजा मालूम होते हो।

कुँवर—ईश्वरसे क्या दूर है। सम्भव है, तुम रानी बन जाओ, मैं राजा बन जाऊँ। ईश्वर जो चाहे कर दे। उसके घरमें किसी चीज़-की कमी नहीं।

लरजाँने कहाँ—कल जब फिर वही कपड़े पहनोगे फिर पूछूँगी। चले हैं, राजा साहब बनने। जलसा कब शुरू होगा?

कुँवर—एक बजे। अभी ग्यारह बजे हैं। दो घंटे और हैं। खाना खालें तो चलें। जिस स्त्रीने तुम्हें कपड़े पहनाए हैं, वही तुम्हारे साथ रहेगी। मगर उससे कोई बात-चीत न करना। जो कुछ हो रहा हो, चुप-चाप देखते जाना। और उसके साथ ही लौट आना। मैं तुमसे यहीं मिलूँगा। जो कुछ पूछना हो, मुझसे पूछना।

लरजाँ—बहुत अच्छा। मगर बात-चीत करनेमें क्या हर्ज है?

कुँवर—यह तुम नहीं जानतीं, मैं जानता हूँ।

इसके बाद कुँवर ज़रा बाहर चले गए। लरजाँ फिर शीशेके सामने थी। बार बार अपनी शक्ल देखती थी और मोह और मस्तीसे झूमती थी। वह अपनी ही शक्लपर मोहित हो गई थी। वह अपने आपको देखनेमें ऐसी लीन हुई कि एक घंटा बीत गया और उसे मालूम भी न हुआ। इतनेमें कुँवरने आकर उसकी यह दशा देखी और अर्थ-पूर्ण भावसे मुस्कराकर कहा—शीशा देखनेके लिए सारी रात पड़ी है। जी भरकर देख लेना। कोई इसे उठाकर थोड़ा ले जायगा! इस समय ज़रा कामका ख्याल करो।

लरजाँ शरमसे पानी पानी हो गई मगर सुन्दरताका अभिमान अब भी वैसा ही था।

१६

एक बजे जलसा शुरू हुआ। दरबार महाराजों, अमीरों और वज़ीरोंसे खचाखच भरा हुआ था। एक तरफ़ महिलाएँ बैठी थीं। सभापति वायसराय थे। महाराजा काश्मीरने अपने भाषणमें कुँवर सूर्यप्रकाशसिंहकी दिल खोलकर तारीफ़ की। कहा—इस इनामके लिए कोई ग्यारह सौ किताबें आईं। कुछ किताबें ऐसे लेखकोंकी लिखी हुई हैं, जिनके क़लमका दबदबा भारतके कोने कोनेमें है। किताबें सब अच्छी हैं, लेकिन जो चीज़ युवराजकी किताबमें है, वह दूसरी किसी किताबमें नहीं। दूसरी पुस्तकोंसे केवल परिचय प्राप्त होता है, कुँवर साहबकी पुस्तक पढ़कर आँखोंतले चित्र खिंच जाता है। ऐसा ज़ोरदार बयान जज साहबानको और किसी पुस्तकमें नहीं मिला। और इसका सबब यह है कि जहाँ दूसरे लेखकोंने काश्मीरकी सैर की, चित्र खींचे, ज़रूरी बातें नोट कीं और फिर पुस्तक लिखनेके लिए घर चले गए; वहाँ कुँवर सूर्यप्रकाशसिंहने अपने राजकीय जीवनका पूरा एक वर्ष इसी देशमें गुज़ारा। और डाक-बंगलेमें रहकर नहीं, खैमेमें रहकर नहीं, ग़रीब पहाड़ी बनकर। यह वीर नवयुवक पूरे एक साल तक ग़रीबोंकी तरह नंगे सिर, नंगे पाँव, एक लम्बा कुर्ता पहिनकर, एक मामूली कम्बल ओढ़कर काश्मीरके ग़रीब लोगोंका-सा जीवन गुज़ारता रहा। यह एक वर्षके तीन सौ पैंसठ दिनोंका अध्ययन है जिसने इस पुस्तकमें जान डाल दी है। (तालियाँ)

सभापति महोदय और सज्जनो, कल तक यह नवयुवक वीर उन्हीं ग़रीबाना कपड़ोंमें था। जब वह इस जलसेमें शामिल होनेके लिए श्रीनगर आ रहा था, उस समय भी उसके शरीरपर एक लम्बा कुरता

और कंधेपर एक साधारण कम्बल था। कल तक उसके पाँवमें कोई जूता न था, कल तक उसके सिरपर कोई पगड़ी न थी, कल तक उसकी देहपर कोई कोट न था। मैंने उसे इस पोशाकमें देखा तो मुझे गर्व हुआ। (तालियाँ)

सभापति महोदय और सज्जनो, मुझे गर्व हुआ कि नरेन्द्र-मंडलमें ऐसा सादा, ऐसा मेहनत-पसन्द आदमी भी है। मैं महाराजा साहब सिकंधीरको बधाई देता हूँ कि उनके बेटेको यह श्रेय मिला। (तालियाँ) मैं महाराजोंको बधाई देता हूँ कि उनकी बिरादरीके एक नवयुवकने साहित्य-क्षेत्रमें यह ऊँचा स्थान प्राप्त किया (तालियाँ)। मैं वायसराय बहादुरके ज़रिए ब्रिटिश एम्पायरको बधाई देता हूँ जिसके एक राजाने अपनी लेखनीसे इनाम जीता। (तालियाँ)

सभापति महोदय और सज्जनो, आप यह सुनकर .खुश होंगे कि मैंने अपने आदमीसे कहकर कुँवर सूर्यप्रकाशसिंहका उन्हीं कपड़ोंमें फ़ोटो उतरवा लिया है (क़हक़हा।) और वह फ़ोटो हमारे दरबारकी शोभा होगा। (क़हक़हा) और मुझे आशा है कि कुँवर साहब मुझे इस गुस्ताख़ीके लिए क्षमा करेंगे। (क़हक़हा)

सज्जनो, मैं इससे भी दो क़दम आगे जाता हूँ और चाहता हूँ कि ईश्वर करे, कुँवर साहबके जीवनमें उनकी इस तरह कमसे कम एक बार फिर गुस्ताख़ी हो और इस गुस्ताख़ीपर हम सब मिलकर एक बार फिर उनको बधाई दें। (क़हक़हा और तालियाँ) और इसके साथ ही इनाम भी दें।

महाराजा साहब भाषण दे कर बैठ गए; लेकिन, लरजाँ कुछ न समझ सकी। उसने धीरेसे मिस फ़िलिपसे पूछा—इन्होंने क्या कहा है?

मिस फ़िलिप—(लरजाँके कानमें बहुत धीरेसे) इन्होंने एक पुस्तक लिखनेपर पचास हज़ार रुपया देनेकी घोषणा की थी। यह इनाम राजकुमारने जीत लिया है, उसकी तारीफ़ करते हैं।

यह कहकर मिस फ़िलिप प्लैटफ़ार्मकी तरफ़ देखने लगी। लेकिन लरजाँने फिर उसके कंधेको हिलाकर कहा—कौन राजकुमार है वह ?

मिस फ़िलिप—(मुस्कराकर धीरेसे) कुँवर सूर्यप्रकाशसिंह। मेरा ख़्याल है, तुम उन्हें जानती हो।

लरजाँ—(बेपरवाहीसे) नहीं, मैं नहीं जानती। कहाँ बैठे हैं ?

मिस फ़िलिपने उँगलीसे प्लैटफ़ार्मकी ओर इशारा किया। लरजाँने कुरसीसे उठकर देखनेकी कोशिश की, मगर मिस फ़िलिपका इशारा किस आदमीकी तरफ़ है, यह न समझ सकी। इधर मिस फ़िलिपने भी .ज्यादा परवाह न की। उसका ख़्याल था, यह सब कुछ जानती है।

अब वायसराय बहादुर खड़े हुए। उन्होंने भी कुँवर साहबकी योग्यता, और परिश्रमकी तारीफ़ की और पचास हज़ारका चेक आगे बढ़ाकर कहा—यह कुँवर साहबकी भेंट है। और मुझे गर्व है कि यह काम मुझे सौंपा गया है। आजकी यह घटना मेरे जीवनमें सदा जीती रहगी। ऐसे मौक़े रोज़ रोज़ नहीं आते, कभी कभी आते हैं।

मिस फ़िलिपने लरजाँके कानमें कहा—अब कुँवर सूर्यप्रकाशसिंह खड़े होंगे, अच्छी तरह देखना। और लरजाँ बड़े ध्यानसे देखने लगी। एक लम्बा नवयुवक आगे बढ़ा। उसने पहले चेक लिया, फिर वायसराय बहादुरको फ़ौजी सलाम किया।

दरबार तालियोंसे गूँज उठा, लरजाँ भी तालियाँ पीट रही थी, और खुश थी।

अब वह नवयुवक प्लैट-फ़ार्मपर खड़ा था और कुछ बोलना चाहता था। लरजाँने उसे देखा और सन्नाटेमें आ गई—यह तो उसका बेली था। यह तो पत्थरोंका सौदागर था।

लरजाँकी आँखोंमें दीवारें चक्कर खाने लगीं। क्या समझा था, क्या हो गया ? उसे राजकुमारी इन्दिराके शब्द याद आ गए कि यह आदमी तुम्हें धोखा दे रहा है। तो उसका संदेह ग़लत न था ? यह सचमुच

राजेका बेटा है ! फिर ख़्याल आया, मैं ग़रीब, यह राजेका बेटा, इसका मन मुझसे न मिलेगा। संभव है, चार ही दिनके बाद निकालकर बाहर फेंक दे। उस समय मैं उसका क्या बिगाड़ लूँगी ? लरजाँकी आँखोंमें आँसू आ गए। सोचती थी, इसने बड़ा धोखा दिया। पहले मालूम होता कि यह आदमी ऐसा झूठा है तो इससे बात भी न करती। कहता था, पत्थरोंका सौदागर हूँ। जो शुरूहीमें धोखा दे रहा है, वह आगे चलकर क्या क्या गुल न खिलाएगा।

कुँवर साहब भाषण दे रहे थे। लोग चुपचाप ध्यानसे सुन रहे थे। उनके अनुभव ऐसे दिलचस्प, ऐसे रंगीन, ऐसे मज़ेदार थे कि लोगोंको उपन्यासका-सा स्वाद आ रहा था। मगर लरजाँको इसमें ज़रा भी दिलचस्पी न थी। वह अपने ही विचारोंमें डूबी हुई थी। उसे अब यह भी मालूम न था कि उसके इर्द-गिर्द क्या हो रहा है। यहाँ तक कि जलसा समाप्त हो गया और लोग उठ खड़े हुए। जब वायसराय बहादुर और उनके स्टाफ़के आदमी जा चुके तो दूसरे लोग भी चले। लरजाँ मिस फ़िलिपके साथ बाहर आई। वहाँ सैकड़ों मोटर और गाड़ियाँ खड़ी थीं। लरजाँ भी मिस फ़िलिपके साथ अपने मोटरमें बैठ गई और कोठीपर जा पहुँची। इस समय उसकी आँखोंमें ज़मीन आसमान घूम रहे थे।

थोड़ी देर बाद उसने अपने यह कपड़े उतारकर कुरसीपर रख दिए और फिर अपने वही पुराने कपड़े पहन लिए। शीशेमें मुँह देखा तो वह बात ही न थी। अभी कुछ देर पहले यह कपड़े पहनकर कितनी खुश हुई थी ! लरजाँकी आँखोंमें आँसू आ गए, मगर उसके संकल्पमें फ़र्क़ न आया। दरबान सदर फाटकपर बैठा ही रह गया और लरजाँ चुपचाप पिछले दरवाज़ेसे बाहर निकल आई। इस समय उसका दिल इतना भारी हो रहा था जैसे उसपर किसीने पत्थर रख दिया हो, जैसे सिरपर कोई संकट आ पड़ा हो।

तीन बजे वह एक लारीमें बैठी अपने गाँवको जा रही थी।

१७

दरबार समाप्त हो चुकनेपर कुँवर साहबको दोस्तोंने घेर लिया और बधाइयाँ देने लगे। इनमेंसे कई उनके साथ कालिजमें पढ़े थे। कई उनकी रियासतमें उनके अतिथि रह चुके थे। कुछ ऐसे भी थे जिनकी रियासतमें वे गए थे। सब एक ही आयुके थे। हँस हँसकर बातें करते थे और एक दूसरेको छेड़ते थे। मगर कुँवर साहबका दिल यहाँ न था। वे चाहते थे, जितनी जल्दी हो सके लरजाँके पास पहुँच जाएँ। आज उसे सब कुछ मालूम हो गया है। जाने क्या सोच रही होगी। सम्भव है, नाराज़ हो कि मुझे अँधेरेमें क्यों रक्खा? सम्भव है, खुश हो रही हो कि यह तो राजकुमार निकल आया। आज वे जाकर उसके सामने अपना दिल खोलकर रख देंगे। आज उससे साफ़ साफ़ कह देंगे कि मैं तो तुमसे ब्याह करना चाहता हूँ, बोलो कोई आपत्ति तो नहीं? लेकिन दोस्त उनको छोड़ते ही न थे और कुँवर झुँझलाते थे।

कोई पूछता, यार तुमने सालभर झोंपड़ेमें गुज़ारा कैसे कर लिया? हमसे तो वहाँ एक दिन भी न रहा जाए। कोई कहता, पचास हज़ारका इनाम मिलनेकी आशा हो तो सब कुछ हो जाता है। मुझे दो, मैं दो साल पड़ा रहूँ। मामूली बात है।

कोई कहता, सुना है, एक परीने इनपर जादू कर दिया था। वरनों यह ऐसे कहाँके भक्त थे जो साल भर तपस्या करते रहते।

एक राजकुमारने कहा—भाई, वह चित्र उड़ाओ जो काश्मीर-

नरेशने बनवाया है। देखें, यह भला आदमी लम्बा कुरता पहनकर कैसा मालूम होता है ? पाँव भी नंगे, सिर भी नंगा। (मुँह बनाकर) अजीब सूरत बनी होगी। क्यों भाई ?

इसपर सबने क़हक़हा लगाया। चमन खिल गया।

फिर एक बोला—मगर वह लड़की कौन है, जिसके लिए आपने जोग ले लिया था ?

दूसरा—घबराते क्यों हो, किसी दिन दिखा देंगे। एक जोगिन है, और कौन है ?

तीसरा—तो यह इनाम उसीको मिलना चाहिए, इसपर इनका कोई अधिकार नहीं। पुस्तककी लेखिका वह है, इनाम इन्हें मिल गया। यह सरासर बे-इन्साफ़ी है।

राजकुमारने मुस्कराकर उसकी ओर देखा, लेकिन मुँहसे कुछ न कहा।

पहला—तो चलो, उसको भड़का दें, कि इनाम तुम्हारा है। ये मुँह देखते ही रह जाएँ। (कुछ देर चुप रहनेके बाद) यार, मज़ा आ जाए, अगर समाचारपत्रोंमें यह निकल जाए कि किताब लिखनेवाली एक औरत है। राजकुमारका सिर्फ़ नाम ही नाम है।

कुँवर—(मुस्कराकर) लेकिन तुम्हें तो फिर भी कुछ न मिलेगा! कोई ऐसा उपाय सोचो, जिससे यह इनाम तुम्हें मिल जाए।

दूसरा—इन्हें इनाम मिलेगा ! दो लाइनें लिखते हैं, चार ग़ल्तियाँ करते हैं !

पहला—हम तो चाहते हैं, इनसे छिन जाए। लेनेवाला चाहे काला चोर हो, हमसे उससे कोई सरोकार नहीं।

तीसरा—काला चोर बननेको मैं मौजूद हूँ। (कुँवर सूर्यप्रकाश-सिंहके कंधेपर हाथ रखकर) क्यों भाई ?

कुँवर—(मुस्कराकर) बड़ी दया आपकी, जो आप इतनी कुरबानी कर रहे हैं। लेकिन अब यहाँ कब तक खड़े रहोगे ? सारी दुनिया तो चली गई, हम अभी यहीं डटे हैं। चलो, चलें।

पहला—दिलमें कुछ हो रहा होगा। कहाँ जाओगे, वहीं ?

कुँवर—महाराजके पास जाऊँगा और कहाँ जाऊँगा ? अभी तक नहीं मिला, राह देख रहे होंगे।

दूसरा—अरे मेरे यार, अभी तक नहीं मिले ? तुमने तो कमाल कर दिया। भागके जाओ, एक मिनट न ठहरो। (दूसरोंसे) चलो भाई, अब न रोको, नहीं तो—

तीसरा—आज कोई इनके माँ-बापसे पूछे। खुशीसे फूले न समाते होंगे। क्यों भाई, जलसा कब दोगे ? और सबको एक एक पुस्तक भी मिलनी चाहिए। आजके दिनकी यादगार।

चौथा—अब इस समय जाने दो। यह बातें फिर हो लेंगी। (कुँवरसे) कहाँ ठहरे हो ? वहाँ आ पकड़ेंगे।

कुँवर—निशातबाग़की सड़कपर जो हरे रंगकी कोठी है, वहीं।

यह कहते कहते वे बाहर चले आए और अपने मोटरमें बैठ गए। इसके साथ ही दूसरे राजकुमार भी अपनी अपनी गाड़ीमें बैठकर चले गए। अब वहाँ कोई भी न था।

कुँवरके पिता महाराज पृथ्वीचन्द्रसिंह और उनकी रानी कुँवरकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इतनेमें कुँवरने आकर महाराजके चरणोंमें सिर रख दिया। महाराजकी खुशीका ठिकाना न था। उन्होंने बेटेको ज़मीनसे उठाकर गलेसे लगा लिया और रोने लगे। खुशी इतनी थी कि दिलमें समाती न थी। हँसते भी थे, रोते भी थे। पिताके बाद कुँवरने माके पाँव पकड़े। मा बेटेके दुःखमें रो रोकर आधी रह गई थी। इस समय यह वह महारानी मालूम ही न होती थी। मुँहकी हड्डियाँ निकल आई

थीं, आँखें अन्दरको धँस गई थीं। कभी उनके दर्शन करके कुँवरका दिल खिल उठता था, लेकिन आज उसे देखकर कुँवर साहब डर गए। बेसमझ बच्चेने पेड़को बसन्तमें हरा-भरा देखा था, पत-झड़का ठूँठ देखकर पहचानना भी मुश्किल हो गया। न वह चिकनाई थी, न वह गदराहट। कुँवर साहबको आश्चर्य हुआ, बोले—आपकी तो शक्ल ही बदल गई। क्या बीमार थीं ?

महारानीने रोते रोते हँसकर कुँवरको अपने पास सोफ़ेपर बिठा लिया और कहा—बेटा, तुम्हारी ही बीमारी थी। अब बच जाऊँगी।

महाराज बोले—अरे भई, यह ज़िन्दा हैं यही ग़नीमत समझो। तुम्हारे बाद इन्होंने खाना-पीना तक बन्द कर दिया। दिनको जब देखो, रो रही हैं और तुम्हारी बातें कर रही हैं। रातको जब देखो, जाग रही हैं और तुम्हारे बारेमें सोच रही हैं। अब मैं क्या कहूँ तुमसे, मैंने इन्हें किस किस तरह समझाया है। लेकिन इनपर ज़रा असर न होता था। (महारानीकी ओर देखकर) अब तो मुस्करा रहीं हैं। जाने यह मुस्कराहट पहले कहाँ चली गई थी !

महारानी—(मुस्कराकर) यहाँ चली आई थी।

कुँवर—मैं इन्हें अकेला देखता तो पहचानना कठिन हो जाता। हड्डियाँ निकल आई हैं।

महाराज—तुम मुझसे नाराज़ थे, इनसे तो नाराज़ न थे। अगर इनको कभी कभी पत्र लिखा दिया करते तो इनकी यह दशा न होती। न सेहत बिगड़ती, न देह सूखती।

महारानी—इतना तो धीरज हो जाता कि तुम अच्छी तरहसे हो, चार दिनमें आ जाओगे। मगर तुम तो ऐसे गए कि एक पत्र तक न लिखा। मेरे दिलमें बुरे बुरे विचार आते थे। सोचती थी, जाने उसे खानेको भी मिलता है या नहीं। जाने उसे कोई देखनेवाला भी है, या नहीं।

कुँवर—देख लो, मैं परदेसमें फ़ाके करते करते मोटा हो गया! आप घरमें खा-पीकर भी कमज़ोर हो गईं।

महारानी—चल झूठा कहींका, कहता है मोटा हो गया हूँ। ज़रा शीशेमें अपना मुँह तो देख, वह बात ही नहीं रही।

कुँवर—अब आपके लिए तो सदा ही कमज़ोर रहूँगा। यह आपका दोष नहीं, माकी आँखोंका दोष है।

महारानी—जिस दिन इन्दिरासे मालूम हुआ कि तू पुस्तक लिखा रहा है, उस दिन संतोष हुआ। मैं चाहती थी, तेरा पता मिल जाए, तो उड़कर तेरे पास पहुँच जाऊँ और तुझे गलेसे लगा लूँ। लेकिन तूने, भगवान जाने, उसे क्या सिखा दिया था कि वह सब कुछ बताती थी, यह न बताती थी कि तू कहाँ है? बस मन मारकर रह गई। तू इतना संगदिल है कि तुझे मा-बापका ख़्याल भी न आया।

महाराज—महल काटनेको दौड़ता था।

कुँवर—देख लीजिए, इनाम जीत लिया।

यह कहकर उन्होंने जेबसे पचास हज़ारका चेक निकाला और महाराजके चरणोंमें रख दिया।

महाराजने चेकको उठाकर चूम लिया और कहा—यह चेक नहीं, हमारी रियासतका गौरव हैं। ऐसा अनमोल हीरा मेरे खज़ानेमें दूसरा नहीं है।

कुँवर—(सिर झुकाकर) मेरी पहली कमाई आपकी भेंट है।

महाराजने मुस्कराकर चेक कुँवरको लौटा दिया और कहा—सिकंधीर चलो। वहाँ तुम्हारे लिए एक और इनाम तैयार है।

कुँवरने चौंककर महारानीकी तरफ़ देखा और आँखों ही आँखोंमें पूछा,—यह क्या कह रहे हैं?

महारानीने कहा—इन्होंने दसहरेपर नाच-गाना बन्द कर दिया है। इस बार वह सारा रुपया ग़रीबोंपर ख़र्च होगा। कथा होगी, जलसे

होंगे, लेकिन नाच न होगा। (मुस्कराकर) पूरे भक्त बन गए हैं। और, भक्त क्या, भक्त-राज समझो। सारी प्रजा हैरान है।

कुँवरकी आँखोंमें आँसू आ गए। महाराजकी तरफ़ श्रद्धापूर्ण आँखोंसे देखकर बोले—मुझे यह इनाम पानेका जो आनन्द था वह इस .ख़ुशख़बरीको सुनकर दूना हो गया है। मेरा इनाम पचास हज़ारका चेक नहीं—ऐसे कितने ही पचास हज़ार आपसे ले चुका और कितने ही और लूँगा। मेरा सच्चा इनाम यह है कि आपने जातीय उत्सवकी महत्ता समझ ली और रियासतके निर्धनोंकी पुकार सुन ली। संभव है, उस दिन मेरे मुँहसे कोई अपशब्द निकल गया हो। मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूँ। यह मेरी उद्दंडता थी।

यह कहते कहते कुँवर साहब फिर महाराजके पाँवसे लिपट गए। महाराजने उन्हें उठाकर फिर गलेसे लगा लिया और कहा—मुझे तेरी उद्दंडतापर गर्व है। मैं चाहता हूँ तू सारी आयु वैसा ही उद्दंड बना रहे, और मुझे सीधा रास्ता दिखाता रहे।

महारानी सामने खड़ी पिताके प्यार और पुत्रकी श्रद्धाका यह स्वर्गीय दृश्य देखती थीं और खुश: होती थीं। इस समय उनका रोम रोम मुस्करा रहा था। वह खिली जाती थीं। वह निहाल हो रही थीं। आज उन्हें खोया हुआ बेटा ही न मिला था, उनके बेटेको पिताका प्यार भी मिल गया था;—वह चीज़ जिसे स्त्री दुनियामें सबसे अधिक चाहती है। आज उनकी-सी भाग्यवती दुनियामें कौन होगी? आज उनकी उदास आँखें अबोध बालककी तरह हँस रही थीं। आज उनका पीला चेहरा गुलाबके फूलकी तरह खिला हुआ था; चाँदकी तरह चमकता था। खुशी इतनी थी कि छिपाए न छिपती थी।

महारानीने बेटेके सिरपर अशर्फ़ियाँ वार कर गरीबोंमें बाँटीं। कोठीके बाहर सैकड़ों फ़क़ीर जमा हो गए थे। कोई ख़ाली हाथ न गया। कुँवर साहबने अपने नौकरोंको इनाम दिया, सबसे हँस हँसकर बातें कीं, उनकी ख़ैर-ख़बर पूछी। चारों तरफ़ आनन्दकी लहर दौड़

गई। रूठी हुई .खुशी कई साल बाद इस घरमें वापस आई। बातें होने लगीं।

१८

कुँवर साहब यहाँसे चले तो रातके ग्यारह बजे चुके थे। दिलमें डरते थे कि लरजाँ भरी बैठी होगी। कहेगी, तुमने अभीसे बेपरवाही शुरू कर दी, आगे चलकर क्या हाल होगा ? सोचते थे, कैसे समझाऊँगा ! मगर वहाँ जाकर देखा तो कमरा ख़ाली पड़ा था। कुँवर साहबका कलेजा सन-से हो गया। एक एक करके सब कमरे देखे, मगर लरजाँ कहीं भी न थी। न अपने कमरेमें, न उनके कमरेमें। दरबानसे पूछा तो उसने कहा— सरकार, इधरसे तो गई नहीं, शायद पिछले दरवाज़ेसे निकल गई हों। फिर ड्रेसिंग-रूममें आए। वहाँ एक कोनेम कुरसीपर लरजाँके वे गहने और कपड़े रक्खे थे जो पहनकर वह फूली न समाती थी। पास ही उसका तिलई जूता पड़ा था। कुँवर साहब एक एक वस्तुको देखते थे और ठंडी आहें भरते थे। पेड़ उसी तरह खड़ा था, मगर उसपर चहकनेवाला पंछी कहीं दिखाई न देता था। कुँवर साहब सोचते थे, कहाँ गई होगी ? अपने झोंपड़ेके सिवाय उसे और कौन-सी जगह पसंद है ! जरूर वहीं गई है। उन्हें यह ख्याल तो था, कि लरजाँ नाराज़ होगी और लड़े झगड़ेगी। लेकिन यह ख्याल न था, कि वह उन्हें छोड़कर चली जाएगी। इतना संतोष था कि उसके पास कुछ रुपए हैं, अगर ज़रूरत पड़ी तो किसीके मुँहकी तरफ़ न देखेगी। जो चाहेगी, ख़रच कर लेगी। इतनेमें घड़ीने चार बजा दिये, कुँवर साहब चौंककर खड़े हो गए। दूसरे कमरेमें आकर उन्होंने अपने पिता और महाराजा काश्मीरके नाम पत्र लिखे और उन्हें मेज़पर

रख दिया। इसके बाद दरबानको बुलाकर कहा—एक चिट्ठी महाराजा सिकंधीरके नाम है, दूसरी महाराजा काश्मीरके नाम। प्रातःकाल उनके पास पहुँच जाएँ। और ड्राइवरको बुलाओ, मुझे इसी समय जाना है।

कुछ देर बाद वे मोटरमें बैठे लरजाँके गाँवको जा रहे थे। इस समय उनके चेहरेपर खुशी भी थी, चिन्ता भी। खुशी इस लिए कि अभी लरजाँके पास जा पहुँचेंगे। चिन्ता इस लिए कि अगर वह वहाँ भी न मिली तो कहाँ ढूँढूँगा? कभी आशासे दिलका कमल खिल उठता था, कभी निराशासे दिलका कमल मुरझा जाता था। यहाँ तक कि नौ बजते बजते, वे लरजाँके झोंपड़ेके सामने जा पहुँचे।

मगर दरवाज़ा अन्दरसे बन्द था। कुँवरने दरवाज़ा खटखटाया।

अन्दरसे आवाज़ आई—कौन है?

कुँवर साहबकी आँखें चमकने लगीं—यह लरजाँकी आवाज़ थी। उनकी जानमें जान आ गई। घमंडसे बोले—हम हैं—राजकुमार सूर्यप्रकाशसिंह रियासत सिकंधीरके उत्तराधिकारी। दरवाज़ा खोल दो।

लरजाँ दरवाज़ेके पास आ गई, मगर उसने दरवाज़ा नहीं खोला। रुखाईसे बोली—आप क्या चाहते हैं?

कुँवर साहबने दरवाज़ेपर तबला बजाते हुए हँसकर कहा—हमारी लरजाँ रानी खो गई है। सुना है, वह यहाँ इस जगह छिपी बैठी है। हम तलाशी लेने आए हैं।

लरजाँ—यहाँ कोई रानी-वानी नहीं। यह ग़रीबका झोंपड़ा है, राजेका महल नहीं। आप कहीं और देखिए।

यह कहकर लरजाँ अन्दर चली गई। कुँवर साहबको आश्चर्य हुआ। दरवाज़ेपर ज़ोरसे हाथ मारकर बोले—लरजाँ, यह मैं हूँ। क्या आवाज़ नहीं पहचानती, दरवाज़ा खोल दे।

लरजाँ दरवाज़ेके पास आ गई और धीरेसे बोली—भगवान जाने, आप कौन हैं, कौन नहीं हैं। मैं बेलीको छोड़कर और किसी दूसरे पुरुषको नहीं जानती।

कुँवर—अरे मैं अब इतना पराया हो गया ! लरजाँ, मैं तुम्हारा वही बेली हूँ, बेली ।

अब कुँवर साहबकी आवाज़ काँप रही थी ।

लरजाँ—वह नंगे सिर, नंगे पाँव रहता है, आपका शरीर बढ़िया कपड़ोंमें लिपटा हुआ है । वह अपने मित्रसे मिलने गया है, आप पचास हज़ार रुपया इनाम लेकर आए हैं । आप वह नहीं हैं ।

यह कहते कहते उसके शब्द होठोंपर जम गए और आवाज़ गलेमें फँस गई । कुँवर साहबने भर्राई हुई आवाज़में कहा—लरजाँ !

लरजाँ—अगर वे आते, तो यह दरवाज़ा एक मिनटमें खुल जाता । मैं उनको जानती हूँ । (ठंडी आह भरकर) भगवान जाने, वे कहाँ चले गए । यह दरवाज़ा उनके लिए सदा खुला है, मगर और किसीके लिए नहीं । यहाँ तक कि किसी राजकुमारके लिए भी नहीं !

यह कहकर वह अन्दर चली गई । कुँवर साहब हैरान रह गए । जो जो उमंगें लेकर आए थे, उन सबपर पानी फिर गया । कुछ देर उसी तरह वहाँ खड़े रहे और कुछ सोचते रहे, इसके बाद लौट कर मोटरमें बैठ गए । जैसे कोई जुएमें अपनी सारी पूँजी हारकर घर लौट रहा हो और सोचता हो कि अगर और कुछ मिल जाए तो उसे भी लाकर दावमें लगा दे । जैसे कोई मुर्देको जलाकर जा रहा हो, और सोचता हो क्या यह अब कभी न मिलेगा ?

लरजाँने उनको इस तरह जाते देखा तो झट दरवाज़ा खोल दिया और उनके पीछे दौड़ी । मगर जब तक वह गाड़ीके पास पहुँचे, गाड़ी रवाना हो चुकी थी । लरजाँ एक पत्थरपर बैठ गई और फूट फूटकर रोने लगी । वह चाहती थी, गया हुआ समय लौट आए, और उसके साथ ही एक बार कुँवर भी लौट आएँ । मगर कुँवर और समय दोनों जा चुके थे । वह सामने खड़ी देखती थी और कुछ कर न सकती थी । केवल रोती थी और गाड़ीकी तरफ़ देखती थी । थोड़ी

देर बाद गाड़ी भी आँखोंसे ओझल हो गई। अब लरजाँके लिए संसार अँधेरा था, रोशनी कहीं भी न थी। उस गाड़ीके साथ ही उसके जीवनकी सारी खुशियाँ भी चली गई थीं।

रातके दस बजे उसके दरवाज़ेपर फिर किसीने दस्तक दी। उस समय किरपी सो गई थी, मगर लरजाँकी आँखोंमें अभी तक नींद न थी। पुआलपर बैठी सोचती थी, मैंने क्या कर दिया! चौंक कर बोली—कौन है इस वक़्त ?

"तुम्हारा बेली।"

लरजाँकी रग रगमें प्रसन्नताकी लहर दौड़ गई—यह वही थे। उसने उठकर दरवाज़ा खोल दिया और देखा, सामने उसका बेली खड़ा है। वही लम्बा कुरता, वही कंबल, नंगे पांव, नंगा सिर। लरजाँने एक क्षण तक अपनी काली बड़ी बड़ी, आश्चर्ययुक्त आँखोंसे उनकी ओर देखा और इसके बाद दौड़कर उनसे लिपट गई। आशा और प्रेम गले लगकर रोने लगे।

कुछ देर तक प्रेमी और प्रेमिका इसी तरह खड़े रहे। इसके बाद अन्दर जाकर पुआलपर बैठ गए और बातें करने लगे। कुँवरने पूछा —तुम अभी तक सोई क्यों न थीं ?

लरजाँने कुँवरके ठंडे पाँवोंको कम्बलमें लपेटते हुए उत्तर दिया— नींद न आती थी महाराज !

कुँवर—(मुस्कराकर) यही तो पूछता हूँ, देवीजीकी नींद आज कहाँ चली गई थी ?

लरजाँने भी मुस्कराकर कुँवरकी तरफ़ देखा और शरमाकर जवाब दिया—देवीजीकी नींद आज एक देवताजीको ढूँढ़ने चली गई थी।

कुँवर—उस समय तो कहती थीं, मैं नहीं जानती तुम कौन हो, भाग जाओ यहाँसे !

लरजाँ—वह कोई राजकुमार था, तुम न थे। तुम आए, तो एक मिनटमें दरवाज़ा खुल गया।

कुँवर—मगर वह राजकुमार तो तुम्हारी पूजा करता है। मेरा ख़्याल है, तुम्हारे बिना उसका जीवन नष्ट हो जायगा।

लरजाँने कुँवरको तिरछी चितवनसे देखा और मुस्कराकर कहा—तो यह कहिए, आप उसकी सिफ़ारिश लेकर आए हैं, क्यों ?

कुँवर—अब जो चाहो, समझ लो। बेचारा सारा दिन रोता रहा है। आशा दिलाओ, तो जी जाए।

लरजाँ—न बाबा! मेरे लिए मेरा पत्थरोंका सौदागर सब कुछ है, मुझे राजकुमार नहीं चाहिए। राजकुमारोंका क्या है, आज मुझसे प्यार जता रहे हैं, कल दिलसे उतार दें और किसी औरको ढूँढ़ लें तो मैं उनका क्या कर लूँगी ? कुछ भी नहीं। सारी दुनिया उनकी हिमायत करेगी, लरजाँकी कौन सुनेगा ? मुझे राजकुमार नहीं चाहिए। राजकुमार बुरे, राजकुमारोंकी आदतें बुरी।

कुँवर—यह तुम्हारा वहम है। पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं। जो महल छोड़कर यहाँ पड़ा रहा है, आख़िर उसे तुम्हारा कुछ ख़्याल था या नहीं ? बोलो।

लरजाँ—मुझे क्या मालूम, ख़्याल था, या नहीं ? यह उससे पूछिए।

कुँवर—उससे सब कुछ पूछ चुका। कहता है, अगर न मानेगी तो रियासत छोड़ दूँगा।—कम्बल ओढ़ लो, सरदी लग जाएगी।

लरजाँने कम्बल ओढ़ लिया और कहा—यह तो आपने बुरी सुनाई। मगर मुझे राजकुमारोंसे डर लगता है। आपहीने तो उस दिन कहा था कि राजे बेपरवाह होते हैं।

कुँवर—बड़ी भोली हो। मैंने यह कब कहा था कि सारे राजे बेपरवाह होते हैं ? वह राजकुमार ऐसा आदमी नहीं।

लरजाँ—(मुस्कराकार) बड़ा महात्मा है क्या ?

कुँवरको हँसी आ गई, बोले—यह तुम आप देख लोगी, मैं और क्या कहूँ! इतना कह सकता हूँ कि तुम उसके दिलमें रहोगी, आँखोंमें

बसोगी। वह तुम्हारी पूजा करेगा। क्या मजाल जो तुम्हें ज़रा भी कष्ट हो जाए।

लरजाँ—मगर उसके मा-बाप मान लेंगे? वे राजे, मैं एकदम ग़रीब, बल्कि कंगाल। यह रिश्ता कैसे पसंद कर लेंगे?

कुँवर—उनसे सब कुछ तय हो चुका। वे कहते हैं, हमें कोई उज़्र नहीं, जो तुम्हें पसन्द, वह हमें पसन्द।

अब दोनों चुप हो गए और कुप्पीकी रोशनीमें एक दूसरेकी तरफ़ देखने लगे। इसी तरह लगभग पन्द्रह मिनट बीत गए। इसके बाद लरजाँने कुँवरकी ओर करुणामय आँखोंसे देखा और कहा—मैं सीधी-सादी ग़रीब लड़की हूँ, मुझे धोखा न देना। मेरा एक भगवान है, दूसरे तुम हो, तीसरा कोई नहीं है। और मुझे भगवानसे ज़्यादा तुमसे आशा है। यह आशा टूटी, तो मैं कहींकी न रहूँगी। मेरी दुनिया सूनी हो जाएगी।

इस समय उसकी आँखोंमें आँसू लहरा रहे थे।

कुँवरने आगे बढ़कर उसके दोनों हाथ अपने हाथोंमें ले लिए और प्यारसे कहा—क्या तुमने मुझे अभी तक नहीं पहचाना?

लरजाँने सिर झुकाकर धीरेसे जवाब दिया—पहचाना न होता तो यह नौबत न आती। अब देखती हूँ, आप राजकुमार होकर भी वही पत्थरोंके सौदागर हैं, अमीर होकर भी वही ग़रीब बेली हैं।

कुँवर—और मुझे ऐसा नज़र आता है कि तुम राज-रानी होकर भी मेरी वही लरजाँ हो जो अभी रूठती है, अभी मान जाती है।

लरजाँ मुस्कराई।

कुँवर—जब तुमने दरवाज़ा न खोला, तो मैं बड़ा चकराया। सोचता था, अब क्या करूँ?

लरजाँ—और जब आप चले गए तो मेरी जान ही निकल गई। सोचती थी, अगर न लौटे तो क्या करूँगी? रो रो कर मर जाऊँगी—कोई आँसू पोंछनेवाला भी न होगा।

कुँवर साहब मुस्कराए।

लरजाँ—कैसे चालाक हैं! कल कहते थे, हो सकता है, परमात्मा मुझे राजा बना दे, तुम्हें रानी बना दे। मुझे क्या मालूम था कि यह सब नाटककी-सी बातें हैं—पहले सोची हुई, पहले बनाई हुई।

कुँवर—देख लो, परमात्माने हमारी सुन ली। किसी अच्छी घड़ीमें प्रार्थना की थी। मैं राजा बन गया, तुम रानी बन गई।

लरजाँ—झूठ बोलना कोई आपसे सीख ले। मुझे कैसे कैसे धोखे दिए! कहते थे, हम पत्थरोंके सौदागर हैं! अब बोलिए!

कुँवर—पत्थरोंकी सौदागरी करने निकला था, यहाँ आकर एक हीरा मिल गया, अब पत्थरोंकी सौदागरी मेरी बला करे! अब तो हीरोंका व्यापार करेंगे, और चैनकी बाँसुरी बजाएँगे।

लरजाँने मुस्कराकर उनकी तरफ़ देखा और कहा—बातें बनानेमें आप किसीसे न हारेंगे। इन्हीं बातोंके ज़ोरसे तो आपने पचास हज़ार रुपया जीत लिया।

कुँवर—और तुम्हें भी!

लरजाँ—आपकी यह बात झूठ है। आपने मुझे नहीं जीता, मैंने आपको जीता है। अगर शक हो, तो किसीसे पूछ लो। सब मेरा समर्थन करेंगे।

दोनों हँसने लगे। अब उनके सामने दूर दूर तक प्रकाश-पूर्ण भविष्य फैला हुआ था। अँधेरा कहीं दिखाई भी न देता था।

दूसरे दिन रातके समय दो प्रेमियोंका यह झोंपड़ा ख़ाली पड़ा था और कुँवर, लरजाँ और किरपी रावलपिंडीके स्टेशनपर गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

और सिकंधीरमें उनके स्वागत और ब्याहकी तैयारियाँ हो रही थीं। महाराज खुश थे। महारानी खुश थीं। रियासतके लोग खुश थे और सबके सब अपने राजकुमारके आनेकी राह देख रहे थे, जो लड़कर गया था, इनाम और लक्ष्मी लेकर लौट रहा था।

दो मित्र थे

१

ताजबहादुर

जब मैं स्कूलमें पढ़ता था, उन दिनों मुझे सबसे ज़्यादा प्यार महताबरायसे था। ऐसा नेक, ऐसा होनहार, ऐसा मेहनती लड़का हमारी जमातमें दूसरा न था। वह कभी किसीसे लड़ता-झगड़ता न था, न किसीकी शिकायत करता था, न कभी देरमें स्कूल पहुँचता था। झूठ बोलना तो जानता ही न था। शरारतसे कोसों दूर भागता था। अपनी जमातमें सदा अव्वल रहता था। उसके इन गुणोंके कारण सब उस्ताद उसकी तारीफ़ करते थे। उनको विश्वास था कि यह लड़का ज़रूर किसी दिन बड़ा आदमी बनेगा। बड़ा आदमी बननेके लिए जिन गुणोंकी ज़रूरत है, उसमें वे सभी थे। वह ग़रीब भी था। बेचारेका बाप मर चुका था, मा लोगोंके कपड़े सी सी कर गुज़ारा करती थी और उसे पढ़ाती थी। वैधव्य और ग़रीबीकी भयानक रातमें महताबराय ही उसके लिए आशाका दिया था जो उसे बहुत दूर टिमटिमाता हुआ नज़र आता था। यह दिया प्रकटमें बिलकुल साधारण था, लेकिन माकी आँखोंमें उसका मूल्य कोहनूर हीरेसे भी ज़्यादा था।

मगर महताबरायमें एक दोष भी था। वह अपनी जमातके दूसरे लड़कोंसे ज्यादा मिलता-जुलता न था। प्रायः उनसे परे परे भागता

था। शायद इसका कारण उसके मनकी स्वाभाविक निर्बलता हो। लड़के समझते थे, यह अपनी योग्यताके घमंडमें हमें कुछ समझता ही नहीं है। इसलिए वे उससे नफ़रत करते थे। परिणाम यह था कि वह सब उस्तादोंका प्यारा होते हुए भी अपनी श्रेणीके विद्यार्थियोंमें अछूत बना हुआ था। ग़रीबको कोई पास भी न बैठने देता था। जिसके पास जा बैठता, वही दूसरी तरफ़ मुँह फेर लेता था।

योग्यता और सज्जनताके अपमानका यह दृश्य मुझसे न देखा गया। मैंने उसकी तरफ़ मित्रताका हाथ बढ़ाया और उसकी रुपये पैसेसे भी कभी कभी सहायता करने लगा। कुछ ही महीनोंमें हम एक दूसरेके मित्र बन गए। स्कूलके सबसे धनी और सबसे ग़रीब लड़केमें भी ऐसा प्यार हो सकता है, यह लड़कोंके लिए अन-होनी बात थी। वे हमारे दिनों दिन बढ़ते हुए प्यारको देखते थे और हैरान होते थे। अब मेरी कोई चीज़ मेरी न थी। महताबरायको जिस चीज़की ज़रूरत होती, ले लेता, मैं कभी उसका हाथ न पकड़ता था। न अब महताबरायका समय उसका अपना समय था, मैं जिस विषयमें कमज़ोर होता वह मुझे पढ़ाया करता था। यह भी न सोचता था कि मुझे पास कराते कराते कहीं आप फ़ेल न हो जाए। प्यार अपनी तरफ़ नहीं देखता।

उसका मकान हमारे ही मुहल्लेमें था। और मकान क्या था, एक टूटी फूटी झोंपड़ी थी। उसीमें उसकी मा खाना पकाती थी, उसीमें वह लिखता-पढ़ता था और उसीमें रातको सो रहता था। मेरे कहनेसे वह मेरे मकानमें आकर पढ़ने लगा। मगर खाना अपने यहाँ ही खाता था, और रातको सोनेके लिए भी वहीं चला जाता था। मेरे मा-बाप इतने धनी थे कि महताबरायको खाना खिलाना उनपर ज़रा भी बोझ न था। उन्होंने कई बार उससे कहा, 'तुम खाना खाने घर क्यों जाते हो? यहीं खा लिया करो, हमारे लिए ताजबहादुर और

तुम दोनों बराबर हो।' मगर महताबरायके आत्म-सम्मानने यह बात मंजूर न की। उसके इस इन्कारसे उसका सम्मान हमारी आँखोंमें कई गुना बढ़ गया।—वह रुपये-पैसेका ग़रीब था, दिलका ग़रीब न था।

२

इसी तरह विद्यार्थी-जीवनके दस साल गुज़र गए और हमने मैट्रिककी परीक्षा पास कर ली। महताबरायने वज़ीफ़ा लिया और यूनीवर्सिटी-भरमें अव्वल रहा। मुझे वज़ीफ़ा तो न मिला, मगर मैं पहले दरजेमें आ गया! इस सफलतापर हम दोनों खुश थे। मैं इसलिए खुश था कि महताबराय यूनीवर्सिटीमें अव्वल रहा है। महताबराय इसलिए खुश था कि मैं पहले दरजेमें आ गया। और यह सब उसके परिश्रमका फल था, नहीं तो मुझ जैसे विद्यार्थीके लिए तो पास होना भी आसान न था। अब हमारा प्यार और भी बढ़ गया। मेरे माता-पिता भी उसे अपने बेटेकी तरह चाहते थे। जब मैं नैनीताल जाने लगा तो मेरा दिल उदास हो गया। विचार आया, महताबरायके बिना कैसे रहूँगा? और फिर एक दो दिनकी बात न थी, तीन महीनेकी बात थी। मेरी आँखोंमें आँसू आ गए। पिताजीने यह देखा तो कहा—महताबरायको भी साथ ले जाओ। गर्मियोंमें यहाँ रहकर क्या करेगा? दोनों चले जाओ। अकेले क्या करोगे, दिल भी तो न लगेगा।

जिस तरह बिजलीका बटन दबानेसे देखते देखते अँधेरेमें रोशनी हो जाती है, उसी तरह मेरे अंधकारमय दिलमें भी रोशनी हो गई।

कुम्हलाया हुआ कमल खिल गया। दौड़ा दौड़ा उसके घर गया और बोला—सामान बाँध लो, कल नैनीताल चलना होगा।

महताबरायने मेरी तरफ़ प्यारसे देखा और मुस्कराकर जवाब दिया—तुम चले जाओ। हमारे भाग्यमें लखनऊकी गर्मियाँ लिखी हैं। हम कहाँ चल सकते हैं? हम नहीं चलेंगे।

मैंने बनावटी क्रोधसे कहा—वाह, चलोगे क्यों नहीं? तुम्हें बाँधकर भी ले चलूँगा।

महताबराय—हमें वहाँसे दो-चार सेर ठंडी हवा भेज देना। हमारा काम उसीसे चल जाएगा।

मैं—दो-चार सेर ठंडी हवासे क्या बनेगा? चलो ठंडी हवा और ठंडे पानीके देशमें ले चलें। मोटे ताज़े होकर लौटोगे।

महताबराय—तुम मोटे ताज़े हो जाओगे तो मैं समझूँगा, मैं ही मोटा-ताजा हो गया।

मैं—ऐसे रंगीन दृश्य हैं कि देखकर तुम्हारा जी खुश हो जायगा। तुम्हारा अ माराम नाचने लगगा।

महताबराय—एक एक चीज़का हाल लिखना। तुम जो कुछ वहाँ जाकर देखोगे, हम तुम्हारी आँखोंसे यहाँ घर बैठे ही देख लेंगे।

मैं—हमारी जमातके कई और लड़के भी जा रहे हैं। खूब मज़ा रहेगा। खाएँगे, पियेंगे, ऐश करेंगे।

महताबराय—हमें किसीसे क्या लेना है? हमें तो यह खुशी है कि तुम जा रहे हो।

मैं—अरे, तो क्या तुम सचमुच न चलोगे? साफ़ साफ़ कहो।

महताबरायने शांत भावसे जवाब दिया—नैनीताल अमीरोंकी सैरगाह है, ग़रीबोंकी नहीं। और हम दुर्भाग्यसे उन लोगोंमें हैं जिन्हें प्रायः ग़रीब कहा जाता है। नैनीताल वह जाए जिसके पास पैसा हो, हमारे पास भूख-प्यासके सिवा और क्या है?

मैं—इस तरफ़से तुम निश्चिन्त रहो। तुम्हारा एक पैसा भी खर्च न होगा। तुम अपना सामान बाँधकर गाड़ीमें बैठ जाओ। इसके बाद हम जानें और हमारा काम जाने।

महताबरायकी आँखोंमें आँसू भर आए। बोला—भैया, तुम्हारे उपकारोंसे पहले ही बहुत दबा हुआ हूँ, और न दबाओ।

मैं—मालूम होता है, तुम हमें अभी तक पराया ही समझ रहे हो?

महताबराय—यह तो अपने दिलसे पूछो। हमसे क्या पूछते हो?

मैं—बहुत अच्छा। तुम न जाओगे तो हम भी न जाएँगे।

महताबराय—अरे मेरे यार, तुम तो नाराज़ हो गए। मगर तुमने तो वहाँ मकान भी ठीक कर लिया है।

मैं—इससे तुम्हें क्या? हम बड़ी आशा लेकर आए थे, तुमने हमारा दिल तोड़ दिया!

यह कहकर मैं बाहर निकल आया। महताबरायने पीछेसे आवाज़ दी—अरे भई, ज़रा एक बात तो सुनते जाओ।

मैंने गरदन पीछे मोड़कर देखा और रुखाईसे कहा—कहो, क्या कहते हो?

महताबराय—तुम हमारे लिए न रुको, बीमार हो जाओगे।

मैंने उसे जलानेके लिए जवाब दिया—बीमार हो जाएँगे, तो तुम्हारी बलासे।

महताबराय—तुम्हारा मतलब क्या है?

मैं—मेरा मतलब यह है, कि तुम्हें मेरी ज़रा परवाह नहीं।

यह तीर निशानेपर बैठा। महताबरायने आकर मेरे गलेमें बाहें डाल दीं और मुझे मनाने लगा। मगर मैंने साफ़ कह दिया कि तुम न जाओगे तो मैं भी न जाऊँगा। यह मेरा आख़िरी फ़ैसला है।

आखिर महताबरायको मानना पड़ा। दूसरे दिन हम दोनों लखनऊसे चल पड़े। गर्मियोंके यह तीन महीने ऐसे दिलचस्प, ऐसे रंगीन, ऐसे

मज़ेके थे कि आज भी याद आते हैं तो कलेजेमें हूक-सी उठती है ! हाय, वे सुनहरे दिन कहाँ चले गए ?—प्यारके रसमें समोए हुए, आनंदमें डूबे हुए । ऐसे दिलचस्प जैसे परियोंकी कहानियाँ, ऐसे मीठे जैसे स्वप्न-संगीत, ऐसे पवित्र जैसे बहन भाइयोंका प्यार ।

३

मगर अफ़सोस, ये तीन महीने हमारी खुशीके अन्तिम महीने थे जिनके बाद हम दोनोंको चैनका एक दिन भी न मिला ।

मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब हम दोनों दोस्त ‘ जुबिली कालेज ’ में भरती हुए । उस दिन मेरा दिल जवानीकी उमंगों और प्रसन्नताके प्रकाशसे भरा था । और मेरे सामने भविष्यका वह मार्ग खुला था जिसपर सफलताके फूल खिलते हैं और प्यारकी धूप खेलती है । मगर जब मैं घर लौटा तो मेरे दिलमें आशाकी जगह ईर्ष्याका विष भरा था, और मेरा भविष्य बादलोंसे घिरी हुई साँझके समान धुँधला और अनिश्चित था ।

और इसका कारण एक लड़की थी—रूपरानी, जो उसी दिन कालेजमें भरती हुई थी । कदाचित् यह लड़की उस कालेजमें भरती न होती !—उसने एक ही क्षणमें मेरे दिलका चैन छीन लिया । मैं चाहता था, मैं उसे देखता ही रहूँ । वह मेरी आँखोंसे ओझल न हो । —मेरा पालन-पोषण धनी घरानेमें हुआ है । मैं सदासे सुंदर स्त्रियोंसे मिला हूँ । मैंने अच्छेसे अच्छे सिनेमा देखे हैं । मगर उस लड़कीका-सा रूप और रूपका जादू मैंने कहीं नहीं देखा । उसने जब पहले पहल मेरी ओर अपनी बड़ी बड़ी आँखोंसे देखा, तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैंने एक क्षणमें हज़ारों ब्रह्माण्ड देख लिये हैं । उन ब्रह्माण्डोंके

सामने मेरा और मेरे धन दोनोंका कोई मूल्य न था। मैं लुट गया।

मगर रूपरानीने मेरा ज़रा भी ख़्याल न किया और उसके बाद एक बार भी मेरी तरफ़ न देखा। उसका सारा ध्यान महताबकी तरफ़ था। वह और दूसरी लड़कियाँ सबसे पिछले बेंचपर बैठीं थीं। मैं और महताबराय सबसे आगे साथ साथ बैठे थे। मैंने कई बार बहाने बहानेसे पीछे मुड़कर उसकी तरफ़ देखा और उसे हर बार महताबरायकी पीठकी तरफ़ देखते पाया। एक बार वह अपने साथवाली लड़कीसे महताबरायकी तरफ़ इशारा करके कुछ बातचीत भी कर रही थी। सम्भव है वह कह रही हो कि यही लड़का यूनीवर्सिटीमें अव्वल रहा है। ज़रूर यही कहती होगी। और कुछ कहनेकी संभावना ही न थी। एक बार महताबरायने पिछली सीटवाले लड़केसे कुछ कहनेके लिए गरदन मोड़ी तो रूपरानी और उसकी आँखें मिल गईं।

रूपरानीने सिर झुका लिया, महताबरायका चेहरा लाल हो गया, और मेरे दिलमें आग लग गई। उस समय मैं और महताबराय एक दूसरेसे सटकर बिल्कुल पास पास बैठे थे। यों हम दोनोंके बीचमें कोई तीसरी चीज़ न थी, लेकिन फिर भी हमारे बीचमें वैरका पार न किया जाने वाला सागर गरज रहा था!

आज मुझे पहली बार यह मालूम हुआ कि जब दो मित्रोंके बीच कोई सुन्दर स्त्री आकर खड़ी हो जाती है तो वे दोनों कितनी जल्दी पराए बन जाते हैं! उस दिन अगर कोई मुझसे आकर कहता कि तुम अपने मा-बापकी सारी सम्पत्ति देकर यूनीवर्सिटीमें अव्वल रह सकते हो, तो मैं यह प्रस्ताव आँखें बन्द करके स्वीकार कर लेता और रूपरानीका प्रेमपात्र बननेके लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर देता। मगर अफ़सोस यह मेरे बसकी बात न थी। मैं किसी तरह महताबराय न बन सकता था। दुनिया ग़रीबसे अमीर बनना चाहती है, मैं अमीरसे ग़रीब बनना चाहता था।

४

महताबराय

मैं कैसा नीच हूँ जो अपने दोस्तको तकलीफ़ दे रहा हूँ ! अगर मैं कालिजमें भरती न हुआ होता तो यह नौबत काहेको आती ! वह मुझे कितना चाहता था, मुझे देखकर किस तरह खिल उठता था, गर्मियोंमें मुझे किस चाव और चाहसे नैनीताल ले गया था ! जब मैंने जानेसे इनकार कर दिया तो कैसा उदास हो गया था ! और आज मेरी शक्लसे भी बेज़ार मालूम होता है ! मुझे देखकर घृणासे मुँह फेर लेता है ! पहले एक एक दिनमें कई कई बार मेरे घर आया करता था, अब महीनों बीत जाते हैं, कभी दर्शन ही नहीं होते। ऐसा लगता है, वह वह नहीं है, मैं मैं नहीं हूँ।

उस दिन माजीने पूछा था,—क्या तुमसे और ताजसे झगड़ा हो गया है; न तुम उसके घर जाते हो न वह तुम्हारे घर आता है। यह सवाल न था, मेरे हृदयपर हथौड़ेकी चोट थी। क्या जवाब देता ? सिर झुकाकर चुप हो रहा। और इसका कारण रूपरानी है। न वह मुझे चाहती, न ताज मुझसे ख़फ़ा होता, न हमारी दुनिया बदलती।

मगर इसमें मेरा क्या दोष है ? उससे कई बार कहा है, मेरा ख़्याल छोड़ दो। लेकिन, वह कहती है, मेरे लिए मरना आसान है तुम्हारा ख़्याल छोड़ना आसान नहीं। मैं कहता हूँ, मैं ग़रीब माका बेटा हूँ, वह कहती है मुझे ग़रीब ही चाहिए। क्या करूँ ? कोई उपाय नज़र

नहीं आता, कोई रास्ता नहीं सूझता। रूपरानी कहती है, ब्याह करूँगी तो तुम्हींसे करूँगी, नहीं तो सारी आयु कुँवारी रहूँगी।

ताज समझता है मैंने उससे रूप छीन ली है; लेकिन, सच्ची बात यह है कि रूपरानीने मुझसे ताज छीन लिया है। कभी कभी विचार आता है, रूपरानीसे कह दूँ मेरा-तुम्हारा ब्याह होना असम्भव है। कभी कभी यह भी सोचता हूँ, कह दूँ, मेरे ब्याहका तो बहुत दिन हुए फ़ैसला भी हो चुका है। मगर भगवान जाने, जब वह मेरे सामने आती है तो मुझे क्या हो जाता है! सारे इरादे धरे धराए रह जाते हैं। मुँहसे बात ही नहीं निकलती। चुपचाप लौट आता हूँ।

कभी कभी ऐसा मालूम होता है कि यदि मैंने उससे कोई ऐसी वैसी बात कह दी तो वह आत्म-हत्या कर लेगी। इस विचारसे ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं आप मर सकता हूँ, उसे नहीं मार सकता—यह मेरी ताक़त से बाहर है।

मैं मानता हूँ, मैं उसके लायक़ नहीं, उसे किसी अमीरसे ब्याह करना चाहिए। उसकी शक्ल-सूरत, उसका रँग-रूप, उसका रहन-सहन क्या इस योग्य है कि वह अपना जीवन और जीवनकी आशाएँ मुझे जैसे दरिद्र-नारायणके साथ बाँध दे? मेरे पास तो उसके लिए मकान भी नहीं है। हाँ, ताजबहादुर सचमुच उसके योग्य है। उसके पास मकान है, सवारी है, रुपया पैसा है। उससे ब्याह करके नसीब जाग उठेंगे, वह राज-सिंहासनपर जा चढ़ेगी, उसे किसी चीज़की कमी न रहेगी। महलोंमें रहेगी, फूलोंपर सोएगी, सुगंधमें बसेगी। मुझ जैसे आदमी उसका पानी भरेंगे। मगर समझदार होते हुए भी, पता नहीं यह सीधी-सी बात उसकी समझमें क्यों नहीं आती! आँखें हैं, देखती नहीं। कान हैं, सुनती नहीं। मैं जन्मका ग़रीब हूँ। मुझसे ऐसा सौभाग्य न ठुकराया जाय तो मैं क्षमापात्र हूँ। मगर वह तो मुझे ठुकरा सकती है। फिर ठुकराती क्यों नहीं? हाय भाई

ताजबहादुर ! तू भाग्यवान होते हुए भी कितना अभागा है ! तू अमीर होते हुए भी कितना ग़रीब है ! मुझे तुझपर दया आती है ।

५

एक दिन हम दोनों सिनेमा देखने गए । उस दिन रूपरानी बहुत खुश थी । उसके पाँव ज़मीनपर न पड़ते थे । बात-बातपर मुस्कराती थी । चारों ओर विजयी भावसे देखती थी । सिनेमा-हालमें पहुँचे तो खेल शुरू होनेमें पन्द्रह मिनट बाक़ी थे । हम दो कुरसियोंपर बैठ गए और बातें करने लगे । मैंने छूटते ही पूछा—आज तो बड़ी खुश मालूम होती हो, क्या बात है ?

रूपरानीने मुँहको रूमालसे पोंछते हुए जवाब दिया—सिनेमा देखनेकी खुशी है, और क्या ?

मैं—नहीं, सच सच बताओ ।

रूपरानीने दरवाज़ेसे अन्दर आते हुए एक लड़केकी ओर इशारा करके कहा—अरे, आज ज़रूर वर्षा होगी !—शिवनारायण सिनेमा देखने आया है, हमें इकट्ठे देखकर कोयला ही हो जायगा ।

मैंने एक सरसरी दृष्टिसे शिवनारायणकी तरफ़ देखा और फिर रूपरानीसे कहा—तुम इधर-उधरकी बातें क्यों बनाती हो ? बताओ, क्या बात है ? मेरे दिलमें हलचल मची हुई है ।

रूपरानी—(दरवाज़ेकी ओर देखकर) अरे लो, श्रीवास्तव भी आ गया । इसको तो खेल देखे बिना खाना हज़म नहीं होता । मगर

सक्सेना कहाँ है ? सक्सेनाके बिना इसे खेलका मज़ा क्या ख़ाक आएगा ? और सक्सेना इसके सिवा कैसे रहेगा ?

इतनेमें श्रीवास्तवने हम दोनोंको देखकर हाथ उठाया और ' गुड ईवनिंग ' कहा। हमने भी मुस्कराकर जवाब दिया। रूपरानी उसकी तरफ़ देखती हुई बोली—आज अकेला ही है।

मैंने रूपरानीके पाँवपर अपना पाँव रखकर उसे दबाया और कहा—बताओ, क्या बात है ?

रूपरानीने मुझे धकेलकर अपना पाँव छुड़ा लिया और उसे हाथसे मलते हुए बोली—चलो, परे हटो। मेरा पाँव कुचल दिया। मर्द पढ़-लिखकर भी जंगली ही रहते हैं।

मैं—और न बताओ, अबके दूसरा पाँव कुचलूँगा।

रूपरानी—अच्छा, बड़े आए हैं पाँव कुचलनेवाले। शोर मचा दूँगी तो अभी मैनेजर पकड़कर पुलिसके हवाले कर देगा। सारी चौकड़ियाँ भूल जाओगे। मिन्नतें करने लगोगे !

मैं—मैं कह दूँगा, पहले इसीने चुटकी ली थी। मैंने ईंटके जवाबमें पत्थर मारा था।

रूपरानी—झूठ बोलते शर्म न आएगी तुम्हें ?

मैं—(मुस्कराकर) शर्ममें यह हिम्मत कहाँ कि किसी सूरमाके सामने आ जाए। हमें देखते ही दुम दबाकर भाग जायगी।

रूपरानी खिलखिलाकर हँस पड़ी और अपनी कलाईकी घड़ी देखकर बोली—लो, अब खेल देखनेके लिए तैयार हो जाओ। नहीं तो फिर पूछोगे, यह क्या हो रहा है ?

मैंने इस बातका जवाब न देकर फिर अपना वही सवाल छेड़ा—बताओ, आज क्या बात है ?

रूपरानीने छतके पंखेकी तरफ़ देखकर कहा—खेलके बाद बताऊँगी।

मैं—कोई ख़ास बात मालूम होती है।

रूपरानी—सुनकर खुश हो जाओगे।

मैं—ऐसी बात है वह ?

रूपरानी—ज़मीनसे उछल पड़ोगे!

मैं—अभी क्यों नहीं बता देतीं ?

रूपरानी—अभी बता दूँगी, तो तुम्हारे खेलका सारा मज़ा किरकिरा हो जायगा।

मैं—खेलका मज़ा तो अब भी किरकिरा हो गया। लोग खेल देखेंगे, हम मनके घोड़े दौड़ाएँगे

रूपरानीने मेरे और भी नज़दीक खिसककर धीरेसे कहा—आज ताजबहादुरका बाप आया था। पिताजीने साफ़ इन्कार कर दिया।

शब्द साफ़ न थे, मगर मतलब बिल्कुल साफ़ था। मेरा दिल ज़ोर ज़ोरसे धड़कने लगा। लेकिन मैंने फिर भी अनजान बनकर पूछा—काहेसे इन्कार कर दिया तुम्हारे पिताजीने ?

रूपरानीने लजाकर गरदन झुका ली और दाएँ हाथसे अपने रेशमी रूमालको बाएँ हाथपर लपेटते लपेटते हुए रुक रुक कर कहा—ताजबहादुरके लिए कहते थे। पिताजीने जवाब दिया, मैं ग़रीब आदमी हूँ, आपसे टक्कर नहीं ले सकता। निराश होकर लौट गए।—चलो, यह चिन्ता भी दूर हुई। रुपयेकी मार बुरी होती है। और मुझे ख़तरा था, कि कहीं पिताजी रुपयेपर रीझकर 'हाँ' न कर दें। मेरा मरना हो जाता।

मैं चुपचाप बैठा रह गया। उस समय मुझमें हिलने-डुलनेकी शक्ति ही न थी।

रूपरानीने अपनी बातको जारी रखते हुए कहा—जब ताजबहादुरका फ़ादर चला गया, तो पिताजीने माजीसे कहा—रूप तो महताबरायको चाहती है, ताजबहादुरसे ब्याह दूँ तो उसका सारा जीवन ही बरबाद

हो जाए। न बाबा, मैं पैसा न देखूँगा। लड़का शरीफ़ और समझदार है, अपने लिए और रूपके लिए बहुत कमा लेगा।

इतना कहकर रूपरानी चुप हो गई। थोड़ी देर बाद उसने मेरी तरफ़ विजयी ढँगसे देखा और फिर कहा—कैसी ख़बर है, बोलो ?

लेम्प बुझ गए और खेल शुरू हो गया। मगर मेरा ध्यान खेलकी तरफ़ न था, कुछ और ही सोच रहा था।

दूसरे दिन कालेजमें ताजबहादुरको देखा तो मेरे दिलमें भाला-सा चुभ गया। निराशा और विवशताका ऐसा मुँह बोलता चित्र मैंने इससे पहले कभी न देखा था। न वे खिले हुए होंठ थे, न वे हँसती हुई आँखें थीं। फूल कुम्हला गए थे, दिये बुझ गए थे। जब तक कालेजमें रहा, उसने सिर नहीं उठाया। निराशाने साहसका गला घोंट दिया था। अब उसमें जीवनका ज़रा-सा भी चिह्न दिखाई न देता था। मुझे उसकी दशापर दया आ गई। विजयीके हज़ारों दुश्मन हैं। मगर हारे हुएसे कौन कठोर-हृदय दुश्मनी करेगा ? मैंने निश्चय कर लिया कि रूपरानीका ख़्याल छोड़ दूँगा। उससे साफ़ कहूँगा, मुझे तुमसे प्यार नहीं। उससे अनमना हो जाऊँगा, बात ही न करूँगा। देखूँगा तो मुँह दूसरी तरफ़ फेर लूँगा। आख़िर अपने आप पीछे हट जाएगी। जो खुशी जीतकर हारनेमें है, वह खुशी जीतकर जीतनेमें कहाँ ? जीत बड़ी है, मगर कुरबानी उससे भी बड़ी है। परमात्मा मुझे बल दे। मैं कुरबानी करूँगा।

६

रूपरानी

सचमुच दोनोंमें बहुत फ़र्क़ है। ताजबहादुर मेरी तरफ़ देखता है, तो ऐसा मालूम होता है कि मेरी तरफ़ कोई आग बढ़ी आ रही है जो आप भी जलती है, दूसरेको भी जलाती है। महताबराय मेरी तरफ़ देखता है तो ऐसा मालूम होता है कि वह आँखें नहीं प्रेमरसके दो कटोरे हैं, जिन्हें देखकर दिल ठंडा हो जाता है। एकमें पशुता है, दूसरेमें मनुष्यता है। एकमें प्रेम है, दूसरेमें स्वार्थ है।

मगर एक बातमें ताजबहादुर महताबरायसे बढ़ा हुआ है; उसे रुपए-पैसेकी कमी नहीं। उधर महताबराय पूरा पूरा दरिद्रनारायण है। बेचारेकी मा मेहनत-मज़दूरी करके पढ़ा रही है। मगर पढ़ने-लिखनेमें ताजबहादुर महताबरायका पासंग भी नहीं। महताबराय न पढ़ाता तो ताजबहादुर मैट्रिकमें भी पास न हो सकता। इधर महताबराय यूनीव-र्सिटीभरमें अव्वल रहा है! उस दिन उसका 'ऐस्से' देखकर प्रोफ़ेसर साहब दंग रह गए थे; पिछले महीनेके 'ग्रेटर इण्डिया' में उसकी एक कविता प्रकाशित हुई थी जिसे पढ़कर आदमी किसी दूसरी दुनियामें पहुँच जाए। कविता क्या थी, मोतियोंकी माला थी। और सिर्फ़ अँग्रेज़ीहीका नहीं, दूसरे विषयोंका भी यही हाल है। बी० ए० में फिर अव्वल रहेगा। अजब नहीं रिकार्ड तोड़ दे। ऐसे आदमीको जो हाथसे खो दे, उससे अभागा कौन होगा? पिताजीने बहुत अच्छा किया जो ताजबहादुरके बापकी बात नामंजूर कर दी, नहीं तो मेरा जीवन ही नष्ट हो जाता। धनका क्या है, योग्य है, कमा लेगा।

और फिर शरीफ़ कैसा है ! सारा कालेज उसकी सौगंध खाता है। सारा शहर उसकी प्रशंसा करता है। आदमी नहीं हीरा है जो ग़रीबीके दलदलमें फँसा हुआ भी चमक रहा है। मगर वह हमेशा वहाँ थोड़े ही पड़ा रहेगा ! आज ज़मीनपर है, कल आसमानपर होगा।

सुना है, पहले दोनोंमें बड़ा प्यार था। दूध-पानीकी तरह रहते थे। मगर जबसे कालेजमें आए हैं, तबसे फट गए है। यह तो कुछ नहीं कहते, मगर ताजबहादुर हर समय उनका अपमान करना चाहता है। उस दिन कई लड़कोंसे कह रहा था, 'मैं सहायता न करता तो श्रीमानजी एण्ट्रेंसकी परीक्षामें भी न बैठ सकते। दाख़िला मैंने दिया, पुस्तकें मैंने दीं, कपड़े मैंने दिए। अब मुझीसे अकड़ने चले हैं ! इतना भी नहीं सोचते कि मा घर-घरमें पानी भरती है।' उधरसे मैं गुज़र रही थी। मेरे कानोंमें इन शब्दोंकी भनक पड़ी तो मुँह लाल हो गया। जीमें आया, ऐसी गत बनाऊँ कि अट्टी-सट्टी भूल जाए। मगर फिर कुछ सोचकर क्रोधको पानीकी तरह पी गई। पर इतना कह ही दिया कि उनका उपकार भी कम नहीं है, वह आपपर मेहनत न करते तो आप बारह साल भी एण्ट्रेंसमें पास न होते, सारी पुस्तकें धरी धराई रह जातीं। जो उपकार आपपर उन्होंने किया है वह आपसे क्या उतरेगा ? उसके सामने रुपया कोई चीज़ ही नहीं है।

यह सुनकर उसका मुँह ज़रा-सा निकल आया। अभी परसोंका ज़िक्र है, ताजबहादुरने सारी क्लासको टी-पार्टी दी, केवल उनको निमंत्रण न भेजा। और कारण यह बताया कि उनमें यह हिम्मत कहाँ कि किसीको कोई पार्टी दे सकें। जो दूसरोंको खिला नहीं सकता, वह दूसरोंका खाए क्यों ? और मज़ा यह कि यह शब्द मुझे सुनाकर कहे। शायद उसे वहम होगा कि इस ओछेपनसे वह उन्हें मेरी निगाहोंमें गिरा देगा। मगर असर उल्टा हुआ। मेरी आँखोंमें वह और भी ऊँचे उठ गए। ताजबहादुरकी अगर कुछ इज्ज़त मेरी निगाहोंमें थी, तो वह भी जाती रही। जो धनपर इतना अभिमान

करे वह आदमी नहीं। मेरे पास आया तो मैंने साफ़ कह दिया कि मैं तुम्हारी पार्टीमें शामिल नहीं हो सकती। तुम्हें इतना भी पता नहीं कि अपने किसी क्लास-फेलोका इस तरह खुल्लम-खुल्ला अपमान नहीं करना चाहिए। दूसरे विद्यार्थियोंने भी मेरा समर्थन किया। श्रीमान-जीको जवाब तक न सूझा। उनका अपमान करने चले थे, अपना अपमान करा बैठे।

७

मगर कुछ दिनोंसे देखती हूँ, उनके तेवर कुछ बदले हुए हैं। न वह नेहकी निगाहें हैं, न वह चाहकी चितवन। जैसे एकदम बदल गए हैं। लाख कहती हूँ, मेरी समझका दोष है, मगर दिल नहीं मानता। उस दिन कहा था, ज़रा फ़िलासोफ़ीकी एक-दो बातें समझा दो। कहने लगे प्रोफ़ेसर साहबसे क्यों नहीं पूछ लेतीं? इसपर मुझे ज़हर चढ़ गया। लेकिन उनके लिए जैसे कुछ हुआ ही नहीं। फिर एक दिन मैंने कहा, आज बहुत अच्छी फ़िल्म आई है, चलोगे? बोले, अफ़सोस है, मैं न जा सकूँगा; अकेली चली जाओ। मैंने कहा, मुझसे अकेले तो न जाया जायगा। जवाब दिया, ताजबहादुरको ले जाओ। अब इसका क्या जवाब देती? मेरी आँखोंमें आँसू आ गए। लेकिन उस ज़ालिमको ज़रा भी दया न आई। मगर इससे भी ज्यादा अफ़सोस मुझे उस दिन हुआ जब उनको बुख़ार हो गया और वे कालिज न आ सके। मैं दिन-भर हैरान रही, शामको उनके घर पहुँच गई। देखा तो चारपाईपर लेटे कराह रहे थे। मैं कुछ देर खड़ी देखती रही। इसके बाद बैठ गई। उन्होंने मुझे देखा, मगर ज़बानसे कुछ न कहा। यह भी नहीं कि तुमने बड़ा कष्ट

किया। मैं ही बेशरमोंकी तरह बैठी रही। थोड़ी देर बाद बोली—अब क्या हाल है? जी कैसा है?

उन्होंने आँखें खोल दीं, और धीरेसे कहा—अच्छा है।

मैंने अपना हाथ उनके माथेपर रख दिया—क्या दवा पी है, और किस डाक्टरका इलाज है?

वे—कुनीन खाई है। किसी डाक्टरका इलाज नहीं।

मैं—दूध पिया है या नहीं?

वे—नहीं।

मैं—क्यों, इस तरह तो कमज़ोरी हो जाएगी?

वे—मुझे डर है, अगर मैं ज़्यादा बोला तो बुख़ार बढ़ जायगा। ज़्यादा बातें न करो।

मेरी छातीमें अगर कोई छुरी भी उतार देता तो मुझे इतना दुःख न होता, जितना इस बातसे हुआ। क्रोधसे बोली—मुझसे बड़ी भूल हुई जो तुम्हें देखने चली आई।

उन्होंने बेपरवाहीसे मुँह दीवारकी तरफ़ फेर लिया और कहा—मैं तुम्हें बुलाने नहीं गया था। अब चली जाओ।

नहलेपर दहला पड़ा। मैं जोशसे खड़ी हो गई। आँखोंकी पलक भी जलती हुई मालूम हुई। बोली—अब क्या तुम्हारे पास आनेके लिए भी मुझे तुमसे आज्ञा लेनी होगी?

उन्होंने दीवारहीकी तरफ़ मुँह किये हुए जवाब दिया—अब इसका जवाब मैं क्या दूँ? अपने दिलसे पूछो।

मैं जाते जाते रुक गई—मेरा दिल बिल्कुल साफ़ है। तुम्हारा ही दिल बदल गया है। वह पहली बात ही नहीं रही।

वे—मैं ग़रीब हूँ। ग़रीबोंके दिल होता ही कहाँ है?

मैं—तुम तो आज लड़ते हो।

वे—बुरे आदमियोंसे और क्या आशा की जा सकती है?

मैं कहर और क्रोधसे तनकर खड़ी हो गई और चलनेको तैयार हुई।

सहसा मेरे दिलमें विचार आया, बीमारीमें आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है। यह इनका दोष नहीं, बुख़ारका दोष है। सारा क्रोध पानी होकर बह गया। मैं फिर चारपाईपर बैठ गई और उनका मुँह ज़बरदस्ती अपनी तरफ़ करते हुए प्यारके गुस्सेसे बोली—जरा आँखें तो मिलाओ। आज तुम्हें हो क्या गया है, लड़ाई मोल लेते हो? कुछ बावले तो नहीं हो गए?

मैंने उनकी आँखोंमें आँसू देखे। अब वह रो रहे थे और पछता रहे थे, और उनमें मुझसे आँखें मिलानेका साहस न था। क्रोधका सामना सभी कर सकते हैं, प्रेमका सामना कोई नहीं कर सकता। यह आँसू न थे, मेरी जीतके जीते जागते प्रमाण थे। मैं उन्हें देखकर बाग़ बाग़ हो गई। वे बदले न थे, बदलनेका ढोंग रच रहे थे।

अब उन्होंने मेरा हाथ लेकर अपने सीनेपर रख लिया और रोने लगे। मगर मुँहसे कुछ न कहा।

थोड़ी देर बाद फिर रुखाईसे बोले—अब तुम जाओ। कोई देख लेगा तो सौ सौ बातें बनाएगा।

मैं—मुझे किसीकी बातोंकी परवाह नहीं।

वे—(करवट बदलकर) तुम्हें न होगी, तुम अमीर हो। मुझे तो है, मैं ग़रीब हूँ।

मेरे दिलमें रह रहकर ख़्याल आता था, इन्हें हो क्या गया है? इस ख़्यालने मेरे दिलको व्याकुल कर दिया। हरे भरे चमनमें आग लग गई थी।

८

ताजबहादुर

मेरा ख़्याल ग़लत निकला। मैं महताबरायको शैतान समझता था, मगर वह देवता है। मैंने उसके बारेमें झूठी अफ़वाहें उड़ाईं, उसका अपमान किया, उसे गालियाँ दीं, उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचे। वह मुझसे मिलनेके लिए मकानपर आया तो मैंने उससे बात-चीत न की। मगर वह फिर भी मेरा वही पुराना मित्र महताबराय बना रहा जो मेरी ग़लतियाँ देखता था और मुस्कराता था। मैंने उसकी आँखोंमें घृणाके भाव कभी नहीं देखे, न किसीसे यह सुना कि उसने मेरे बारेमें कोई अपमान-सूचक शब्द कहे हों। उसने ज़रूर यह निश्चय कर लिया था कि मेरे हर एक अपराधको हँसकर माफ़ कर देगा। मगर मुझे उसकी भलाई भी बुराई नज़र आती थी। पीलियाके रोगीको हर एक चीज़ पीली मालूम होती है, बीमार आँखोंको रोशनी भी चुभती है। बुख़ारमें शहद भी कड़वा लगता है।

रूपरानीकी तरफ़से निराश होकर मैं और भी झुँझला गया। मैं चाहता था, बस चले तो महताबरायकी गरदन मरोड़ डालूँ। एक वह दिन था कि उसके चेहरेपर ज़रा-सी भी उदासी देखकर मेरा दिल डूब जाता था। अब यह दशा थी कि अगर कोई उसकी मौतकी ख़बर सुना देता तो मैं जी जाता। लेकिन, उसके भाग्यमें मौत न थी। मेरे भाग्यमें ज़िन्दगी न थी। वह मेरी छातीपर मूँग दलता था।

साँझका समय था। मैं गोमतीके किनारे बैठा अपने भाग्यके अँधेरेमें रोशनीकी खोज कर रहा था। बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह रोगी, जिसे सारे डाक्टरोंने जवाब दे दिया हो, कभी कभी सोचता है, शायद मैं अब भी बच जाऊँ। आशा सख़्त-जान साँपकी तरह है जो कुचला जानेपर भी तड़पता रहता है। ज़रा-सी गरमी पहुँची और वह हिलने लगा, ज़रा-सा उसे किसीने छेड़ा और उसने फिर सिर उठा लिया। सहसा किसीने मेरे कंधेपर हाथ रख दिया।

मैंने चौंककर सिर उठाया और मुड़कर देखा, महताबराय मेरे सामने खड़ा था!

मुझे हैरानी हुई। मैं नहीं समझता था वह कभी मुझसे बोलनेकी हिम्मत भी करेगा। मैं उसे अपने जीवन और जगतका सबसे बड़ा शत्रु समझता था, और मेरा ख्याल था, वह भी मुझे ऐसा ही समझता होगा। लेकिन, इस समय वह मेरे सामने खड़ा था और उसके मुँहपर ज़रा भी क्रोध, ज़रा भी रोष, ज़रा भी संकोच न था। उलटा मुस्करा रहा था।

मैं घबरा गया। मेरे मुँहसे बात न निकलती थी। मुस्कराना चाहता था, मुस्करा न सकता था। बोलना चाहता था, बोल न सकता था। लेकिन महताबरायने मेरी मुश्किलको आसान कर दिया। बोला—क्यों भाई, क्या रूठे ही रहोगे? तुममें यह बूता होगा, मुझमें तो नहीं है। बताओ, बात क्या है?

मैंने झूठी हँसी हँसकर उत्तर दिया—तुमको मेरी परवा क्या है? रूपरानी सलामत रहे। जब तक वह न थी, तब तक हम सब कुछ थे, अब हमारी कोई हस्ती ही नहीं है!

महताबरायने कहा—यह तुम्हारा वहम है। मैं रूपरानीके लिए तुम्हें क़ुर्बान करनेको कभी तैयार नहीं। ज़रूरत हो तो उसको छोड़ दूँ।

मैं—अरे भाई, ऐसी बातोंसे क्या लाभ ? यह बातें कहनेकी हैं, करनेकी नहीं हैं। तुम्हारी गाड़ी जिस रास्तेपर चल रही है, चलने दो।

महताबराय—क्या मतलब ?

मैं—मतलब यह कि तुम्हारा मतलब कुछ भी नहीं है, ऐसे ही बातें बनाने आ गए हो।

महताबराय—(मेरी तरफ़ करुणामय आँखोंसे देखकर) तुम मुझे इतना नीच समझ रहे हो ?

मैं—यह तो तुम अपने मुँहसे कहो, मैं नहीं कहता। न मुझे ऐसा कहनेका अधिकार है।

महताबराय—आख़िर तुम मुझसे क्या चाहते हो ? मैं क्या करूँ कि तुम खुश हो जाओ, इतना बता दो।

मैं—मैं तो अब भी नाराज़ नहीं हूँ।

महताबराय—(मुस्कराकर) सच कहते हो क्या ?

मैं—(चिढ़कर) जी नहीं, झूठ बोल रहा हूँ ! हरिश्चन्द्र तो सारे शहरमें केवल आप हैं, बाक़ी सब झूठे हैं।

महताबराय—लो, देख लो। यह नाराज़गी नहीं तो और क्या है ? ज़रा-सी बातमें गरजने लगे।

मैं—(बेपरवाहीसे) चलो नाराज़गी ही सही। अपने जीकी बात है। जी चाहा खुश हो गए, जी चाहा नाराज़ हो गए। इससे किसीको क्या ? अपना अपना जी है।

महताबराय—यह तुम कह सकते हो, मैं नहीं कह सकता। मुझसे तो तुम्हारा नाराज़ चेहरा नहीं देखा जाता। तुम्हें उदास देखता हूँ तो मेरा दिल रोने लगता है।

मैं—बड़ी कृपा आपकी।

महताबराय—जहाँ तक मैंने सोचा है, तुम्हारी नाराज़गीका कारण केवल रूपरानी है। क्या मेरा ख़्याल ठीक है?

मैं—फ़र्ज़ किया, ठीक है, फिर?

महताबराय—भाई मेरे, मैंने उससे साफ़ साफ़ कह दिया है कि मुझे उससे प्रेम नहीं है। और मेरे विचारमें इससे .ज्यादा मैं और कुछ न कर सकता था। कहो, अब भी तुम खुश हुए या नहीं?

मैं हैरान रह गया। महताबराय यहाँ तक जानेको तैयार हो जायगा, इसकी मुझे आशा न थी। दुर्भाग्य और साँझके अँधेरेमें दूर आशाका टिमटिमाता हुआ दीपक नज़र आने लगा। क्या वह सचमुच दीपक था, या मुझे अब भी क़िस्मत सब्ज़ बाग़ दिखा रही थी?

महताबरायने फिर कहा—अगर तुम साफ़ कह देते कि तुम्हें उससे प्रेम है, तो मामला यहाँ तक न बढ़ता। मैं पहले ही ऐसा बर्ताव करता कि उसको मेरी तरफ़ झुकनेका साहस ही न होता। मगर तुमने मुझसे तो कुछ कहा नहीं, दिलमें गिरह बाँध बैठे। यह तुम्हारी भूल थी। दोस्तोंको एक-दूसरेपर विश्वास होना चाहिए।

मेरी आँखोंमें आँसू आ गए। मैंने वह सुना जो सुनना चाहता था मगर जो सुननेकी मुझे आशा न थी। ख़्याल आया, यह आदमी सचमुच सूरमा है जो मेरे लिए रूपरानीको त्याग रहा है। क्या मुझमें भी यह हिम्मत है? नहीं, मैं महताबरायके सामने बहुत छोटा, बहुत तुच्छ, बहुत निकृष्ट था। मगर मैं फिर भी .खुश था। डूबते हुएको किनारा मिल गया था यद्यपि उसे बचानेवाला .खुद भँवरमें ग़ोते खा रहा था।

थोड़ी देर बाद हम एक दूसरेके गलेसे लिपटे हुए हँस हँसकर रो रहे थे। हमारे चारों तरफ़ साँझका अँधेरा और सन्नाटा फैला हुआ

था और हमारे पाँव-तले गोमतीकी मस्त लहरें उछलती, कूदती, नाचती गाती अपने प्रीतमसे मिलनेके लिए भागी चली जाती थीं।

९

महताबरायने जो कुछ कहा था, करके दिखा दिया। अब वह रूपरानीकी तरफ़ कभी देखता भी नहीं। कई बार मेरे सामने रूपरानी बातचीत करनेके लिए उसके पास गई, मगर उसने मुँह फेर लिया। एक बार मैंने अपने कानोंसे सुना, महताबराय कह रहा था, 'तुम मुझे बदनाम कर दोगी।' रूपरानीने घृणा और तिरस्कारके ये शब्द सुने तो उसका मुँह अंगारेके समान लाल हो गया। उधर महताबरायका चेहरा लाशकी तरह पीला था। मैं सब कुछ समझ गया—वह केवल मेरे लिए अपने मनको मार रहा था। एक बार महताबरायने एक लड़केसे चाकू माँगा। उसके पास ही रूपरानी बैठी थी। लड़केके पास चाकू न था। रूपरानीने अपना चाकू निकालकर महताबरायकी तरफ़ बढ़ा दिया। मानो सुलहकी प्रार्थना की। महताबरायने ऐसा प्रकट किया कि उसने देखा ही नहीं और एक दूसरे लड़केकी तरफ़ चला गया। सुलहकी प्रार्थना नामंजूर हो गई। रूपरानीने सिर झुका लिया। शायद सोचती होगी, अब मैं इतनी बुरी हो गई। इसके बाद सारा दिन दोनों उदास रहे। मैं यह देखता था और कुढ़ता था। एक आध बार दिलमें यह भी ख़्याल आया कि यह पाप है। सोचता था, दोनों एक दूसरेको चाहते हैं, मुझे उनके बीचमें खड़ा होनेका क्या अधिकार है? कभी कभी जीमें आता था, महताबराय कितना उदार-हृदय है! क्या मैं उसका अनुकरण नहीं कर सकता?—मेरे बलिदानसे दो उजड़े हुए दिल बस जाएँगे। मगर बहादुरी और बलिदानके यह विचार इधर पैदा होते थे, उधर मर जाते

थे। अँधेरी काली रातमें जुगनू चमकता है और छुप जाता है, और इसके बाद रात पहलेसे भी अँधेरी और भयानक हो जाती है। यही हाल मेरे दिलका था।

आख़िर एक दिन मुझे अवसर मिल गया। रातका समय था, मैं और रूपरानी दोनों कानपुरसे लखनऊ लौट रहे थे। रेलवे स्टेशनपर मुलाक़ात हो गई। मेरे दिलकी जो दशा थी, वह मैं ही जानता हूँ। खुशीसे बावला हो गया। रूपरानीके पास जाकर बोला—हेलो मिस सक्सेना, किधर जा रही हो ?

रूपरानीने मेरी तरफ़ मुस्करा कर देखा और 'लीडर'का नया परचा तह करके अपने फ़रके कोटमें रखते हुए कहा—निगम बाबू, खूब मिले। मैं यहाँ एक सहेलीसे मिलने आई थी, अब लखनऊ लौट रही हूँ। आप कहाँ जाएँगे ?

मैं—हम भी लखनऊ ही जा रहे हैं। आपके साथ सफ़र खूब मज़ेसे कटेगा। वर्ना जँभाइयाँ ले ले कर लखनऊ पहुँचते ?

रूपरानी—(अपनी रिस्टवाचकी तरफ़ देखकर) इसमें क्या शक है। आप न मिलते तो मुझे अनपढ़ औरतोंके साथ बैठना पड़ता। अब आपके साथ बैठूँगी तो कुछ साहित्यकी बातें होंगी, कुछ राजनीतिकी। मगर आप तो सेकेंड क्लासमें होंगे, मेरा टिकट इण्टर क्लासका है। आपके साथ कैसे बैठूँगी ?

मेरा दिल बाग़ बाग़ हो गया। इस थोड़ेसे स्वर्गीय समयके लिए मैं अपना सर्वस्व निछावर कर सकता था, बोला—आपके साथ इण्टर क्लास भी सेकेंड क्लास बन जायगी।

रूपरानीने मेरी तरफ़ दिलको टटोल लेनेवाली आँखोंसे देखा। वह जानना चाहती थी कि मेरे इन शब्दोंका क्या मतलब है। इतनेमें एंजिनने सीटी दी और हम दोनों उचककर इण्टर क्लासके एक डिब्बेमें चढ़ गए। भाग्यवश डिब्बा बिल्कुल ख़ाली था। गाड़ी चलने लगी।

मैं दरवाज़ेमें खड़ा स्टेशनके लैम्पोंकी तरफ देख रहा था। जब गाड़ी प्लेटफ़ार्मसे निकल गई तो मैंने दरवाज़ेको बन्द कर दिया और रूपरानीके सामनेवाली सीटपर आकर बैठ गया। इस समय मेरा दिल धक् धक् कर रहा था और मेरे कान इस आवाज़को सुन रहे थे।

रूपरानी अख़बार देख रही थी। मुझे सीटपर बैठते देखकर बोली—असेम्ब्लीकी बैठक शुरू हो गई।

मेरा ध्यान असेम्ब्लीकी बैठककी तरफ़ न था। मैं चाहता था, भगवानने अवसर दिया है तो लाभ उठाऊँ और रूपरानीके सामने अपना दिल और दिलके भाव खोलकर रख दूँ। इससे अच्छा अवसर और कहाँ मिलेगा ? लोगोंमें बातूनी मशहूर हूँ। देखूँ, इस समय मेरी वाक्-चातुरी काम देती है या नहीं ? तलवार वह जो युद्ध-भूमिमें काम आए; नहीं तो देखने और दिखानेके लिए तो लकड़ी और लोहेकी तलवारें दोनों बराबर हैं।

मगर रूपरानी अख़बार देख रही थी और गाड़ी, किसी अभागेके हाथमें आकर निकल जानेवाले अवसरकी तरह, उड़ी चली जा रही थी। सोचता था, ऐसा अवसर फिर न मिलेगा। रातका समय है, एकान्त है, गाड़ीका सफ़र है, जो चाहूँ कह लूँ, उसे सुनना पड़ेगा। न आप कहीं जा सकती है, न मुझे बोलनेसे रोक सकती है। लखनऊमें ऐसा सुनहरा अवसर कहाँ ? यह मेरा सौभाग्य है जो यह अवसर मिल गया। लेकिन, वह अब भी अख़बार देख रही थी। मैं तिलमिला उठा। जी चाहता था, अख़बार छीनकर खिड़कीसे बाहर फेंक दूँ और अपने मनकी व्यथा सुना लूँ। कैसी संग-दिल है ! मेरे जीवन और मृत्युका सवाल है, यह अख़बार पढ़ रही है !

आख़िर मैंने उसकी तरफ झुककर ऊँची आवाज़से कहा—हमने सोचा था, आपसे गपशप लड़ेगी मगर आप तो अख़बार ले बैठीं।

रूपरानीने उसी तरह अख़बार पढ़ते पढ़ते बिना मेरी तरफ़ देखे

जवाब दिया—आजका लीडिंग आर्टिकल बड़ा ज़ोरदार है, ज़रा इसे ख़त्म कर लूँ, तो फिर बातें होंगी।

मैं—वाह! हम गूँगेका गुड़ खाए बैठे हैं, आपको लीडिंग आर्टिकलकी पड़ी है। छोड़िए इसे!

यह कहकर मैंने रूपरानीके हाथसे अख़बार छीनकर अपनी सीटपर रख लिया, और देखा कि कहीं मेरे इस साहससे वह नाराज़ तो नहीं हो गई।

रूपरानीने अख़बार लेनेके लिए अपना छोटा-सा गोरा हाथ बढ़ाया, और दूसरे हाथसे साड़ीको ठीक करते हुए कहा—बस, एक ही पैराग्राफ़ बाक़ी है, दो-चार मिनटमें ख़त्म हो जायगा।

मैं—भई, चलती गाड़ीमें पढ़नेसे आँखें ख़राब हो जाती हैं।

रूपरानी—नहीं ख़राब होतीं। मुझे आदत है।

मैंने अख़बारपर अपना दाहिना हाथ रख लिया और लेम्पकी तरफ़ देखकर कहा—रोशनी भी बहुत कम है। मैं आपका शुभ-चिंतक हूँ, दुश्मन नहीं हूँ। इस समय आपको अख़बार वह दे, जो आपका दुश्मन हो।

रूपरानी—यह आपकी ज़्यादती है।

मैं—चलो, ज़्यादती है, तो ज़्यादती ही सही। मगर इस समय अख़बार न मिलेगा।

रूपरानीने अपना हाथ पीछे हटा लिया और अपना सिर गाड़ीकी दीवारके साथ लगाकर कहा—बहुत अच्छा साहब, न दीजिए। अब आपसे झगड़ा कौन करे? कीजिए बातें।

अब मेरे लिए मैदान साफ़ था। कुछ मिनट चुप रहा और सोचता रहा कि बातचीत कहाँसे शुरू करूँ। आख़िर मुझे रास्ता मिल गया। बोला—यह महताबरायको क्या हो गया है? हर किसीसे लड़ता है, सीधी बात करो तो भी काटनेको दौड़ता है!

रूपरानीने दिलको छेद डालनेवाली आँखोंसे मेरी तरफ़ देखा, फिर ठंडी आह भरकर कहा—मालूम होता है, वह महताबराय ही नहीं रहा, पहले कैसा मौजी जीव था,—बात-बातपर मुस्कराता था, बात-बातपर हँसता था। उदास होना जानता ही न था।

मैं—अब चौबीस घंटे उदास रहता है। न किसीसे हँसता है, न बोलता है, न बात करता है। जाने क्या हो गया?

रूपरानी—बिल्कुल बदल गया।

मैं—(दुःख प्रकट करते हुए) कुछ बीमार तो नहीं है? ज़रूर बीमार होगा; नहीं तो आदमी इतनी जल्दी कैसे बदल जाए। उसकी इस काया-पलटपर सारा कालिज हैरान है। आपसे बोल-चाल है, या आपसे भी बन्द हो गई? मेरा ख़्याल है......

मैंने बात अधूरी छोड़ दी।

रूपरानीके गोरे मुँहपर दुःखके काले बादल छा गए। कुछ देर चुपचाप गाड़ीके बाहर अँधेरेकी तरफ़ देखती रही। उसने ऐसी आह भरी जो छातीसे नहीं, पेटसे उठती मालूम होती थी और कहा—मुझसे भी नहीं बोलते आजकल।

अब बात-चीत ऐसी जगह पहुँच चुकी थी जो बहुत नाज़ुक थी। मैंने एक एक शब्दको तोल कर कहा—हमने तो सुना था, कि आपके पिताजीने उनके साथ आपका...

इसके आगे मेरी ज़बान न चल सकी। वाक्य अधूरा रह गया, मगर मतलब अधूरा न था।

रूपरानीके मुँहपर दुःखकी छाया छा गई। फ़र्शकी तरफ देखते हुए बोली—मिस्टर निगम, मेरा ख़्याल है, इस बातको यहीं समाप्त कर दिया जाए, तो ठीक रहेगा।

मैं—मुझे खेद है कि आपको इससे कष्ट हुआ। लेकिन...मैं यह कहना चाहता हूँ...कि...अगर आपको...मेरा मतलब है, आपत्ति न

हो, तो मैं...यानी अपने बारेमें...कुछ...दो-चार शब्द कहूँ ? इजाज़त है आपकी ?

रूपरानीने अपनी रिस्ट-वाचको कलाईपर ठीक किया और कहा—कहिए, मेरी तरफ़से इजाज़त है।

मैं—(रुक-रुककर) आप बुरा तो न मानेंगी ?

रूपरानी—अब इसके बारेमें मैं पहलेसे क्या कहूँ,—अगर बात बुरा माननेवाली न होगी तो बुरा न मॉनूगी। मगर मालूम होता है, कोई ख़ास बात है। क्यों ?

मैं—ख़ास बात न होती तो इतनी भूमिकाकी क्या ज़रूरत थी ? फ़ौरन कह देता।

रूपरानीने जवाब न दिया।

मैं—मेरी ज़िन्दगी और मौतका सवाल है। इतना ख़्याल रहे।

रूपरानीने अबके भी जवाब न दिया।

मैं—तो इजाज़त है, कहूँ ?

रूपरानीका मुँह लज्जाकी लालीसे तमतमा रहा था। काँपते हुए होठोंसे उकताए हुए स्वरमें बोली—अब एक बार तो कह दिया कि कहिए इजाज़त है, और कितनी बार कहूँ ?

मैंने अपने दिलमें लम्बा-चौड़ा लैक्चर तैयार कर रक्खा था। सोचता था, यहाँसे शुरू करूँगा, फिर यह कहूँगा, फिर यहाँपर पहलू बदलूँगा, इसके बाद अपनी बेचैनीका हाल बयान करूँगा और उसके बाद उसके पाँवपर सिर रख दूँगा। लेकिन भगवान जाने, उस समय मुझे क्या हुआ कि मेरे मुँहसे केवल यही चार शब्द निकले, 'मैं आपको चाहता हूँ।' विद्यार्थी जानता सब कुछ था, मगर परीक्षाके समय उसकी ज़बानसे एक ही वाक्य निकल सका, 'मैं आपको चाहता हूँ।'

यह कहते कहते मेरी आँखें नीचे झुक गईं।

थोड़ी देर बाद मैंने सिर उठाकर रूपरानीकी तरफ़ देखा—वह

मेरे सिरके ऊपर लकड़ीकी दीवारकी तरफ़ ऐसे ही बिना किसी मतलबके देख रही थी। मगर उसके विचार जाने कहाँ थे।

अब मैंने एक बार फिर अपने शरीर और आत्माकी सारी शक्तियोंको इकट्ठा किया और जो कुछ पहले एक वाक्यमें कह चुका था, अब उसकी व्याख्या करने लगा—मैं सोता हूँ तो तुम्हारे सुपने देखता हूँ, जागता हूँ तो तुम्हारे बारेमें सोचता हूँ। कालिजमें तुम दिखाई दे जाती हो तो कोई ख़ज़ाना मिल जाता है। नहीं नज़र आतीं, तो दिल घबरा जाता है।

सहसा रूपरानी खड़ी हो गई और बोली—मुझे अफ़सोस है, मेरे मनमें आपके लिए इस तरहके भाव नहीं हैं। यह बात छोड़ दीजिए, कुछ और बात कीजिए।

मेरे दिलपर किसीने हथौड़ा मार दिया। बल्कि अगर कोई हथौड़ा मार देता तब भी मुझे इतना कष्ट न होता जितना रूपरानीके उत्तरसे हुआ। देखते देखते मेरी आँखोंमें आँसू भर आए। निराशाके क्रोधसे बोला—क्या मैं महताबरायसे भी बुरा हूँ? आख़िर उसमें क्या बात है जो मुझमें नहीं? मैं उससे हर तरह अच्छा हूँ। वह मेरी बराबरी नहीं कर सकता।

उस समय जोशमें यह शब्द बक गया था। मगर आज सोचता हूँ तो मुझे आप हैरानी होती है कि उस समय मुझे क्या हो गया था! कहाँ मैं, कहाँ महताबराय? ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ था। वह सज्जनता, वह योग्यता, वह नेकदिली मुझे छू भी नहीं गई। मैं उसके सामने एकदम तुच्छ हूँ। मगर उस समय मैंने कह दिया—आख़िर उसमें क्या बात है जो मुझमें नहीं? मैं उससे हर तरह अच्छा हूँ।

रूपरानी मेरी अदूरदर्शितापर मुस्कराकर बोली—उनमें एक बात तो यह है कि वे इस बार भी यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रहेंगे। आप शायद पास भी न हो सकें। कहिए ठीक है, या नहीं?

मैं—यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रहना खेल-मज़ाक नहीं है। यों कोई गप्पें मारता फिरे तो उसे कौन रोक सकता है? अपने मुँहसे जो कुछ चाहे कह ले। मैं चाहूँ, मैं भी कह लूँ। मगर मैं कहता नहीं।

रूपरानी—कहते हैं, अव्वल न रहा तो नाम बदल देना।

मैं—उस समय बग़लें झाँकने लगेंगे, आँखें न मिलाएँगे।

रूपरानी—यह आपका वहम है। उनके लिए ज़रा भी मुश्किल नहीं। आपमें यह आत्म-विश्वास है? कहिए 'मैं अव्वल रहूँगा?'

मैं—अगर आप आशा दिलाएँ, तो मैं भी जान लड़ा दूँ। अव्वल रहना क्या मुश्किल है?

रूपरानीने कुछ देर सोचकर कहा—चलो, अगर आप यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रह जाएँ, तो मुझे इन्कार न होगा।

आशाका हरा-भरा मैदान बिल्कुल मेरे सामने आ गया। बोला—आपके पिताजी तो आनाकानी न करेंगे?

रूपरानी मुस्कराई और बोली—अब मैं उनकी तरफ़से क्या कह सकती हूँ? मगर ख़ैर, उनको भी मना लूँगी।

मैं—तो लिख रखिए मैं यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहूँगा।

डेढ़ घंटेके बाद जब गाड़ी लखनऊ पहुँची, तो मेरी दुनिया ही बदल चुकी थी। अब हरएक चीज़ हँसती, मुस्कराती, नाचती हुई दिखाई देती थी।

१०

मगर थोड़े दिनों बाद यह हँसने, मुस्कराने और नाचनेवाली दुनिया दूर भागने लगी। किताबें लेकर बैठता तो एक सागर सामने आ जाता जो मेरे और मेरी आशाओंके बीच गरजता था। जहाँ तक नज़र जाती थी पानी ही पानी था। आशाकी हरी-भरी भूमि कभी बहुत फ़ासलेपर दिखाई देती थी, कभी निराशाके उस अथाह समुद्रमें डूब जाती थी। कुछ महीनोंके बाद मुझे निश्चय हो गया कि मेरा यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहना ख़ामख़्याली है। बल्कि कभी कभी तो मुझे सन्देह होता था कि मैं पास भी न हो सकूँगा। रूपरानी जानती थी कि यह नालायक़ है, बातें कर सकता है, मेहनत नहीं कर सकता। इसी लिए मेरे सामने ऐसी कड़ी शर्त रख दी। मैं पागल था जो उसकी चालको न समझा। समझदार लड़की है, कैसी सफ़ाईसे टाल गई! साँप भी मर गया, लाठी भी बच गई।

इसपर भी मैंने हिम्मत न हारी और मेहनत करता रहा। किनारा दूर था, पानी गहरा था, दम फूल गया था, मगर तैराक फिर भी हाथ-पाँव मार रहा था। सोचता था कि शायद बच जाए, शायद कोई लहर किनारेकी तरफ़ धकेल दे, शायद कोई सहारा मिल जाए, शायद कोई चमत्कार हो जाए। कभी कभी इस दुनियामें अनहोनी बातें भी तो हो जाती हैं। जीवन आशाके कच्चे धागेके साथ बँधा रहता है, इसका मुझे इसी समय अनुभव हुआ। कुछ ही दिनों बाद मेरी दशा बदल गई। अब मुझे खाने-पीनेकी सुध न थी, खेलने-कूदनेकी सुध न थी, नहाने-धोनेकी सुध न थी, और इतना ही क्यों, मुझे कपड़े बदलनेकी भी सुध न थी। दिन-रात पढ़ता था। असम्भव

था कि इतने परिश्रमका असर मेरे स्वास्थ्यपर न पड़ता। आँखें अन्दरको धँस गईं, चेहरा पीला पड़ गया। माता-पिताने यह देखा तो डर गए। वे कहते थे, तुझे पढ़नेकी ज़रूरत ही क्या है? तेरे खानेको बहुत है। कालिज छोड़ दे और पहाड़पर चला जा। लेकिन मेरे सिरपर तो दूसरी धुन सवार थी। अपने स्वास्थ्यको दिनोंदिन ख़राब होते देखता था और फिर भी उसका ख्याल न करता था। यहाँ तक कि मुझे हल्का हल्का बुख़ार रहने लगा। मगर मैंने फिर भी परवाह न की। अपनी मृत्युको धीरे धीरे अपनी तरफ़ बढ़ते देखता था और घबराता न था, बल्कि उल्टा मुस्कराता था। जो आदमी आप मरनेको तैयार हो जाए, उसे मौतका क्या डर?

आख़िर एक दिन महताबरायने मुझे एक बाग़में आ पकड़ा और पूछा—यह तुमने मरनेपर क्यों कमर बाँधी है? अगर इसी तरह पढ़ते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब तुम अपने आपको तपेदिक़के पंजेमें पाओगे। अभीसे आँखें खोलो।

जब हमारा शरीर कमज़ोर होता है तो हममें किसीसे आँखें मिलानेकी हिम्मत नहीं रहती। दूसरोंकी तरफ़ देखते भी हैं तो संकोच और शर्मसे। उन दिनों मेरी भी यही दशा थी। मैंने झेंपकर महताबरायकी तरफ़ देखा—और किताब बन्द करके कहा—तपेदिक़ क्यों हो जाएगा? पढ़ने-लिखनेसे तपेदिक़ नहीं होता।

महताबराय—ज़रा अपना मुँह तो शीशेमें देखो। हड्डियाँ निकल आई हैं।

मैं—वाह, मैं तो समझता हूँ, मोटा हो गया हूँ। कहते हैं, हड्डियाँ निकल आई हैं!

महताबराय—रंग भी पीला पड़ गया है। वह पहली बात कहाँ? सेबकी तरह लाल था।

यह कहते कहते वह मेरे पास घासपर बैठ गया और मेरी किताबोंको उलट-पुलटकर देखने लगा।

मैं—अब भी मेहनत न करूँ तो और कब करूँ ? परीक्षा तो सिरपर आ गई। स्वास्थ्यका क्या है, आज ख़राब है कल ठीक हो जायगा। मगर परीक्षाका समय बार बार नहीं आएगा।

महताबरायने मेरी किताबें उठाकर एक तरफ रख दीं और मेरे पास खिसककर कहा—मेहनत करो, इससे तुम्हें कोई नहीं रोकता। मगर भाई, अपने स्वास्थ्यका भी तो ध्यान रक्खो। जितनी मेहनत तुम कर रहे हो उतनी मेहनत सारे कालिजमें कोई नहीं कर रहा है।

मैं—यह परीक्षाकी बाज़ी नहीं, प्यारकी बाज़ी है। अव्वल न रहा तो जीवन-भर रोता रहूँगा।

महताबराय—अरे तो क्या यह सच है ? सुना मैंने भी था, लेकिन विश्वास न होता था। मैं समझता था, किसीने गप उड़ा दी है।

मैं—गप नहीं, सच बात है भाई, अब तो बाज़ी लग गई।

महताबराय—यह लड़की तुम्हारी जान लेकर रहेगी। आज जाकर उसकी ऐसी ख़बर लेता हूँ कि जन्मभर याद रखेगी।

मैं—क्या कहोगे ?

महताबरायने जवाब न दिया।

मैं—क्या कहोगे उसे ? ज़रा मुझे भी तो बता दो।

महताबराय—अब तुम्हें क्या बताऊँ क्या कहूँगा ? ऐसा फटकारूँगा कि इतना-सा मुँह निकल आएगा। रोने लगेगी तुम्हारे पास आकर। माफ़ी माँगेगी और अपने आप कह देगी कि तुम इतनी मेहनत न करो। यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहकर क्या बनाओगे, छोड़ो।

मैंने कुछ देर सोचा। ख्याल आया : अगर यह हो जाए तो क्या कहना ! जान छूट जाएगी। लेकिन फिर ख़्याल आया, अब क्या बार बार इसीसे सहायता लेता रहूँगा। सोया हुआ आत्म-सम्मान उठकर बैठ गया। धीरेसे बोला—तुम्हारी सहानुभूतिके लिए धन्यवाद। मगर यह बात मुझे पसन्द नहीं। अब तो जो बाज़ी लग गई, लग गई।

महताबरायने ठंडी आह भर कर मेरी ओर देखा और फिर कहा—यह काम जितना आसान तुमने समझ रक्खा है, उतना आसान नहीं है। बड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

मैं—मगर आख़िर जो अव्वल रहेगा, वह भी तो आदमी ही होगा, कोई देवता तो न होगा। अगर वह मेहनत कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूँ।

महताबराय किसी गहरे विचारमें डूब गया। सोचता था, क्या हो सकता है। थोड़ी देर बाद उसके मुँहपर चमक-सी दिखाई दी। मुस्कराकर बोला—मैं भी कैसा मूर्ख था जो इतनी-सी बात भी न सूझी। लो तुम इतनी मेहनत करना छोड़ दो और अपने स्वास्थ्यका ख़्याल करो। और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि फिर भी तुम यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रह जाओगे।

मेरा मुँह आश्चर्यसे खुला रह गया—वह कैसे ?

महताबराय—अब यह न पूछो। (व्यंगसे) कोई अनहोनी बात होगी, कोई देवता आकर तुम्हें सब कुछ बता जायगा, या तुम्हारा दिमाग़ जाग उठेगा—उसमें रोशनी हो जाएगी। या तुम्हारे परचे अपने आप लिखे जाएँगे। तुम्हें मालूम भी न होगा कि क्या हो गया, और तुम अव्वल रह जाओगे।

मैं—हँसी कर रहे हो मुझसे !

महताब—तुम्हारे सिरकी क़सम, हँसी नहीं करता। तुम आजसे निश्चिन्त हो जाओ।

मैं—और अगर परीक्षामें फ़ेल हो गया तो—

महताबराय—मुझे गोली मार देना।

मैं—मैं यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रहना चाहता हूँ, इतना सोच लो। यह मेरे जीवनकी सबसे बड़ी साध है।

महताबराय—भगवानकी राहें न्यारी हैं। उसीपर भरोसा रक्खो। वह सब कुछ कर सकता है।

मैं—यह नहीं। साफ़ साफ़ कहो, क्या करोगे ?

महताबरायने मेरे कानमें कुछ कहा और फिर हँसा। मगर मैं सन्नाटेमें आ गया। वह सज्जन है, यह मैं जानता था, मगर मेरे लिए यहाँ तक जानेको तैयार हो जाएगा, इसका मुझे गुमान भी न था। आत्म-सम्मानने उठकर आँखें मलीं, अँगड़ाइयाँ लीं और फिर सो गया।

मैंने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया और निश्चिन्त हो गया। शामके आठ बजे सोता था, सुबहके नौ बजे उठता था। रूपरानी मेरी ओर देख देख कर मुस्कराती थी, मानो कहती थी कि तुम ज़रूर अव्वल रह जाओगे! कभी कभी सन्देह होता था कि फ़ेल हो जाऊँगा। हो सकता है, महताबराय ठीक समयपर धोखा दे जाए। लेकिन फिर ख़्याल आता, महताबराय ऐसा आदमी नहीं। उसके बारेमें ऐसा सोचना भी उसके प्रति अन्याय करना है। जो कहता है, कर के दिखा देता है। वह बड़बोला नहीं है। वह अपने कहेकी क़ीमत समझता है।

प्रोफ़ेसर कहते थे, बस बड़ी मेहनत करने चले थे, चार ही दिनमें जोश ठंडा पड़ गया! अजी जनाब, हम तो पहले ही जानते थे कि यह रोग अमीरोंके बसका नहीं! जिनके बाप-दादे खानेको छोड़ जाएँ उन्हें तक़लीफ़ें उठानेकी क्या ज़रूरत है? लड़के कहते थे, तुमने बहुत अच्छा किया जो समयपर सँभल गए, नहीं कोई रोग सहेड़ लेते तो सारी उम्र हाथ मलते रहते। रूपरानी तो तुम्हें क़त्ल करनेपर तुली हुई थी। तुम्हारे लिए सुन्दर लड़कियोंकी क्या कमी है, चाहो तो दर्जन-भर ब्याह कर लो। तुम्हारे साथ कौन ब्याह न करेगा?

लेकिन जब परीक्षा-फल निकला तो सब हैरान रह गए,—मैं यूनिवर्सिटीमें अव्वल था!

सारे शहरमें शोर मच गया। प्रोफ़ेसर और लड़के सुनते थे और हैरान होते थे। कहते थे, यह तो चमत्कार हो गया। कोई आकर हमसे कहता कि ताजबहादुर यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहा है, तो

हम उसपर विश्वास ही न करते । समझते उसने पढ़नेमें भूल की है । कुछ लोग कहते, साहब, यह तो छिपे रुस्तम निकले । हमारा ख़्याल था, पास भी न होंगे, यह अव्वल रह गए । महताबरायपर सबको आशा थी, मगर वह मामूली नम्बर लेकर पास हुआ । बल्कि कुछ नम्बर और कम होते तो पास भी न होता । लोग कहते, उसे घमंड खा गया । कुछ कहते, पहले योग्य होगा, लेकिन अब तो रूपरानीके रूपका शिकार है । एक काम हो सकता है, पढ़ाई या प्रेम । दोनों काम एक एक साथ कभी नहीं होते । बाज़ कहते, जो प्यारमें फँस गया, वह पढ़ाई क्या करेगा ?

मैं यह सुनता था और कुढ़ता था । मुझे रहरहकर उसपर दया आ रही थी । कभी कभी यह भी ख़्याल आता था कि सारा रहस्य खोलकर रख दूँ और उसकी इज्ज़त बचा लूँ । लेकिन फिर हिम्मत छूट जाती थी । सारा दिन बधाइयाँ देनेवालोंका ताँता बँधा रहा । कालिजके सभी लड़के और प्रोफ़ेसर आए । लेकिन रूपरानी और महताबराय न आए, गो मैं उन्हींके लिए व्यग्र था । आख़िर रातके नौ बजे मेरा गला छूटा और मैं महताबरायसे मिलनेके लिए उसके घरकी ओर चला—गिरता हुआ—लड़खड़ाता हुआ—पग-पगपर हिच-किचाता हुआ ।

लेकिन वह मकानपर न था । उसकी माँ रो रही थी और रूपरानी उसे चुप करा रही थी । मैं अवाक् होकर उलटे पाँव लौट आया और अपने पलंगपर गिरकर सोचने लगा, यह क्या हो गया ?

११

रूपरानी

मेरा ब्याह हो गया, लेकिन मैं खुश न थी। वह मुझे चाहते थे, मेरे पाँवतले आँखें बिछाते थे, मुझसे पूछे बिना कोई काम न करते थे। उनके घर जाकर मुझे किसी चीज़की कमी न रही। असम्भव था कि मैं कोई चीज़ माँगूँ और वह मुझे उसी वक्त न मिले। सास-ससुर दोनों मेरी बलाएँ लेते थे। कहते थे, यह बहू नहीं साक्षात् लक्ष्मी है। ऐसा आराम रानियोंको राजमहलमें भी न मिलता होगा। उन्होंने मोटरोंकी दूकान खोल ली थी। हज़ारोंकी आमदनी थी। मगर मैं फिर भी खुश न थी। मुझे अब भी रह रहकर महताबरायकी याद सताती थी। भगवान् जाने कहाँ है? किस हालतमें हैं? क्या करता है? परीक्षा-फल निकलनेके बाद उसने किसीको मुँह नहीं दिखाया। सोचता होगा, लोग क्या कहेंगे? उसकी बूढ़ी माँ हर समय रोती रहती थी। जिस बेटेपर इतना आशा थी, वही छोड़ गया।

उन्होंने उसके पचास रुपए महीना बाँध दिए थे। मुझसे कहते, यह मेरे मित्रकी माँ है। अब उसकी तारीफ़ करते न थकते थे। कहते थे, मैंने उसे बहुत देरमें पहचाना। एक दिन कहने लगे, मिल जाए तो उसे अपनी दूकानका मैनेजर बना दूँ। हज़ार रुपया महीना माँगे, तब भी इनकार न करूँ। वह आदमी नहीं, हीरा है। मरता मर जाएगा, एक पैसेकी बेईमानी न करेगा। ऐसे आदमी इस दुनियामें कहाँ? मैं यह सुनती थी और मेरी छातीमें एक धुआँ-सा उठता था—हाय महताबराय, तुम कहाँ चले गए? मुझे इतना चाहते थे, जाते समय एक बात भी

न की ! केवल इसलिए कि परीक्षामें अच्छे नम्बर न लिये। कभी ख्याल आता कि अब तो भगवान् कभी उन्हें मेरे सामने न लाए, वरना मेरा दिल डावाँडोल हो जाएगा। इसी तरह कई वर्ष बीत गए, और मैं एक लड़कीकी मा बन गई ।

प्रातःकाल था। वे सोफ़ेपर बैठे चाय पी रहे थे। मैं छोटी लड़कीको गोदमें लिये उनके पास गई और बोली—अब इस ग़रीबका कुछ नाम भी रक्खा जायगा या सोचते ही रहोगे ?

उन्होंने टोस्टका टुकड़ा मुँहमें डालते हुए जवाब दिया—कोई खूबसूरत नाम सोचो।

मैं—अब क्या बताऊ ? मेरा बताया हुआ नाम तो आपको पसन्द ही नहीं आता। कितने नाम बता चुकी—प्रभा, कमलिनी, शान्ति, फूलवती, प्रेमा, चाँदरानी, कुसुम, गीता ।

वे—(चायका घूँट पीकर) यह सब मामूली नाम हैं, कोई और सोचो, कोई नया-सा नाम ।

मैंने लड़कीके सिरपर रूमाल बाँधते हुए जवाब दिया—अब तुम्हारी बेटीके लिए कोई नाम आसमानसे उतरेगा। और क्या !

यह कहकर मैंने बेटीके फूले हुए गालको थपथपाया और कहा—क्यों बेटा, तेरा नाम बिल्ली रख दें ? बिल्लीकी तरह देखती है ना ?

वह चाय पीकर उठ बैठे और टाईकी गिरह बाँधते हुए बोले—अच्छा नाम पसन्द किया तुमने !—बिल्ली ! कोई प्यारा-सा नाम सोचो। यह भी कोई नाम है ?

मैं—(बनावटी क्रोधसे) मुझे माफ़ करो बाबा ! अब मैं कोई नाम रखनेकी सलाह न दूँगी। तुम ही बताओ तो आँखें बन्द करके मँजूर कर लूँ; एक शब्द न बोलूँ ।

वे—अगर तुम हमारी मान लो, तो हम बता दें ।

मैं—हाँ बताइए। देखूँ कैसा नाम है, जिसके सामने कोई नाम पसन्द ही नहीं आता श्रीमानजीको ।

उन्होंने कुछ देर मेरी तरफ़ देखा और रुक रुक कर (जैसे वे इस नामके असरको दुगुना करना चाहते हों) कहा—इसका......नाम महताबकुमारी रख दो। मुझे यह नाम पसंद है।

मेरे दिलपर किसीने घूँसा मार दिया। बोली—इस नाममें क्या खूबी है ? मुझे तो यह नाम मर्दाना-सा मालूम होता है,—न लोच, न मिठास, न मोहिनी, न नवीनता।

वह टाईकी गिरह बाँधकर मेरे पास आ गए और अपना हाथ मेरे कंधेपर रखकर मिन्नतभरे स्वरमें बोले—मैं महताबरायके नामपर इसका नाम रखना चाहता हूँ। वह मेरा सबसे बड़ा हितैषी है। उसने मुझपर बड़ा भारी उपकार किया है।

मैंने उन्हें पकड़कर मेज़के पास एक कुरसीपर बैठा दिया, आप उनके सामने दूसरी कुरसीपर बैठ गई और लड़कीको कंधेसे लगाकर बोली—उन्होंने आपका क्या उपकार किया ?—कोई भी नहीं। उलटा आपने उनका उपकार किया है। अब भी उनकी माकी पालना कर रहे हैं।

वे—नहीं रूप, उसने मुझे जीवन दिया है, उसने मुझे तेरा प्यार दिया है, उसने मुझे मेरा सम्मान दिया है। मुझमें यह ताकत नही कि उसका यह उपकार उतार सकूँ।

मेरे दिलमें एक अजीब-सा .ख्याल पैदा हुआ। मैंने उनकी आँखोंमें आँखें डाल दीं और कहा—जीवन ! मेरा प्यार ! सम्मान ! यह क्यों कर, ज़रा खोलकर कहिए।

मगर अब वे पछताते थे कि मुँहसे क्या निकल गया। वे चाहते थे, किसी तरह मैं उनसे इसके बारेमें सवाल न करूँ, ताकि जिस बातको वे छिपा छिपाकर रखना चाहते थे, और जो जोशकी हालतमें उनके मुँहसे बाहर निकलनेको आकुल-व्याकुल हो गई थी, वह उनके दिलहीमें छिपी रहे। मगर मैं मानती न थी। कहती थी—बताओ, नहीं आज

दूकानपर न जाने दूँगी । मैंने तुमसे कभी कोई बात नहीं छिपाई, तुम क्यों छिपाते हो ? या कहो, तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं, या जो बात है साफ़ साफ़ कह दो और क्या ! एक तरफ़ चलो, यह नहीं कि इधर भी और उधर भी । यह दुरंगी चाल बुरी ।

वे बोले—अब तुम तो हाथ धोकर पीछे पड़ गईं ।

मैं—मैं तुम्हारी स्त्री हूँ । अगर उसने तुमपर उपकार किया है, तुम्हें जीवन दिया है, तुम्हारी इज्ज़त बचाई है, तो मुझे भी ऐसे महात्माका कृतज्ञ होना चाहिए या नहीं । आप न बताएँगे तो संभव है, कभी मिल जाएँ और मैं उनका धन्यवाद भी न करूँ; तो वह अपने दिलमें क्या कहेंगे ? यही कि कैसी कृतघ्न है, मैंने इसके पतिके प्राण बचाए हैं, इसे इसकी परवाह ही नहीं । लो, अब झटसे बता दो । तुम्हें भी देर हो रही है, मुझे भी देर हो रही है ।

वे—मैं बतानेको तैयार हूँ, मगर मुझे डर है कि तुम मुझसे घृणा करने लगोगी ।

मैं—यह तुम्हारा वहम है ।

वे—मेरा .ख्याल है, मैं वह बात बताकर तुम्हारी आँखोंमें सदाके लिए गिर जाऊँगा ।

मैं—दुनियामें ऐसी कोई बात नहीं जो अब तुम्हें मेरी आँखोंमें गिरा सके । तुम मेरे पति हो ।

वे—मैं चाहता तो न था कि तुमको अपने जीवनकी यह रहस्यमयी घटना सुनाता । मगर जब तुम नहीं मानतीं, तो क्या करूँ ? लो सुनो—

१२

मैंने नौकरको बुलाकर लड़कीको बाहर भेज दिया और आप कान लगाकर सुनने लगी।

उन्होंने कुरसीके साथ पीठ लगा ली और सिगार सुलगाया। इसके बाद कश लगाकर धीरे धीरे कहना शुरू किया—रूप, तुम्हें याद है, तुमने कहा था, यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहो तो मैं तुमसे ब्याह करूँगी, वर्ना नहीं। तुम्हें यह भी याद है, मैंने तुम्हें पानेके लिए अठारह अठारह घंटे पढ़ना शुरू कर दिया था। मैं अमीर था, मेरा मिज़ाज अमीराना था; थोड़े ही दिनोंमें बीमार पड़ गया। डाक्टर कहते थे, इसे तपेदिक़ हो जानेका भय है। मा-बाप कहते थे, पढ़ना छोड़ दो। मगर मुझे यह मंजूर न था। मैं जानता था, मेरी मौतका दिन निकट आ रहा है। मुझे मरना मंजूर था, मगर अपमानित होकर और तुमसे हाथ धोकर जीता रहना मंजूर न था। और यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहना मेरे लिए इतना ही कठिन था जितना गौरीशंकरकी चोटीपर जा चढ़ना। उस समय मौत या निराशा मुझे सामने खड़ी दिखाई देती थी। बचावका कोई रास्ता न था। चारों ओर अँधेरा था।

ऐसे समयमें महताबराय आगे बढ़ा। छः सालका लम्बा समय बीत गया है। मगर मुझे वह दिन अभी कलका दिन मालूम होता है। मैं कालिजके साथ जो बाग़ है, उसमें घासपर बैठा किताबोंके साथ सिर फोड़ रहा था। महताबराय आकर मेरे पास बैठ गया और बोला—यह तुम आत्म-हत्या क्यों कर रहे हो? मैंने उससे अपनी कठिनाइयाँ कहीं। मैंने कहा, मैं या तो अव्वल रहूँगा या इसी कोशिशमें जान दे

दूँगा। मेरा संकल्प सुनकर उसे दुख हुआ। मैंने कालिजमें उसका तिरस्कार किया था, मैंने उसे गालियाँ दी थीं, नुक़सान पहुँचानेकी कोशिश की थी; मगर फिर भी वह चाहता था, किसी तरह मेरी जान बच जाए। आख़िर उसने कहा, तुम पढ़ना छोड़ दो, तुम फिर भी अव्वल रहोगे। मुझे हैरानी हुई। मैं समझ न सकता था कि यह कैसे हो जायगा। महताबरायने कहा, परीक्षाके अपने परचोंपर मैं तुम्हारा नम्बर लिख दूँगा, तुम मेरा नम्बर लिख देना। मेरा मन इस प्रस्तावका विरोध करता था, मेरा अंतःकरण मुझे धिक्कारता था, मगर मैंने तुम्हारे लोभमें फँसकर इस उपायको भी मंजूर कर लिया। और यह है वह राज़ जिसे आज तक मेरे और महताबरायके सिवाय दुनियाका कोई तीसरा आदमी नहीं जानता। आज इस घटनाको याद करता हूँ तो मेरा सिर लज्जासे झुक जाता है। अगर वह यह बलिदान न करता, तो उसके लिए प्रेम, प्रतिष्ठा, शान-शौकत सब कुछ था। मेरे लिए कुछ भी न था। मगर मेरे लिए उसने अपना सब कुछ निछावर कर दिया। सचमुच वह आदमी न था, कोई देवता था। और मैं उसके सामने पशु था, बल्कि पशुसे भी बुरा। भगवान् जाने आज वह कहाँ है? अगर मुझे मिल जाय तो सिर आँखोंपर बिठा लूँ। मगर ऐसे नसीब कहाँ?

यह कहते कहते उनकी आँखोंमें आँसू आ गए। बलिदान और बहादुरीकी यह अलौकिक कहानी सुनकर मेरे शरीरके रोंगटे खड़े हो गए। मैं महताबरायको योग्य और श्रेष्ठ समझती थी, मगर वह इतना वीर और महान् होगा, यह ख़्याल न था। मेरे मनमें उसका प्रेम सो गया था, मित्रताकी यह अमर घटना सुनकर फिर जाग उठा। मैं उसके प्रेमके लिए छटपटाने लगी।

मुझे रह रहकर ख़्याल आता था कि मैं ऐसे महापुरुषकी स्त्री क्यों न हुई। उसके साथ मुझे फूसके झोपड़ेमें भी महलका-सा आराम मिलता। मैं भूखी प्यासी रहकर भी ख़ुशीसे चहचहाती, नाचती, गाती फिरती।

१३

अब मेरी निगाहोंमें अपने पतिकी ज़रा भी इज़्ज़त न थी। मैं समझती थी, यह आदमी नहीं क़साई हैं। बल्कि उससे भी बुरे। वह जानवरोंको मारता है, इन्होंने एक आदमीको क़त्ल किया है। और आदमी भी वह जो इनका मित्र था, इन्हें चाहता था, इनके लिए सब कुछ करता था। वे मेरे निकट आते, तो मेरा शरीर काँप जाता था। मैं चाहती थी, उनसे कहीं दूर भाग जाऊँ। किसी ऐसी दुनियामें जहाँ यह न हों।—मुझे अपने धर्मका ख़्याल न रहा हो, यह बात न थी। मैं अपने दिलको समझाया करती थी, मगर दिल समझता न था। मैं कहती, ये मेरे पति हैं। दिल कहता, इसमें क्या है? इन्होंने जो पाप किया है, वह कम नहीं है। मैं कहती, बचपनमें हर किसीसे भूल हो जाती है। दिल कहता, यह भूल न थी, मित्र-घात था और मित्र-घात पाप नहीं महा पाप है।

वे मुझे यह घटना न सुनाते तो मेरे हृदयमें आग क्यों लगती? अब वे मुझसे माफ़ी माँगते थे, अपने किएपर पछताते थे, मेरे जलते हुए दिलपर पानी छिड़कते थे। लेकिन इस पानीसे आग बुझती न थी, उलटा और भड़कती थी। जैसे यह पानी न था, मिट्टीका तेल था। अब हमारी बोल-चाल भी बन्द हो गई। मेरा मुँह इधर उनका मुँह उधर। दोनों एक ही घरमें रहते थे, एक ही कमरेमें सोते थे, मगर एक दूसरेसे बातचीत किए हफ़्तों बीत जाते थे। कभी बोलते भी तो सीधी तरह नहीं, एक दूसरेको सुनाकर। मैंने ऊँची आवाज़से कह दिया, 'खाना ठंडा हो रहा है, बादमें शिकायत होगी कि नौकर बेपरवाह हो गए हैं।' उन्होंने मुझे सुनाकर कह दिया, 'यह कम्बख़्त किताब

तो फिर भी पढ़ी जा सकती है, इतना तो देखना चाहिए कि सैरका समय हो गया है। शोफ़र हार्न बजा रहा है, यहाँ कोई सुनता ही नहीं।'

जब वे दूकानको चले जाते तो सोचती, आखिर ऐसे कब तक निभ सकती है, आज आएँगे तो बुला लूँगी। मगर जब वे सामने आते तो फिर वही ज़हर चढ़ आता। जी चाहता मुँह न देखूँ। औरोंका प्रेम मुँहपर जागता है, मेरा प्रेम पीठपर जागता था। उनके मुँहसे मालूम होता था कि वे भी बोलने-बुलानेके लिए व्याकुल हैं। कभी कभी बुलाने भी लगते मगर फिर पता नहीं क्या सोचकर चुप रह जाते। शायद डरते हों कि मैं बोला तो यह दो-चार और सुना देगी। वे मुझसे बोलते न थे, लेकिन मेरा ख़्याल उसी तरह रखते थे। मुझे फल मिले या नहीं, मैं सैर करने गई हूँ या नहीं, समयपर खाती हूँ, या नहीं, इसकी पूरी पूरी ख़बर रखते थे।

एक दिन दो सखियोंके साथ सिनेमा देखने गई। जब खेल समाप्त हुआ और मैं बाहर निकली, तो शोफ़र मोटरमें न था। हमें चार-पाँच मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी, वह ज़रा चाय पीने चला गया था। पता नहीं उन्हें किसने बता दिया। बात मामूली थी, लेकिन दूसरे दिन उन्होंने शोफ़रको इतना डाँटा कि याद ही करेगा। वह मिन्नतें करता था, माफ़ियाँ माँगता था, कहता था, फिर ऐसी भूल कभी न होगी। मगर वे उसकी सुनते ही न थे। कहते थे—तू मोटर छोड़कर चला क्यों गया? अब वह तेरी इन्तज़ार किया करेगी। उनकी दो सहेलियाँ साथ थीं, वह क्या कहती होंगी? यही कि इनके नौकर भी ख़ूब हैं; ये हार्न बजाती हैं, वह कहीं सैर-सपाटे करता फिरता है। तेरा क्या गया? नाक हमारी कट गई। नहीं बाबा, मुझे तुझ जैसे आदमियोंकी ज़रूरत नहीं। हिसाब चुकता करो और चलते बनो। तुम्हें नौकरियाँ बहुत, हमें नौकर बहुत। हम दूसरा आदमी रखेंगे।

मैं कमरेमें बैठी सुन रही थी। जब वे यहाँ तक पहुँच गए, तो मुझसे न रहा गया। आँगनमें आकर बोली—चलो, बेचारा माफ़ी माँग

रहा है। अबके छोड़ दो।—(शोफ़रसे) फिर तो ऐसी भूल न करेगा? कानोंको हाथ लगा और माफ़ी माँग।

शोफ़रने कानोंको हाथ लगाकर कहा—बीबीजी, फिर ऐसी भूल हो जाए तो खाल उतरवा लेना!

मैंने दूसरी बार फिर सिफ़ारिश की—लो, अब तुम भी माफ़ कर दो। आदमी है, गधा नहीं है। अब भूल न करेगा।

उन्होंने मेरी ओर देखा मगर आँखें न मिला सके। आग बुझ गई थी, लेकिन अभी तक राख गरम थी। बोले—अब भूल करेगा तो एक मिनटमें जवाब दे दूँगा। चलो, जाओ।

मैं कमरेमें लौट आई। शोफ़र बाहर चला गया तो वे भी कमरेमें आ गए और बोले—मेरा जी चाहता है, इसको कुछ इनाम दे दिया जाए। क्यों, तुम्हारा क्या ख़्याल है, बोलो?

मैंने हैरानीसे उनकी ओर देखा। एक दूसरेसे बोलनेमें जो संकोच था, वह धीरे धीरे दूर हो रहा था।

वे फिर बोले—वह भूल न करता तो हमारी रूठी रानी क्योंकर मानतीं? उसने भूल की, हमारा काम बन गया।

मैंने बनावटी क्रोधसे कहा—चलो, भागो यहाँसे! दूकानका समय हो गया है।

मगर वे मेरे पास आ गए।

पहले आग बुझी थी, अब राख भी ठंडी हो गई। शोफ़रको दस रुपये इनाम मिला।

१४

ताजबहादुर

संध्या समय हम मोटरमें सैरको निकले तो हमारी खुशीका ठिकाना न था। यह खुशी हमें आज कई दिनोंके बाद मिली थी।

रूपरानीका चेहरा भी चमक रहा था, बात-बातपर मुस्कराती थी। कल तक इसी चाँदपर कहर और क्रोधके बादल छाए हुए थे। कल तक दुनियामें हवा ही नहीं थी, आज मैं पहाड़की चोटीपर चढ़ आया था। कलतक सिरपर एक तरहका बोझ-सा था, आज मैं हवामें तैर रहा था। कल बीमार था, आज स्वस्थ होकर चहकता फिरता था। संसार ही बदल गया था।

गोमतीके पास पहुँचकर हम मोटरसे उतर आए और धीरे धीरे टहलने लगे। यह वही स्थान था जहाँ पाँच-छै साल पहले महताबरायने आकर मेरी तरफ़ सुलहकी बाँह बढ़ाई थी। मैं यहाँ अकसर आया करता था। यहाँ आकर मेरी याद हरी हो जाती थी। यहाँ मुझे महताबरायका गौरव जीता-जागता दिखाई देता था। यहाँ उसने मेरी ओर प्रेमके हाथ फैलाए थे। यहाँ उसने अपने आपको मित्रताकी वेदीपर कुरबान किया था।

एकाएक मैं चौंक पड़ा। आज वहाँ उसकी ख़्याली नहीं असली तसवीर मौजूद थी। वही चेहरा, वही आँखें, देखनेका वही देवताओंका-सा प्यारा तरीक़ा। मैंने क्षण-भर उसकी तरफ़ टकटकी लगाकर देखा, और दूसरे क्षण मैं दौड़कर उससे लिपट गया और तीसरे क्षणमें हम दोनों हँस हँसकर रो रहे थे, रो रोकर हँस रहे थे, और रूपरानी

पत्थरके बुतकी तरह हमारे सामने खड़ी हमें देखती थी, हैरान होती थी, मगर मुँहसे बोलती न थी।

थोड़ी देर बाद जब दिलोंका गुबार निकल चुका, तो हम उसी जगह बैठ गए और बातें करने लगे।

सबसे पहले मैंने शिकायत की। कहा—बड़े कठोर हो तुम। हमसे कुछ कहा भी नहीं और चुप-चाप ग़ायब हो गए! कहाँ थे, कैसे थे, क्या करते थे, सब कुछ बताओ।

महताबराय—(मुस्कराकर) पहाड़ोंकी तरफ़ चला गया था। बड़े मज़ेमें था, सैर-सपाटे करता था।

रूपरानी—पहाड़ोंपर जाकर आदमी मोटे-ताजे होते हैं या दुबले पतले? (इशारा करके) जरा इनका मुँह तो देखो, ये पहाड़ोंसे आ रहे हैं! अन्दर धँसी हुई आँखें, पिचके हुए गाल। जवानीमें बूढ़े हो रहे हैं, और फिर कहते हैं, पहाड़ोंकी सैर करते थे!

मैं—रंग-रूप ही बदल गया है। क्या बीमार रहे हो?

महताबराय—बिल्कुल नहीं। जो पहाड़ोंमें रहते हैं वे बीमार नहीं होते। तुम अपनी कहो, तुम्हारा क्या हाल है?

मैं—हम खूब मज़ेमें हैं। देख लो, लाल हो रहे हैं। मगर भाई, तुमने तो हमें बिल्कुल ही भुला दिया!

रूपरानीने शिकायत-भरी निगाहोंसे महताबरायकी तरफ़ देखा और कहा—हम तो हैरान थे कि भला आदमी ग़ायब कहाँ हो गया? क्या एक चिट्ठी भी न लिख सकते थे? अगर लिख देते तो हम दोनों ज़बरदस्ती खींच लाते?

मैंने अनुमोदन किया—कोई दिन ऐसा न जाता था जब हम तुम्हें याद न करते हों।

महताबराय—भाई, अब तुम विश्वास करो या न करो, मैं भी तुम्हें हर रोज़ याद करता था।

रूपरानीने बात काटकर कहा—बिल्कुल झूठ !

बात साधारण थी, मगर मुझे बहुत बुरी मालूम हुई। ख़्याल आया, रूपरानीको इस तरह बढ़-चढ़कर बातें बनानेकी क्या ज़रूरत है ? हम बातचीत कर रहे हैं, सुनती जाए।

महताबराय—अब आप अगर मेरे बारेमें यह राय बना ही बैठे हैं तो दूसरी बात है। वरना सच बात वही है जो मैंने अभी कही है।

मैं—अरे यार, तुमने तो अपनी माका भी ख़्याल न किया, हमारा क्या ख़्याल करोगे ! हम तो फिर भी पराए हैं।

रूपरानीके चेहरेपर नाराज़गीके निशान ज़ाहिर हुए। मगर मैं ख़ुश था कि मैंने उसपर ऐसी चोट की है जिसका उसके पास जवाब नहीं।

महताबराय—मुझे पता लग गया था कि आपने उनके खाने-पीनेका प्रबन्ध कर दिया है, निश्चिन्त हो गया।

मेरी चुटकीका कैसा सुन्दर जवाब था ! मैं अपने दिलमें कट गया और शर्मिन्दा होकर बोला—अच्छा, अब क्या इरादा है ? यहीं रहोगे न ?

रूपरानी—(मुस्कराकर) रहेंगे कैसे नहीं। अब इन्हें जाने कौन देता है यहाँसे ?

मुझे यह बात फिर चुभी।

महताबराय—मुझे आपके पास रहनेमें प्रसन्नता होती। लेकिन क्या करूँ, कलकत्तेमें एक सेठ साहबके लड़केको पढ़ानेकी नौकरी मिल गई है।

रूपरानीने मेरी ओर देखा, और मूक वाणीमें कहा, ये हमारे लिए वतन छोड़े जाते हैं !

मैं—तुम्हें नौकरीकी ज़रूरत ही क्या है ? मेरे पास चले आओ। एक हज़ार रुपया महीना दूँगा।

महताबराय—अरे भाई, इस तरह कब तक गुज़ारा होगा ! तुम्हारे दर्शन हो गए, यही बहुत है। अब जाने दो। दो चार महीने बाद फिर आकर दर्शन कर जाऊँगा।

मैंने उसके कंधेपर हाथ रखकर कहा—मेरी मोटरोंकी ऐजेंसी है, उसका प्रबंध तुम सँभाल लो। मुझसे अकेले सारा काम नहीं होता।

महताबराय कुछ देर गोमतीके पानीकी तरफ़ देखता रहा कि क्या जवाब दूँ। आख़िर बोला—नहीं भाई साहब, मुझसे मोटरोंका काम नहीं हो सकेगा। एक लड़का है, उसे पढ़ाया और मज़ेसे घर चला आया।

रूपरानीने ठंडी आह भरी। उसके चेहरेका रंग देखकर मुझपर सारा भेद खुल गया। मैं सोचमें डूब गया।

अगर यह भेद मुझपर न खुलता तो मैं महताबरायको बाधकर भी रख लेता। लेकिन अब मेरे दिलमें उसे रोकनेकी ज़रा भी इच्छा न थी। अपने घरके आँगनमें विषका बीज कौन बोए ?

मैंने कहा—अच्छा, कोई अपना काम शुरू कर दो, कलकत्तेमें, बम्बईमें या मद्रासमें, जहाँ तुम्हारा जी चाहे।

महताबरायने मेरी तरफ़ देखा और फिर मुस्कराकर जवाब दिया—मगर रुपया कहाँ है ?

मैंने जेबसे फ़ौण्टेनपेन निकाला और बीस हज़ारका चेक काटकर उसको देते हुए कहा—रुपया यह है।

रूपरानीको मेरी उदारता देखकर आश्चर्य हुआ। लेकिन, वह यह न जानती थी कि मैं उसे लखनऊसे निकालनेके लिए इससे भी अधिक रुपया खर्च करनेको तैयार हूँ।

मगर महताबरायने यह चेक भी लौटा दिया और कहा, भाई, तुम्हारा धन्यवाद किस तरह करूँ ! मगर मेरा दिमाग़ कारोबारमें नहीं चलता। सारा रुपया ख़राब हो जाएगा।

मेरा सिर लज्जासे झुक गया। मैं समझता था, महताबराय योग्यता और सज्जनताहीमें मुझसे आगे है, मगर अब मालूम हुआ कि वह अमीरीमें भी मुझसे बढ़ा हुआ है। उसे धनकी परवाह ही न थी, उसके लिए धनमें कोई आकर्षण ही न था, उसके ख्यालमें धनकी कोई क़ीमत ही न थी। बीस हज़ार रुपया कम नहीं होता। इतनी रक़मके लिए दुनिया बड़ीसे बड़ी कुरबानी करनेको तैयार हो जाती है। मैंने दस दस रुपयोंके लिए सगे भाइयोंको खून-ख़राबा करते देखा है। मगर महताबरायको ग़रीब होनेपर भी बीस हज़ारकी रक़म न हिला सकी। उसने हर मैदानमें मुझपर विजय पाई थी, इस मैदानमें क्योंकर हार जाता? मैंने उसकी महत्ताके सामने सिर झुका दिया। अब मेरे मनमें ज़रा भी संकोच न था। ख्याल आया, यह आदमी मरता मर जाएगा, मगर किसीकी इज्ज़तपर हाथ न डालेगा। यह इसके लिए असंभव है। यह इतना नीचे जा ही नहीं सकता। यह आदमी नहीं, देवता है। बल्कि देवताओंसे भी बढ़कर। रूपका जादू उन्हें डगमगा सकता है, इसे नहीं डगमगा सकता। इसने अपने मनको जीत लिया है, इसने अपनी वृत्तियाँ बाँध ली हैं। इससे दुनियाको काहेका डर है?

मैंने कहा—मालूम होता है, तुम मुझे अभी तक पराया ही समझ रहे हो?

महताबराय—(मुस्कराकर) इसका एक प्रमाण तो यही है कि कलकत्तेसे चलकर तुम्हें मिलने आया हूँ।

मैं—अगर अपना समझते तो इतना संकोच कभी न करते। आदमी संकोच ग़ैरोंसे करता है, अपनोंसे नहीं करता। अपनोंके मुँहसे तो ग्रास भी छीनकर खा जाता है। मैंने दो बातें कहीं, तुमने दोनों नामंजूर कर दीं। इसका क्या मतलब है? क्यों रूपरानी, तुम ही बताओ?

रूपरानीके सिरसे साड़ी खिसक गई थी, उसे ठीक करते हुए बोली—इसका मतलब यह है कि इन्हें अब हमारे पास ही रहना होगा,

और हम इनका कोई बहाना न सुनेंगे। कल इन्हें बाँधकर मोटरमें डालिए और दुकानपर ले जाकर दफ़्तरमें बैठा दीजिए। जो आदमी सीधी तरह न माने, उसका यही इलाज है। लातोंके भूत बातोंसे नहीं मानते।

मैं—लाख रुपयेकी बात कही तुमने! यही ठीक है। मैं यही करूँगा इनके साथ।

रूपरानी—और कलकत्तेके उस सेठको लिख दीजिए कि अब यह न आएँगे, अपने लड़केके लिए कोई और घरसे भागा हुआ बाबू ढूँढ़ लें। वहाँ मिल जायगा।

महताबराय—अरे भाई, कहीं यह ग़ज़ब भी न कर देना। यहाँसे भी जाऊँगा, वहाँसे भी जाऊँगा।

रूप०—उनको ऐसा बेवकूफ़ कहाँ मिलेगा? दो रोटियाँ खिलाते होंगे, सारा दिन सिर खाते होंगे।

मैं—तभी तो यह चपाती-सा मुँह निकल आया है!

रूप०—परदेसके धक्के बुरे होते हैं। इसीसे बड़ोंने कहा है कि परदेसकी सारी रोटीसे देसकी आधी भली।

महताबराय—(मुस्कराकर) तो इसका यह मतलब है कि अगर वहाँ दो रोटियाँ मिलती थीं तो अब यहाँ एक ही मिलेगी! न भाई, एकमें तो मेरा पेट न भरेगा! इससे तो परदेसके धक्के ही भले!

मैं—मगर परदेसके धक्के वह खाए जिसे देसमें जगह न मिले। तुम्हारे लिए तो जान भी हाज़िर है।

महताबरायकी आँखोंमें आँसू भर आए। भराए हुए स्वरमें बोला—कलकतेमें ऐसी बात कहनेवाला कोई न था। यह प्यार, यह चाह, यह अपनापन परदेसमें कहाँ?

रूप०—इसीलिए आप फिर वहाँ जाना चाहते हैं ना?

मैं—इसके चाहनेसे क्या होता है, अब यह हमारा क़ैदी है! जहाँ चाहेंगे,रखेंगे।

१५

महताबराय

बल और शक्तिकी आज्ञा टालना आसान है, मगर प्यारकी आज्ञा टालना आसान नहीं। मुझे मानना पड़ा और ताजबहादुरकी नौकरी करनी पड़ी। मुझे भय था कि चार ही दिनोंमें ताजबहादुरकी आख बदल जायँगी। मालिक लाख दोस्त हो, फिर भी मालिक है। मालिक कौन जाने किस समय धौंस जमानेपर उतारू हो जाए! उसे मालिक बननेमें लाभ ही लाभ है, मित्र बननेमें हानि ही हानि है, और व्यापारी बच्चा कभी अपनी हानि नहीं चाहता। मगर ताजबहादुर पहले मित्र था, पीछे व्यापारी। बल्कि जहाँतक मेरा उसका संबंध था, वह सोलहों आने मित्र था। मेरे मुक़ाबिलेमें उसे अपने कारोबाकी ज़रा भी परवाह न थी। मैं दूकान लुटा देता, वह तब भी न बोलता। कब आता हूँ, कब जाता हूँ, क्या करता हूँ, इन बातोंसे उसे ज़रा भी सरोकार न था। वह चाहता था, मेरा मन मैला न हो, मुझे यह संदेह न हो कि मैं किसीकी नौकरी कर रहा हूँ। उसकी इन बातोंने मेरा मन मोह लिया। मैं नौकर होकर भी नौकर न था, वह मालिक होकर भी मालिक न था। दूकानका स्याह-सफ़ेद सब मेरे हाथमें था। वह आप दूकानपर आता ही न था।

मैं और मेरी माँ एक साफ़-सुथरे मकानमें रहते थे और खुश थे। मगर कभी कभी ऐसा मालूम होता था कि मेरे मनमें चोर है। यह

चोर कभी दिलेर हो जाता था और मेरी आँखोंमें आ बैठता था। —कभी डर जाता था, और दिलकी तहमें जा छुपता था। और ऐसा ही चोर रूपरानीके पीछे भी लगा हुआ था। मैं सोचता था, क्या यह चोर हमारा संतोष न चुरा लेंगे? मैं हर समय होशियार रहता था, लेकिन जानता था कि अगर किसी समय ज़रा भी ग़ाफ़िल हो गया तो चोर चोरीसे न रुकेगा।

मगर ताजबहादुर भोला नाथ था। वह कुछ भी नहीं समझता था, न मेरी और रूपरानीकी आँखें पहचानता था। हमपर उसे ज़रा भी संदेह न था। इतना भी न समझता था कि कभी इन्हें एक दूसरेसे प्यार था, और प्यारकी आग हवाके एक झोंकेसे फिर भी जाग सकती है। मैं अपनी तरफ़से पूरी पूरी कोशिश करता था कि रूपरानीके पास .ज्यादा न बैठूँ, मगर ताजबहादुरको इसका भी ख्याल न था। समझता होगा, जो कुछ होना था हो चुका। ब्याह हो गया, बच्चा हो गया। अब क्या हो सकता है? स्त्री-पुरुष दोनों सुबहकी सैर करने जाते थे, तो मुझे ज़बर-दस्ती घसीट ले जाते थे। सिनेमाका प्रोग्राम बनता था तो मैं साथ जाता था। कहीं घूमने निकलते तो मुझे साथ लिये बिना न जाते थे। मुझे उनके साथ जानेमें संकोच होता था, उनको मुझे साथ ले जानेमें संकोच न था; जैसे मैं उनके घरका आदमी था, जैसे उनकी हरएक .खुशी मेरे बिना अधूरी रहती थी। इसी तरह दिन गुज़रते गए, मैं दूकानपर काम करता गया, रुपया कमाता गया, उनके अंदर धँसता गया। मगर मेरा दिल बेचैन था, और यह बेचैनी दिनोंदिन बढ़ती जाती थी। कलकत्तेमें रुपया न आता था मगर दिलको चैन तो था।

एक दिन मैं ताजबहादुरसे मिलनेके लिए उसके मकानपर गया तो ताजबहादुर घरपर न था। मैंने लौटना चाहा, तो रूपरानीने रोक लिया। विवश होकर रुकना पड़ा। मगर मेरा दिल धक धक कर रहा था, कि अकेलेमें क्या होगा?

रूपरानीने मुझे सोफ़ेपर बैठनेका इशारा किया और मुस्कराकर कहा —आप हमेशा उन्हींसे मिलने आते हैं। क्या मैं कोई नहीं हूँ?

मेरा दिल और भी ज़ोरसे धक धक करने लगा, सोफ़ेपर बैठ गया और सिर झुकाकर बोला—यह आपकी ज्यादती है। अकेला उनसे मिलने नहीं आता, आप दोनोंसे मिलने आता हूँ। हाँ, जब कभी सिर्फ़ उनसे काम हो, तो दूसरी बात है।

रूपरानी—मैंने तो सदा यही देखा है कि आप जब आए, उनसे मिलने आए, मुझसे मिलने आजतक नहीं आए।

मैं—अब इसका क्या जवाब दूँ !

रूपरानी—(सामनेके सोफ़ेपर बैठकर) इसका जवाब हो ही नहीं सकता, आप जवाब क्या देंगे !

मैंने ज़मीनकी तरफ़ देखते देखते जवाब दिया—बात यह है कि दूकानपर काम बहुत रहता है।

रूप०—तो एक असिस्टेंट क्यों नहीं रख लेते ? आदमी काम उतना करे जितना कर सके।

मैंने मुस्करानेका यत्न करते हुए कहा—अगर मैंने असिस्टेंट माँगा, तो भाई साहब मुझे भी जवाब दे देंगे। कहेंगे, चलते बनो। तुमसे इतना काम भी नहीं हो सकता।

रूप०—बिलकुल झूट। वह ऐसे आदमी नहीं हैं।

मैं—आपके साथ न होंगे, हमारे साथ तो हैं।

रूप०—अच्छा, आप न कहें, मैं कहूँगी।

मैं—यह और भी बुरा। वह समझेंगे, मैंने कहलवाया है।

रूप०—मैं कह दूँगी, मुझसे किसीने नहीं कहा। मैं कहूँगी, इतना काम एक आदमीपर क्यों छोड़ रखा है ? क्या उसे मार ही डालोगे ? या आप साथ काम करो, या एक और आदमी दो।

मैं—यह तो उससे भी बुरा। वह सोचेंगे, आपको मेरी इतनी चिन्ता क्यों रहती है ? बातसे बात निकलती है। उनके दिलमें कई बातें उठ खड़ी होंगी।—ज़रा दूर तक सोचिए।

रूप०—तो इसका यह मतलब है कि आपको अपनी आँखोंसे कामके बोझ-तले दबते-पिसते हुए देखूँ और चुप रहूँ।

म—और क्या, ऐसी अवस्थामें आदमीको चुप ही रहना पड़ता है।

रूप०—चुप रहनेका मतलब है कायरता।

मैंने बातको उड़ानेकी ग़रज़से कहा—कायरताका मतलब है बुद्धिमानी और समझदारी।

रूप०—(सुनी-अनसुनी करके) अगर आप मेरी जगह हों, तो आप क्या करें?

मैं—कुछ भी नहीं। जो हो रहा है, होने दूँ। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि काम इतना नहीं है जो मुझे मार ही डाले।

रूपरानीने मेरी तरफ़ शिकायत-भरी दृष्टिसे देखा और ठंडी आह भरकर सिर झुका लिया। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह कहती है, तुम इतने निष्ठुर क्यों हो गए। मैं चाहता था, उसके सामने अपना दिल खोलकर रख दूँ, उससे साफ़ साफ़ कह दूँ कि तुमने मुझे अभीतक नहीं पहचाना। मगर मैंने अपने उमड़ते हुए भावोंको अन्दर ही अंदर दबाया और चलनेको उठकर खड़ा हो गया। ख़तरेकी जगहसे भागना ही भला।

रूपरानीने कहा—ज़रा बैठ जाइए, मुझे आपसे एक बात पूछना है और वह बात ज़रूरी है।

मैं फिर बैठ गया। रूपरानीने फ़र्शके ग़ालीचेकी तरफ़ देखते हुए रुक रुककर पूछा—क्या अब भी आपको मेरा ख़्याल है?

यह सवाल न था, मेरे मनके चोरको पागल बना देनेवाली शराब थी। मेरा जी चाहता था, अब सब कुछ कह दूँ। मगर मैंने कहा कुछ भी नहीं। बोला—बिलकुल नहीं।

रूप०—मैं भी यही चाहती थी कि अब आप मेरा ख़्याल छोड़ दें।

यह कहते कहते उसकी आँखोंमें पानी आ गया और आवाज़ गलेमें अटक गई। मैंने अपनी हाथ-घड़ीकी तरफ़ देखा और कहा—तो अब मुझे आज्ञा है; चलूँ?

रूपरानीने सिर हिलाकर जवाब दिया—हाँ।

मैं खड़ा हो गया और अपने शरीरका सारा बल जमा करके बोला—अगर आप बुरा न मानें तो एक बात मैं भी पूछ लूँ।

रूपरानीने उसी तरह ज़मीनकी तरफ़ देखते हुए सिरके इशारेसे जवाब दिया—पूछ लीजिए।

मैं—आपको यहाँ कोई तकलीफ़ तो नहीं है?

रूपरानीने उसी तरह सिरके इशारेसे कहा—नहीं।

मैं—आप इस जीवनमें ख़ुश हैं?

रूप०—(धीरेसे) हाँ।

मैं—आपने मेरे दिलसे बोझ उतार दिया है।

१६

मगर यह झूठ था। मेरे दिलका बोझ उतरा न था, उलटा बढ़ गया था। बार बार सोचता था, रूपरानीको ज़रूर मेरा ख्याल है। अगर न होता तो वह यह क्यों पूछती कि अब आपको मेरा ख्याल तो नहीं है? लेकिन मैं भी कैसा गधा निकला! मुझे यह पूछनेकी क्या ज़रूरत थी कि आप इस जीवनमें खुश हैं या नहीं? इसका मतलब साफ़ था कि मैं तो इस जीवनमें ख़ुश नहीं हूँ। दूसरा मतलब यह था कि मुझे भी आपका ख़्याल है, और ख़्याल भी इतना कि मैंने मुँह फाड़कर पूछा और कहा कि मेरे दिलसे बोझ उतर गया है। रूपरानी सब कुछ भाँप गई होगी। पढ़ी-लिखी स्त्री है, ऐसी बात तो अनपढ़ औरत भी समझ जाती। अब क्या करूँ? यहाँ रहूँ या कहीं चल दूँ? मगर कठिनाई यह है कि मैं चलनेको तैयार होता हूँ तो दिल नहीं मानता। सौ सौ बहाने बनाता है और रोक लेता है। कभी कहता है, अब बाहर कहाँ जाओगे, कभी कहता है, यहाँ क्या डर है। कभी कभी यह भी कह देता है, कि यहाँ दर्शन होते रहेंगे। पहले तो मैं ऐसा निर्बल कभी न था, जाने अब क्या हो गया है। कभी वह दिन थे कि मैं दूसरोंसे भी न डरता था, आज यह हाल है कि अपने आपसे भी डरता हूँ।

उधर माँजी कह रही थीं, ब्याह कर लो, अब कब तक कुँवारे बैठे रहोगे? पासके महल्लेमें कोई लड़की देख आई थीं। कहतीं, ऐसी रूपवती लड़की मैंने आज तक नहीं देखी। लड़की क्या है, चौदहवींका चाँद है। देखकर भूख-प्यास मिटती है, हाथ लगानेसे मैली होती है। बेटा, अब सोच-विचार न करो। हाँ कर दो तो मैं भी तैयारियँ

शुरू करूँ। एक दिन महताबकुमारीको घर ले गया तो उसे देखकर और भी मचल पड़ीं कि अब जल्दीसे ब्याह कर ले, तो तेरे बाल-बच्चे भी देख लूँ। बुढ़ापेकी यह भूख बुरी ! मैंने कहा, चार दिन और ठहर जाओ। यह सुनकर वह उदास-सी हो गई, मगर मेरा क्या अपराध ? दिल ही नहीं मानता। कुछ दिन टालता रहा। आखिर एक दिन उन्होंने अल्टीमेटम दे दिया कि या तो मेरी पसन्दकी लड़कीसे ब्याह कर, या अपनी पसन्दकी लड़की बता, अब कुँवारा कब तक बैठा रहेगा ? फिर धीरेसे यह भी कह दिया कि अब रूपरानीका ख़्याल छोड़। उसका ब्याह भी हो गया, संतान भी हो गई। तेरी होती तो तेरे नामपर बैठी रहती। मगर उसने तो चार दिन भी तेरी प्रतीक्षा न की। तू कहीं मारा मारा फिर रहा था, वह अपना ब्याह रचा बैठी और तू अभी तक उसके नामकी जपनी जप रहा है।

मेरा लहू सूख गया,—तो क्या माँजीको भी ख़्याल है कि मैं रूपरानीके कारण ब्याह नहीं करता ? उस रात मेरी आँखोंमें नींद न आई। करवटें बदलता था और जीवनके अन्धकारमें आशाका रास्ता ढूँढ़ता था, मगर कोई रास्ता सूझता न था। ब्याह करूँ तो मुश्किल, न करूँ तो मुश्किल। माँजी जानती सब कुछ थीं, समझती कुछ भी न थीं। अगर समझतीं तो इस तरह व्यंग न करतीं। इसी उधेड़-बुनमें रातके दो बज गए और मुझे नींद न आई। सोचता था, क्या करूँ, क्या न करूँ।

सहसा किसीने दरवाज़ा खटखटाया। मुझे आश्चर्य हुआ। उठकर दरवाज़ा खोला तो रूपरानी ! मेरा आश्चर्य और भी बढ़ गया। बोला —ख़ैर तो है ? आप इस समय कैसे आईं ?

रूपरानीने कुरसीपर बैठकर जवाब दिया—बताती हूँ।

इस समय वह हाँफ रही थी और काँप रही थी। मैंने पूछा—क्या आप पैदल आ रही हैं ?

रूपरानी—हाँ।

मैं समझ गया, कोई ख़ास बात है।

रूपरानी—आज मैं सारे बन्धन तोड़ आई हूँ। चलो, किसी ऐसी जगह चले चलें जहाँ हमें जाननेवाला कोई न हो

मुझे किसीने काठ मार दिया; मरी हुई आवाज़में बोला—इसका परिणाम क्या होगा, यह भी जानती हो ?

रूप०—सब जानती हूँ। बेवक़ूफ़ नहीं हूँ।

मैं—बड़ी बदनामी होगी।

रूप०—बदनामीसे तो ऋषि-मुनि भी नहीं बचे, हम-आप किस गिनतीमें हैं ? इसकी परवा न करो।

मैं—मेरी मानो तो तुम अब भी लौट जाओ। बड़े आराम और इज़्ज़तका जीवन है। इसे खोकर पछताओगी।

रूप०—पछताना होता तो घरसे न निकलती। अब आप बताइए, आपमें हिम्मत है या नहीं, क्योंकि मेरा सारा ज़ोर तो आपपर है।

मैं—मुझमें तो हिम्मत नहीं है।

रूप०—तो मुझे ज़हर खिला दीजिए ताकि सारा झगड़ा तय हो जाए। मैं अब घर जानेसे तो रही। इस जीवनका यहीं अंत हो जाए।

मैंने ठंडी आह भरी और कहा—अगर मैं जानता कि मेरे यहाँ रहनेसे यह गुल खिलेगा, तो यहाँ कभी न रहता।

रूप०—और मैं समझती, तुम आदमी नहीं, पत्थर हो।

मैं थोड़ी देर चुप रहा, इसके बाद बोला—ताजबहादुर क्या कहेगा, यह भी सोचा ?

रूप०—जब उन्होंने तुम्हारी गरदनपर छुरी फेरी थी उस समय क्या उन्होंने सोचा था कि आप क्या कहेंगे ? जब उन्होंने छल-कपट करके मेरे साथ ब्याह किया था उस समय क्या उन्होंने सोचा था

कि यह क्या कहेगी ? आपको शायद विश्वास न आए, मगर मेरे मनमें उनके लिए ज़रा भी प्रेम और श्रद्धा नहीं है। जब उनका दाव चला उन्होंने हमें धोखा दे लिया, जब हमारा दाव चला हमने उन्हें धोखा दे लिया। लेना-देना बराबर हो गया। इसमें शिकायत कैसी ?

मैंने शराफ़तका सहारा लिया और कहा—अगर उन्होंने भूल की है तो इसका यह मतलब नहीं कि हम भी भूल करें। आगसे आग बढ़ती है, घटती नहीं।

रूपरानीने एक ठोकरसे रेतका घर उड़ा दिया; कहा—वह भूल न थी धोखा देना था और धोखा भी ऐसा जिसके ख्यालहीसे आदमी काँप उठे! आप कहेंगे, आपने अपनी कुरबानी की। मैं कहती हूँ, आप अपनी कुरबानी कर सकते थे, मगर आपको मेरी कुरबानी करनेका क्या अधिकार था ? मैंने आपके भरोसे जीवनको बाज़ीपर लगाया था, आपने धोखेसे मेरा जीवन हरा दिया। अपने लिए आप दोनों धर्मात्मा होंगे, मेरे लिए आप दोनों जालसाज़ हैं। मुझे आप दोनोंने लूट लिया।

अब वह रो रही थी और काँप रही थी। उसके आँसू उसके गालों-पर बह रहे थे और मेरा धीरज मेरे हाथसे निकला जाता था।

रूपरानीने मेरी तरफ़ देखा और रोते रोते कहा—मैंने आज निश्चय कर लिया है कि उस आदमीके साथ न रहूँगी जिसने मुझे धोखेसे जीता है और जिसने मेरे नारी-जीवनपर अत्याचार किया है।

इस समय मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह स्त्री नहीं है, ज़मीनकी मिट्टीपर गिरा हुआ मनोहर फूल है। कल यही फूल टहनीपर झूमता था, और मुस्कराता था; आज ज़मीनपर पड़ा है, और रोता है। मैंने उसे लोभी आँखोंसे देखा और विनोद-भावसे कहा—इसमें ताजबहादुरका क्या दोष है, तुम्हारा रूप ही ऐसा है कि जो देखे, पागल हो जाए।

रूपरानीके आँसू थम गए। उठकर मेरे निकट आ गई और मेरे

कंधेपर हाथ रखकर मिन्नत-भरे स्वरमें बोली—क्या आपको मेरे रोने-पर भी दया नहीं आती ?

मेरे सामने काव्य और कल्पनाकी वह संगीतमय दुनिया आकर खड़ी हो गई, जहाँ प्रेम मुस्कराता है, रूप खेलता है, यौवन नाचता है। जीमें आया, रूपरानीको कलेजेमें बैठा लूँ और कहीं भाग जाऊँ।

रातका समय था। चारों तरफ़ सन्नाटा था। मेरे सामने वह थी जिसका ख़्याल मुझे रातको भी सोने न देता था। उसके सामने मैं था जिसे वह जी-जानसे चाहती थी। मनके चोरका दाव चल गया। मैंने उसके हाथ पकड़ लिए और उसे अपनी तरफ़ खींचा।

एकाएक बाहर मोटरका हार्न बजा और हम दोनों चौंक पड़े। मैंने रूपरानीकी आँखोंमें आँखें डालकर मूक-भाषामें पूछा, क्या यह वही है ? और उसने सिरके इशारेसे कहा, हाँ यह वही है। मैं सोचने लगा,—मगर सोचनेका समय नहीं था। बाहर मोटरका दरवाज़ा बन्द होनेकी आवाज़ आई,—ताजबहादुर आ रहा था। मैंने रूपरानीको दूसरे कमरेमें धकेल दिया, और,—और ताजबहादुरने दरवाज़ा खट-खटाया,—मैंने सोचा,—ताजबहादुरने फिर दरवाज़ा खटखटाया,—मैं क्या करूँ ?—ताजबहादुरने ज़ोरसे पुकारा, महताबराय !—मुझे रास्ता सूझ गया। मैंने खिड़कीमेंसे बाहर झाँका—कौन है ?

ताजबहादुरने कहा—मैं।

मैंने जवाब दिया—आया—

और ?—मैं सोच रहा था,—और मेरे मनका चोर मेरे साथ लड़ रहा था और,—मैं हार गया, और—मेरी सारी ताक़त जवाब दे रही थी।

१७

ताजबहादुर

महताबरायने दरवाज़ा खोला और पूछा—खैर तो है? इतनी रात गए...

मैंने कहा—ऊपर चलो।

हम ऊपर गए और कुरसियोंपर बैठ गए।

मैंने कहा—जानते हो, मैं इस समय क्यों आया हूँ?

महताबराय—कोई ख़ास बात मालूम होती है।

मैं—रूपरानी कहीं चली गई है। यहाँ तो नहीं आई?

महताबराय—नहीं।

मैं—तो मेरी आख़िरी आस भी गई।

महताबराय चौंका।

मैंने रूपरानीका पत्र उसके हाथमें रख दिया और कहा—पढ़ो।

महताबरायने पढ़ा और गहरी चिन्तामें डूब गया।

मैं—अब सवाल यह है, मुझे क्या करना चाहिए? कल यह बात बच्चे-बच्चेकी ज़बानपर होगी; लोग मेरी तरफ़ देखेंगे और हँसेंगे; और कहेंगे, इसकी स्त्री इसे छोड़ गई है।

महताबरायने ठंडी साँस भरी।

मैं—मगर मुझे इसकी चिन्ता नहीं। मैं सोचता हूँ, महताब-कुमारी क्या करेगी?

मेरी आँखोंमें आँसू थे। मगर मैंने उन्हें आँखोंसे बाहर न निकलने दिया।

महताबराय—तुमने कुछ सोचा है?

मैं—मैंने सोचा है कि इसी समय लड़कीको लेकर किसी दूसरी जगह चला जाऊँ। किसीको कुछ मालूम न होगा। चार दिनके बाद मशहूर कर दूँगा; रूपरानी मर गई है। किसीको कुछ संदेह न होगा।

महताबरायने कुछ सोचते सोचते कहा—हूँ।

मैं—भाई, मेरा तो ख़्याल है कि और कोई रास्ता नहीं है। अगर कोई हो तो तुम बताओ।

महताबरायने मुस्कराकर गरदन उठाई और कहा—मेरा ख़्याल है, पहले एक बार यत्न किया जाए।

मैं—बेकार है। वह जाने कहाँ होगी? और अब उसका जी फट गया है।

महताबराय—तुम ज़रा यहाँ बैठो और सिगरेट पियो। मैं अभी आता हूँ। शायद काम बन जाए।

मुझे आश्चर्य हुआ। महताबरायने कपड़े पहने और बाहर निकल गया। मैं इन्तज़ार करने लगा।

एक घंटेके बाद महताबरायका नौकर एक चिट्ठी लेकर आया और बोला—बाबूजीने यह चिट्ठी दी है।

मैंने चिट्ठी ले ली, और हैरान हुआ। महताबरायने लिखा था—

'रूपरानी साथके कमरेमें है। उसपर विश्वास करो और उसे घर ले जाओ। और मुझे भूलनेका यत्न करो। इस जीवनमें फिर मुलाक़ात मुश्किल है। परलानी अगर मेरी खुशी चाहती है तो अपने घरमें खुश रहे। मैं और मेरी मा जा रहे हैं। देश छोटा है, परदेश बड़ा है। देशमें सबके लिए जगह नहीं है। परदेशमें सभी समा जाते हैं।'

'भगवान् सबका कल्याण करें।'

मैं सब कुछ समझ गया। इससे पहले एक बार महताबरायने मेरी जान बचाई थी, आज इज़्ज़त बचा गया। ऐसे महान् मित्र इस स्वार्थी दुनियामें कहाँ हैं?

मैं धीरे धीरे उठा और जाकर साथका कमरा खोल दिया। रूपरानी चुपचाप आकर मेरे पास खड़ी हो गई।

थोड़ी देर बाद हम दोनों मिलकर महताबरायकी चिट्ठी पढ़ रहे थे और रो रहे थे।—और हमारे चारों तरफ़ रातका अँधेरा और सन्नाटा छाया हुआ था।

११

फ़रऊनका प्रेम

१

दोपहरका समय था। सौ दरवाज़ोंके पुराने मिस्री शहर सीबापर सूरजकी गरमीके कारण बेहोशी और बेसुधी-सी छाई हुई थी। बाज़ारोंमें, गलियोंमें और आबादीसे बाहर श्मशानका-सा सन्नाटा छाया हुआ था। कोई आवाज़ सुनाई न देती थी, कोई शक्ल दिखाई न देती थी; और यह वह समय था जब इस रंग-रूप और भोग-विलासकी संगीतमय नगरीपर किसीने मौतका जादू कर दिया था। निगाह सूरजकी तरफ़ देखती थी और चौंधियाकर ज़मीनपर गिर पड़ती थी। ज्वाला-सदृश आकाशसे एक सफ़ेद रोशनी पैदा होती थी और ज़मीनकी हर एक चीज़को अपनी लपटमें लपेट लेती थी। महलों, मन्दिरों और मीनारोंकी चोटियाँ, जो मिस्री चेहरोंकी शक्लकी थीं, मकानोंके ऊपर उठी हुई थीं, मानो आगके सागरसे शोले उठ रहे थे।

मगर इस हत्यारी गरमीमें भी तलअत, फरऊन अमनमका अर्थ-मंत्री, शाही खज़ानेके नए भवनमें इधरसे उधर और उधरसे इधर फिर रहा था, और हब्शी गुलामोंको काम जल्दी समाप्त करनेके तगादे कर रहा था। आजसे एक साल पहले फ़रऊन अमनसने यह बड़ी इमारत बनानेकी आज्ञा दी थी और इसके लिए सिर्फ एक सालका समय मंजूर किया था। कितनी कठिनाइयों, कितनी मेहनतों, कितने सोच-विचारसे तलअतने यह बड़ा-भवन बनवाया था! आज

उस सालका आखिरी दिन था जब साँझको बादशाह इसे देखनेको आनेवाला था।—और अभी तक इस भवनका भीतरी दरवाज़ा तैयार न था, जिसमें फ़रऊन अपने और अपने पूर्वजोंके जमा किए हुए अनमोल हीरे और मोती और जवाहर रखकर निश्चित हो जाना चाहता था। तलअतको मालूम था कि अगर सीबाकी ज़मीनपर साँझकी छाया पड़नेसे पहले पहले दरवाज़ा तय्यार न हो गया, तो फ़रऊन अपनी सोनेकी लाठीसे उसकी गरदन तोड़नेमें कभी संकोच न करेगा। और फ़रऊनके सामने बोलनेकी हिम्मत किसीमें न थी।

आखिर साँझ हुई, वह साँझ जिसके पीछे पीछे तलअतके लिए आराम और विश्रामका दिन चला आ रहा था। फ़रऊनने अपने एक सौ जंगी जरनैलों, और एक हज़ार हब्शी गुलामोंके साथ अपने कोष-भवनमें प्रवेश किया। तलअतने पग-पगपर झुककर और अपना हाथ सीनेपर रख रखकर सलाम किया और फ़रऊनके पाँवमें खड़ा हो गया। फ़रऊनने तलअतकी इस विनयको अवहेलनाकी आँखोंसे देखा, मानो वह खुद .खुदा था और तलअत उसका तुच्छ जीव। तब उसने मुस्कराकर उसकी तरफ़ मुँह मोड़ा और धीरेसे कहा—हमें सारा भवन दिखा दे, तूने क्या क्या बनवाया है ?

तलअत भवन दिखाने लगा। मगर इस समय वह सहमा हुआ, डरा हुआ, घबराया हुआ था, और उसके प्राण फड़फड़ा रहे थे।—क्योंकि उसकी ज़िंदगी मौतकी गोदमें थी, और कोई न कह सकता था कि मौत किस समय अपने ठंडे हाथोंसे उस ज़िन्दगीका गलां घोंट देगी !

फ़रऊनने राज्यके इस खज़ाना-घरका एक एक भाग देखा और उसे पसन्द किया और तलअतसे कहा—हम तुझसे खुश हैं। तूने अच्छा काम किया है।

तलअतको अब अपने सिरकी सलामतीका विश्वास हुआ। उसके मुँहकी चिन्ता, जिसने उसकी रौनक़की जगह ले ली थी, दूर हो गई

और उसकी उदास आँखोंमें जीवनकी ज्योति एक सालके बाद वापस आई। और उसे खुशी हुई, कि वह आज आरामकी नींद सोएगा।

फ़रऊनने अपने प्रधान मंत्रीको अपने सामने बुलाया और कहा—तुम्हारे बादशाहकी इच्छा है कि इस इमारतपर एक हज़ार हब्शियोंका पहरा बिठाया जाए; उन्हें रातके लिए एक एक मशाल और एक एक बिगुल दिया जाए ताकि अगर कोई आदमी इस भवनके अंदर पाँव भी रख जाए तो उसी समय सेनापतिको मालूम हो जाए, और अपराधी गिरफ़्तार कर लिया जा सके।

प्रधान मंत्रीने विनयसे सिर झुका दिया, मगर अभी सिर उठाने न पाया था कि फ़रऊनने फिर कहा—और तुम्हारा बादशाह नहीं चाहता कि इस भवनके अंदर उसके ख़ास अपने आदमियोंके सिवाय कोई दूसरा आदमी पाँव भी रख जाए। इसलिए मुनादी करा दो कि जो कोई इस भवनमें प्रवेश करेगा वह अपनी मौतके मुँहमें प्रवेश करेगा, और उसे कोई ताक़त बचा न सकेगी। यहाँतक कि अगर तुम्हारा शहज़ादा, मिस्रका होनेवाला महाराज भी, इस आज्ञाका निरादर करेगा तो उसे भी यही दंड दिया जाएगा।—तलअत, तू अर्थ-मंत्री है, तेरा ओहदा तेरे ही पास रहेगा। हमारे सामने हर एक बातका उत्तरदाता तू होगा। और तू जानता है, हम कैसे सख़्त हैं।

यह कहकर फ़रऊनने आग-भरी आँखोंसे चारों तरफ़ देखा। गुलाम जंगी जरनैल, तलअत, प्रधान-मंत्री, सब ज़मीनपर झुक गए। फ़रऊनने अपना सोनेका डंडा उठाया और बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद उसने राजमहलकी दीवारपरसे सुना कि उसका हुक्म शहरके कोने-कोनेमें सुनाया जा रहा है और लोग यह हुक्म सुनते हैं और सहम सहम कर ख़ज़ाना घरकी तरफ़ देखते हैं।

२

अगर फ़रऊनको अपने बलपर भरोसा था तो यह उसका दोष न था, क्योंकि सारा मिस्र और मिस्रके निवासी स्वीकार कर चुके थे कि फ़रऊन दुनियामें परमात्माका नायब है और चाँद, सूरज, तारों, बिजलियोंका देवता है। उसकी मूर्तियाँ मंदिरोंमें रखा जाती थीं, उसकी बातोंको भगवानकी भावना समझा जाता था और उसकी पूजाके लिए शब्द-कोषके पवित्र और सुन्दर शब्द खोज खोज कर इस्तेमाल किए जाते थे। उसकी प्रजा उसे देवता मानती थी, इसलिए उसके निकट जाने, उसे छूने, उसके सामने सिर उठानेकी किसीमें हिम्मत न थी। यहाँ तक कि उसकी स्त्रियाँ भी उसके सामने अपना दिल न खोल सकती थीं। और फ़रऊन भी उन्हें अपनी उदास घड़ियोंका मनोरंजन, अपनी वासनाओंका खिलौना, अपनी शक्तिका प्रमाण समझता था और अपने दिल और दिलके प्यारको कभी उनके विश्व-विजयी रूपके सामने झुकने न देता था। न उन स्त्रियोंको कभी ख्याल आता था कि फ़रऊन उनसे प्यार भी कर सकता है, क्यों कि वह उस पाँच भूतोंके नाश होनेवाले शरीरको अमर देवता समझती थीं और हर घड़ी डरती रहती थीं कि न जाने, किस समय यह महादेव रुद्ररूप धारण कर ले। इसलिए हमें, जो बिलकुल एक दूसरे युग और दूसरे देशमें पैदा हुए हैं, हैरान न होना चाहिए कि लोग अपनी बेटियोंको फ़रऊनके चरणोंमें अर्पण कर देना पुण्य समझते थे और इस पुण्यके लिए हज़ारों ओर लाखों यत्न करते थे। और जब वह अपनी कुँवारी कन्याओंको एक बेदिल और बेपरवाह बादशाहकी दो-चार क्षणोंकी प्रसन्नतापर (क्योंकि फ़रऊनको इन स्त्रियोंसे

ज्यादा संबंध रखनेमें अपनी निर्बलता नज़र आती थी) बलिदान कर देनेमें सफल हो जाते थे, तो उन्हें ऐसी खुशी होती थी जैसे उन्हें स्वयं भगवान् मिल गया हो और लोग उन्हें मुबारिकबाद देते थे।

मगर अभी फ़रऊनके रनवासमें मलिका-महारानीकी जगह ख़ाली थी और देश देशके राजे-महाराजे अपनी अपनी अप्सरा-कन्याओंके लिए कोशिशें कर रहे थे। कोई न जानता था कि फ़रऊनकी दया-दृष्टि पानीकी किस बूँदको मोती और रेतके किस कणको सूरज बना देगी! मगर उन्हें इतना विश्वास था कि फ़रऊन किसी बहुत बड़े बादशाहकी बेटीके सिवाय किसी दूसरी औरतको अपने साथ राज-सिंहासनपर बैठानेके लिए कभी पसन्द न करेगा।

इसलिए लोगोंकी उस हैरानीका अनुमान करो जो उनको एक दिन यह जानकर हुई कि फ़रऊनने हब्शी सुलतान शमलार्ककी शाहज़ादीको मिस्रकी मलिका-महारानी बनानेका निश्चय कर लिया है! लोगोंने यह ख़बर सुनी तो उन्हें विश्वास न हुआ कि फ़रऊनकी पसन्द इतनी नीचे भी जा सकती है।

मगर वह फ़रऊन था, और जो चाहे कर सकता था, और उसकी मरज़ीके सामने किसीमें सिर उठानेकी हिम्मत न थी। साँझके समय जब सीबाकी सारी प्रजा राज-महलके सामने खड़ी थी, मिस्रका सबसे बड़ा पुरोहित राजमहलकी दीवारपर आया और उसने उस ख़बरसे, जिसपर लोग अबतक विश्वास न करते थे, या विश्वास करना न चाहते थे, सनसनी फैला दी।

मिस्रके पुरोहितने कहा—चाँद, सूरज, बादल और बिजलियोंके देवता फ़रऊन अमनसने हब्शी सुलतान शमलार्ककी राजकुमारीसे ब्याह करने और उसे अपनी मलिका-महारानी बनानेका निश्चय कर लिया है और आज्ञा दी है कि उन दोनोंकी सलामतीके लिए नीली छतवाले और बड़े घरवाले भगवानसे पूरा एक सप्ताह मन्दिरोंमें प्रार्थनाएँ की जाएँ, और कुरबानिया चढ़ाई जाएँ।

मगर प्रेम और प्रारब्धके देवता फ़रऊनके लिए एक दूसरी सुन्दरीका चुनाव कर चुके थे, जिसे देखनेका फ़रऊनको अभी तक अवसर न मिला था।

और दूसरी रातको जब चाँद अपनी चाँदनीकी चाँदी लेकर आसमानपर आया तो शमलाक़्की शाहज़ादीने सात नदियोंके पानीसे स्नान किया और चाँदनी रातमें बैठकर वह मिस्री सुन्दरियोंका नाग-नाच देखने लगी। इस समय वह खुश थी और अपने आनन्दपूर्ण भविष्यका विचार कर करके मुस्करा रही थी। 'मिस्रकी मलिका महारानी',—कैसे सुन्दर शब्द थे जिसकी कल्पना उनके अस्तित्वसे भी कहीं .ज्यादा सुन्दर थी! सोचती थी, जब मैं फ़रऊनके साथ फ़रऊनके महलकी खिड़कीमें लोगोंके सामने खड़ी हूँगी, उस समय मेरी क्या शोभा होगी! होंठ खुशीसे काँप रहे होंगे, गाल अभिमानसे तमतमा रहे होंगे, और आँखें गर्वसे मुस्करा रही होंगी! ज़मीनवालोंका यह सौभाग्य आसमानवालोंको भी कम नसीब होता है। शमलाक़्की राजकुमारी खुशीके विचारोंमें लीन थी कि उसकी एक दासीने आकर कहा—शाहज़ादी, भगवान तेरे जीवनको जीवनकी सारी बहारोंसे भरपूर रखे, और तेरी दुनियामें दुःख और दर्दकी छाया तक न पड़ने दे। ल्यूनस नीलके किनारे तेरे लिए पानी लेने गई थी, मगर वहाँ एक मिस्री सिपाहीसे प्यार-मुहब्बतकी बातें कर रही है। और उसे इस बातका कोई भय नहीं है कि तू यहाँ उसका रास्ता देख रही है।

शाहज़ादी, जिसके लिए इससे पहले इस बातकी कोई आशंका न थी कि कोई उसकी आज्ञाका इस तरह अपमान कर सकता है, चौंक पड़ी और उसका राजसी दबदबा इस ख़बरसे ऐसा घायल हुआ कि उसकी आँखोंसे आगकी चिंगारियाँ बरसने लगीं। उसने अपने एक हथियारबन्द सिपाहीको बुलाया और उससे कहा—तू अभी जा और उस गुस्ताख़ गुलाम लड़कीके बाल पकड़कर उसे घसीटता हुआ मेरे सामने ला। उसने मेरा अपमान किया है। मैं उसे सज़ा दूँगी। और जब तक सज़ा न दे लूँगी मेरा क्रोध ठंडा न होगा।

और वहाँ नीलके किनारे त्यूनस (यही उस गुलाम लड़कीका नाम था) रेतपर बैठी थी और चाँदकी दूधिया रोशनीमें एक मिस्री नौजवानसे बातें कर रही थी। शहज़ादीका हथियारबन्द सिपाही हब्शी था, और काव्य और कलाका उसने कभी नाम भी न सुना था; फिर भी, उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे मिस्रकी नशीली रातमें मिस्रके दो चाँद मिस्रकी रेतपर बैठे प्रेम और यौवनकी पहेलियाँ सुलझानेकी कोशिश कर रहे हैं। उसकी आँखें इस सुपनेकी-सी मनमोहनी तस्वीरको देखना और बराबर देखते रहना चाहती थीं। मगर वह हब्शी था और गुलाम था, और उसकी शाहज़ादीने उसे त्यूनसको बालोंसे घसीटकर अपने सामने लानेकी आज्ञा दी थी। इसलिए, उसने इस तस्वीरकी शोभाको अपनी आँखोंमें स्याह कर लिया और मनकी कोमल अभिलाषाको अपने भारी पाँव तले मसलता हुआ आगे बढ़ा।

त्यूनस घबरा गई, और उसकी आँखोंमें अपनी मौत फिर गई। मगर मिस्री नौजवान हँस रहा था; और उसे गुलाम लड़कीकी घबराहट और गुलाम सिपाहीके क्रोध, दोनोंकी परवाह न थी।

हब्शी सिपाहीने आगे बढ़कर कहा—तू कौन है, जो मेरे बादशाहकी लौंड़ीको उसके कामसे रोक रहा है?

मिस्री नौजवानने पहले सिपाहीकी तरफ़ देखा, फिर निडरतासे अपने दोनों हाथ अपने सीनेपर रखे और मुस्कराकर कहा—मैं मिस्रका एक छोटा-सा बेटा हूँ, मगर पवित्र नीलके पवित्र पानीकी सौगन्ध, मुझे तेरे हब्शी बादशाहकी इतनी भी परवाह नहीं, जितनी नीलके इस अथाह पानीको रेतके एक कणकी हो सकती है।

यह कहकर मिस्री नौजवान मुड़ा, और इधर उधर टहलने लगा। और अपने पाँवसे रेतके साथ खेलने लगा।

गुलामने अपने मालिककी शानमें बे-इज्ज़तीके ऐसे शब्द आज तक न सुने थे। उसने तीर कमानपर चढ़ाया मगर मिस्री नौजवानने आगे

बढ़कर उसके हाथसे तीर और कमान दोनों छीन लिए, उन्हें नीलके गहरे पानीमें फेंक दिया, और उसकी बहादुरीपर बेपरवाहीसे हँसने लगा। और बोला—मेरे सामने हथियार न उठा, मेरे सामने हथियार उठाना किसी किसीका काम है।

इसके बाद दोनोंमें लड़ाई हुई। अजीब नज़ारा था। काला गुलाम और गोरा मिस्री लड़ते थे, और उनकी लड़ाई ऐसी थी जैसे एक काला और एक सफ़ेद बादल आपसमें टकरा रहे हों। गुलाम समझता था, यह लौंडा मेरे सामने क्या ठहरेगा? मगर उसे बहुत जल्द मालूम हो गया कि यह उसकी भूल थी। यह मोटा ताज़ा नहीं हैं, मगर कमज़ोर भी नहीं है। इसके हाथ-पाँव तो लोहेसे भी कड़े हैं; दबाना चाहता हूँ दबते नहीं हैं, मोड़ना चाहता हूँ मुड़ते नहीं हैं। हमला करने चला था, अपने आपको बचाना भी मुश्किल हो गया। पहले जानता तो यह मूर्खता न करता। न आगे बढ़ता, न हेटी होती। मिस्री नवयुवक उसके साथ लड़ता न था, खेलता था, और उसकी ज़ोर-आज़माईपर हँसता था। और उसे इस बातकी ज़रा भी चिन्ता न थी कि यह आदमी उसे हानि भी पहुँचा सकता है। मगर समय बीत रहा था और त्यूनस घबरा रही थी। वह चाहती थी, यह झगड़ा जल्दी ख़त्म हो।

पूरे दो घंटे बीत गए, और हब्शी शाहज़ादीका क्रोध किसी तरह शान्त न हुआ। सहसा उसने बीस घुड़सवारोंको अपने साथ आनेका हुक्म दिया और नीलकी तरफ़ चली। और वहाँ जाकर उसने वह देखा जो वह ठंडे दिलसे न देख सकती थी। उसका आज्ञाकारी सिपाही रेतपर औंधे-मुँह मरा पड़ा था। त्यूनस पानीका घड़ा सिरपर रखे आनेका यत्न कर रही थी और मिस्री नौजवान उसके सामने घुटनोंके बल बैठा उसे रोकनेके लिए मिन्नतें कर रहा था।

शाहज़ादीने यह हाल देखा और उसे इसमें अपनी और अपने राज्यकी बेइज़्ज़ती दिखाई दी। एकाएक उसने हाथ उठाया। त्यूनस घबरा गई। इस घबराहटमें उसका घड़ा सिरसे गिरकर टूट गया और उसका पानी प्यासी रेतमें समा गया। अब रेतपर सिर्फ़ कुछ बुलबुले

बाक़ी थे।—आशा मिट गई थी, अब सिर्फ़ लालसा रह गई थी। मगर इस लालसाका जीवन भी कितनी घड़ियाँ है!

हब्शियोंमें ब्याहके इस घड़ेका टूटना ऐसा असगुन समझा जाता था जिसके सामने वह हर तरहका संकट सहनेको तैयार हो जाते थे। उनके कान इसमें यह भविष्यवाणी सुनते थे कि अब यह विवाह-संबंध न हो सकेगा और दुलहिनके पिताके प्रारब्धमें अपमान और तिरस्कार लिखा है। शाहज़ादी दाँत पीस रही थी, त्यूनसका बदन काँप रहा था, बीस हाथियारबन्द सवार अपनी शाहज़ादीके इशारेका इंतज़ार कर रहे थे और मिस्री नौजवान कभी इधर देखता था कभी उधर और स्थितिको समझनेका यत्न कर रहा था, मगर कुछ समझता न था। वह सिर्फ़ हँसता था।

भूमिपर नीलका अथाह पानी बह रहा था, आकाशपर स्वर्गके अनगिनत दिए जल रहे थे, दूर फ़ासिलेपर सीबा नगरीके गगन-चुम्बी भवनोंकी रोशनी अपने अंदरके भोग-विलास और यौवन-क्रीड़ाकी चुग़लियाँ कर रही थी, मगर नील-किनारेकी इस दुनियाको इन बातोंका ज़रा ख़्याल न था। हब्शियोंकी शाहज़ादी, उसकी आधी लड़की आधी जवान दासी और मिस्री युवक अपने अपने विचारोंमें विलीन थे और तीनोंके विचार अलग अलग थे।

एकाएक शाहज़ादीने ठंडी साँस भरी और अपने घुड़-सवारोंकी तरफ़ देखा। त्यूनस और भी घबरा गई और उसकी आँखें मिस्री युवककी आँखोंसे मिलीं। इन आँखोंमें एक संदेसा था जिसने मिस्री युवकके सामने लड़कीका दिल खोल दिया। अब उसने वह सब कुछ समझ लिया जो इस समय तक समझना चाहता था मगर समझ न सकता था। देखते देखते वह अपनी जगहसे उछला और त्यूनसको गोदमें उठाकर नीलमें पड़ी हुई नावमें कूद पड़ा। घुड़-सवार आगे बढ़े, मगर उनकी शाहज़ादीने उन्हें रोक दिया और ऊँची आवाज़में कहा—मिस्रके बहादुर बेटे! अपनी जानका दुश्मन न बन। इस कमीनी लड़कीने जो अपराध किया है वह मामूली नहीं। तू इसे मेरे आदमियोंके हवाले

कर दे। मैं इसे आगमें जलाकर भस्म कर दूँगी, और हर वह आदमी जो इसकी सहायताको हाथ उठाएगा, अपनी मौतको आप अपने मुँहसे बुलाएगा। और फ़रऊन मेरी बात सुनेगा।

मगर मिस्री वीरने नावका रस्सा खोल दिया और पतवार हाथमें लेकर नावको खेने लगा। शाहज़ादीने अपने गलेकी पूरी शक्तिसे चीखकर अपने सवारोंसे कहा—दोनोंको अपने तीरोंसे बेध डालो! सवारोंने अपने तरकश खाली कर दिए मगर मिस्री नौजवान और त्यूनसको, जो नावमें लेट गए थे, कोई तीर न लगा, और नाव गहरे पानीमें चली गई। शाहज़ादी हाथ मलती थी, दाँत पीसती थी और अपने आदमियोंपर बिगड़ती थी।

३

यह नौजवान फ़रऊन अमनसके अर्थ-मंत्री तलअतका एकलौता बेटा रेमफ़स था। वह जवान था, वीर था और सुन्दर था। उसकी तलवार पुरुषोंके और मुस्कराहट स्त्रियोंके दिलोंमें हलचल मचा देती थी। वह जिधरसे निकल जाता था, लोग उसे देखते रह जाते थे।

रेमफ़स और त्यूनस एक दूसरेको चाहते थे, और अब जब कि उनको विधाताने एक-दूसरेके प्रेम-पाशमें बाँध दिया था तो उनकी खुशीका ठिकाना न था। बुड्ढा तलअत भी उन्हें देखता था और खुश होता था, मगर जब उसे ख़्याल आता था कि त्यूनस शमलार्क़की लौंडी है, और शमलार्क़के कहनेपर फ़रऊनके आदमी शहरके कोने-कोनेमें उसकी तलाश करेंगे, तो उसकी खुशी किरकिरी हो जाती थी। और उसकी आशंकाएँ निर्मूल न थीं। शमलार्क़ हब्शियोंके क्रोधसे होंठ चबाता हुआ फ़रऊनके पास पहुँचा और बोला—तेरे एक

आदमीने मेरी लौंडी चुरा ली है। मैं तेरे पास फ़रियाद लाया हूँ। मुझे मेरी लौंडी दिलवा।

फ़रऊन उसी समय अपना सोनेका डंडा लेकर खड़ा हो गया और बोला—मिस्र देशका चप्पा चप्पा छान डाला जाए और त्यूनसको ढूँढ़कर शमलाके़के हवाले किया जाए। यह फरऊनका शाही हुक्म है, मिस्र इसकी तामील करे।

मगर त्यूनस कहाँ थी?—ख़ज़ाना-घरके बाहर तलअतके मकानमें, जहाँ किसी जासूसको संदेह भी न हो सकता था कि इस जगह त्यूनस छिपी होगी, और तलअतने उसे आश्रय दिया होगा।

रातका समय था। आकाशपर चाँद–तारोंकी सभा सजी हुई थी। त्यूनस, जो मिस्रकी सबसे बड़ी सुन्दरी थी, रेमफ़सके साथ बागमें बैठी थी और फूलोंकी पँखुड़ियोंके साथ खेल रही थी। रेमफ़स कभी फूलोंको देखता था, कभी त्यूनसको देखता था, और फिर सिर झुकाकर किसी गहरे विचारमें निमग्न हो जाता था। शायद सोचता था कि फूल ज़्यादा सुन्दर हैं या त्यूनस? पता नहीं, कितनी देर वह इस फूल-सुन्दरीकी समस्यापर विचार करता रहा। एकाएक त्यूनसने यौवनके मद-भरे स्वरमें कहा—रेमफ़स!

रेमफ़सने प्रेमकी इस पुकारको प्रेमके कानोंसे सुना और झूमने लगा। और उसे अपने सवालका जवाब मिल गया। फूल रंग और सुगंधका नाम है, मगर त्यूनस रंग, सुगंध और संगीतका नाम है।

त्यूनस फूलसे बढ़ गई।

रेमफ़सने त्यूनसकी तरफ़ देखा और उन आँखोंसे देखा जिनमें प्रेमकी प्यास थी, चाह थी, जलन थी। स्त्रीकी आँख पुरुषके इरादेको जितनी जल्दी पहचानती है, उतनी जल्दी कोई दूसरा कम पहचानता है। त्यूनस उठकर खड़ी हो गई और फूलोंकी क्यारियोंपर अपने नंगे पाँव रखती हुई, जो सफ़ेद कबूतरोंसे भी खूबसूरत और प्यारे थे, रेमफ़ससे दूर चली गई। रेमफ़सने अपनी हृदय-रानीकी चालमें ऐसा जादू-भरा

और कला-पूर्ण नाच देखा जो मिस्रकी सबसे बड़ी नर्तकीके पाँवको भी नसीब न था। रेमफ़सको अपने सवालका एक बार फिर जवाब मिला। फूल रंग और सुगंधका नाम है, मगर त्यूनस रंग, सुगंध, संगीत और नाच इन चार चीज़ोंका नाम है।

त्यूनस फूलसे और भी बढ़ गई।

जब किसीकी हृदयेश्वरी चाँदनीमें फूलोंके पेड़ोंतले खड़ी हो और अपने प्रेमीकी तरफ़ देख देख कर मुस्करा रही हो, कोई पराया पास न हो और चारों तरफ सन्नाटा हो, ऐसे बहार और विहारके समयमें उसके दिलमें क्या कुछ होता है, इसे कोई प्रेमी ही समझ सकता है, दूसरा नहीं समझ सकता।

रेमफ़स आगे बढ़ा। वह त्यूनसको अपने बाहु-पाशमें कस लेनेके लिए अधीर हो रहा था। मगर त्यूनसने रेमफ़सका दिल रेमफ़सकी आँखोंमें पढ़ा, और हरिणीके बच्चेकी-सी शोख़ीसे उछलकर ख़ज़ाना-घरकी दीवारपर चढ़ गई।

ओ भगवान्! रेमफ़सका लहू सूख गया। एक क़दम और आगे और फिर त्यूनसको मौतके पंजेसे बचाना आदमीकी ताक़तसे बाहर हो जाएगा। उसने अपना दम सीनेमें रोक लिया और धीरेसे कहा—त्यूनस, .खुदाके लिए नीचे उतर आ! तू नहीं जानती, तू कहाँ जा चढ़ी है! और उस तरफ़ कूद जानेका क्या मतलब है! मेरी सुन त्यूनस, तिरियाहठ न कर। तेरी यह नासमझी मेरे और तेरे दोनोंके जीवनको संकटमें डाल देगी। तू नहीं जानती त्यूनस, तू नहीं जानती।

मगर त्यूनसने रेमफ़सकी इस बातकी परवा न की और ख़ज़ाना-घरके अंदर कूद पड़ी।

रेमफ़सने वह देखा जो वह देखना न चाहता था। उसने एक क्षणमें विचार कर लिया और फिर यह सोचकर, कि मरने और जीनेका आनंद तभी है जब मनका मीत साथ हो, पागलोंके समान दौड़कर आप भी दीवारपर चढ़ गया और मौतके मुँहमें कूद पड़ा।

४

त्यूनस, जिसे अबतक मालूम न था कि उसने क्या कर दिया है, दीवारके नीचे छिपी रेमफ़सके आनेकी राह देख रही थी और हँस रही थी। उस अबोध बालककी तरह जो नागके साथ खेलता है, मगर नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है। त्यूनस भी मौतकी गोदमें बैठी मुस्करा रही थी। इतनेमें रेमफ़स उसके पास पहुँचा और उसने अपने मुँहपर अँगुली रखकर उसे चुप रहनेका इशारा किया। इस समय रेमफ़सका चेहरा ऐसा सहमा हुआ था और वह इस तरह डर डरकर और धीरे धीरे चल रहा था कि सुन्दरी त्यूनस भी काँपकर रह गई, और समझ गई कि उससे कोई बड़ी भारी भूल हो गई है।

मगर अभी रेमफ़स उसे कुछ समझाने और वह कुछ समझने न पाई थी कि एक पहरेदार एक हाथमें मशाल और दूसरे हाथमें बिगुल लिए सामने आया। उसने उन दोनोंको देखा, और बिना कुछ सोचे समझे बिगुल बजा दिया। इसके साथ ही पाँच सौ आदमियोंने अपना अपना बिगुल बजाकर एक दूसरेको ख़बर दे दी कि कोई बाहरका आदमी ख़ज़ाना-घरमें आ गया है। रेमफ़स त्यूनसको लेकर भागा और एक पेड़ तले जा छिपा। मगर पाँच सौ बिगुल बजे, और पाँच सौ मशालें उसे खोजने लगीं। रेमफ़स अपनी त्यूनसको लिये अँधेरा ढूँढ़ता फिरता था, मगर इस चाँदनी और मशालोंकी रातमें उसे अँधेरा कहीं मिलता न था। इस समय अँधेरा उसके जीवनका प्रकाश बन जाता। मगर अँधेरा कहाँ था? फ़रऊनके ग़ुलामोंने उनको देखा, और गिरफ़तार कर लिया। रेमफ़सने सिर पीट लिया।

फ़रऊन अपने राज-महलकी बड़ी दीवारपरसे यह सब कुछ देख रहा था और क्रोधसे काँप रहा था। जब उसके सामने ख़ज़ाना-घरके

अपराधी पेश किए गए और उसने उनमेंसे एक रेमफ़स पाया तो उसने कड़क कर कहा—तलअतका बेटा और इस अपराधमें ? क्या तू कह सकता है कि तूने हमारी मुनादी न सुनी थी ?

रेमफ़सने बेपरवाईसे जवाब दिया—मिस्रका बादशाह जानता है, कि मैं झूठ नहीं बोलता, और मैं इस समय भी झूठ नहीं बोलूँगा। अपना अपराध मंजूर करता हूँ और मरनेसे नहीं डरता। मगर मैं मिस्रके बादशाहसे एक बात कहनेकी आज्ञा माँगता हूँ और मुझे आशा है कि उसे एक मरनेवालेकी आख़िरी प्रार्थना समझकर मंजूर किया जायगा।

फ़रऊनने अपनी लाल लाल आँखें रेमफ़सके चेहरेपर गाड़कर पूछा—तू क्या कहना चाहता है ? कह, हम सुनेंगे।

रेमफ़स—मैं मिस्रका बेटा हू, मैंने मुनादी सुनी थी। मैं जानता था, कि जो ख़ज़ाना-घरके अंदर पॉव रखेगा उसे मौतका दण्ड मिलेगा। इसलिए, मैं हर तरहकी मौतकी हर तरहकी यंत्रणाके लिए तैयार हूँ। मगर यह लड़की निर्दोष है। इसका कोई अपराध नहीं।

फ़रऊन—यह फ़ैसला करना हमारा काम है।

रेमफ़स—मगर यह मिस्रकी रहनेवाली नहीं। न इसने वह मुनादी सुनी, न यह जान-बूझकर ख़ज़ाना-घरके अंदर गई।

फ़रऊन—(रेमफ़सकी तरफ देखते हुए) यह कौन है ?

रेमफ़स—गुलाम जातिकी एक लड़की, जिससे मिस्रके लोग ईंटें बनवानेका काम लेते हैं।

फ़रऊनने कुछ देर सोचा और रेमफ़सकी बेपरवाईको अपने शाही दबदबेका अपमान समझकर कहा—हमारा फ़ैसला यह है कि रेमफ़सको मिस्रके सबसे बड़े पत्थर-तले दबाकर मार डाला जाए और उसकी लाश मछलियोंकी खुराक बननेके लिए नीलमें फेंक दी जाए। और इस गुलाम लड़कीको—

अब त्यूनस चुप न रह सकी। वह एकाएक आगे बढ़ी और फ़रऊनके पाँवमें गिर पड़ी। फ़रऊनने ज़रा परवा न की कि उसके पाँवमें कौन गिरा है और किस तरह गिरा है। उसने त्यूनसकी तरफ़ देखे बिना अपने आदमियोंसे कहा—इसे हमारे पाँवसे उठा लो। यह हमारे पाँवपर रहनेके लायक नहीं।

त्यूनस खड़ी हो गई और उसने अपने नारी-सौन्दर्य्य और बाले जोबनकी पूरी शक्तिसे फ़रऊनके हृदय-गढ़पर हमला किया। फ़रऊनने अब उसे देखा और वह एक ही बार सैकड़ों संसार देख गया। उसने लाखों स्त्रियाँ देखी थीं, हज़ारों स्त्रियोंके रूपसे खेला था, मगर उसके दिलका, दिमाग़का और आँखोंकी पलकोंका जो हाल आज हुआ, आजसे पहले कभी न हुआ था। आज उसे अपना बल बिखरता हुआ और अपना राज्य सिकुड़ता हुआ मालूम हुआ। उसकी आँखे त्यूनसके मुँहपर जम गई, और पाँव ज़मीनमें गड़ गए। वह त्यूनसको प्यासी आँखोंसे देखने लगा।—और ऊपर नीले आसमानसे एक अजान अंधा बालक फूलोंकी तीर-कमान हाथमें लिये एक शिकारपर तीर बरसा रहा था।

त्यूनसने अपने रूपसे फ़रऊनको बसमें कर लिया था, मगर वह यह बात जानती न थी। न उस ग़रीबको कभी यह ख़्याल भी आ सकता था कि उसके रूपमें इतनी मोहिनी है। उसने समझा, फ़रऊनपर मेरी बेगुनाहीका असर हो गया है और वह हैरान हो रहा है कि यह लड़की इस संकटमें क्यों फँस गई? तब उसने दूसरी बार फिर अपने आपको फ़रऊनके पाँवमें गिराया और कहा—ऐ बादलों और बिजलियोंके देवता, यह मिस्री नौजवान निर्दोष है। दोष सिर्फ़ मेरा है। यह मुझे बचाने और मुझे तेरा हुक्म सुनानेके लिए मेरे पीछे पीछे चला आया था। इसलिए, अपराध इसका नहीं, मेरा है; और दंड इसे नहीं, मुझे मिलना चाहिए। तेरा अपराध मैंने किया है।

रेमफ़स—यह झूठ बोल रही है।

त्यूनस—नहीं बादशाह सलामत, मैं सच कह रही हूँ। यह मुझे

बचाना चाहता है, इसलिए झूठ बोल रहा है। मैं ग़रीब हूँ, मगर मुझे जीवनका इतना लोभ नहीं है कि अपनी जगह किसी दूसरेको मरने दूँ। जिसका अपराध है, उसीको मरना चाहिए और अपराध मेरा है।

रेमफ़स, जो अपने लिए मौतका दंड सुनकर ज़रा भी विचलित न हुआ था, त्यूनसकी बातोंसे बिलकुल सहम गया और उसके माथेपर मौतका पसीना आ गया। उसके दिलके प्यारने भगवानसे प्रार्थना की कि फ़रऊन उसे ही सच्चा समझे, और उसे ही दंड दे।

फ़रऊनने त्यूनसकी सुकुमार देहको लोभकी आँखोंसे देखा और अपने आदमियोंसे कहा—इस समय इसे क़ैदखानेमें ले जाओ। हम फिर फ़ैसला करेंगे।

त्यूनस और रेमफ़सको फ़रऊनके गुलामोंने पकड़ लिया और वह बाहर आकर एकको पूरबकी तरफ़ दूसरेको पच्छमकी तरफ़ ले चले। मगर वह दोनों एक दूसरेकी तरफ मुड़-मुड़कर देखते थे और उनके दिल अपनी विवशतापर कुढ़ते थे। मगर कुढ़नेसे कुछ बनता न था।

फ़रऊनने अपने राजमहलकी दीवारपरसे त्यूनसको बन्दी-घरमें दाख़िल होते देखा तो उसका दिल दुःखसे भारी हो गया और कलेजेमें कोई चीज़ चुभने लगी। वह अपने दल, बल, असर सबको भूलकर ज़मीनपर गिर पड़ा और उसकी आँखोंमें आँसू भर आए। उसने प्रेमका नाम लाखों बार सुना था, पर प्रेमका मर्म उसे आज मालूम हुआ। उसका दिल इस तरह कभी व्याकुल न हुआ था, न उसके दिमाग़में किसी ख़यालने इस तरह करवटें बदली थीं। वह त्यूनसको बन्दी-घरके दरवाज़े तक जाते देखता रहा। मगर जब वह अन्दर चली गई तो वह घबरा गया और उसका दम अपने खुले महलकी छतपर घुटने लगा। गोया त्यूनस दुनियाकी सारी हवाको अपने साथ ले गई थी और अब फ़रऊनके लिए दुनियामें कुछ बाक़ी नहीं रह गया था। जब वह अपने महलके मोतियों और हीरोंसे जड़े हुए फ़र्शवाले कमरेमें पहुँचा तब भी उसे यही ख़्याल हुआ कि वहाँकी

कोई चीज़ गुम हो गई है। वह बेचैनीसे उठकर टहलने लगा और उसकी आँखें चारों तरफ किसी चीज़की खोज करने लगीं। मगर वह दिल-पसन्द चीज़ उसे कहीं दिखाई न देती थी। यहाँ तक कि आधी रात बीत गई और फ़रऊन बिना कुछ खाए-पिए और बिना लिबास बदले अपने बिस्तरेपर लेट गया।

५

जब रातके तीन पहर बीत गये तो फ़रऊनने धीरेसे दरवाज़ा खोला और वह अपना सोनेका डंडा उठाकर महलसे बाहर आ गया। द्वारपाल हैरान रह गए, मगर फ़रऊनके पास उनकी हैरानी देखनेके लिए समय न था। वह जल्दीसे आगे बढ़ा। चारों तरफ़ सन्नाटा था, कहीं कोई आवाज़ सुनाई न देती थी। यह आराम और नींदका वह समय था, जब नदियोंकी लहरें भी ऊँघ जाती हैं और ज़मीनकी सड़कें भी सो जाती हैं। सिर्फ़ ऊँचा आसमान जागता है और पहरा देता है। फ़रऊनने बन्दी-घरकी मशालें देखीं और संतोषकी साँस ली। यहाँ उसके दिलका चैन और आँखोंकी नींद चुरानेवाली लड़की बन्द थी।

ऐसे आराम और विश्रामके समय फ़रऊनको, इस हालमें कि वह पागल-सा मालूम होता था, बन्दी-घरके दरवाज़ेपर देखकर पहरेदारोंके प्राण सूख गए और वे भयसे ज़मीनपर गिर पड़े। फ़रऊनने उनमेंसे एकको उठाया और धीरेसे कहा—आज रात यहाँ जो गुलाम लड़की आई है, हमें उसकी कोठड़ीमे पहुँचा दे।

पहरेदारने फ़रऊनको उस कोठड़ीमें पहुँचा दिया जहाँ त्यूनस बन्द थी। मशाल जलाकर एक कोनेमें रख दी, आप बाहर निकल गया और अपने पीछे दरवाज़ा बन्द करता गया। थोड़ी देर बाद बन्दी-घरके सो

नौकर जाग रहे थे, भयसे थर थर काँप रहे थे, और भगवानसे प्रार्थनाएँ कर रहे थे। और किसीकी ज़बानसे आवाज़ न निकलती थी।

फ़रऊनने कुछ घंटोंके बाद, जो उसके लिए कई सदियोंसे भी बड़े थे, त्यूनसको अपने सामने देखा तो उसके मनका चैन लौट आया। त्यूनस ज़मीनके कच्चे फ़र्शपर बेसुध पड़ी सो रही थी। उसके सिरके बाल बिखर गए थे और मुँह खुल जानेके कारण सफेद दाँत गहरे समुद्रके सच्चे मोतियोंकी तरह चमक रहे थे। उसे सुध न थी कि उसकी देह नंगी हो रही है, और जोबनकी दो लोभी आँखें उसे देख रही हैं। उसे यह भी सुध न थी कि उसकी ज़ुल्फें उसके मुँहपर फैल गई हैं और इससे उसकी शोभा दुगुनी तिगुनी हो गई है।

फ़रऊनने इससे पहले जब उसको रातके पहले पहरमें देखा था तो वह मनमोहिनी ज़रूर थी, पर सोई हुई न थी। लेकिन उसे क्या मालूम था कि रूप जब सो जाता है, तो और भी नशीला हो जाता है, और ज़ुल्फें जब बिखर जाती हैं तो और भी ज़हरीली हो जाती हैं। इसके सिवाय उसे यह भी मालूम न था कि स्त्रीको रातके पहले पहर और पिछले पहरमें देखनेमें बहुत अंतर है। रात ज्यों ज्यों गुज़रती जाती है, और दुनिया ज्यों ज्यों सोती जाती है, नारीका यौवन और यौवनका चमत्कार जागता जाता है।

फ़रऊन कुछ देर हैरान-परेशान खड़ा परी-चेहरा त्यूनसको देखता रहा, इसके बाद कमरेमें टहलने लगा। फिर उस कुरसीको, जो पहरेदारने उसके लिए वहाँ लाकर रख दी थी, घसीटकर त्यूनसके निकट खींच लाया और उसपर बैठ गया। उसने त्यूनसकी फूल-देहको उठाकर अपने पाँवपर रख लिया और समझा कि मैंने त्यूनसपर बड़ी मेहरबानी की है।

त्यूनसकी आँखें खुल गई और सबसे पहली चीज़ जो उसने देखी, वह फ़रऊनकी आँखें थीं। पहले तो वह समझ ही न सकी कि वह कहाँ है, और फ़रऊन उसके पास कैसे पहुँच गया है। मगर जब उसपरसे नींदका नशा उतर गया तो उसे साँझकी सारी बातें याद आ गईं, और

उसकी नारी-बुद्धि सब कुछ समझ गई। अब त्यूनस डर रही थी, घबरा रही थी, काँप रही थी, और न जानती थी कि क्या होनेवाला है।

यह देखकर फ़रऊनने त्यूनसके कंधेपर अपने हाथसे हलकी-सी थपकी दी और धीरेसे कहा, चिन्ता न कर—तू फ़रऊनकी मलिका महारानी बनेगी। फ़रऊन ने तुझे पसन्द किया है।

त्यूनसने वह सुना जो सुननेके लिए मिस्रकी हज़ारों सुन्दरियाँ तड़प रही थीं। मगर इससे उसे खुशी न हुई, उलटा भय और भी बढ़ गया। वह काँपती हुई खड़ी हो गई और फिर ज़मीनपर गिर कर बोली—ऐ मिस्रके ज़मीन-आसमानके बादशाह, मुझपर कृपा कर। मैं इस पदवीके योग्य नहीं, न मुझमें तेरे प्रेम-दानका बोझा उठानेकी ताक़त है। तू बादशाह है, तेरा नाम सुनकर दुनियाके दूसरे बादशाह अपने महलोंमें काँपने लगते हैं, और मैं एक गुलाम लड़की हूँ, जो यह भी नहीं जानती कि बादशाहोंके सामने किस तरह बात की जाती है। मैं अपनी कमज़ोरियाँ जानती हूँ। तेरा दिल मुझसे ख़ुश न होगा। तेरे साथ ब्याह करके परिस्तानकी परियाँ भी अपनी क़िस्मतपर फूली न समाएँगी। मगर मैं,—ऐ मेरे बादशाह, मेरे माँ-बाप तुझपर कुर्बान हों, मुझपर कृपा कर, मैं इस राज-सम्मानके योग्य नहीं। तू बहुत बड़ा है—मैं बहुत छोटी हूँ।

फ़रऊनने त्यूनसका ज़नाना हाथ अपने हाथमें पकड़ लिया और त्यूनसके इस हाथपर अपना दूसरा मर्दाना हाथ फेरते हुए जवाब दिया—मैं फ़रऊन हूँ। मुझसे लोग काँपते हैं। जब मैं अपनी शक्ति और शोभा लेकर सीधा खड़ा होता हूँ तो दुनिया मेरे सामने ज़मीनपर झुक जाती है। लोग मन्दिरके देवताओंकी तरफ़ देख सकते हैं, मगर मेरी तरफ़ आँख उठाकर देखनेके लिए उनके पास साहस नहीं। आज तक मैंने किसी चीज़के लिए इच्छा नहीं की, मेरी हरएक ज़रूरत अपने आप पूरी हो जाती रही है। मगर कल रात जब मैंने तुझे देखा, उस समय मुझे पहली बार मालूम हुआ कि जब आदमीका मन किसी चीज़के लिए अधीर होता है, तो क्या होता है? मुझे रात-भर नींद नहीं आई।

रात-भर तेरी शक्ल-सूरत मेरी आँखोंमें फिरती रही है। मैं रात-भर सोचता रहा हूँ कि इस समय तक मैं तेरे बिना कैसे जीता रहा। आसमानके देवता जानते हैं कि तू मेरे शरीर, मेरे प्राण, मेरे जीवनका एक भाग है। मेरे महलकी चलने, फिरने, बोलनेवाली तसवीरें जो अपने आपको स्त्रियाँ कहती हैं, जब मेरे निकट आती हैं, या दूसरे शब्दोंमें जब मैं उन्हें अपने निकट आनेकी आज्ञा देता हूँ, तो मुझपर उतना भी असर नहीं होता जितना पत्थरकी इस दीवारपर। मगर तुझे, हाँ, ऐ गुलाम जातिकी सुन्दरी, तुझे देखकर मुझे यह मालूम हुआ है कि मैं भी मर्द हूँ और मेरे शरीरमें भी एक दिल और उस दिलमें किसीके लिए जगह है जो तूने पूरी कर दी है। दुनिया मुझे देवता समझती है और पूजती है। कल तक मेरी अपनी भी यही राय थी कि दुनियाके मर जानेवाले लोगोंमें और मुझमें बहुत फ़र्क़ है। मैंने कई देशोंपर हमले किए हैं और वहाँकी खूबसूरतसे खूबसूरत स्त्रियाँ चुन चुनकर लाया हूँ। मगर चार ही दिनोंमें मेरा दिल उन खिलौनोंसे भर गया और फिर मेरी आँखोंने उनमें कोई मोहिनी नहीं देखी। मैं प्रेमका नाम सुनता था, और हँसता था। और समझ न सकता था कि लोग इस जालमें फँसकर क्यों बावले हो जाते हैं। मगर तुझको देखकर मेरे दिलमें प्रेम और उस प्रेममें तू बैठ गई है, और अब मुझे पता लगा है कि मैं भी इस दुनियाका जीव हूँ, और मेरे सीनेमें भी एक साधारण दिल है, जो तड़पता भी है, अधीर भी होता है। इस लिए .खुश हो कि तूने एक बेदिलके आदमीकी आँखें खोल दी हैं, और उसे अपनी मरज़ीके सामने कमज़ोर कर दिया है। त्यूनस, मैं दुनियाके लिए शक्ति हूँ, बादशाह हूँ, देवता हूँ, मगर तेरे लिए प्रेम-पुजारीके सिवाय और कुछ भी नहीं हूँ। उठ, मेरे महलमें चल, मुझपर राज कर, मुझे अपनी मरज़ीका .गुलाम बना,—आज तक मैं शक्ति और शोभा में जीता था, अब मैं प्यार और पूजामें जीना चाहता हूँ।

फ़रऊन, जिसने आजसे पहले कभी किसीसे इतनी लम्बी बात-चीत

न की थी, इस समय साधारण आदमियोंकी तरह बोला और उसके मनकी दशा उसकी आँखोंसे प्रकट हुई।

त्यूनस स्त्री थी, और हर स्त्री अपने रूपकी विजयपर खुश होती कि उसने अपने ज़मानेके सबसे बड़े बादशाहको अपने पाँवमें झुका दिया है मगर वह इससे पहले प्यार कर चुकी थी और प्यारकी बाज़ीमें अपना मन और मनकी मरज़ी हार चुकी थी। इसलिए नारी-जगतकी इस अनुपम जीतपर उसे ज़रा भी खुशी न हुई, और उसने बन्दी-घरके खुरदरे फ़र्शपर घुटने टेककर कहा—ऐ मिस्रके सबसे बड़े बादशाह, तुझे दुनियाकी अच्छीसे अच्छी लड़कियाँ मिल सकती हैं, फिर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ क्यों बढ़ाता है? मुझमें तो कोई भी ऐसी चीज़ नहीं। लोग तेरे चुनावपर क्या कहेंगे?

फरऊनने धीरेसे मगर दृढ़ स्वरमें जवाब दिया—फ़रऊन जो कुछ करता है, वह दुनियाके लिए आदर्श बन जाता है।

त्यूनस—ऐ बादशाह! फिर सोच, तू एक गुलाम लड़कीके लिए इतना कुछ क्यों कर रहा है?

फ़रऊन—फ़रऊन उस गुलाम लड़कीको मिस्रकी मलिका महारानी बना देगा।

त्यूनस—और अगर उसके दिलमें फ़रऊनके लिए प्यार न हो तो—

फ़रऊन—फ़रऊनका प्यार उसे सब कुछ सिखा लेगा।

त्यूनसने ज़रा साहससे कहा—और अगर उस अभागिनीको किसी दूसरेसे प्यार हो तो—

फ़रऊनने इस जवाबको अपनी बेइज़्ज़ती समझा। देखते देखते उसके मुँहका रँग बदल गया। वह कुरसीसे उठकर खड़ा हो गया, और अपना पाँव ज़मीनपर पटककर बोला—फ़रऊन उस आदमीको मिस्रके सबसे बड़े पत्थर-तले दबाकर मार डालेगा।

त्यूनस अवाक् रह गई। उसने फ़रऊनके, हाँ उसी फ़रऊनके

जिससे उसका मन घृणा करता था, पाँव पकड़ लिये, और अपनी आँसुओंसे भरी हुई आँखोंसे उसकी तरफ़ देखते हुए कहा—दया कर, ऐ संसारके सबसे बड़े बादशाह! दया कर। तू देवता है, तेरा दिल स्वर्गके जल-वायुसे बना है। तेरा काम दुनियाके बेटोंपर दया करना है। तुझे ऐसा कठोर नहीं होना चाहिए, तू ऐसा कठोर नहीं हो सकता, तू ऐसा कठोर नहीं होगा। मैं तेरी दयाका द्वार खटखटाती हूँ।

फ़रऊन फिर कुरसीपर बैठ गया और ज़रा नरमीसे बोला—अगर तू कठोर नहीं होगी, तो फ़रऊन भी कठोर नहीं होगा।

त्यूनसने धड़कते हुए दिलको सँभालनेका यत्न करते हुए कहा—मैं स्त्री हूँ। और स्त्री सब कुछ कर सकती है, मगर अपनी इच्छाके विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती।

फ़रऊनने तड़से जवाब दिया—फ़रऊनकी मरज़ी यह भी करवा सकती है. और करवाकर रहेगी। अगर तू अंतिम समय भी उस मिस्री युवककी जान बचाना चाहे, तो पहरेदारसे कह देना। मुझे मालूम हो जायगा, और उसकी जान बच जायगी।

यह कहकर फ़रऊनने अपना भारी डंडा उठाया और चुपचाप बाहर निकल गया।

त्यूनस फ़रऊनकी धमकीका मतलब समझना चाहती थी, मगर समझती न थी। हाँ, इतना जानती थी, और हर स्त्री जान सकती है कि फ़रऊन जो पहले ही आग है अब क्रोधसे शोला बनकर भड़क उठेगा और रेमफ़सको कड़ेसे कड़ा दंड देकर मारनेका हुक्म देगा। इस ख़यालसे उसका दिल हिल गया और वह रेमफ़सके लिए प्यारके आँसू बहाने लगी।

जब दिन चढ़ा और आकाशमें सूरज निकल आया, तो साथके कमरेमें आदमियोंके चलने-फिरनेकी आवाज़ सुनाई देने लगी और यह आवाज़ दमबदम बढ़ती गई। त्यूनसके कमरे और इस कमरेके

बीचमें एक खिड़की थी और इस खिड़कीमें लोहेकी सलाखें लगी थीं। त्यूनसने यह देखनेके लिए कि और कौन अभागा फ़रऊनके बन्दी-घरमें आया है, वह खिड़की खोली और उस कमरेमें झाँककर देखा। और उसने जो कुछ देखा वह इतना भयानक था कि उसे अपनी रगोंमें लहूकी गति रुकती हुई, अपने कंधे टूटते हुए और दिल डूबता हुआ मालूम हुआ।

रेमफ़स ज़मीनपर एक खुरदरे पत्थरके साथ ज़ंजीरोंसे बँधा हुआ था और उसके ऊपर छतके साथ हज़ारों मन भारी एक पत्थर जो उस कमरेसे ज़रा कम लम्बा-चौड़ा था, मोटी मोटी ज़ंजीरोंके सहारे लटक रहा था। वह ज़ंजीरें एक बहुत बड़ी फिरकीके ऊपरसे गुजर कर एक पहियेपर लिपटी हुई थीं जिसे खोलने और लपेटनेके लिए फ़र-ऊनके क़ैदी बैलोंकी जगह काम करते थे। त्यूनसने देखा रेमफ़सका मुँह पीला है और उसकी आँखोंमें जीवनकी चमक धीरे धीरे मर रही है। कानोंसे सुनने और आँखोंसे देखनेमें बहुत बड़ा फ़र्क़ है। अगर त्यूनससे कहा जाता कि तुम्हारे रेमफ़सकी इस तरह हत्या की जायगी तो शायद वह इतनी भयभीत न होती और अपनी सर्वोत्तम वस्तु नारी-प्रेमकी बलि चढ़ानेके लिए तैयार न होती। और सचमुच, जब उसने यह बात .खुद फ़रऊनकी ज़बानसे सुनी थी तो उसके मनपर इतना असर न हुआ था। मगर उसी धमकीको कार्यरूपमें पूरा होते देखना उसकी शक्तिसे बाहर था। वह सिसक सिसककर रोने लगी और उसके आँसू उसके गालोंपर बहने लगे।

विवेक कहता है कि फ़रऊनका फ़रमान होगा कि दंड उस समय तक शुरू न किया जाए जब तक त्यूनस खिड़कीमें आकर देखने न लग जाए। क्योंकि ज्यों ही वह खिड़कीमें आकर खड़ी हुई और जेलके दारोग़ाने उसे देखा, उन आदमियोंकी पीठपर कोड़े बरसने लगे जो उस हत्यारी कलका .खूनी पहिया घुमानेके लिए बैलोंकी जगह जोते गए थे। वह चलने लगे। कल घूमने लगी। मौत आसमानसे ज़मीन-पर उतरने लगी।

त्यूनस खिड़कीमें घायल पंछीके समान तड़पने लगी। वह सब कुछ देख रही थी; वह सब कुछ समझ रही थी; यह सब कुछ उसकी आँखोंके सामने हो रहा था। क़ैदियोंने कोड़े खाकर शरीरके सारे बलसे पहियेको घुमाना शुरू किया और उसके साथ ही वह पहाड़,—मौतसे भी भयानक, हर वस्तुको पीसकर सुरमा बना देनेवाला पत्थर धीरे धीरे नीचे उतरने लगा। त्यूनसको ऐसा दिखाई दिया जैसे यह बेजान पत्थर नहीं जीता-जागता अजगर है, जो मुँह खोले रेमफ़सकी तरफ़ बढ़ रहा है और थोड़ी देरमें...

त्यूनस इससे आगे न सोच सकी, और सहमकर पीछे हट गई। इस समय उसकी आँखोंमें पानी न था। वह दुःखकी उस सीमा-पर पहुँच चुकी थी, जहाँ आँखोंके आँसू सूख जाते हैं। उसका हृदय काँप रहा था, सिर चक्कर खा रहा था, जीभ तालूसे चिमट रही थी, और चारों तरफ़ अंधेरा छा रहा था।

धीरे धीरे वह फिर खिड़कीके पास गई, और उसने वह दृश्य फिर दूसरी बार देखा जिसे वह एक बार भी न देखना चाहती थी। अब वह हत्यारा पहाड़ छत और ज़मीनके अधबीचमें पहुँच चुका था। त्यूसनकी सारी देह काँप उठी। क्या यह हो जाएगा? क्या यह पत्थर रेमफ़सके जीवनका अन्त कर देगा? नहीं, त्यूनसने कहा, नहीं। मैं उसे न मरने दूँगी, मैं उसे बचा लूँगी।—फ़रऊन मेरे मुँहसे प्यारका एक शब्द सुननेको अधीर हो रहा है। मैं उसे आज्ञा दूँगी, और वह सिर झुकाकर उसका पालन करेगा।—एकाएक दूसरा विचार आया।—इसका मतलब क्या होगा? वह बच जाएगा, मगर मेरे और उसके बीचमें एक समुद्र आ खड़ा होगा। एक किनारे मैं, एक किनारे वह। दोनों जिएँगे, दोनों तड़पेंगे। मर मर कर जीना भी कोई जीना है? इससे तो अच्छा है कि प्रेमके मार्गमें दोनों मर जाएँ, और दोनों अमर हो जाएँ। निराशाके जीवनसे तो प्रेमकी मौत ही भली।

एक बार फिर उसने दूसरे कमरेमें झाँककर देखा और उसे हज़ारों लाखों बिच्छुओंने एक साथ काट खाया। पत्थर रेमफ़ससे केवल एक आध इंच ऊँचा रह गया था,—दो चार क्षण और,—और फिर रेमफ़सका जीवन सदा सदाके लिए समाप्त हो जाएगा। एकाएक त्यूनसने एक चीख़ मारी और खिड़कीसे हटकर दरवाज़ेकी तरफ दौड़ी। दरवाज़ा बाहरसे बन्द था। त्यूनसने अपने दोनों हाथ उसपर मारे। दरवाज़ा खुल गया और पहरेदारने अपनी संगीनका सिरा ज़मीनपर रखकर सिर झुका दिया।

दौड़ो!—त्यूनसने चिल्लाकर कहा—और अपने बादशाहसे कहो, मैंने उसकी शर्त स्वीकार कर ली है।

आख़िर वह स्त्री थी, अबला थी, और उसके मनमें रेमफ़सका प्यार था।

और वहाँसे हटकर जब वह खिड़कीमें आई तो उसे यह देखकर कितनी .खुशी हुई कि हत्यारी मशीनके पापी पहिये उलटे चल रहे हैं, और जो पत्थर पहले धीरे धीरे नीचे जा रहा था, वह अब ऊपर आ रहा है। रेमफ़स आश्चर्य्यसे इधर उधर देख रहा था, और क़ैदख़ानेके आदमी उसकी ज़ंजीरें खोल रहे थे। रेमफ़स सोचता था, यह फ़रऊनको मुझपर रहम कैसे आ गया? यह तो रहम करना जानता ही न था।

त्यूनसके मनको संतोष हुआ आर वह पीछे मुड़ी। इतनेमें दरवाज़ा खुला और फ़रऊन मुस्कराता हुआ कमरेमें आया। त्यूनसने पूछा—वह बच गया?

फ़रऊनने उसकी तरफ़ लोभपूर्ण आँखोंसे देखा और धीरेसे जवाब दिया—हाँ वह बच गया। अब उसे केवल पाँच सालके लिए पत्थर काटनेका काम करना पड़ेगा।

६

दूसरे दिन ब्याह हो गया।

और जब फ़रऊन त्यूनसको शाही लिबासमें अपने महलकी बड़ी दीवारपर ले गया और लोगोंने देखा कि उनकी महारानी कितनी रूपवती है, और उसकी शक्ल-सूरतमें कितना लावण्य है तो उनके आश्चर्य और आनन्दकी सीमा न रही—वह भूमिपर गिरे हुए थे और फ़रऊनके चुनावकी प्रशँसा कर रहे थे और अपने अपने मनमें यह सोचकर .खुश हो रहे थे कि उनकी मलिका त्यूनस जैसी सुन्दरी सारे देशमें न होगी। और त्यूनस भी आज कलकी त्यूनस मालूम न होती थी। कल वह गुलाम लड़की थी, आज मिस्रकी रानी थी। कल कुँवारी थी, आज दुलहिन थी। कल वह फटे-पुराने चीथड़े पहने थी, आज एक साम्राज्यके सर्वोत्तम और अनमोल हीरे-मोती उसकी देहपर निछावर हो रहे थे। आजकी इस त्यूनस और कलकी उस त्यूनसमें ज़मीन आसमानका फ़र्क़ था। आज उसे उसकी मा देखती तो वह भी न पहचान सकती। आज वह मिस्रकी सबसे सौभाग्यवती सुन्दरी थी। आज उसे फ़रऊनने अपनी जीवन-संगिनी चुना था, आज वह दुनियाकी आँखोंका तारा बनी हुई थी।

मगर क्या वह .खुश थी?

नहीं, उसे राज्यकी इस शान शोभा और ऐश ऐश्वर्यके सिंहासनपर बैठकर भी अपना ग़रीब रेमफ़स याद आता था, जो किसी अजानी जगहमें पत्थर काट रहा था और जिसका दोष केवल यह था कि उसने उससे प्यार किया था। त्यूनस उसे याद करती थी, उसकी यादमें दिन-रात ठंडी आहें भरती थी और उसका ठंडी आहें भरना कभी

समाप्त न होता था। फ़रऊन यह सब कुछ देखता था, और उसे पाषाण-हृदय मूर्ति समझकर उसके निकट न जाता था। वह उस शुभ घड़ीकी राह देख रहा था, जब रेमफ़सकी याद त्यूनसके मनसे धुएँकी तरह ग़ायब हो जाएगी और वह उसकी शाही मेहरबानियाँ देखकर अपनी प्यारकी भुजाएँ उसके लिए फैला देगी। वह बादशाह था और अपनी बादशाहीमें किसी दूसरेका हिस्सा उसे मंजूर न था, चाहे बादशाही प्रेमकी बादशाही हो और चाहे वह हिस्सा केवल ख़्यालका ही हिस्सा हो।

त्यूनसकी त्रिया-हठको देखकर फ़रऊन यह तो समझ गया था कि उसे त्यूनसके प्यारकी बहुत दिनों प्रतीक्षा करनी होगी, मगर वह यह न समझता था कि उसका अपना अधीर हृदय इतनी लम्बी प्रतीक्षा कैसे कर सकेगा। मगर भगवानको उसकी बेबसीपर दया आई और ब्याहके बाद अभी एक सप्ताह भी न गुज़रने पाया था कि हब्शी सुल्तान शमलार्क़ने अपनी बेटीके अपमानका बदला लेनेके लिए मिस्रपर धावा बोल दिया।

फ़रऊन आराम-पसंद था, निर्दय था, स्वार्थी था। उसने अपना कोष भरनेके लिए हज़ारों-लाखों ग़रीबोंके जीवन मिटा दिए थे। मगर वह कायर न था। इसलिए जब उसने सुना कि सुलतान शमलार्क़ने उसपर चढ़ाई कर दी है, तो उसने ज़रा भी परवाह न की और सेनाको तैयार होनेकी आज्ञा दी और आप लड़ने-मरनेको तैयार हो गया।

रातका समय था। फ़रऊनने लोह-कवच पहना और त्यूनससे विदा माँगनेके लिए उसके मोर-महलमें गया।

त्यूनस समझ गई कि फ़रऊन युद्धमें जा रहा है। फ़रऊनने उसके पास जाकर कहा—त्यूनस, शमलार्क़ने मिस्रपर चढ़ाई की है।

त्यूनसने रुक रुक कर पूछा—क्यों?

और वह जानती थी कि फ़रऊन क्या जवाब देगा। मगर फ़रऊनने वह जवाब न दिया, और कहा—यह मैं नहीं जानता।

त्यूनसने धीरेसे कहा—मगर मैं जानती हूँ।

फ़रऊन पहले चौंका, फिर सँभल गया, फिर मुस्करा कर बोला—तुम क्या जानती हो?

त्यूनस—वह मुझे माँगता है। अगर मुझे उसके हवाले कर दिया जाय, तो उसका गुस्सा आज बुझ जाए।

फरऊन—मगर तुम्हारे लहूसे।

त्यूनस—मिस्रके हज़ारों बेटे बच जाएँगे। आप मेरा ख़याल न करें। देशके सामने मैं कोई चीज़ नहीं। अगर मेरी मौतसे युद्ध रुक सके, तो मैं ऐसी मौतका सिर-आँखोंसे स्वागत करनेको तैयार हूँ।—आख़िर मैं एक .गुलाम लड़की हूँ।

यह कहते कहते त्यूनसकी बड़ी बड़ी आँखोंमें आँसू लहराने लगे। यह आँसू न थे, त्यूनसकी अभिलाषाओंकी पिघली हुई आग थी जिसे फ़रऊनने भी समझ लिया। उसने त्यूनसके कंधेपर अपना प्रेम-पूर्ण हाथ रखा और भावुकताके भार-तले काँपती हुई आवाज़में कहा—त्यूनस, तू फ़रऊनकी मलिका महारानी है। तू .गुलाम लड़की नहीं है। और तेरी इज्ज़त मेरे वतनकी इज्ज़त है, तेरी इज्ज़त मेरे शाही दब-दबेकी इज्ज़त है।

और यह कहकर उसने वह कपड़ा, जो त्यूनसके कंधोंसे नीचे गिर गया था, उठाकर उसके कंधोंपर ठीक तरह रखा और उसके मनोहर मुखड़ेको, जिसे राजसी ठाठने और भी मनोहर बना दिया था, वह लोभकी आँखोंसे देखने लगा। इसके बाद उसने फिर त्यूनसके कंधेपर हाथ धरा, और बोला—त्यूनस, तू मेरी बीवी है, मैंने तुझसे ब्याह किया है, तू मेरी मलिका है, मैंने तेरे सिरपर ताज रखा है। तुझे मुझसे प्यार हो या न हो, मगर दुनिया और देवताओंकी आँखोंमें तू मेरी स्त्री है, मैं तेरा पति हूँ, और तेरे मनकी गहराइयोंका प्यार मेरी चीज़ है, जिससे तू मुझे परे नहीं रख सकती। मगर मैं तुझे चाहता हूँ, और

मेरा मन नहीं मानता कि तेरी आँखमें दुःखके आँसू देखूँ। इसलिए मैं इंतज़ार कर रहा था कि तू मुझसे प्यार करना सीख लेगी, और मेरा प्यार तेरे मनमें मेरी जगह बना देगा। लेकिन आसमानके देवताओंकी क्या मरज़ी है, यह उनके सिवाय और कोई नहीं जानता। मैं युद्ध-भूमिमें जा रहा हूँ, और नहीं कह सकता कि वहाँसे जीता लौटूँगा या वहीं मर जाऊँगा। इसलिए मैं युद्ध-भूमिको जानेसे पहले तेरे मुँहसे केवल एक बात सुनना चाहता हूँ।

त्यूनसने फ़रऊनकी इस लम्बी बात-चीतका जवाब केवल एक शब्दमें दिया—क्या?

फ़रऊन हताश नहीं हुआ, बोला—मुझसे कह, तुझे मुझसे प्यार है। ये शब्द युद्ध-भूमिमें मेरी भुजाओंका बल और मेरे मनकी शक्ति बन जाएँगे। मैं हिम्मतसे लड़ूँगा। मैं दुश्मनको हरा दूँगा। मेरे सामने आनेका किसीको साहस न होगा।

त्यूनसने मुँहसे कोई जवाब न दिया। न वह जवाब दे सकती थी, न जवाब देना चाहती थी। वह चाहती थी, किसी तरह समय टल जाए, और वह इस संकटसे बच जाए। वह सोचती थी, फ़रऊनने ब्याहके बाद उससे कोई बात ऐसी न की थी जिसकी त्यूनस शिकायत कर सकती। ऐसे प्यार और सम्मानसे दुनियाका कोई पति अपनी स्त्रीसे कम पेश आया होगा। त्यूनस उसका दिल न दुखाना चाहती थी। वह चाहती थी, वह जो कुछ इसके लिए कर सकती है, करे। मगर वह कितनी बेबस थी! उसकी धारणा थी कि फ़रऊनसे प्यारकी एक बात करनेका अर्थ रेमफ़सके साथ दग़ा करना है, और यह वह बात थी जो त्यूनस तीन लोक और तीन कालमें करनेको तैयार न थी। त्यूनसने मुँहसे कोई जवाब न दिया, मगर उसके मुँहके रंगने और सजल आँखोंने सब कुछ कह दिया। अभागे फ़रऊनके आत्म-सम्मानको इससे इतना धक्का लगा, और उसकी आशाओंपर ऐसा कुठाराघात हुआ कि उसका मुँह उतर गया और वह अपनी भीगी हुई पलकें

पोंछने लगा। अगर इस समय कोई चित्रकार फ़रऊनके दिलको देख सकता तो उसे दुर्भाग्यकी ऐसी तस्वीर मिलती जो संसारके किसी चित्रकारको आज तक न मिली होगी।

त्यूनस चाहती थी, फ़रऊन उसपर क्रोध करे, उसे सज़ा दे, उसे अपनी हैवानी ताक़त दिखाए। मगर फ़रऊनने उससे एक शब्द भी न कहा और मिस्रके नियमानुसार वह त्यूनसका हाथ चूमकर चुपचाप बाहर चला गया। फ़रऊनके इस शील और विनयको देखकर, जो उसकी देव-पदवी और पशु-प्रकृति दोनोंके विरुद्ध था, त्यूनसका दिल टुकड़े टुकड़े हो गया और वह पलंगपर लेटकर रोने लगी।

उन दिनोंके मिस्रका रिवाज था कि बादशाह युद्ध-क्षेत्रमें जानेसे पहले आग, लोहे और प्रारब्धके देवताओंको पूजता था, और इसके बाद अपनी मलिकाकी मुँह-माँगी इच्छा पूरी करता था। इस लिए जब आधी रात गुज़र गई और फ़रऊन पूजा कर चुका तो त्यूनसके मोर-महलमें आया और बोला—मुझसे अपनी कोई इच्छा बयान कर, ताकि मैं उसे मिस्रके रिवाजके मुताबिक़ पूरा करूँ, और युद्धमें जाऊँ।

त्यूनसने अपनी फूल-देह फ़रऊनके पाँवमें फेंक दी और सिसकियाँ भर भर कर रोने लगी। काश उसे रेमफ़सके साथ प्यार न होता, या फ़रऊन उसके साथ ऐसा सद्व्यवहार न करता!

फ़रऊनने त्यूनसको अपने पाँवमें उठाकर अपने साथ चौकीपर बिठा लिया, और प्यार-भरे शब्दोंमें कहा—कोई इच्छा?

त्यूनसने सिर ऊपर उठाए बिना जवाब दिया—कोई नहीं।

फ़रऊन—फिर भी कुछ तो कहो, कुछ तो बोलो। कुछ मँगवा दूँ, कुछ बनवा दूँ? तुझे अपनी कोई माँग मुझसे बयान करनी होगी और मुझे उसको पूरा करना होगा।

त्यूनस—मेरे मनमें इस समय कोई माँग नहीं है।

फ़रऊन—कोई इच्छा?

त्यूनस—कोई नहीं।

फ़रऊन—त्यूनस, कुछ माँग, कुछ कह ।

त्यूनस—(सजल आँखोंसे फ़रऊनकी तरफ़ देखकर) क्या माँगूँ ? क्या बोलूँ ? आपने मेरे लिए सब कुछ कर रखा है।

फ़रऊन—(आग्रहसे) क्या ऐसी कोई बात नहीं जिसे मैं पूरा कर सकूँ ? और जिसे तेरा दिल चाहता हो ?

त्यूनसने सोचा, कहूँ या न कहूँ ?

फ़रऊन—क्या सोच रही है ?

त्यूनसके मनमें आया, अब कह ही दूँ।

फ़रऊन—कह त्यूनस !

त्यूनसके मनमें आया, न कहूँ ।

फ़रऊन अपनी जगहसे उठकर खड़ा हो गया और इधर उधर टहलते हुए बोला—आज युद्ध-यात्राकी रात है। मैं बादशाह हूँ, तू मलिका है। आज तुझे मुझसे कुछ माँगना होगा, यह तेरा अधिकार है। आज मुझे तेरी इच्छाको पूरा करना होगा, यह मेरा धर्म है। तू जो कुछ कहेगी, वह हो जाएगा। तू जो कुछ माँगेगी, वह तुझे मिल जाएगा। अब कह, क्या तेरी कोई इच्छा नहीं है ?

त्यूनसको आशा सामने दिखाई दी।

फ़रऊन—कोई इच्छा जिसे बादशाह और शौहर पूरा कर सके।

त्यूनसको आशाके साथ निराशा भी दिखाई दी।

फ़रऊन टहलते टहलते रुक गया।

त्यूनसने धीरेसे कहा—मेरी एक इच्छा है, मगर मुझे ख़तरा है, कि—

फ़रऊन—वह मैं पूरी न कर सकूँगा, क्या तेरा यह ख़्याल है ?

त्यूनस—मेरा मतलब था, मैं कहना नहीं चाहती।

फ़रऊनने उसकी तरफ मुस्करा कर देखा, और कहा—मेरी भोली रानी, तूने सब कुछ कह दिया है! और जो कुछ तूने कहा है, उसे मैं हँसते हुए करूँगा।

यह कहकर फ़रऊनने उसी समय और उसी जगह चमड़ेका एक टुकड़ा मँगवाया और उसपर कुछ लिखकर, और उसपर शाही मुहर लगवाकर त्यूनससे कहा—.खुश हो, कि मैंने तेरे मनकी बात पूरी कर दी है!

और त्यूनस .खुश हो रही थी, और उसकी खुशी, उसके चेहरेसे, उसकी आँखोंसे, उसकी भाव-भंगीसे प्रकट हो रही थी।

फ़रऊनने पहरेदारको बुलाया और उसे वह चमड़ेका टुकड़ा देकर कहा—यह शाही फ़रमान है, इसे इसी समय पत्थरोंके दारोग़ाके पास भेज दे।

पहरेदारने चमड़ेका टुकड़ा लिया और बादशाहको सलाम करके बाहर चला गया।

फ़रऊनने कमरेमें चारों तरफ़ देखा और धीरेसे कहा—रेमफ़स एक घंटेके अन्दर अन्दर छूट जायगा।

इस समय उसके शब्दोंमें ज़रा भी क्रोध, ज़रा भी क़हर न था। और त्यूनस सिर झुकाए, आँखें ज़मीनपर गाड़ सोच रही थी, क्या यह वही फ़रऊन है जिसके क्रोध और क्रूरताकी कहानियाँ सुनकर लोग अपने बन्द घरोंके अन्दर काँप उठते हैं? इस समय वह कितना सहृदय, कितना सरल, कितना साधु है! त्यूनसकी आँखोंमें पानी छलकने लगा।

फ़रऊन बाहर निकला।

रातका समय था। एक पहरेदार दीवारके साथ पीठ लगाए खड़ा था। शायद वह कुछ सोच रहा था, शायद वह थक गया था, शायद

वह ज़रा ऊँघ गया था। फ़रऊनने उसे इस हालमें देखा तो उसका पशु-स्वभाव जाग उठा। शराबीने शराब छोड़ दी थी, शराबख़ानेके सामने पहुँचकर फिर ललचा उठा। अब उसे शराब पीनेमें कितनी देर लग सकती थी, और ऐसी अवस्थामें जब कि कोई रोकनेवाला निकट न था। फ़रऊनने अपना सोनेका डंडा उठाया, और यह सोचे बिना कि इसका परिणाम क्या होगा पहरेदारके सिरपर पूरे ज़ोरसे दे मारा। पहरेदारकी नींद ज़रा देरके लिए खुली और ज़मीनपर तड़पकर मौतके गले मिल गई। अब वह फिर वही फ़रऊन था; वही आगभरा स्वभाव, वही पत्थर और लोहेका दिल, वही हिंसा-प्रिय वृत्ति। त्यूनसका महल प्यारकी नगरी थी जहाँ जाकर उसकी प्रकृति बदल जाती थी और उसकी प्रकृति सदाके लिए बदल जाती अगर त्यूनस उसके प्यारका जवाब प्यारसे देती। मगर चूँकि ऐसा न होता था, इसलिए वह इसका बदला बाहर आकर अपनी प्रजासे लेता था और प्रेमकी आगको पापकी ज्वालासे बुझाना चाहता था।

७

बेकली और बेबसीकी यह बदनसीब रात फ़रऊनने अपने महलके आँगनमें टहल टहल कर काटी। इस समय उसका चेहरा ऐसा उदास और आँखें ऐसी निराश थीं, मानों उसपर संसारका सबसे बड़ा संकट टूट पड़ा हो। इस दयनीय दशामें उसे जो देखता, वही उसपर दया करता। मगर इस समय उसे देखनेवाला सिवाय आकाशके तारोंके और कोई भी न था। और तारे भी ऊँघ गए थे।

जब दिन चढ़ा, तो फ़रऊनकी आँखोंमें रत-जगेकी लालिमा और थकानकी अँगड़ाइयाँ थीं, मगर उसने आपने जीवनकी इस हारको किसीपर प्रकट न होने दिया। और जब उसकी सतरंगी सेना मुलतान

शमलार्ककी सेनासे लड़नेको चली तो उसने अपने सिपाहियोंसे वीरताके ऐसे उत्साह-जनक शब्द कहे कि किसीको संदेह तक न हो सका कि उसके मनमें कोई चिन्ता भी है। कबूतरको जब शिकारीका तीर लग जाता है और घावसे लहू बहने लगता है तो वह अपने परोंको सँवार लेता है, और घातकके घावको छिपा लेता है। मगर क्या इससे लहू बहना भी बन्द हो जाता है? क्या इससे घावकी टीस भी कम हो जाती है?

आख़िर फ़रऊनके जानेका समय आया और उसने निराशाकी आँखोंसे उस महलकी तरफ़ देखा जहाँ उसके मनकी मलिका थी, जगतकी जोत थी, रूह की रोशनी थी। इसके बाद उसने एक ठंडी आह भरी और उचककर अपने जंगी रथपर सवार हो गया।

घोड़ोंकी पीठपर ताबड़तोड़ कोड़े बरसे और घोड़े अपने पाँवोंकी सारी शक्तिसे दौड़े। रथके पहिये सड़कके पत्थरोंसे टकरा रहे थे और उनकी आवाज़से दूर दूर तक लोगोंको मालूम हो रहा था कि फ़रऊन अमनस दुश्मनसे लड़ने जा रहा है।

मगर आठ दिन बीत गए और युद्धका कोई फ़ैसला न हुआ। दोनों तरफ़के आदमी सारा दिन लड़ते थे और साँझको जो बचते थे अपने अपने खेमोंमें चले जाते थे। हर सिपाही अपने आपको मौतके मुँहमें समझता था और सवेरे कोई न कह सकता था कि वह साँझको जीता लौटेगा या युद्ध-भूमिमें सदाकी नींद सो चुका होगा। इसपर भी उनको अपनी परवाह न थी। यह व्यक्तियोंके मरने-जीनेका सवाल न था, दो देशोंकी मान-मर्यादा और हार-जीतका सवाल था। सिपाही लड़ते थे, बादशाह लड़ते थे, नेज़े और भाले लड़ते थे। इसी तरह आठ दिन बीत गए और कोई फ़ैसला न हुआ।

नवें दिन जब नरसिंघा फूँका गया और युद्ध छिड़ने लगा, तो शमलार्कके एक आदमीने आगे बढ़कर ऊँची आवाज़से कहा—सब कोई सुनो और सब कोई जानो। हमारा सुलतान मिस्रसे नहीं लड़ता, न उसे मिस्र-निवासियोंसे बैर है। इस रक्त-पातका कारण एक गुलाम लड़की

है। उसे हमारे सुपुर्द कर दो, हम इसी समय युद्ध बन्द किए देते हैं। यह मेरी माँग नहीं, मेरे मुल्ककी माँग है, और मेरा सुल्तान मुल्कके साथ है।

फ़रऊनने अपने घोड़ेके अगले दोनों पाँव हवामें खड़े करके जवाब दिया—फ़रऊन अमनस इस माँगको अपने युगका सबसे बड़ा अपमान समझता है और उस असभ्य और अनपढ़ सरदारके साहसपर हैरान है जो कल तक फ़रऊनके फेंके हुए टुकड़ोंपर संतुष्ट था और आज सिर्फ़ इसलिए नाराज़ है कि उसकी बेटीसे ब्याह क्यों नहीं किया गया। लेकिन अगर उसकी बेटीको उस परीके सामने खड़ा किया जाए, जिसे वह अभीतक वही गुलाम लड़की समझ रहा है, तो स्वर्गके देवता स्वर्गकी सौगंध खाकर कह देंगे कि त्यूनसका-सा रूप स्वर्गमें भी नहीं है, और त्यूनसको उस हब्शिनके सामने खड़ा करना सौन्दर्य-संसारका सबसे बड़ा अन्याय है और मैं और मेरा मुल्क यह अन्याय नहीं कर सकते।

यह जवाब सुनकर दोनों तरफ़के सिपाही एक दूसरेका मुँह ताकने लगे। सहसा शमलार्क़ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया और अपना नेज़ा हवामें ऊँचा करके कहा—तो निर्दोष सेनाको कटवानेसे क्या फ़ायदा है? आओ, हम-तुम दोनों लड़कर फ़ैसला कर लें। झगड़ा हमारा है, नुक़सान दूसरोंका क्यों हो? जिनका झगड़ा है, वही लड़ें।

फ़रऊन बहादुर था। उसने मुँहसे कुछ न कहा, मगर घोड़ेको एड़ लगाकर आगे बढ़ा, और अपनी सेनाको पीछे रुके रहनेका इशारा किया। शमलार्क़ भी आगे बढ़ा। इस समय इन दोनोंकी आँखोंमें क्रोधकी आग जलती थी और नथनोंसे शोले निकलते थे। छेड़े हुए साँपोंकी जो दशा होती है वही दशा इस समय इनकी थी। दोनोंके वीर सिपाही आस-पास खड़े थे और चुप-चाप हार-जीतकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अजीब तमाशा था। बादशाह लड़ते थे, सिपाही देखते थे। आज यह वीर-घटनाएँ पुराने युगकी कहानियाँ बन कर रह गई हैं जिनपर कोई विश्वास करता है, कोई नहीं करता। मगर उस समय

बहादुरी सचमुच इतनी नायाब न थी, और बादशाहोंका लहू इतना महँगा न हुआ था।

जब दोपहर हो गई और सूरज आसमानमें ठीक सिरपर पहुँच गया तो फ़रऊनने अपना नेज़ा और ढाल ज़मीनपर फेंक दी, अपनी घोड़ेको शमलार्क़के घोड़ेके साथ मिला दिया और बिजलीकी-सी गतिसे उसके कमरबन्दमें हाथ डालकर उसे हवामें उठा लिया। एक तरफ़ हर्ष-ध्वनि थी, दूसरी तरफ़ भयका चीत्कार। एक तरफ़ जीतके लक्षण थे, दूसरी ओर हारकी आशंका। फ़रऊनने थोड़ी देर अपने दुश्मनको हाथपर उठाए रखा, इसके बाद पूरे ज़ोरसे ज़मीनपर पटक दिया—इस समय वह चाहता तो उसे क़त्ल भी कर सकता था। मगर फ़रऊनने उसे क़त्ल न किया।

शमलार्क़की हब्शी सेनाने क़ौल-क़रारको भूलकर फ़रऊनपर हमला कर दिया। मगर फ़रऊनने अब भी हिम्मत न हारी और जब क्रोधसे उनपर अपना शेर घोड़ा छोड़ा तो सब तितरबितर हो गए, और जो भी सामने आया, कट गया, या पीछे हट गया। फ़रऊनके सिपाही दुश्मनके इस कपट-व्यवहारपर हैरान थे और अभी अपने बादशाहकी मददको आगे न बढ़ने पाए थे कि वह एक हब्शीकी तलवारसे घायल हो गया। फ़रऊनका घोड़ा अपनी पशु-बुद्धिसे स्थितिको समझ गया और अपने मालिकको युद्ध-भूमिसे ले उड़ा। थोड़ी देर बाद फ़रऊनका बेसुध शरीर दूर फ़ासिलेपर नील नदीके किनारे पड़ा था। मगर इस हालमें भी उसका स्वामि-भक्त घोड़ा उसके पास खड़ा था और उसके फिर उठनेकी प्रतीक्षा कर रहा था।

उधर शमलार्क़की देहका बन्द बन्द दुखता था, मगर वह फिर भी उठकर घोड़ेकी पीठपर चढ़ बैठा और युद्ध होने लगा। लेकिन मिस्रके सिपाही फ़रऊनके न होनेसे मन हार बैठे थे। उनका साहस मर चुका था और उनकी भुजाओंकी ताक़त ठंढी हो चुकी थी। यहाँ तक कि जब रातका अंधेरा आकर दोनों तरफ़के सिपाहियोंके बीचमें खड़ा हो गया, मिस्रके सिपाही मैदान छोड़कर भाग आए और उन्होंने शहरका दरवाजा बन्द कर लिया।

८

दूसरे दिन शमलार्क़के सिपाही, अपने देशके रिवाजके अनुसार, जलती हुई अँगीठियाँ अपने सिरोंपर रखे सीबाके दरवाज़ेपर पहुँचे, इसका मतलब यह था कि वह सुलहकी शर्तें लेकर आए हैं। नगर-रक्षकने अपनी तसल्ली करके दरवाज़ा खोला और उन्हें अन्दर आनेकी आज्ञा दी। वे अंदर आ गये।

मोर-महलके द्वारपर फ़रऊनके प्रधान-मंत्री और पुरोहितने शमलार्क़के दूतोंका स्वागत किया। सामने खुले मैदानमें लोगोंकी भीड़ खड़ी थी आर सुनना चाहती थी कि हब्शी बादशाहने क्या शर्त भेजी है।

सबसे पहले मिस्रका और इसके बाद हब्शियोंका राष्ट्र-गीत गाया गया और जो वीर मारे गए थे, उनके माता-पिताओंको बधाई दी गई। इसके बाद शमलार्क़के प्रधान दूतने खड़े होकर अपनी अँगीठीका धुआँ अपने मुँहपर मला और ऊँची आवाज़से कहा—फ़रऊन अमनस मर गया है, अब मिस्रके निवासियोंसे हमारी कोई लड़ाई नहीं। मगर युद्धका मूल कारण अभी मिस्रमें है और जब तक उसे हमारे हवाले न कर दिया जायगा, लड़ाई बंद न होगी। इस लड़ाईका मूल कारण एक गुलाम लड़की है, और वह त्यूनस है। हमारा बहादुर बादशाह चाहता है कि आप लोग उसे हमारे हवाले कर दें। लड़ाई इसी समय बन्द हो जायगी और हमारे सिपाही शहरका घेरा उठा लेंगे। मिस्र फ़ैसला करे, वह क्या चाहता है?

प्रधान दूत यह कहकर बैठ गया। जवाबमें कुछ देर सन्नाटा रहा, इसके बाद प्रधान मंत्री, युद्ध-सचिव और राज-पुरोहितने आपसमें

परामर्श किया और राज-पुरोहित महलके अंदर चला गया। लोगोंके दम रुक गए। वे सोचने लगे, देखें अब क्या होता है! क्या राज पुरोहित त्यूनसको बुलाने गया है? क्या उन्होंने देश-हितके लिए त्यूनसको हब्शियोंके सुपुर्द करना मंजूर कर लिया है?

राज-पुरोहित बाहर आया। प्रधान-मंत्रीने खड़े होकर कहा—इसका निश्चय मिस्रकी मलिका आप करेंगीं।

और अभी यह शब्द हवामें गूँज ही रहे थे कि महलका दरवाज़ा फिर खुला और त्यूनस अपनी सबसे .खूबसूरत पोशाक पहने बाहर निकली। इस समय उसका चेहरा फूलके समान खिला हुआ था, और उसपर बसन्तकी बहार खेल रही थी। लोगोंका ख़्याल था, वह उदास होगी, उनका यह ख़्याल ग़लत निकला। वह इस समय .खुश थी।

त्यूनस बाहर आई। ऐसे जैसे अँधेरी रातमें चाँद आता है, जैसे कविकी कल्पनामें अलंकार आता है, ऐसे जैसे पत-झड़में वसन्त आता है। हब्शी बादशाहके हब्शी दूतोंने इस हृदयग्राही रूप और यौवनकी छटाको देखा तो उनके दिल भी धड़कने लगे, और युद्ध-सचिव और प्रधान-मंत्रीको भी अपना काम मुश्किल मालूम होने लगा।

मगर लोगोंकी भीड़पर त्यूनसके रूपका कोई असर न हुआ। लम्बे-चौड़े मैदानके अँधेरेको एक दीपक दूर नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी देह और आत्माकी सम्पूर्ण शक्तियोंसे चिल्लाकर कहा—मलिका, हमारे बाल-बच्चोंका ख़्याल कर, हमारी स्त्रियोंका ख़्याल कर। कुछ लोग बोले—हमें आरामसे जीने दे।

कुछ आदमियोंने कहा—अपने लिए सारे देशको संकटमें न डाल।

कुछ बोले—जो कुछ कह, सोचकर कह।

एक आध आवाज़ आई—जहाँसे आई है, वहीं चली जा। तेरी जगह महल नहीं है।

युद्ध-सचिवने खड़े होकर हाथ उठाया और लोगोंको शांत होनेका

इशारा किया। इस बीचमें त्यूनस आगे बढ़ चुकी थी, और प्रधान-मंत्रीसे धीरे धीरे सलाह कर रही थी। जब लोग चुप हुए, और एक नाज़ुक महिलाके लिए अपनी आवाज़ भीड़ तक पहुँचनेकी संभावना दिखाई दी, तो त्यूनसने अपनी जवान गरदन उठाई और अपनी जादूगर आँखोंसे लोगोंको देखकर कहा—मैं नहीं चाहती थी कि यह युद्ध हो। मगर फ़रऊनने मेरा कहा न सुना, और युद्ध शुरू कर दिया। और मैं अब भी नहीं चाहती कि युद्ध होता रहे। और चूँकि अब इसका फ़ैसला करनेवाला फ़रऊन नहीं, मैं हूँ, इसलिए मैं फ़ैसला करती हूँ कि यह ख़ून-ख़राबा नहीं होगा और देशका अमन-अमान देशको वापस मिल जायगा।

लोगोंने चिल्लाकर कहा—त्यूनस देवी है। त्यूनस जीती रहे। त्यूनसने हमें बचा लिया।

प्रधान मंत्रीने फिर हाथसे इशारा किया और सारे लोग चुप होकर सुनने लगे।

त्यूनसने कहा—मैं अपने आपको शमलार्क़के सुपुर्द करनेको तैयार हूँ। मगर मैं चाहती हूँ कि मिस्रके बेटे उस प्रेम और श्रद्धाका अनुभव करें जो मेरे मनमें मिस्रके लिए है, और जिससे प्रेरित होकर मैं मौतके मुँहमें जा रही हूँ।

यह कहते कहते त्यूनसकी आँखोंमें नशा-सा छा गया और उसके शब्द उसके होठोंपर जम गए। इसके बाद उसने सिर उठाया और धीरे धीरे पीछे मुड़कर शमलार्क़के दूतोंके सामने अकड़ कर खड़ी हो गई। यह इशारा इस बातका था कि वह उनके साथ चलनेको तैयार है।

युद्ध-सचिव पुरोहित और प्रधान मंत्री तीनोंकी आँखें सजल हो गईं, और वह उस सज़ाका ख्याल करके काँप गए, जो शाह शमला-र्क़के क़ैद-ख़ानेमें त्यूनसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

इतनेमें एक आदमी भीड़को चीरता हुआ आगे बढ़ा और वहाँ आकर खड़ा हो गया, जहाँ त्यूनस शमलार्कके दूतोंके सामने खड़ी थी। इस समय उस आदमीका दम फूला हुआ था और उसकी आँखोंसे आगकी चिन्गारियाँ निकल रही थीं। यह वीर रेमफ़स था जो युद्धमें दिल-दिलेरी और जी-जानसे लड़ता रहा था, और जिसकी भुजाओंने दुश्मनके छक्के छुड़ा दिए थे। सारे लोग उसकी तरफ़ देखने लगे। प्रधान मंत्री और राज-पुरोहितको अंधकारमें आशाकी किरण दिखाई दी। त्यूनसकी दृढ़ता उसे निर्बल होती मालूम हुई और लोग कान लगाकर सुनने लगे।

रेमफ़सने अपने गलेकी पूरी शक्तिसे कहा—मिस्रके रहनेवालो, ज़रा सोचो, यह क्या हो रहा है, और यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम्हें इस बातका भय नहीं कि तुम्हारी भावी संतान तुम्हें क्या कहेगी और तुम्हारे क्या क्या नाम रखेगी? यह स्त्री कलतक चाहे गुलाम लड़की रही हो, मगर आज तुम्हारी मलिका है और तुम्हारे बादशाहकी बीवी है। इसका अपमान तुम्हारे देशका अपमान और इसकी बे-इज्ज़ती तुम्हारे बादशाहकी बे-इज्ज़ती है। मेरा सिर शर्मसे झुका जाता है, जब मैं देखता हूँ कि यह अपमान तुम्हारा दरवाज़ा खटखटाता है, और तुम चुप-चाप खड़े मुस्कराते हो और खुश होते हो। वीर मा-बापों-के कायर बच्चो, अगर तुम्हारे दिलमें शर्म-हयाका एक परमाणु भी बाक़ी है, तो इस स्त्रीकी इज्ज़तको अपनी माकी इज्ज़त समझो, इसे अपनी मलिका मानो, और जंगली बादशाहके जंगली दूतोंसे कह दो, कि जाओ, हम तुम्हारी बातका जवाब युद्ध-भूमिमें तलवारसे देंगे। इनसे कह दो कि तुम्हारे अपवित्र हाथ हमारी मलिकाकी पवित्र चादरको उस दिन छू सकेंगे, जिस दिन मिस्रकी भूमिपर कोई आदमी जीता जागता न होगा। उठो, अमन-अमान और आराम-विश्रामकी आशाको आग लगा दो, अपने लहूकी गरमीको ज़िन्दा करो, और अपने शस्त्र-अस्त्र लेकर इन असभ्य जंगलियोंको मिस्रकी सीमासे दूर भगा दो। दुनियाका इतिहास तुम्हारे साहसकी प्रशंसा करेगा।

लोगोंमें शोर मच गया। यह वक्तृता न थी, एक बिजली थी, जो एक एक देहमें आग लगा गई। कोई आँख न थी, जो क्रोधपूर्ण न हो, कोई दिल न था जो व्याकुल न हो, कोई दिमाग़ न था, जो जोशमें न हो। अभी अभी लोग त्यूनसके विरुद्ध थे, अभी उसके पक्षमें हो गए। उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर कहा—हमारी मलिका हमारी मा है। हमारी मलिका हमारी इज़्ज़त है। जब तक हमारी रगोंमें लहू है, उसका अपमान कोई नहीं कर सकता।

प्रधान मंत्रीने उठकर लोगोंको शांत किया और ऊँची आवाज़में पूछा—मिस्रके बेटे क्या चाहते हैं?

जवाब मिला—हम अपनी मलिकाकी इज़्ज़त चाहते हैं।

प्रधान-मंत्रीने फिर पूछा—कोई यह भी चाहता है कि मलिका शमलाक़के हवाले कर दी जाए?

जवाब मिला—कोई नहीं चाहता।

रेमफ़सने ज़ोरसे कहा—मिस्रकी फ़तह हो!

लोगोंने सुरमें सुर मिलाया—मिस्रकी फ़तह हो!—मिस्रकी फ़तह हो!

राज-पुरोहित त्यूनसको आदर और इज़्ज़तके साथ महलके अंदर ले गया। हब्शी दूत अपनी अपनी अँगीठियोंकी आग बुझाकर वापस चले गए, जिसका मतलब यह था कि सुलह-सफ़ाईकी बात-चीत रह गई है।

दूसरे दिन फिर युद्ध हुआ और पूरे ज़ोरसे हुआ। शमलाक़के सिपाही जानपर खेल रहे थे। उनके पास भुजाओंका बल और हृदयका साहस था, मगर रेमफ़सकी जोशीली बातोंका मुक़ाबिला करनेवाली चीज़ उनके पास न थी। वह आज नंगी कटार बना हुआ था। जिधर झुकता था, परेके परे साफ़ कर जाता था और फिर कहीं टिकता न था। अभी यहाँ, अभी वहाँ। अभी सामने, अभी आँखोंसे

ओझल। वह गिरतोंको सँभालता था, उभारता था, ललकारता था और मरे हुए हौसलोंको ज़िन्दा कर देता था। आज वह हाड़-मांसका आदमी नहीं था, जीती-जागती बिजली बना हुआ था। आज वह चलता-फिरता जादू बना हुआ था, जो जिधर जाता है जोश और जीवन छिड़कता जाता है। देखते देखते बाज़ीका पाँसा पलट गया। हारे हुए जीत गए, जीते हुए हार गए। और केवल हारे ही नहीं, भाग गए। और साँझके समय सिपाही शहरको लौटे तो उनके चेहरे विजयकी खुशीसे लाल थे, और उनके आगे आगे वीर रेमफ़सका रथ चला आता था।

अब त्यूनस मिस्रकी मलिका-महारानी थी, और चूँकि फ़रऊन अमनस मर चुका था, इसलिए उसे अख़्तियार था कि राज-सिंहासनके लिए एक फ़रऊन और अपने लिए एक पति पसन्द करे। जो कल तक लौंडियोंकी लौंडी थी, वह आज मिस्रका बादशाह चुन सकती थी।

सौ दरवाज़ोंकी प्राचीन नगरी सीबाके अमीर-वज़ीर राज-महलकी सीढ़ियोंपर जमा हुए। उनके लिए चौकियोंका प्रबंध था। मगर जन-साधारणके लिए ऐसा प्रबन्ध होना असंभव था। इसलिए वह महलके सामनेके मैदानमें बैठ गए। वह देखना चाहते थे कि आज किसकी क़िस्मत जागती है और मलिका त्यूनस किसको मिस्रका फ़रऊन चुनती है।

आख़िर धीरे धीरे महलका दरवाज़ा खुला, और रूपवती त्यूनस एक सौ पाँच कुँवारी सुन्दरियोंके साथ, जो ब्याहका मनको मोह लेनेवाला सुहाग-गीत गा रही थीं, बाहर आई। हज़ारों आँखोंने उसे प्यासी दृष्टिसे देखा, और हज़ारों ज़बानोंने ज़ोरसे चिल्लाकर कहा—आसमानके महान् देवता हमारी सौभाग्यवती मलिकाको सलामत रखें।

राज-पुरोहितने त्यूनसको सिंहासनके आधे हिस्सेपर बैठनेका इशारा किया और कहा—मलिकाकी फ़तह हो!

त्यूनस सिंहासनके आधे हिस्सेपर संकोचसे बैठ गई।

राज-पुरोहितने मिस्रके रिवाजके अनुसार पहले देवताओंसे प्रार्थना की, फिर मिस्रका राष्ट्र-गीत गाया गया, और फिर स्वर्गीय फ़रऊन अमनसका फ़ैसला होने लगा।

९

पुरोहितने कहा—नए फ़रऊनका चुनाव करनेसे पहले मिस्रका रिवाज है कि हम पुराने फ़रऊनके शासन-कालकी आलोचना करें, और जिस सिंहासनपर बैठकर वह हमारे मुक़दमें सुनता रहा है, उसी सिंहासनके सामने बैठकर हम उसका मुक़दमा सुनें। क्या किसीको स्वर्गीय फ़रऊनके न्यायके विरुद्ध कोई शिकायत है? मैं मिस्रका राज-पुरोहित उसे फ़रऊनके सिंहासनके सामने पुकारता हूँ और मिस्रके स्वतंत्र सिपाहियोंका यह दरबार उसके प्राणोंका रक्षक है। अगर किसीको शिकायत हो, तो आगे बढ़े।

सैकड़ों स्त्रियाँ आगे बढ़ीं। उनकी आँखोंमें आँसू थे, और चेहरे ग़रीबीका खुला हुआ नमूना थे। उनमेंसे एकने कहा—हम वह अभागी स्त्रियाँ हैं जिनक पतियोंने फरऊनका ख़ज़ाना-घर बनाया था, और जिन्हें फ़रऊनने नीलके गहरे पानीमें डुबाकर मार दिया था। उनका दोष केवल यह था, कि उन्होंने ख़ज़ाना-घर बनाया था।

यह कहते कहते वह विधवा रोने लगी। उसके साथ ही दूसरी विधवाएँ भी रोने लगीं। लोग भी रोने लगे।

पुरोहितने उन्हें पीछे हटनेकी आज्ञा दी, और कहा—कोई और कुछ कहना चाहता है?

लोगोंमें फिर हलचल हुई और कई बच्चे सीढ़ियोंपर चढ़ आए।

उनके साथ एक बूढ़ा भी था, जिसके पाँव मुशकिलसे उठते थे, और जिससे अपने हाथकी लाठी भी न सँभलती थी। उसने कहा—यह बच्चे उन अमीरोंके हैं, जिनके सिर काटकर फ़रऊनने अपने ख़ज़ानेको भरा था। और उनका दोष केवल यह था कि वह अमीर थे।

पुरोहितने उन्हें भी पीछे हटनेका इशारा किया और कहा—कोई और कुछ कहना चाहता है?

अबके एक बुढ़िया आगे बढ़ी। उसे आँखोंसे दिखाई भी न देता था। उसने कहा—मैं उस चार सालके अभागे बच्चेकी मा हूँ जिसे फ़रऊनने अपने महलकी छतसे नीचे फेंक दिया था। उसका दोष केवल यह था कि वह अबोध बालक भूलसे फ़रऊनके महलके अंदर चला गया था।

लोग सिसकियाँ भरने लगे। जो दिलके ज्यादा नर्म थे, वह फूट फूटकर रोने लगे। त्यूनस भी रो रही थी, राज-पुरोहित भी रो रहा था, प्रधान-मंत्री भी रो रहा था।

और दीन-दुखी आते गए, और फ़रऊनकी बेरहमीकी कहानियाँ सुनाते गए, और लोग रोते गए।

आख़िर पुरोहितने अपना लकड़ीके समान खुश्क बुड्ढा हाथ उठाया और कहा—बस।

इसके साथ ही उसने कहा—फ़रऊन अमनसके ज़ुल्मोंकी पाप-सूची बहुत बड़ी है। हम बहुत कुछ सुन चुके, और जो बाक़ी है, उसे सुननेके लिए न हमारे पास समय है, न सुननेका कुछ लाभ है। अब हम यह देखना चाहते हैं, कि क्या कोई ऐसा आदमी भी है, जिसके साथ फ़रऊनने भलाई की हो? अगर है, तो वह आगे बढ़े।

चारों तरफ़ सन्नाटा था। लोग एक दूसरेकी तरफ़ देख रहे थे। दो-चार दस क्षण गुज़र गए। मगर कोई आदमी आगे न बढ़ा। यहाँ तक कि राज-पुरोहित, युद्ध-सचिव, प्रधान मंत्री और फ़रऊनके निजी सलाहका-

रोमेंसे भी किसीने उसके हकमें दो शब्द न कहे। फ़रऊनने दुश्मन हज़ारों बनाए थे, दोस्त एक भी न बनाया था। त्यूनसको फ़रऊनपर बेअख्तियार दया आई। वह सारी दुनियाके लिए हिंस्र पशु था, मगर उसके लिए कितना दयालु, सहृदय, कितना विनयशील था! वह अपनी चौकीसे उठना चाहती थी कि पुरोहितने उसका मतलब समझ लिया, औ उसे यह कहकर फिरसे चौकीपर बिठा दिया—यहाँ मलिकाकी गवाही नहीं चलेगी।

त्यूनसके मनकी बात मनहीमें रह गई। सोचती थी, मेरे साथ जिसने इतनी नेकी की, मैं उसके लिए प्रशंसाके दो शब्द भी न कह सकी।

पुरोहितने फिर कहा—क्या इस भरी सभामें एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जिसके साथ फ़रऊनने भलाई की हो?

जवाबमें फिर वही सन्नाटा, वही चुप्पी। अबके भी कोई आदमी आगे न बढ़ा। पुरोहितने कहा—फ़रऊन अमनस नर-पिशाच था। उसने देवताओंकी मरज़ीका निरादर किया और उनके कोपको ठोकर मारकर जगाया। फलस्वरूप उसे गुमनामकी मौत नसीब हुई। उसकी प्रजाने उसके सिंहासनके सामने उसके अत्याचारोंकी बातें सुनाईं, और उन बातोंका किसीने विरोध न किया। इसलिए मैं मिस्रका राज-पुरोहित मिस्रकी प्रजाके सामने कहता हूँ कि फ़रऊन अमनसके नामको मिस्रके सुनहरे इतिहासमें जगह न दी जाएगी, न उसकी यादगार बनाई जाएगी, न मिस्रके निवासी उसे कभी याद करेंगे। मूँगे और मोती और कमलके फूलोंके स्वर्गमें उसे स्थान न मिलेगा, और वह सदाके लिए आत्माके इन पदार्थोंके लिए तरसता रहेगा।

पुरोहितका यह फ़रमान सुनकर सभी लोग खुश हुए। केवल त्यूनसका आत्मा दुःखी हुआ, और उसकी आँखोंसे शोकका पानी बह निकला।

अब पुरोहितने त्यूनसकी तरफ़ देखा और अपना सूखा हुआ हाथ हवामें

फैलाते हुए कहा—मिस्रकी मलिका, देवताओंने तुझपर कृपा की है कि तू मिस्रकी मलिका है और तुझे इस योग्य समझा है कि फ़रऊनके चुनावका काम तेरी दया और दानाईपर छोड़ा जाए। मगर खुदाके लिए उन आँसुओंको न भूल, जो फ़रऊन अमनसने बेक़सूर गालोंपर बहाए हैं, और उन आहोंकी तरफ़से आँखें बन्द न कर, जिनका जवाब फ़रऊन अमनसके पास भी नहीं है। मिस्रकी भलाईको अपनी भलाई समझ, मिस्रके नादान बच्चोंका ख़याल कर और मिस्रके भविष्यको साधारण बात न जान। आसमानके अमर देवता तेरे दिल और दिमाग़को प्रकाश दें, मिस्रके लोगोंके लिए मिस्रके सबसे वीर बेटेको फ़रऊन चुन, जो तेरे साथ तख़्तपर बैठे, और तेरे साथ महलमें रहे।

पुरोहित यह कहकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद परी-चेहरा त्यूनस अपनी चौकीसे उठी और बोली—मिस्रके रहनेवालो, मुझे बताओ, यह लड़ाई तुम्हारे लिए किसने जीती है? जब तुम हारकर शहरके अंदर आ छुपे थे, और जब तुम्हारे अपमानमें कोई कसर बाक़ी न रह गई थी, उस समय तुम्हें तुम्हारा भूला हुआ धर्म किसने याद कराया? जब तुम्हारी मलिका अपने आपको हब्शी बादशाहके हवाले करनेको तैयार हो गई थी, तो उसको इस अपमानकी मौतसे किसने बचाया?

लोगोंने एक-सुर होकर जवाब दिया—रेमफ़सने! रेमफ़सने।

त्यूनस—तुम्हारे देशमें सबसे नेक, सबसे सहनशील, सबसे वीर कौन है? वह कौन है, जिसने मिस्रकी किसी औरतको पापकी आँखोंसे नहीं देखा? वह कौन है जिसकी तलवार दीन-दुखियोंकी सहायताके लिए सदा उठती रही है? मुझे बताओ, वह कौन है?

लोगोंने फिर चिल्लाकर कहा—रेमफ़स।

त्यूनिस—तो फिर क्या तुम खुश न होगे, अगर मैं उसे तुम्हारा फ़रऊन चुनकर तुम्हारे सामने पेश करूँ?

लोगोंकी .खुशीका ठिकाना न था। उन्होंने कहा—त्यूनस, स्वर्गके देवता तुझे सलामत रखें, तूने मिस्रको मिस्रका सबसे बड़ा आदमी दिया है। तूने मिस्रकी इज़्ज़त बढ़ा दी है।

शहनाइयाँ बज रही थीं। मिस्रके नए बादशाहकी फ़तहके नारे लग रहे थे, और राज-पुरोहित रेमफ़सके सिरपर ताज रख रहा था। त्यूनस कनखियोंसे रेमफ़सको देखती थी और मुस्कराती थी, और लोग .खुशीसे पागल हो रहे थे। सोचते थे, आख़िर हमें फ़रऊन अमनसके .खूनी पंजेसे छुटकारा मिला। अब वह संकट न होंगे, दुःख न होंगे, अत्याचार न होंगे।

१०

एक सौ एक दिनके बाद सीबामें एक ख़ास खुशियोंकी रात आई और अपने साथ इतने दिए और बत्तियाँ लेकर आई कि सीबाके आसमानने कम देखीं होंगीं। सारे शहरमें दिये जल रहे थे, सारे शहरमें रोशनी हो रही थी। अगर उस दिन कोई सीबाको रोशन-पुरी कह देता, तो ज़रा भी अत्युक्ति न होती। उस दिन उस रोशन-पुरीका हर एक घर आनंद-सागर बना हुआ था, जिसकी लहरोंमें लोग तैरते फिरते थे। कहीं अतिशबाज़ीके तमाशे होते थे, कहीं नाच-रंगके जलसे, कहीं साहित्यिकोंकी सभाएँ,—यह रेमफ़सके राज्या-भिषेककी रात थी, और रेमफ़सने शाही ख़ज़ानेका मुँह खोल दिया था ताकि वह रात इतिहासमें यादगार-रातका नाम पा जाए।

ऐसी रंग-रस और शान-शोभाकी रात थी। रेमफ़स और त्यूनस राजमहलके झरोखेसे बाहरकी दुनियाकी .खुशियाँ देख रहे थे और

अपने सुन्दर भविष्यको अपने आमने सामने पाकर खुश हो रहे थे कि महलकी ड्योढ़ीमें, जहाँ सैकड़ों भिखमंगे नए बादशाहका ब्याह-भोज खानेको ज़मा थे, एक और भिखमंगा आया। उसके हाथ-पाँव काँप रहे थे, कपड़े फटे हुए थे और सिरके बाल मिट्टी पड़ने और पड़ते रहनेसे आपसमें इस तरह चिकट गए थे कि उन्हें अलग करना कठिन था। यह भिखमंगा दूसरे हर एक भिखमंगेको हैरानीसे देखता था और गिरता पड़ता अंदर बढ़ा चला जाता था। दूसरे भिखमंगे उसकी तरफ़ न देखते थे, न देखनेकी परवाह करते थे और खाने-पीनेमें लीन थे। यहाँ तक कि यह भिखमंगा आँगनके दरवाज़ेपर जा पहुँजा।

पहरेदारने उसे रोका और कहा—आगे कहाँ जाता है? आगे जानेकी मनाही है।

उस आदमीने पहरेदारको बड़े ध्यानसे देखा, और फिर उन भिखमंगोंकी तरफ़ मुड़कर जो वहाँ जमा हो गए थे, कहा—मुझे किसकी मनाही है? मैं फ़रऊन अमनस हूँ।

भिखमंगे ज़ोरसे कहकहा लगाकर हँसे, देर तक हँसते रहे और इसके बाद उस आदमीके आसपास जमा हो गए, जो अपने आपको फ़रऊन अमनस समझता, कहता और बताता था।

भिखमंगोंने उसे छेड़ना और तंग करना शुरू किया, मगर वह फिर भी बारबार कहता था—मैं फ़रऊन अमनस हूँ।

एक भिखमंगेने उसके कंधेपर लाठी मारकर कहा—मगर यार, तेरा वह ताज कहाँ है?

इसके जवाबमें उस भिखमंगेने उस भिखमंगेको करुणा-दृष्टिसे देखा, और कुछ न कहकर अपनी आँखें ऊपर उठा दीं। एक दूसरे भिखमंगेने अपना प्याला लेकर उसके सिरपर उलट दिया, और कहा—यह लो, इसका ताज भी देख लो!

एक दूसरा भिखमंगा बोला—जैसा मुँह, वैसा तमाचा।

तीसरेने आवाज़ा कसा—जैसा राजा वैसा ताज।

भिखमंगे हँस रहे थे, वह आदमी अपने सिरपर रखे हुए प्यालेको हाथसे छू छूकर देख रहा था। प्यालेका शोरबा उसके गालोंपर बह रहा था। पहरेदार यह विनोदपूर्ण दृश्य देखता था, और मुस्कराता था। अंदर त्यूनस और रेमफ़स बैठे .खुशियाँ मना रहे थे।

इतनेमें महलका दरवाज़ा खुला और अन्दरसे पुरोहित निकला। उसे देखकर अजनबी भिखमंगा खड़ा हो गया, और उसकी तरफ़ बढ़ा। पुरोहितने भी उसे देखा, और शोक, आश्चर्य, और खुशी, क्रोधके मिले जुले भावसे चिल्ला उठा—फ़रऊन अमनस, तू कहाँ?

हाँ, यह अभागा सचमुच फ़रऊन-अमनस था, जो नीलके किनारे गिरा था, मगर मरा न था। उसने अपनी बाँहें पुरोहितके गलेमें डाल दीं, और पागलोंके समान हँसकर कहा—तुमने मुझे पहचान लिया, मगर यह फ़क़ीर न पहचानते थे। यह मुझपर हँसते थे।

फ़क़ीरोंने वह देखा, जो देखनेकी उन्हें सुपनेमें भी आशा न थी। वह चीख़ मारकर उठे, और अपने पैरोंकी सम्पूर्ण शक्तिसे बाहर भाग गए। वह फ़रऊनसे डरते थे।

पुरोहितने फ़रऊनकी तरफ़ देखा, और उसकी पहली शान और इस दशाका ख्याल करके वह अवाक् रह गया। काल-चक्रकी हज़ारों कहानियाँ मशहूर हैं, मगर ऐसी कसक-कहानी किसीने आजतक न सुनी होगी—जो कलतक देवता था, लाखों आदमियोंका भाग्य-विधाता था, वह आज भिखमंगोंके कपड़ोंमें भिखमंगा बना खड़ा था, और पुरोहितके सिवाय और कोई उसे पहचानता न था।

पुरोहितने अफ़सोसकी ठंडी आह भरी, और कहा—फ़रऊन, तेरे दिन गुज़र गए। मिस्रकी प्रजाने तुझे गुनहगार घोषित कर दिया है। अब तू बादशाह नहीं बन सकता।

फ़रऊनने पुरोहितका .खुश्क हाथ जो हवामें फैला हुआ था, अपने

हाथमें ले लिया, और कहा—मगर त्यूनस मेरी स्त्री ! मैं उसे चाहता हूँ। मुझे बादशाही नहीं चाहिए।

पुरोहितने सोचकर जवाब दिया—हाँ, त्यूनस तेरी चीज़ है; तू उसे माँग सकता है। वह तेरी ब्याहता स्त्री है, तू उसका पति है, और अभी जीता है। और मिस्रका कानून तेरे हकमें है।

फ़रऊन खुशीसे नाचने लगा—तो मुझे और किसी चीज़की ज़रूरत नहीं, मुझे मेरी त्यूनस दिला दो।

पुरोहितने फिर एक ठंडी आह भरी, और कहा—आ।

दोनों महलके अंदर गए, और वहाँ जा पहुँचे, जहाँ त्यूनस और रेमफ़स बैठे प्यार-मुहब्बतकी रंगीन बातें कर रहे थे।

११

एकाएक दरवाज़ा खुला, और गुलाम लड़कीने सिर झुकाकर कहा—राजपुरोहित और फ़रऊन अमनस आए हैं।

—फ़रऊन अमनस !

रेमफ़स और त्यूनस दोनोंके सिर घूम गए। क्या यह भी हो सकता है ? मगर अभी उनकी हैरानी दूर न हुई थी कि गुलाम लड़की सलाम करके बाहर चली गई और पुरोहित फ़रऊनको साथ लिये अंदर दाख़िल हुआ।

त्यूनस देखते ही फ़रऊनको पहचान गई, और चीख़ मारकर रेमफ़ससे चिमट गई। इस समय उसे ऐसा संदेह हुआ, जैसे

शहरकी सारी रोशनियाँ बुझ गई हैं, शहरका सारा संगीत बन्द हो गया है और शहरकी सारी .खुशियाँ मर गई हैं।

और यह उसके मनका वहम न था। शहरके लोगोंको जब मालूम हुआ, कि फ़रऊन-अमनस लौट आया है तो उन्होंने सारी खुशियाँ बन्द कर दी थीं।

रेमफ़सने फ़रऊनकी तरफ़ देखा।

"मेरी स्त्री मुझे दे दो, मैं और कुछ नहीं चाहता।" फ़रऊनने रेमफ़ससे कहा।

रेमफ़सने ज़ोरसे क़हक़हा लगाया और जवाब दिया—तुम्हारी स्त्री अब तुम्हारी स्त्री नहीं। अब वह मेरी मलिका है और मैं उसका बादशाह हूँ।

मगर पुरोहितने अपना हाथ हवामें फैलाया और रेमफ़ससे कहा—फ़रऊन रेमफ़स, देवताओंके नियमोंका निरादर न कर। यह ठीक है, कि अब यह मिस्रका बादशाह नहीं है, मगर त्यूनस इसकी स्त्री है, और मिस्रका धर्म इसके पक्षमें है।

रेमफ़सका लहू सूख गया। अगर उड़ते हुए पंछीको गोली मारी जाए, तो उसके पंख खुलेके खुले रह जाते हैं। उसी तरह रेमफ़सका क़हक़हा अधबीचहीमें टूट गया। मनोहर आनन्दोत्सवमें किसीने मंत्र पढ़ा और दुनिया भरकी शोभा काली हो गई। त्यूनस मूर्तिकी तरह चुप थी और फ़रऊन-अमनस खुशीसे दीवाना हो रहा था।

धीरे धीरे रेमफ़सको स्थितिका ज्ञान हुआ। उधर यह हृदय-बेधक समाचार पाकर लोग महलके सामने मैदानमें जमा हो रहे थे। रेमफ़सने आगे बढ़कर फ़रऊनके सामने घुटने टेक दिए और कहा—मुझसे तख़्त-ताज ले लो, मगर मेरे सीनेसे मेरा दिल जुदा न करो।

यह कहकर उसने अपना ताज उतारा, और फ़रऊनके हाथमें देकर कहा—लो अपना ताज।

मगर फ़रऊनने ताज लौटाकर और सिर हिलाकर जवाब दिया—बादशाही बहुत कर चुका, अब प्यारकी चाह है। ताज तुम रखो। मिस्र और मिस्रके लोग तुम्हें पसन्द करते हैं। मुझे मेरी त्यूनस दे दो। मैं और कुछ नहीं चाहता। और पुरोहित कह चुका है कि वह मेरी है।

यह कहते कहते उसने त्यूनसका हाथ पकड़ लिया। त्यूनसकी सारी देह काँप गई। इस तरह कोई पंछी कसाईकी छुरी तले भी कम तड़पा होगा। उसने अपना हाथ छुड़ाना चाहा, मगर फ़रऊनने हाथ न छोड़ा, और कहा—तू मेरी स्त्री है।

रेमफ़सने फिर कहा—फ़रऊन, तख़्त-ताज ले ले। तुझे त्यूनस जैसी हज़ारों मिल जाएँगी, मगर मुझसे मेरा संसार न छीन। हम एक दूसरेके बिना जीते न बचेंगे।

और जाने किस ख़्यालसे फ़रऊनने ताज ले लिया, और शाही पलंगपर बैठ गया। शायद सोचता होगा, मिस्र मुझे बादशाह नहीं बना सकता, मगर रेमफ़स मुझे बादशाह बना सकता है। क्यों कि वह बादशाह है, और जो चाहे कर सकता है, और उसकी मरज़ीको पुरोहित भी नहीं टाल सकता। और जब वह फ़रऊन बन जाएगा, तो उसके लिए त्यूनसको छीन लेना ज़्यादा मुश्किल न होगा।

मगर यह उसकी भूल थी। क्योंकि रेमफ़स एक बार फ़रऊन बन चुका था, और त्यूनस उसकी स्त्री थी, और एक फ़रऊनकी स्त्रीको उसके जीते-जी दूसरा फ़रऊन भी नहीं छीन सकता : यह मिस्रका राज-नियम था।

अगर मानव-हृदयका अध्ययन चेहरेसे किया जा सकता है, तो त्यूनस और रेमफ़स ताज-तख़्त देते समय भी उतने ही खुश थे जितने लेते समय। रेमफ़सने त्यूनसका हाथ अपनी बग़लमें दबा लिया, और उसे खींचता हुआ महलसे बाहर ले गया।

वहाँ राज-महलकी सीढ़ियोंके सामने खुले मैदानमें हज़ारों लोग जमा थे, और यह सुननेको अधीर हो रहे थे कि फ़रऊनकी आमद क्या गुल खिलाती है ? जब उन्होंने रेमफ़स और त्यूनसको देखा कि उनके मुँहपर खुशी है, तो उन्हें विश्वास हो गया कि फ़रऊन अमनसकी बातको पुरोहितने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने गगन-भेदी स्वरसे कहा—आसमानके देवता फ़रऊन रेमफ़स और मलिका त्यूनसको सलामत रखें।

रेमफ़स यह सुनकर मुस्कराया और ऊँची आवाज़से बोला—अब मैं फ़रऊन नहीं हूँ, फ़रऊन वही तुम्हारा पहला फ़रऊन अमनस है। देवताओंके नियमने मेरी त्यूनस मुझसे छीनकर उसको दिला दी थी, मगर मैंने तख़्त-ताज बेचकर उससे मलिका ख़रीद ली है। अब मैं फिर आपका वही रेमफ़स हूँ।

लोगोंकी आँखोंसे आग बरसने लगी। क्या उनका भाग्य-विधाता फिर वही निष्ठुर, अन्यायी, पाषाण-हृदय फ़रऊन अमनस है ? और यह सब कुछ करनेवाला रेमफ़स है ? अगर वह चाहता तो मिस्रके बेटे इस आततायीके अत्याचारोंसे बच सकते थे। मगर रेमफ़सने अपना ख़्याल किया, अपने देशका ख़्याल न किया; उसका धर्म था कि देशकी ख़ातिर अपने प्रेमका बलिदान कर देता। जनतासे आवाज़ आई—

तुमने अपनी परवाह की, मगर मिस्रका क्या बनेगा ?

तुम देश-द्रोही हो !

तुम मिस्रके दुश्मन हो !

तुम पापी हो !

तुम हत्यारे हो !

तुमने हमसे दग़ा किया है !

और रेमफ़स और त्यूनस बफरी हुई जनताके सामने बेबस अपराधियोंके समान खड़े थे। वह आग-भरे लोगोंको देखते थे और थर थर काँपते थे, और नहीं जानते थे कि अब क्या होगा। इतनेमें एक

आदमीने आगे बढ़कर कहा—यह देशका दुश्मन है, इसे पत्थर मारकर मार डालो, इसे क़त्ल कर दो।

दूसरे आदमीने कहा—इसने जिस त्यूनसके लिए सब कुछ किया है उसे भी मार दो।

इस बातने लोगोंपर वह असर किया जो चिनगारी बारूदके ढेरपर करती है। लोग क्रोधसे अंधे हो रहे थे। उनकी बुद्धि उनके बसमें न थी। वह नहीं जानते थे, क्या करें, और उस आदमीको कैसे दंड दें जिसने उनके भविष्यको अपने प्यारपर निछावर कर दिया था। इस बातने उनको रास्ता सुझा दिया। वह अपने अपने पैरोंपर झुक गए, और ज़मीनके पत्थर उखाड़ने लगे। वीर रेमफ़स काँपता था, मगर यह कँपकँपी अपने लिए नहीं, अपनी त्यूनसके लिए थी; और त्यूनस अबोध बालकके समान उसकी छातीसे चिमटी हुई थी। रेमफ़स बचनेके लिए चारों तरफ़ देखता था, मगर उसे कोई जगह दिखाई न देती थी। यहाँ तक कि महलका दरवाज़ा भी पुरोहितकी आज्ञासे बन्द कर दिया गया था। अब वह अंदर भी नहीं जा सकते थे।

रेमफ़सने कुछ कहना चाहा, मगर कौन सुनता था? 'मारो मारो' की आवाजोंमें उसकी आवाज़ किसीने न सुनी, और—पत्थर बरसने लगे। रेमफ़सने अपने हाथ फैलाकर त्यूनसकी फूल-देहको बचानेकी चेष्टा की, मगर इतने आदमियोंके सामने अकेला आदमी क्या कर सकता है? देखते देखते उसका सिर, छाती, कंधे सब घायल हो गए, और त्यूनसको बचाते बचाते वह आप भी सीढ़ियोंपर गिरकर बेहोश हो गया। यही सीढ़ियाँ थीं जिनपर कुछ दिन पहले इन्हीं लोगोंने घुटनोंके बल झुक झुककर इसी जोड़ेकी सलामतीके लिए नीले आसमानके अमर देवताओंसे प्रार्थनाएँ की थीं। और आज—दोनों बेसुध होकर गिरे, मगर लोगोंके मनकी अंधी आग शांत न हुई, और पत्थर बरसते रहे, यहाँ तक कि उनके शरीर पत्थरोंतले दब गए, और वहाँ मनों पत्थर जमा हो गए।

मगर पत्थर बरसते रहे।

१२

ऐसे जोश और गुस्सेके समय महलका दरवाज़ा खुला, और फ़रऊन बाहर निकला। लोगोंके हाथ जहाँ तक उठ चुके थे वहीं तक रह गए; और उनके गलेसे क्रोध और क्रूरताके जो शब्द निकल रहे थे वह उनके होठोंपर जम गए। लोग अब उसपर हाथ न उठा सकते थे। वह फ़रऊन था। उसके पास सिपाही थे, और उसकी आँखके इशारेमें मिस्रकी ईंटसे ईंट बजा देनेकी हत्यारी शक्ति थी। वह जो चाहता, कर सकता था।

उसने आगे बढ़कर अपने हाथोंसे पत्थर हटाए और प्रेमके अभागे जोड़ेको सुधमें लानेकी पूरी चेष्टा की। मगर उनको सुध न आई। यह देखकर फ़रऊनको इतना दुःख हुआ कि उसका दिल टूट गया, और वह अपनी पदवी और अपना रोआब भूलकर सबके सामने फूट फूट कर रोया। इसके बाद उसने अपने आपको सँभाला, और आँसुओंसे सनी हुई और भावुकतासे भरी हुई आवाज़में कहा—मिस्रके लोगो, तुम इतने निष्ठुर, इतने हृदय-हीन हो कि जो तुम्हारे लिए जान देनेको तैयार हो, उसे मारते हो, और इतने कायर और भीरु हो कि जो तुमपर दिन-रात अत्याचार करता है उसके हाथ चूमते हो। तुम तो इस योग्य हो कि तुम्हें पकड़कर जलती हुई आगमें फेंक दिया जाए और तुम्हारी चीखें सुनकर क़हक़हा लगाया जाय। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा यह महा अपराध माफ़ कर दिया जाए, तो एक और पत्थर उठाओ, और मेरा सिर भी चूर चूर कर दो। और मैं इक़रार करता हूँ कि तुम्हारा दोष माफ़ करके मरूँगा।

यह कहते कहते उसने अपना सिर झुका दिया, मगर मिस्रके किसी आदमीमें फ़रऊनपर हाथ उठानेकी हिम्मत न थी।

तब फ़रऊनने निराश होकर .खुद एक बड़ा-सा पत्थर उठाया और उसे हवामें उछालकर अपना सिर उसके नीचे रख दिया। और चूँकि उसे पातकी घोषित किया जा चुका था, और दूसरी बार उसका राज्या-भिषेक न होने पाया था, इसलिए उसका मृतक-संस्कार न किया गया। और उसकी लाशको नीलके गहरे पानीमें पानीके जानवरोंकी खुराक बननेके लिए फेंक दिया गया।

मगर आसमानके अमर देवताओंको यह पसन्द न था कि वीर रेमफ़स और सुन्दरी त्यूनस इस तरहकी नामुराद मौत मरें। इस लिए जब रात तीन पहर बीत चुकी तो मिस्रके राज-वैद्योंकी संजीवनी दवाओंने अपना चमत्कार दिखाया, और प्रधान मंत्रीने यह मुनादी कराके सारे शहरको खुशीसे हिला दिया कि रेमफ़स और त्यूनस बच गए हैं।

और दूसरी रात सौ दरवाज़ोंकी प्राचीन नगरी सीबामें फिर दीपमाला हुई, और रेमफ़स और त्यूनस महलके झरोखेमें खड़े अपनी प्रजाका आनंदोत्सव देखते थे, और खुश होते थे। और अब उनको फ़रऊन अमनसके लौट आनेका ज़रा भी भय न था।

(एक विदेशी चित्रद्वारा प्रेरित)

सदासुख

१

काँगड़ेकी सुन्दर और सुशीतल घाटियोंमें बैजनाथ एक छोटी-सी बस्ती है जहाँ हिन्दुओंका एक बहुत बड़ा तीर्थ है। यहाँ एक दिन प्रातःकाल लोगोंने देखा कि बाज़ारमें एक बूढ़ा परदेसी खड़ा है। यही सदासुख था।

सदासुख कौन था, यह कोई न जानता था। मगर वह कैसा था, यह सबको पहले ही दिन मालूम हो गया। उसकी शक्ल-सूरत भयानक थी, देखकर दिल दहल जाता था, मगर स्वभाव ऐसा मुलायम और मीठा था कि जी चाहता घंटों पास बैठे रहें। नारियल ऊपरसे सख़्त और खुरदरा होता है, मगर उसके अन्दरका पानी कितना मधुर और कितना गुणकारी होता है! वैसे देखनेको शायद उसका रंग इतना साफ़ न हो, पर उसमें जो मिठास है, वह चश्मेके पानीमें भी नहीं पाई जाती। यही हाल सदासुखका था।

उस दिनके बाद बैजनाथमें एक नये युगका प्रारंभ हो गया। सदासुख अनाथोंका बाप था, रोगियोंका वैद्य, ग़रीबोंका सहारा। चायके बाग़ीचोंमें काम करनेवाली असहाय स्त्रियोंको एक मददगार मिल गया। अब उनकी तरफ़ बुरी आँखसे देखनेका साहस किसीमें न था। किसीने उसकी तरफ़ ताका और सदासुखने उसकी गरदन दबा ली। पहले मुसाफ़िरोंके लिए वहाँ कोई अच्छी जगह न थी, अब आबादीसे ज़रा परे हटकर सदासुखका झोंपड़ा हर एकके लिए खुला

था, जैसे किसी वियोगीकी आँख हो, जो रातको भी बन्द नहीं होती। यह जगह पहाड़ी लोगोंके स्वभावके समान सादा थी, मगर मुसाफ़िरोंकी जो आव-भगत यहाँ होती थी, उसका बखान नहीं हो सकता। और इस सेवाकी तहमें अपना कोई स्वार्थ, कीर्तिकी इच्छा, संसारके यशकी अभिलाषा न थी। यह वह चन्दा न था जो दिनके समय हज़ारोंकी हाज़िरीमें दिया जाता है, यह वह सहायता थी जो छुपकर रातके अँधेरेमें की जाती है। यह वह सेवा न थी, जिसका उद्देश्य लोगोंसे वाह वाह लेना होता है। यह वह नेकी थी जो दरियामें डाल दी जाती है, और जिसे कोई नहीं देखता। यह परवानेकी कुरबानी न थी जिसे कवि देखते हैं, और कविता करते हैं। यह दानेकी कुरबानी थी, जो ज़मीनके नीचे अँधेरेमें मरता है, और जिसे कोई आँख नहीं देखती।

यह महात्मा बहुत अमीर न थे। उन्हें हर महीने दो सौ रुपएका मनीआर्डर आ जाता था। मगर उनका दिल बादशाह था। उनके झोंपड़ेसे कोई ख़ाली हाथ न लौटता था। ग़रीब मज़दूर, मुसाफ़िर, अबला स्त्रियाँ, जो कोई उनके पास जाता वह दिल खोलकर उसकी सहायता करते। लोग कहते थे, यह आदमी नहीं देवता है, चाहे तो मिट्टीसे सोना बना ले। बैजनाथके मन्दिरके देवता पुराने हो गए हैं, भगवानने नया देवता भेज दिया है। उनकी तरह इस देवताकी शक्ल सूरत भी काली और कठोर है, मगर मन-मन्दिरमें भगवानकी जोत जलती है। फ़र्क़ केवल इतना है कि वह देवता हमारी आँखोंके आँसू देखते हैं और फिर भी चुप रहते हैं, शायद कलियुगके प्रभावने उनके दिलसे भी दया-भाव छीन लिया है, मगर इस जीते जागते देवताका दिल प्रेम और दयाका सागर है। यह दूसरोंकी आँखमें पानी देखता है तो आप भी रोने लग जाता है। दूसरोंको बीमार देखता है तो आप भी बीमार हो जाता है। वह आसमानके देवता हैं, यह ज़मीनका फ़रिश्ता है! वह हमारे सामने रहते हुए भी हमसे दूर, हमारी दशासे बेसुध हैं। मगर यह देवता हमारे कितना निकट, कितना पास है!

२

एक दिन संध्याके समय बैजनाथके ऐतिहासिक मन्दिरका पुजारी अपनी पूजा समाप्त कर चुका था कि इतनेमें द्वारपर एक मोटार-लारी आकर रुकी और उसमेंसे दो स्त्रियाँ उतरकर मन्दिरमें दाख़िल हुईं। पुजारीने पूछा—माई, कहाँसे आई हो ?

बड़ी स्त्रीने जो दूसरीकी मा मालूम होती थी, अपनी गठरी ज़मीन-पर रखते हुए जवाब दिया—महाराज बड़ी दूरसे।

पुजारी—तुम्हारे साथ कोई मर्द नहीं है क्या ?

स्त्री—मर्द भगवानने अपने पास बुला लिए। अब हम अकेली हैं। अकेली ही आ गई।

यह कहकर स्त्रीने दुःख और सन्तापकी गहरी साँस ली और सिर झुका लिया, और उसकी आँखमें पानी आ गया।

पुजारी—यह लड़की कौन है ?

स्त्री—मेरी बेटी है महाराज !

पुजारी—तीर्थ-यात्रा करने निकली हो ?

स्त्री—हाँ महाराज, सोचा, आदमीका क्या भरोसा है। कौन जाने किस समय यमराज बुला भेजें। देवताओंके दर्शन तो कर लें।

पुजारी—माई, सच है। पर आज़कल तो दुनिया अन्धी हो गई है, परलोककी किसीको चिन्ता ही नहीं। तुमपर परमेश्वरकी कृपा हो गई, जो मनमें यह संकल्प पैदा हुआ। तुम धन्य हो। परमेश्वर तुम्हारा भला करे।

स्त्रीने इसका कोई जवाब न दिया। बातचीतका प्रसंग बदलकर बोली—महाराज, कोई कमरा मिल जाए तो रातको पड़ रहें।

पुजारी—बरांडेमें लेट रहो।

स्त्री—कोई भय तो नहीं है ?

पुजारी—देवताके घरमें भय काहेका ? निश्चिन्त होकर सो रहो। पुजारीके चले जानेपर दोनों स्त्रियाँ कुछ देर वहीं बैठ रहीं। इसके बाद उठकर बरांडेमें चली गईं और कपड़ा बिछाकर लेट रहीं।

दूसरे दिन पुजारी आया तो वहाँ केवल लड़की थी, मा न थी। पुजारी चौंक पड़ा। अँधेरेमें बिजली चमक गई। उसने सोचा, मा अपनी बेटीको इस तरह नहीं छोड़ जाती। वह उसे इतनी प्यारी होती है जितनी अपनी जान बल्कि उससे भी ज्यादा। मा प्रेम है और प्रेम संकटके समय साथ नहीं छोड़ता। इसने ज़रूर कोई कुकर्म किया होगा। ज़रूर कोई महापाप किया होगा, जिसे माका हृदय भी क्षमा न कर सका। ऐसी ही दशामें जननीका हृदय पत्थर बन सकता है, वर्ना नहीं। लड़की रो रही थी, और उसका हृदय-वेधक रुदन सुनकर पहाड़के बेजान पत्थरोंमें भी सूराख हुए जाते थे। वह सोचती थी, अब क्या करूँगी ? इस परदेसमें मेरा कौन है ? मुझे यहाँ किसका सहारा है ? गरीब चारों तरफ़ देखती थी। सब बेगाना थे, अपना कोई भी न था। किसीमें इतनी भी दया-उदारता न थी कि आगे बढ़कर उसे तसल्ली ही दे। उनके पास इस अभागिनीके लिए सहानुभूतिके दो शब्द भी न थे।

इतनेमें सदासुख आते दिखाई दिए। लोगोंने रास्ता छोड़ दिया। वह आकर खड़े हो गए और लड़कीकी तरफ़ देखकर बोले—क्यों इसे क्या हुआ है ? और यह क्यों रोती है ?

पुजारीने सदासुखकी तरफ़ अर्थ-पूर्ण दृष्टिसे देखा और कहा—इसकी मा इसे यहाँ छोड़कर चली गई है। अब बेचारी रो रही है कि क्या करे और किधर जाए ! संकटमें है।

सदासुखकी आँखें सजल हो गईं, ठंडी आह भरकर बोले—वह मा न होगी, डायन होगी। मा होती तो जवान लड़कीको यों न छोड़ जाती। साथ जीती साथ मरती।

एक आदमीने धीरेसे कहा—मगर महात्मा, शायद यह बेटी ही बेटी न हो। माका कलेजा ऐसे ही पत्थर नहीं बन जाता। ज़रूर कोई बात होगी, जिसे न हम जानते हैं, न आप।

पहाड़के लोग सीधे-साधे होते हैं, मगर आचार-अनाचारकी बातोंको वह भी खूब समझते हैं। इस बातका अर्थ सब समझ गए और एक दूसरेकी तरफ़ देखने लगे। आँखोंसे पूछते थे, यह कलंक कहाँसे आ गया? छोटा-सा गाँव है, यहाँ यह पाप एक दिन भी न छिपेगा। मगर सदासुखका यह ख़्याल न था। वे सोचते थे, यह कहते क्या हैं? अब किसीसे अगर एक बार भूल हो जाय, तो क्या उसे सुधारका अवसर ही न देना चाहिए? यह भी हो सकता है, भूल इसकी न हो, किसी दूसरेहीकी हो। और फिर यह लोग आप कहाँके देवता हैं। हम दूसरोंके दोष बहुत जल्दी देख लेते हैं, अपनी तरफ़ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। सदासुखने उन सबकी तरफ़ देखा, और कहा—भाइयो, यह समय ऐसी बातोंका नहीं। जलते हुए घरकी आग बुझा नहीं सकते, तो कमसे कम उसपर तेल भी तो न छिड़को। बल्कि मैं तो कहता हूँ, यह आग बुझाओ। यह दुखिया है, इसकी सहायता करो, इसे सहारा दो, इसका हाथ थामो। बोलो, कौन आगे बढ़ेगा? और कौन इसकी मदद करेगा? कौन इसे अपने घरमें जगह देगा?

लोग एक दूसरेका मुँह ताकने लगे। वे हैरान थे कि सदासुखको हो क्या गया है, जो हमें एक दुराचारिणीको अपने घरमें रखनेको कहता है? यही शब्द अगर किसी दूसरेके मुँहसे निकलते तो वे पंजे झाड़कर उसके पीछे पड़ जाते। परन्तु ये सदासुख थे, जिनके सामने किसीको सिर उठानेकी भी हिम्मत न थी। सब चुपचाप खड़े थे। टुकर टुकर देखते थे, मगर बोलते न थे।

सदासुखने एक एक करके सबके चेहरोंकी तरफ़ देखा, कोई भी तैयार न था। तब उन्होंने बेबसीकी लम्बी आह खींची और कहा— चल बेटी, मेरा झोंपड़ा तेरे लिए खुला है। मुद्दत हुई मेरी भी एक बेटी थी। आज उसकी हड्डियाँ भी गंगा-जलमें घुल चुकी होंगी। मैं समझूँगा, मेरी वही बेटी फिर लौट आई है। चल।

रोती हुई लड़कीके आँसू थम गए। उसने आश्चर्यसे सदासुखकी तरफ़ देखा और सहम गई। वह समझ न सकी कि यह आदमी दैत्य है या देवता। शक्ल सूरत दैत्यकी-सी थी, आवाज़ देवताओंकी-सी। उसने रुँधे हुए कंठसे कहा—आप जाइए, मेरे डूबनेके लिए नालेका पानी बहुत है। डूब मरूँगी, छुटकारा हो जायगा।

सदासुखने फिर उसी तरह नरमीसे कहा—बेटी, डूबनेकी क्या ज़रूरत है! जबतक मैं जीता हूँ, तुझे ज़रा भी कष्ट न होगा। चलकर अपना घर सँभाल। आजसे तू मेरी बेटी है, मैं तेरा बाप हूँ।

प्रेम दिलको मोह लेता है। लड़कीके हृदयमें हलचल मच गई। यह आवाज़ पापकी आवाज़ न थी, न इसमें बनावट और दिखावेकी मिलावट थी। यह एक सत्यवक्ताके सच्चे भाव थे, जो दिलसे निकलते हैं, दिलमें जा बैठते हैं। लड़कीको अपना मरा हुआ बाप याद आ गया। वह भी इसी तरह बोलता था। उसकी आवाज़में भी यही माधुरी, यही कोमलता थी। वह इनकार न कर सकी।

थोड़ी देर बाद लोगोंने देखा, सदासुख एक गठड़ी उठाए अपने झोंपड़ेको जा रहे हैं, और उनके पीछे पीछे वह लड़की है।

३

इस लड़कीका नाम भगवती था। बहुत .ख़ूबसूरत न थी, मगर बदसूरत भी न थी। गोरा रंग था, बड़ी बड़ी आँखें, गोल चेहरा, आयु उन्नीस बीस वर्षके लगभग होगी। सदासुखके झोंपड़ेमें उसे कोई तकलीफ़ न हुई। मगर वह फिर भी सदा उदास रहती थी। वियोगकी उस आगको कौन बुझाता, जो उसके दिलमें जला करती थी। बैठे बैठे रोने लगती थी। सदासुख पूछते, तुझे क्या चिन्ता है? मगर भगवती अपनी बड़ी बड़ी आश्चर्यचकित आँखोंसे उनकी तरफ़ देखती थी और आह भरकर चुप हो रहती थी। सदासुख भी ज़ोर न देते थे।

इसी तरह दो महीने गुज़र गए, भगवतीके लड़का पैदा हुआ। अब सदासुखकी हर जगह निन्दा होने लगी। लोग कहते—देखा, बड़े महात्मा बने फिरते थे, सारी पोल खुल गई। कोई भला आदमी ऐसी स्त्रीका मुँह भी न देखता। आख़िर मा यों ही थोड़े छोड़ गई है। इन महात्माने यह भी न सोचा कि दुनिया क्या कहेगी? मगर सदासुखको इन बातोंकी बिलकुल परवा न थी। वे सिर्फ़ यह सोचते थे—यह अनाथ लड़की है, इसके मा-बाप नहीं हैं। इसके साथ किसीने बेवफ़ाई की है। इसके दिलको ठेस न पहुँचे। बैजनाथके लोग उनकी छायासे भी बिदकते थे। न कोई उनसे मिलने आता, न हँसकर बात करता। ऐसी घृणा कोई चोरों और डाकुओंसे भी न करता होगा। हाँ, आते जाते मुसाफ़िर अब भी वहीं ठहरते थे। उनकी आव-भगत अब भी उसी उत्साह, उसी श्रद्धा, उसी भक्तिसे होती थी। फ़र्क़ केवल यह था कि पहले यह काम सदासुख करते थे,

अब भगवती करती थी। सदासुख सारे सारे दिन लड़केको खिलाया करते थे। यहाँतक कि रातको भी अपने साथ सुलाते। उसको देखकर उनका मुँह चमकने लगता था। उसकी भोली-भाली शरारतोंपर उन्हें ज़रा भी गुस्सा न आता था। क्या मजाल जो उसकी कोई भी बात टल जाए। जो चाहता वही होता, जो माँगता वही लेता। भगवती कहती—आप इसे सिरपर चढ़ा रहे हैं, बड़ा होकर तंग करेगा। सदासुख जवाब देते—भई, मुझसे इसकी आँखमें आँसू नहीं देखे जाते। यह रोना-सा मुँह बनाता है, तो मेरे दिलमें न जाने क्या होने लगता है। तुम मानो या न मानो, मगर यह अपने मनमें ज़रूर कहता होगा, जब तुम छोटे थे, तुम भी इसी तरह करते थे। आज बड़े हो गए तो बच्चोंकी प्रकृति ही भूल गए। न, भई, मुझसे तो यह न होगा। आज हम इसका मन रखते हैं, कल यह हमारा मन रखेगा। भगवती कहती—बिगाड़ लीजिए, आपहीको तंग करेगा। सदासुख रामूको उठाकर गलेसे लगा लेते, और उसका मुँह चूमकर पूछते—क्यों बेटा, तू हमें तंग करेगा? रामू सिर हिलाकर कहता—हाँ कलूँदा। सदासुख खाना खाते, रामू उनकी गोदमें बैठा उनकी दाढ़ीसे खेलता। कभी कहता, बाबा कादगका जहाज बना दे। देर हो जाती तो कहता—बाबा बतान, हूती काता है. ताम नहीं तलता। (बाबा, शैतान रोटी खाता है, काम नहीं करता।) भगवती टेढ़ी आँखोंसे देखती, तो कहता—तू भी बतान। भगवती कहती—तू पाजी। रामू झट जवाब देता—हम लाजा, बाबा पादी, बाबा बतान, और यह कहते कहते सदासुखके पीछे जाकर छुप जाता और उनके कंधेसे छोटा-सा सिर निकाल कर कहता—अब कीते मालेदी, हम बाबादीके पास। (अब किसे मारेगी, हम बाबाजीके पास।)

सदासुखके लिए रामूकी यह बाल-लीलाएँ ऐसी मोहिनी थीं, जैसे यौवन-कालमें प्रेम और सौन्दर्यकी रस-भरी कहानियाँ भी न होंगी। वे इनमें खोएसे जाते थे। उनको अपना आप भूल जाता था। उनको इतना भी ख़याल न रहता था कि अब मैं बूढ़ा हूँ, कोई देखेगा तो

क्या कहेगा ! कभी रामूको पीठपर सवार कराकर घोड़ा बनते, कभी भालूकी भाँति नाचकर उसका जी बहलाते। कभी उसकी ज़िदसे अपने सिरपर काग़ज़की टोपी पहनते, कभी बिल्लीकी तरह म्याऊँ म्यायूँ करते। निष्काम प्रेमके यह अमृतमय दृश्य देख देखकर वियोगिनी भगवतीका मन नाचने लग जाता था। सोचती, अगर यह देवता न होता तो मेरा क्या बनता ? बच्चेको इस तरह आँखकी पुतली बनाकर कौन रखता ? कभी सोचती, इनको कुछ हो जाए तो मेरा कौन है ? मारी मारी फिरूँ, कोई सीधे मुँह बात भी न करे। इस ख़्यालके आते ही भगवतीको चारों तरफ़ अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगता था। इस ख़्याली भयसे भगवती रोने लगती। इसके बाद वह अपना सिर घुटनोंपर रख लेती और सच्चे दिलसे बुड्ढे सदासुखकी सलामतीके लिए परमात्मासे प्रार्थना करती।

४

इसी तरह छः वर्षका लम्बा समय गुज़र गया। मगर सदासुखके लिए यह छः साल न थे छः दिन थे, जो देखते देखते गुज़र गए। सोचते, अभी कलहीकी बात है, भगवती कुटियामें आई है। सदासुखको बुढ़ापेमें बेटीका प्रेम नहीं मिला था, उसकी उजड़ी हुई हृदय-वाटिकामें बहार लौट आई थी, उसकी आत्मारूपी सूखी नदीमें बाढ़ आ गई थी। हर समय खुश रहते थे।

एक दिन रामूने हठ की—हम. तो बन्दूक ही लेंगे। बाज़ारमें किसीके पास देख आया था, घर आकर सदासुखसे लड़ने लगा। सदासुखने लाख समझाया, मगर बचपनके पास वह कान कहाँ जो बुढ़ापेका उपदेश सुनें ! रामू रोता था और कहता था हम तो बन्दूक़

ही लेंगे, उठो चलकर लाओ, वरना हम खाना नहीं खाएँगे। कभी कहता—हम तुमसे बोलना ही बन्द कर देंगे। कभी कहता—हम रातको तुम्हारे साथ नहीं सोएँगे, कहानियाँ किसे सुनाओगे ? कभी कहता,—हम तुम्हारे बेटे नहीं बनेंगे, प्यार किससे करोगे ? क्या मज़ेसे कहते हैं—रामू हमारा राजा बेटा है। सदासुख और भगवती हँसीसे लोटे जाते थे और कहते थे, देखो तो क्या क्या धमकियाँ देता है; मानो राज ही छीन लेगा। इतनेमें रामू पीछेसे आकर सदासुखकी पीठपर गिर पड़ा और सिसक सिसककर रोने लगा। यह उसका अन्तिम शस्त्र था। अब सदासुखसे न रहा गया। बोले—बेटी, यह तो आँखें ख़राब कर लेगा, कहो तो काँगड़े चला जाऊँ। शामतक लौट आऊँगा। बालक है, दो रुपएकी बन्दूक़ पाकर नाचता फिरेगा।

भगवतीने सदासुखकी तरफ़ प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखकर कहा—बाबा, बच्चोंको इतना सिरपर न चढ़ाना चाहिए। अब ज़रा-सी बातके लिए इतनी दूर जाओगे, तकलीफ़ होगी।

सदासुख—लारीमें चला जाऊँगा। कौन छप्पन टके ख़र्च हो जाएँगे। बस, अब जाने ही दो।

भगवती—मगर इसकी ज़रूरत ही क्या है ?

सदासुख—रोता रहेगा, सारा दिन चुप न होगा।

भगवती—रोता रहेगा, तो रोता रहे। यह भी कोई बात है कि हम इसकी हरएक बात पूरी करें। आज बन्दूकके लिए रोता है, कल मोटरके लिए रोएगा, परसों जहाज़के लिए रोएगा।

सदासुख—यह रोता है तो मुझसे देखा नहीं जाता। बताओ क्या करूँ ?

भगवती—आपकी इन्हीं बातोंने तो इसको चौपट कर दिया है। पहले मुझसे डरता था, अब मुझसे भी नहीं डरता। कल कहता था—यह घर मेरा और मेरे बाबाका है, तुम्हारा नहीं है। अगर बहुत बोली तो बाहर निकाल दूँगा, फिर क्या करोगी ?

सदासुख—(हँसकर) अरे, मासे ऐसी बातें करता है तू ?

मगर रामू तो दूसरी बात सुनता ही न था। सदासुखके ऊपर गिरकर बोला—उठो भी, जाकर बन्दूक़ लाओ।

सदासुखको और शह मिल गई, धीरेसे बोले—बेटी, अब जाने ही दो, यह बन्दूक़ लिये बिना कभी न मानेगा।

यह कहते कहते सदासुख खड़े हो गए और सन्दूक़से कुछ रुपए लेकर काँगड़े चले गए। भगवती वहाँ उसी दशामें बैठी रही। वह सोचती थी, इन्हें मुझसे कितना स्नेह है। पिछले जन्ममें ज़रूर मेरे बाप रहे होंगे। बाप न होते, तो इतना नेह न होता।

सायंकाल सदासुख लौटे, तो बहुत खुश थे। वह केवल रामूके लिए बन्दूक़ ही न लाए थे, भगवतीके लिए धोती जोड़ा स्लीपर और एक लोई भी ख़रीद लाए थे। बाप शहर गया था, बेटीके लिए कुछ ख़रीदे बिना कैसे आ जाता ? यह चीज़ें मामूली थीं, मामूली दशामें इनकी क़ीमत भी मामूली थी, मगर इनको जिस स्नेह और चावसे सदासुखने ख़रीदा था वह इस स्वार्थ-पूर्ण, स्नेह-हीन, कपटी दुनियामें कहाँ है ? सोचते थे, रामू बन्दूक़ लेकर कैसा खुश होगा ! आँखें चमकने लगेंगी। होंठ मुस्कराने लगेंगे। आकर गलेसे लिपट जाएगा। इसीकी बातें करेगा। ताज्जुब नहीं, रातको भी साथ लेकर सोए। भगवतीको हाथ भी न लगाने देगा। फिर सोचते, भगवती अपनी चीज़ें देखकर कहेगी, बाबा, यह क्या ख़रीद लाए ? अब तुम बहुत फ़ज़ूलख़र्च होते जाते हो। परन्तु उसके दिलमें जो आनन्दमय अभिमान होगा, उसे संसारका सर्वश्रेष्ठ कवि भी बयान नहीं कर सकता। खुशीसे पागल हो जाएगी।

संध्याका समय था। रातका अन्धकार पहाड़ी सूनी सड़कों और बिखरे हुए झोंपड़ोंको अपनी गोदमें लेनेके लिए भागा चला आ रहा था, कि इतनेमें सदासुख अपने झोंपड़ेके सामने जा पहुँचे। उनको आशा

थी, भगवती और रामू दोनों दरवाज़ेपर खड़े मेरा रास्ता देख रहे होंगे। लेकिन वहाँ कोई भी न था। सदासुखका दिल धड़कने लगा। लपके हुए अन्दर चले गए। मगर वहाँ उन्होंने जो कुछ देखा, उसपर उन्हें विश्वास न हुआ

चारपाईपर कोई पुरुष लेटा था, और उसके पास ही पायँतीकी तरफ़ बैठी हुई भगवती उसकी तरफ़ प्रेमकी दृष्टिसे देख रही थी। सदासुखके पैर वहीं रुक गए। वे साँस रोककर वहीं खड़े हो गए। इतनेमें पुरुषने भगवतीका हाथ अपने हाथमें लेकर ठण्डी साँस भरी और कहा—यह सब कुछ ठीक है, परन्तु तुम्हें मेरा कहा अब करना ही होगा। नहीं, मैं नालेमें डूब मरूँगा।

भगवती बोली—ऐसी बातें क्यों करते हो? मैं तुमसे बाहर थोड़ी हूँ। जो कहोगे, वही करूँगी।

५

सदासुखकी आँखोंसे चिन्गारियाँ निकलने लगीं। उन्होंने, जो चीज़ें ख़रीदकर लाए थे, ज़मीनपर रख दीं, अपने हाथकी पहाड़ी लकड़ी अपने हाथमें और ज़ोरसे पकड़ ली। फिर एक पग आगे बढ़े और क्रोधसे बोले—तू कौन है यहाँ आनेवाला?

भगवतीने चौंककर मुँहपर कपड़ा खींच लिया। पुरुष उठकर ज़मीनपर खड़ा हो गया। मगर उसके चेहरेपर भय और चिन्ताके कोई चिह्न न थे। उसने श्रद्धासे दोनों हाथ बाँधे और सदासुखको प्रणाम करके जवाब दिया—मेरा नाम कैलासनाथ है।

सदासुख—कौन कैलासनाथ? तुम्हारा घर कहाँ है?

कैलासनाथ—ग़रीबख़ाना लखनऊमें है। (थोड़ी देर ठहरकर) आपकी बड़ी तारीफ़ सुनी थी, आज दर्शन भी हो गए। सचमुच आप आदमी नहीं, देवता हैं। ऐसे देवता दुनियामें कम हैं।

सदासुखने एक बार भगवतीकी तरफ़ देखा, बोले—मगर तुम मुझे ग़लत समझ रहे हो। मैं रुपया पैसा लुटाता हूँ, इज्ज़त नहीं लुटाता। मेरे लिए रुपया कुछ भी नहीं। इज्ज़त सब कुछ है।

कैलासनाथ चुपचाप खड़े रहे।

सदासुख—यह एक शरीफ बूढ़ेका झोंपड़ा है, किसी भड़वेका मकान नहीं। बोलो, तुम यहाँ कैसे आए? इस लड़कीको फुसलानेके लिए? अवसर ढूँढ़ रहे होगे? आज मैदान ख़ाली पाया, चले आए। मगर मैं बुरा आदमी हूँ। सिर तोड़ दूँगा तुम्हारा।

भगवती रोते रोते अन्दर चली गई।

कैलासनाथने सिर झुकाकर जवाब दिया—किस मुँहसे कहूँ, मैं वही पापी हूँ, जिसके कारण यह अबला इस दुर्दशाको पहुँची है। मगर मेरा इसमें ज़रा भी दोष नहीं। मैंने माता पितासे बहुत कुछ कहा, पर उन्होंने एक न सुनी। अब उनका शरीरान्त हो गया है, तो पता लगाकर हाज़िर हो गया हूँ। आप यह सुनकर खुश होंगे कि मैंने अबतक ब्याह नहीं किया। माता पिताने लाख कहा, परन्तु मैंने साफ़ जवाब दे दिया कि मेरा ब्याह हो चुका है। संस्कार न हुआ, तो क्या, दिल तो मिल चुके हैं। मैं इसे ही ब्याह समझता हूँ।

सदासुखने कुछ सोचकर पूछा—तुम मुझे चकमा तो नहीं दे रहे?

कैलासनाथ—भगवतीसे पूछ लीजिए।

सदासुखने भगवतीको बुलाकर पूछा—ये जो कुछ कहते हैं, वह ठीक है या झूठ?

भगवतीने सिर हिलाकर कहा—ठीक कहते हैं।

कैलासनाथ—अपने मुँहसे क्या कहूँ, मेरे पास खाने पीनेकी कमी नहीं, चाहूँ तो चार ब्याह कर लूँ। भगवानका दिया सब कुछ है, चार पाँच सौकी आमदनी है। फिर भी दौड़ा आया हूँ। आख़िर कुछ तो मुझे इसका ख़्याल होगा ही। वर्ना वहीं पड़ा रहता।

सदासुख—छह साल बाद तुम्हें आज इसकी सुध आई है। पहले कहाँ सोते थे तुम?

कैलास०—पिताजी कहते थे, तुमने उसका नाम भी लिया, तो घरसे निकाल दूँगा।

सदासुख—और पत्र लिखनेमें क्या रुकावट थी?

कैलास०—मुझे इनका पता ही मालूम न था।

सदासुखने लकड़ी हाथसे रख दी और ठण्डी साँस लेकर कहा—जानते हो, इस सतीने कितने कष्ट सहे हैं?

कैलास०—परमात्माने ज़िन्दा रखा, तो अब इन्हें गर्म हवा भी न लगेगी।

सदासुख—दिन रात रोती रहती थी।

कैलास०—यह तो चेहरा ही कह रहा है।

सदासुख—पहलेसे आधी भी नहीं रही। जिस दिन मैंने इसे पहले देखा था, उस दिन इसका रंग ही और था।

कैलास०—आप रंग रूपकी कहते हैं, मैं कहता हूँ, बच गई है यही बहुत है।

सदासुख—तो आप इसे लेने आए हैं? मगर आपकी बिरादरी इसे स्वीकार कर लेगी क्या? अगर किसीने एक कड़ा शब्द भी कह दिया तो इससे सहन न होगा। यह पहले सोच लो।

कैलास०—मैंने सबसे कह दिया है। घरके सब लोग तो मान भी

गए हैं। जो न मानेगा, मैं उससे सम्बन्ध ही न रखूँगा। मुझे पहले यह है बादमें कोई और है। आप ज़रा भी चिन्ता न करें।

सदासुख कुछ सोचने लगे। कैलासनाथ बोले—आप भी चलिए। वह कहती है बाबा न जाएँगे, तो मैं भी न जाऊँगी।

सदासुखकी आँखोंमें पानी आ गया। बोले—बेटा, इसकी बातें न सुनो, यह तो पगली है। तुम खुद सोचो, मेरा वहाँ जाना क्या ठीक है?

कैलास०—एक बार नहीं, हज़ार बार ठीक है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, वहाँ आपको ज़रा भी कष्ट न होगा।

इतनेमें रामू आ गया। उसके हाथमें कैलासनाथके लाए हुए खिलौने थे। रामू सदासुखको एक एक खिलौना दिखाता था और झूमता था, मानो कहता था, देखा, हमारे पास कैसी कैसी चीज़ें हैं! सदासुख कहता था, वाह भाई! यह खिलौने तो बहुत सुन्दर हैं। ऐसे खिलौने यहाँ किसीके पास भी न होंगे। कहाँसे आए हैं?

रामू—(मुँह फुलाकर) दिल्लीसे।

सदासुख—तभी ऐसे बढ़िया हैं।

रामू—(खुश होकर) हाँ, यह भालू भी दिल्लीसे आया है और यह पालकी भी दिल्लीसे आई है।

सदासुख—अच्छा बेटा, मुझे एक बात बता, तेरी यह पालकी किसके लिए है?

रामू—माके लिए।

सदा०—और यह भालू?

राम—(सोचकर)तुम्हारे लिए।

सब क़हक़हा मारकर हँस पड़े। सदासुखने कहा—भई, तेरे खिलौने बड़े अच्छे हैं। और क्यों न हों, दिल्लीसे आए हैं।

रामू—(एकाएक बाबाकी तरफ़ देखकर) बाबा, यह भालू दिल्लीसे आया है तो तुम कहाँसे आए हो ?

कैलासनाथ खिलखिलाकर हँस पड़े। सदासुखने जवाब दिया—हम काँगड़ेसे आए हैं। काँगड़ेका नाम सुनते ही रामूको अपनी बन्दूक याद आ गई। सदासुखकी गोदमें बैठकर बोला—हमारी बंदूक कहाँ है ? लाओ।

सदासुख—अब बन्दूक़ लेकर क्या करोगे ? रहने दो। अब तुम्हें भालू मिल गया है।

रामू—(सोचकर) हम बन्दूक़से इस भालूको मारेंगे। लाओ।

यह कहते कहते रामूने सहमी हुई आँखोंसे अपने पिताकी तरफ़ देखा, कि भालू इनका है, उसे मारनेसे यह नाराज़ तो न हो जाएँगे। मगर वहाँ क्रोध न था, वे मुस्करा रहे थे। रामू शेर हो गया। दूसरे क्षणमें उसने सदासुखसे बन्दूक़ ले ली, और भालूका शिकार खेलने लगा। कैलासनाथ अपने वीर पुत्रका तमाशा देखते थे और फूले न समाते थे। उनके हृदयमें पितृ-स्नेह चाँदनी रातके समुद्रकी तरह लहरें मारता था। मगर सदासुखके मनमें अमावसका अँधेरा छाया हुआ था। वे सोचते थे, क्या सचमुच ये चले जाएँगे ? यह प्यार, यह सादगी, यह बाल्यावस्थाके मनको मोह लेनेवाले दृश्य, सब स्वप्न हो जाएँगे ? रातको कोई बात करनेवाला भी न होगा। सूखा हुआ बाग़ पानी पाकर लह-लहा उठा था, क्या अब वह फिर उसी तरह सूख जायगा। खुश्क नदी वर्षाकी बाढ़ आ जानेसे ठाठें मारने लगी थी, क्या अब वह फिर उसी तरह .खुश्क हो जाएगी ? सदासुखकी आँखोंसे गरम पानीकी दो बूँदें टपक पड़ीं।

जब चार पाँच दिनके बाद उनके जानेका दिन आया, तो सदासुखके चेहरेपर ज़रा भी उदासी न थी। मगर भगवतीकी आँखें सूज गई थीं। वह सारी रात रोती रही थी। वह बारबार कहती थी—बाबा, मुझे न भेजो, वहाँ मेरा जी न लगेगा। यह झोंपड़ा मुझे राजमहलोंसे बढ़कर है;

किसी समय तो ऐसा मालूम होता है, जैसे यह तीर्थराज है। यहाँ आकर मैं दुनियाभरके दुःखोंसे छूट गई थी। ऐसी शान्ति, ऐसी निश्चिन्तता मुझे और कहीं भी न प्राप्त होगी। मोटरमें बैठते समय भी उसकी आँखोंसे आँसू बह रहे थे। उधर रामू रोता था, और कहता था—बाबा, तुम भी हमारे साथ चलो। कैलासनाथने कहा—आप चले आइए। हम आपको ज़रा भी तकलीफ़ न होने देंगे। क्या आपको हमपर विश्वास नहीं है?

सदासुख—विश्वास तो है। मगर मैंने भगवतीको बेटी कहा है। बेटीके घर कैसे चला जाऊँ? दुनिया जीने न देगी।

कैलास०—आप दुनियाकी परवा ही क्यों करें? बकने दें।

सदासुख—पर अपना दिल भी तो नहीं मानता।

कैलास०—देखिए, दोनों रो रहे हैं।

सदासुख—तुम समझा देना। आख़िर बेटीको अपने घर जाना ही पड़ता है। मुझे तो आज बड़ी खुशी है। परमात्मा करे, इसे कोई कष्ट न हो। बेटा, यह लड़की हीरा है। इसके दिलमें छल-कपट नहीं; न इसे बनावट आती है। मेरी तुमसे यही प्रार्थना है कि इसका दिल न दुखाना। और क्या कहूँ?

कैलासनाथने कहा—इस बातकी आप ज़रा भी चिन्ता न करें। और हाँ, चिट्ठी लिखते रहना।

सदासुख—और तुम गर्मियोंमें ज़रूर यहाँ चले आना। लखनऊमें ऐसी ठण्डी हवा कहाँ मिलेगी?

भगवतीने धोतीके आँचलसे मुँह पोंछकर कहा—ज़रूर आएँगे। आप न कहें, तब भी आएँगे।

सदासुख—तुम्हारा अपना घर है बेटी!

मोटर चला और देखते देखते दूर निकल गया। अब सदासुखका

दिल उनके वशमें न रहा। वहीं खड़े खड़े रोने लगे, यहाँतक कि मोटर पहाड़के ऊबड़-खाबड़ रास्तोंमें गुम हो गया। मगर उनके कानोंमें अभीतक रामूके रोनेकी आवाज़ आ रही थी। उस रात सदासुख बहुत उदास थे। दो साधु आ गए थे, सदासुखने उनको खाना बनाकर खिला दिया, आप भूखे ही लेट रहे। मगर आधी रात तक नींद न आई। सोए, तो झटपट किसीने जगा दिया। मालूम हुआ, नम्बरदारके मकानको डाकू लूट रहे हैं। सदासुख लाठी लेकर वहाँ जा पहुँचे। दस डाकू थे, जिनके सामने घरके लोग हाथ बाँधे खड़े थे। पड़ोसी अपने घरोंमें दबके बैठे थे। समझते थे, हम बोले, और इन्होंने गरदन उतार ली। मगर सदासुखको ज़रा भी भय न था, आते ही ललकार कर बोले—अगर प्राणोंका मोह है, तो चुपचाप चले जाओ, वरना एक एकसे समझूँगा। कमज़ोर देखकर चले आए हो, मगर जबतक यह बुड्ढा जीता है, किसकी मजाल है, जो इस गाँवमें किसीका बाल भी बाँका कर जाए।

डाकू अवाक् रह गए। यह कौन है, जो पराई आगमें कूदता है? ज़रूर कोई असाधारण आदमी होगा। साधारण आदमियोंमें ऐसा साहस कहाँ? डाकुओंके सरदारने आगे बढ़कर पूछा—तुम कौन हो?

सदासुखने लाठी भूमिपर टेककर उत्तर दिया—मैं सदासुख हूँ। इस नामने डाकुओंपर जादूका काम किया। सरदार बोला—हम आपसे नहीं लड़ सकते। आप हमें मार दें, तो भी हाथ न उठाएँ, गिरफ्तार कर लें, तो भी न बोलें। फिर अपने आदमियोंसे कहा—सब कुछ रख दो। एक पैसेकी भी चीज़ न लो। यह बैजनाथके देवता हैं, इनकी आज्ञा सिर माथेपर।

६

दूसरे दिन गाँवके सब लोगोंने आकर सदासुखके पाँव पकड़ लिए। नम्बरदारने कहा—हम आपसे वचन लेने आए हैं कि आप इस गाँवसे कभी न जाएँगे। एक दो और आदमी बोले—चले कैसे जाएँगे? हम राह रोक लेंगे, राहमें लेट जाएँगे, धरना देकर बैठ जाएँगे। आख़िर श्रद्धा भी कोई चीज़ है, उसे कुचल कर कैसे चले जाएँगे?

एक और आदमीने कहा—जब तक हीरेको कंकड़ समझते थे, तब तक इनकी परवा न थी। परन्तु अब आँखें खुल गई हैं, अब तो यह चरण कभी न छोड़ेंगे।

सदासुखका हृदय प्रेमका सोता था, यह बातें सुनकर उनकी आँखें सजल हो गईं, बोले—तुम मुझे वृथा ही शरमिंदा करते हो। मैं तो तुम ही जैसा साधारण आदमी हूँ। मुझमें असाधारण बात कोई भी नहीं। हाँ, सेवाका व्रत लिया है, उसे पूरा करूँगा। और कहीं नहीं यहीं सही। यहाँ भी वही भगवान् है, यहाँ भी उसीका प्रकाश है, उसीकी सृष्टि है। कहीं और जाकर क्या बना लूँगा?

अब सदासुख फिर वही सदासुख थे, जिन्हें बैजनाथके निवासी सिर आँखोंपर बिठाते थे। उनके दिलोंमें सदासुखकी वही इज्जत थी जो आजसे छः साल पहले थी। घृणा चार दिनकी बीमारीके समान आई, चली गई, कहते—इसमें इनका क्या दोष था? इनके पास कोई चला आए, ये उसीकी सेवा करेंगे। भला हो या बुरा, ये इसका ख़्याल ही नहीं करते। कष्टमें देखा, अपने पास रख लिया; उसका

आदमी आया, हँसकर साथ भेज दिया। कमलका फूल पानीमें रहता है, मगर भीगता नहीं है। धूप नालियोंमें भी जाती है, पर उनसे लिपटती नहीं है।

मगर सदासुख खुश न थे, न उनके दिलको वह पहली शान्ति प्राप्त थी। प्रायः खोएसे रहते थे। अब बाहर चले जाते हैं, तो कोई उनकी प्रतीक्षा नहीं करता; रातको घरसे निकलते हैं, तो कोई जल्दी आनेका आग्रह नहीं करता, न पास बैठकर कोई तोतली बातें करता है, न कोई लड़ता झगड़ता है, न शिकायतें करता है। सदासुखका जी क्यों कर लगता? झोंपड़ा उन्हें काटनेको दौड़ता था। कभी यही स्थान उनके लिए घर था, उस समय इसमें प्रेम, पवित्रता आर प्रकाश भरा हुआ था। अब इसमें कुछ भी न था। पहले झोंपड़ा घर बना था, अब घर डेरा बन गया। संसार ही बदल गया।

इधर लखनऊसे पत्र आते थे कि भगवती उदास रहती है। रामू भी पहलेके समान नहीं चहकता। हाँ, आपका पत्र आता है तो दोनोंके चेहरे खिल जाते हैं। सदासुख लिखते, मैं ज़रा भी उदास नहीं हूँ, न मुझे कोई चिन्ता है। भगवती लिखती—आपको खानेकी बहुत तक़लीफ़ होगी। सदासुख जवाब देते—ऐसा स्वाद आता है कि तुमसे क्या बयान करूँ। शायद तुम विश्वास न करोगी, मेरी भूख बढ़ गई है। भगवती पूछती, आपका स्वास्थ्य कैसा है? सदासुख उत्तर देते—बहुत अच्छा। पहले तुम्हारी चिन्तामें घुला जाता था; जबसे भगवानने तुम्हारी सुनी है, मैं मोटा होने लगा हूँ। कुछ दिन भगवतीके पत्र आते रहे, इसके बाद बन्द हो गए। सदासुखने कई पत्र लिखे। मगर किसीका भी जवाब न मिला। यहाँ तक कि रजिस्ट्री ख़त भी भेजे परन्तु उनका भी जवाब न मिला। सदासुख पहले झुँझलाए, फिर उदास हुए और इसके बाद बेपरवा हो गए। ख़याल आया, मैं भी कैसा मूर्ख हूँ, घरसे सेवा करने चला था, यहाँ प्रेमके जालमें फँस गया। वह विद्यार्थी कितना मूर्ख है, जो स्कूल जाते जाते राहमें किसी मदारीका तमाशा देखे, और वहीं रुक जाए।

अब फिर वही दिन थे, वही झोंपड़ा था, वही यात्री थे। वही सदासुख थे, वही उनका सेवा-व्रत था, वही निश्चिन्तताकी नींद थी। इसी तरह एक वर्ष बीत गया। फिर सर्दीके दिन आ गए; पहाड़ोंकी रौनक घटने लगी। इन दिनों सदासुखके झोंपड़ेमें यात्री कम आते थे। कभी कभी कोई भी न आता था। सदासुख दिन दिनभर बैठे रामायण और गीताका पाठ किया करते थे। सन्ध्या समय बैजनाथके श्रद्धालु लोग उनके पास चले आते और आगके आस पास बैठकर वेद-शास्त्रोंकी बातें सुनते। ज्ञान-ध्यानकी यह सभा, प्रेम-भक्तिकी यह अमृत-वर्षा कई कई घंटे जारी रहती थी और लोग अपने भाग्यपर फूले न समाते थे।

अचानक एक दिन सदासुखने कहा—हम कल लखनऊ जाएँगे।

लोग घबरा गए और हाथ बाँधकर खड़े हो गए। उनको शंका थी कि शायद यह फिर न आएँ; मगर सदासुखने कहा—हम एक सप्ताहके अन्दर अन्दर लौट आएँगे।

७

तीसरे दिन दोपहरको वे लखनऊमें थे। इस समय उनके दिलमें चावकी तरंगें और प्रेमकी उमंगें थीं। आज वे अपनी बेटीसे मिलेंगे। आज उनका रामू उनके गलेसे लिपटेगा। पूरा एक साल बीत गया। देखकर चौंक उठेगा। शायद एकाएक पहचान भी न सके। मगर जो खुशी भगवतीको होगी, उसका अनुभव कौन कर सकता है? कैलासनाथसे सीधे मुँह बात भी न करूँगा। ऐसा निर्मोही आदमी भी किस कामका जो खतका जवाब तक न दे। अचानक अमीनाबाद बाज़ारमें उन्होंने बहुतसे लड़कोंकी भीड़ देखी, जो किसीको घेरे खड़े थे, और उसे तंग कर रहे थे। दूसरे ही क्षणमें

मालूम हुआ बीचमें कोई पगली है, और आसपास लड़के हैं। लड़के छेड़ते थे, पगली गालियाँ देती थी। सदासुखने अच्छी तरह देखा, और चौंक पड़े। यह शोहदोंसे घिरी हुई फटे पुराने कपड़ोंवाली स्त्री भगवती थी, जिसे अपने शरीरकी भी सुध न थी, न देश-कालका ज्ञान था। हाय शोक, क्या देखने आए थे, क्या देखना पड़ा। सदासुखका सिर घूम गया। उनकी आँखोंमें बाज़ारकी सारी दूकानें हवामें तैरने लगीं। ज़मीन आसमान चक्कर खाने लगे।

उन्होंने इक्केवालेको किराया दिया और भगवतीकी तरफ़ बढ़े। इस समय उनका दिल टुकड़े टुकड़े हो रहा था। उनके पाँव काँप रहे थे। यह चार पगका फ़ासला काले कोसोंका सफ़र बन गया। उन्होंने डाँट डपट कर लड़कोंको परे हटाया और .खुद भगवतीके सामने जाकर खड़े हो गए। भगवतीने उनको पागलोंकी तरह देखा और इसके बाद क़हक़हा लगाकर हँस पड़ी।

सदासुखने रुँधे हुए कण्ठसे पुकारा—भगवती!

भगवतीने बिना किसी तरहका भाव प्रकट किये सदासुखकी तरफ देखा और कहा—अबे, क्या तू भी इन लौंडोंका साथी है?

सदासुख—नहीं भगवती, मैं बैजनाथसे आया हूँ। तू मुझे पहचानती है या नहीं?

भगवती चुपचाप सदासुखको देखती रही। इसके बाद सहसा बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर बोली—यह बूढ़ा पागल है। यह बूढ़ा पागल है।

लड़के हँसने लगे। एक बोला—लो बाबा, और दिखाओ सहानुभूति। तुम्हें भी पागल बना दिया।

दूसरा बोला—पगली है।

भगवतीने चौंककर कहा—मुझे पगली कौन कहता है? मैं जीभ काट लूँगी उसकी।

यह कहकर वह ज़मीनपर बड़े ज़ोर ज़ोरसे पाँव पटकती हुई एक

कोनेकी तरफ चली गई और वहाँ घुटनोंपर सिर रखकर बैठ गई। इसके बाद वहीं लेटकर धीरे धीरे गाने लगी—

मैं प्रेम-नगरकी रानी।
प्रेम-नगरका राजा मुझसे बोले मीठी बानी।
मैं प्रेम-नगरकी रानी।

यह हृदय-भेधक दृश्य देखकर सदासुखका दिल भर आया, और आँखें सजल हो गईं। एक दूकानदारके पास जाकर पूछा—यह स्त्री इस दशामें कबसे है?

दूकानदारने सदासुखको सिरसे पाँवतक देखा और कहा—अजी जनाब, एक अरसेसे। आप परदेसी हैं क्या?

सदासुख—जी हाँ। (थोड़ी देरके बाद) तो क्या कैलासनाथने इसे घरसे निकाल दिया?

दूकानदार—जनाब तो सब कुछ जानते हैं?

सदासुख—जी नहीं, बहुत कम जानता हूँ।

दूकानदार—क्या अर्ज़ करूँ, इस ग़रीबकी दुर्दशा देखकर रोना आता है। भले घरकी बेटी है। पहले माँने आत्महत्या की थी, अब आप पागल हो गई। एक लड़का था। मगर जनाब, लड़का क्या था, गुलाबका फूल था। वह भी मर गया।

सदासुखपर बिजली-सी गिर पड़ी, कई मिनट पत्थरकी तरह खड़े रहे, इसके बाद आँखोंसे आँसू बहने लगे। दूकानदारने पूछा—आपसे कुछ रिश्तेदारी है क्या?

सदासुख—(ठंडी आह भरकर) अब रिश्ता ही समझिए। मेरी मुँहबोली बेटी है।

यह कहकर उन्होंने फिर भगवतीकी तरफ़ देखा, और अपना सिर झुका लिया।

दूकानदारने चौंककर सदासुखकी तरफ़ देखा और कहा—जनाब बैजनाथसे तो नहीं आ रहे हैं?

सदासुख—वहींसे आ रहा हूँ।

दूकानदार—माफ़ कीजिएगा। कैसी हिमाक़त हुई जो जनाबको बैठनेको चौकी भी न दी। आइए, आरामसे बैठिए और मुझे अपना ख़ादिम और इस दूकानको अपनी दूकान समझिए।

सदासुख चौकीपर जा बैठे।

दूकानदार—कैलासनाथसे आपकी बे-हद तारीफ़ सुनी है। कहते थे, ऐसा आदमी मैंने दूसरा नहीं देखा।

सदासुख—(सुनी अनसुनी करके) आश्चर्य है कि मुझे पता भी न लगा, और यहाँ सब किस्सा ख़त्म भी हो गया।

दूकानदार—बिरादरीके सब लोग कैलासके विरुद्ध थे। एक मैं और एक और दो आदमी थे जो उसके साथ थे। बाक़ी सब विरुद्ध थे यहाँ तक कि उनके चचा साहब भी विरोधियोंमें थे। कैलासनाथ चार महीने डटे रहे, इसके बाद उनमें दम न रहा।

सदासुख—मैंने तो पहले ही कह दिया था कि तुम कमज़ोर हो, बिरादरीके सामने न ठहर सकोगे। उस समय कहते थे, बिरादरी मेरा क्या बिगाड़ लेगी? और सच भी है उनका क्या बिगड़ा, जीवन तो लड़कीका ख़राब हुआ। (भगवतीकी तरफ़ देखते हुए)—यह हाल कबसे है?

दूकानदार—कोई छः महीनेसे ग़रीब परवर, पहले जाने कहाँ चली गई थी। एकाएक एक दिन बज़ारमें आ निकली, और इस दशामें कि अपने तन-बदनकी सुध न थी। देखकर कलेजा फटता है जनाब, सारा

दिन इसी तरह बकती-झकती रहती है, और लौंडे तालियाँ बजाते हैं, छेड़ते हैं, तंग करते हैं।

सदासुख—और, कैलासनाथ तो ख़ूब मज़ेमें होंगे। इसे इस हालतमें देखकर उनको लाज तो न आती होगी।

दूकानदार—पहले तो कहते थे, यह औरत नहीं, देवी है। इसका-सा प्रेम, त्याग, स्वच्छ हृदय दुनियामें और कहीं न होगा। मगर अब उनकी राय बदल गई है। कहते हैं —आवारा है। बाल-कालही में ताक-झाँकका चस्का था, वर्ना अपने साथ दूसरोंको भी न ले डूबती। कोई इसका ज़िक्र भी कर दे, तो बुरा मानते हैं। अपनी आँखोंसे इसकी यह दशा देखते हैं, मुँह फेरकर चले जाते हैं। इतना भी नहीं करते, कि इस घरमें ले जाएँ।

सदासुखने लम्बी साँस छोड़कर कहा—आदमी इतना भी गिर सकता है, यह ख़्याल न था।

दूकानदार—आदमी! अजी मैं उसे आदमी नहीं समझता। दोष लड़कीका नहीं, उसी ज़ालिमका है। अब चले हैं धर्मात्मा बनने। एक दिन बज़ारमें मिल गए थे, मैंने वह खरी-खरी सुनाई कि ज़रासा मुँह निकल आया, ज़बान बंद हो गई। हवाईयाँ उड़ने लगीं।

सदासुख—अगर हिम्मत न थी तो बैजनाथसे क्यों लाया था? ग़रीब वहीं पड़ी रहती। वहाँ अगर कोई सुख न था, तो दुःख भी न था।

दूकानदार—जनाब, वहाँ तो वह स्वर्गमें थी। आपका नाम सुनकर उसकी आँखें चमकने लगती थीं। मैंने सुना है, आपको वह बापसे भी बढ़कर चाहती थी। और आपका चेहरा कहे देता है, आप हैं इसी क़ाबिल। बन्दापरवर, हम तो मुँह देखकर दिलका हाल बता दें।

सदासुख फिर रोने लगे।

दूकानदार—और, सच तो यह है कि जो आपने किया, उससे ज्यादा बाप भी न करता। सारा गाँव एक तरफ़ और आप अकेले

एक तरफ़ और फिर एक पराई लड़कीके लिए। यह मामूली बात नहीं। कैलासनाथ लोगोंके विरोधका मुक़ाबिला छः महीने भी न कर सके, आपने छः वर्ष किया। वह विषयकी प्यास थी, यह आत्माकी बेलाग मुहब्बत थी। वह आपकी बराबरी क्या करेगा, आपके जूतोंकी बराबरी भी नहीं कर सकता। कहाँ राम राम, कहाँ टीं टीं !

सदासुख—आपकी रायमें मुझे अब क्या करना चाहिए ? मेरा कैलासनाथसे मिलनेको तो जी नहीं चाहता। लाभ कुछ न होगा, उलटा दिल और भी खट्टा हो जाएगा। कहिए तो लड़कीको अपने साथ ले जाऊँ। और कुछ न होगा, आँखोंके सामने तो रहेगी।

दूकानदार—लाख रुपयेकी बात कही आपने, मगर पगली है।

सदासुख—शायद दवासे ठीक हो जाए। रोग भयानक है, परन्तु असाध्य नहीं। मैं कोशिश करूँगा।

दूकानदार—तो भगवानका नाम लेकर ले जाइए। यहाँ कौन बैठा है, जिसे इसकी चिन्ता हो। वहाँ आप तो होंगे, वहाँ जनाब, इसे ज़रा तकलीफ़ न होगी। और यहाँ......

सदासुख—अरे भाई, यहाँ तो लड़के चंगे भलेका सिर फेर दें। कभी पत्थर मारते हैं, कभी मुँह चिढ़ाते हैं, और वह ग़रीब खूनका घूँट पीकर रह जाती है। पागलपन और बढ़ता है।

दूकानदार—यह लौंडे पूरे शैतान हैं। बल्कि शैतानके भी बाबा। इनसे शैतान भी पनाह माँगता है।

सदासुख—तो यही निश्चय हुआ, शामको साथ ले जाऊँगा। कहीं चली तो न जाएगी ?

दूकानदार—जाएगी कहाँ, यहीं होगी।

मगर सन्ध्या-समय भगवती वहाँ न थी। सदासुखने सारा शहर छान डाला, सब बाज़ारोंमें तलाश किया; पर भगवती कहीं भी न थी। दूसरे

दिन गोमतीसे लाश निकली। सदासुखने सिर पीट लिया। मगर कैलासनाथकी आँखोंमें पानी न था। उस दिन उनके यहाँ मित्रोंका निमंत्रण था। चार बजेके लगभग उधर भगवतीकी लाश जल रही थी, इधर कैलासनाथ अपनी मित्र-मंडलीके साथ बैठे मुस्करा मुस्कराकर चाय पी रहे थे।

८

मगर परमेश्वरके यहाँ देर होती है; अंधेर नहीं होता। इस बातको अभी दो ही महीने गुज़रे होंगे कि कैलासनाथके भाग्यका पाँसा पलट गया। रुपया-पैसा, मकान-दूकान, कारबार, सब सट्टेकी भेंट हो गया। कल सब कुछ था, आज कुछ भी नहीं। वह शान, वह अमीरी, वह धन-दौलत सब जाता रहा। कैलासनाथ परमात्माकी यह लीला देखते थे, और मन मसोसकर रह जाते थे। वही लखनऊ था, जहाँ कभी ऐंठकर चलते थे। अब उनमें इतना भी साहस न था कि बाज़ारके बीचमेंसे निकल जाएँ। वही लखनऊके लोग थे, जो कभी उन्हें सिर आँखोंपर बिठाते थे, अब पहचानते भी नहीं। यहाँ तक कि उनके सम्बन्धी भी उनको देखकर मुँह फेर लेते हैं। वह डरते हैं, कि कहीं कुछ माँग ही न बैठे। ऐश्वर्यका साथ सभी देते हैं, बुरे दिनोंमें कोई पास भी नहीं फटकता। कैलासनाथ एक दिन गोमतीके किनारे जाकर बहुत देर तक रोते रहे। सोचते रहे, इस विशाल संसारमें मेरे लिए कोई आश्रय नहीं। परायोंकी इस दुनियामें उनका अपना कोई भी न था, जिससे वे सहायता माँगते। इस समय उनको अभागिनी भगवती याद आई। अगर आज वह जीती होती, तो क्या वह भी उनको इस तरह अकेला छोड़ देती? कभी नहीं। यह उसके लिए असम्भव था। वह ऐसा नहीं कर सकती थी। यह उसके स्वभावके विपरीत था। वह जब

मरी थी, उस दिन कैलासनाथकी आँखोंसे आँसूकी एक बूँद भी न गिरी थी, आज उसकी यादने उनको लहूके आँसू रुला दिया। आज उनको अपने आत्माकी गहराईमें उस अभावका अनुभव हुआ, जिसे संसारके सारे खज़ाने भी पूर्ण करनेमें असमर्थ हैं। दुर्भाग्यकी इस अँधेरी रातमें गोमतीके शून्य किनारे बैठकर रोते हुए कैलासनाथको बहुत दूर फ़ासलेपर आशाका दिया जलता हुआ नज़र आया। उनपर भावुकताकी मस्ती छा गई। वे उठकर खड़े हो गए और उस प्रकाशकी तरफ़ लपक कर चले।

कोई दो महीने बाद वे बैजनाथमें सदासुखकी झोंपड़ीके सामने खड़े थे।

रातका समय था। झोंपड़ीमें एक कुप्पी जल रही थी। अन्दर जाकर उनकी थकान, उदासी, निराशाका अन्त हो जाता, मगर उनमें अन्दर जानेका साहस न था। मुसाफ़िरने सैकड़ों कोसका सफ़र पैदल तय किया, और हिम्मत न हारी; मगर इस समय उसमें चार पग चलनेका भी बल न था। झोंपड़ीका दीपक जल रहा था, मगर आशाका दीपक न जाने कहाँ छिप गया था। वे आशाकी नींदमें यहाँ तक चले आए थे मगर यहाँ पहुँचकर उनकी नींद खुल गई और आशाका सुपना समाप्त हो गया। अब फिर वही अँधेरा था, वही घोर निराशा। कैलासनाथ सोचने लगे—मैं भी कैसा मूर्ख हूँ, जो बिना सोचे समझे यहाँ चला आया। इतना भी न सोचा कि सदासुखके सामने यह काला मुँह लेकर कैसे जा सकूँगा? वे लाख भले हों, मगर मुझे देखकर जरूर ही मुँह फेर लेंगे, सीधे मुँह बात भी न करेंगे। शायद धक्के देकर निकाल दें; कहें—मेरे यहाँ तुझ जैसे पाषाण-हृदय आदमीके लिए स्थान नहीं। हाय अफ़सोस, मैं यहाँ क्यों आया?

घरसे दूर आधी रातके भयानक अँधेरेमें कैलासनाथने चारों तरफ़ आँखें फाड़ फाड़कर देखा, मगर कोई आश्रयका स्थान दिखाई न दिया। सवा साल पहले भी वे यहाँ आए थे, मगर उस आनेमें और इस

आनेमें आकाश-पातालका अन्तर था। उस समय यहाँ उनके प्राण बसते थे; यहाँ भगवतीको देखकर उनका हृदय खिल उठा था। कदाचित् वे उसे लेकर यहाँ चले आते और दुनियाके कोलाहलसे दूर, बिरादरीके झगड़ोंसे बाहर एक शान्ति-कुटीर बना लेते, तो उनके पवित्र आनन्दमय जीवनको देवता भी लोभ-भरी दृष्टिसे देखते! मगर अब... उनकी सोनेकी लङ्का जल चुकी थी। उनको बोध हुआ, मगर कब? जब तीर कमानसे निकल चुका था, जब उनके वशमें कुछ न रह गया था। कैलासनाथका दिल बैठ गया। सहसा उनके पाँव काँपने लगे, और उनका शारीरिक बल जवाब देने लगा। उनको अपनी देह गिरती-सी मालूम हुई। वे लड़खड़ाते हुए दरवाज़ेकी तरफ़ बढ़े, मगर वहाँतक पहुँचने भी न पाए थे कि अचेत होकर गिर पड़े।

और उनके चारों तरफ़ आधी रातका अँधेरा था, पहाड़की सरदी थी, और परदेसकी बेगानगी थी।

जब उनको होश आया, तो उनके सामने सदासुख बैठे थे। कैलासनाथने उनकी तरफ़ देखा और हैरान रह गए। यह आदमी कितना शुद्धात्मा, कितना उदार हृदय, कितना शान्त स्वभाव है। कैलासनाथने देखा—उनकी आँखोंमें ज़रा भी रोष नहीं, मुँहपर ज़रा भी मैल नहीं। सदासुख उनकी तरफ़ प्यारसे देख रहे थे, और यह वह आदमी था, जिसने उनकी बेटीकी हत्या की थी। उफ़, किस दर्जेकी क्षमा है! मगर शायद इन्होंने मुझे पहचाना ही न हो। ज़रूर यही बात है। मेरी शक्ल सूरत कुछ ऐसी बदल गई कि मेरी मा देखे, तो वह भी न पहचान सके। इन्होंने तो मुझे केवल एक ही बार देखा है। कैलासनाथने आँखें बन्द कर लीं, और परिस्थितिपर विचार करने लगे। बहुत समय बाद खुशी आई थी, एक झलक दिखाकर फिर ग़ायब हो गई।

सदासुखने कैलासनाथके सिरपर हाथ फेरा, और कहा—अब तुम्हारा जी कैसा है?

अरे, यह तो वही प्यारकी आवाज़ है, वही मीठे शब्द हैं, मनको मोह लेनेवाला वही लहजा, ज़रा भी रुखाई नहीं, ज़रा भी क्रोध नहीं। कैलासनाथको पहले सन्देह था, अब विश्वास हो गया, कि ज़रूर नहीं पहचाना, वरना मेरे समान पापीके भाग्यमें ये शब्द कहाँ ? कैलासनाथ तिलमिलाकर उठ बैठे और पागलोंकी तरह बोले—आपने मुझे अभीतक नहीं पहचाना।

सदासुखने उन्हें कन्धोंसे पकड़कर चारपाईपर लिटा दिया और मुस्कराकर कहा—आरामसे लेटे रहो। मेरी आँखें ऐसी नहीं कि किसीको एक बार देखकर भूल जाएँ।

कैलासनाथका कलेजा धकधक करने लगा। बोले—महाराज, मैं कैलासनाथ हूँ।

सदासुख—मैंने देखते ही पहचान लिया था।

कैलासनाथ—फिर भी आपने मुझे उठाया, मेरी सेवा की, मुझे दवा दी। आपने मुझे बाहर क्यों न फेंक दिया ? पड़ा पड़ा मर जाता।

सदासुख—भगवानका नाम लो। जीवन ऐसी तुच्छ चीज़ नहीं।

कैलासनाथ—अब जीकर क्या करूँगा ? जब दिलमें कोई आशा नहीं, तो जीवन किस कामका ? अब तो भगवान् मौत दे दें तो जी जाऊँ।

सदासुख थोड़ी देरके लिए चुप हो गए, इसके बाद बोले—इतनी निराशा क्यों ?

कैलासनाथ—निराशा न हो, तो और क्या हो। अब मेरा दुनियामें कौन है ?

सदासुख—भगवान् तो हैं।

उत्तरमें कैलासनाथके मुँहसे एक भी शब्द न निकला। हाँ, आँखोंसे आँसू बहने लगे और इतना ही नहीं, मनस्तापके कारण उनकी सारी देहसे पसीना छूटने लगा।

रो रोकर उनको नींद आ गई। सदासुखने शान्तिकी साँस ली। एक आदमीने, जो उनके पास ही बैठा था, धीरेसे पूछा—यह भगवतीका पति तो नहीं?

सदासुख—वही है। तुमने खूब पहचाना।

उस आदमीने आश्चर्यसे सदासुखकी तरफ़ देखा और कहा—और आप इसकी सेवा कर रहे हैं! आपकी जगह मैं होता, तो इसे जूते मार कर बाहर निकाल देता। अन्धेर परमात्माका। ऐसा बदचलन—ऐसा ज़ालिम—ऐसा शैतान—

सदासुख—यह देखना मेरा काम नहीं। मेरा कर्त्तव्य सेवा करना है। जो मेरे द्वारपर आ गया, मैं उसका सेवक हूँ। चाहे वह कैसा भी बुरा क्यों न हो। हाँ, मेरे झोंपड़ेमें उसे पाप-कर्मकी आज्ञा न होगी।

उस आदमीने देखा कि वह किसी देवताके सामने खड़ा है। वह देवता इस पतित, गिरी हुई, पापमें फँसी हुई दुनियासे बहुत ऊँचा है। उसका आदर्श उज्ज्वल, पवित्र, अनुपम है। उसके दिलमें श्रद्धाके भाव लहरें मारने लगे, उसकी आँखोंमें पानी भर आया।

सदासुखका झोंपड़ा बैजनाथमें आज भी खड़ा है। उसके पास ही उनकी समाधि है। उनके एक श्रद्धालुने वहाँ सदाव्रत खुलवा दिया है। वहाँ ग़रीबोंको आज भी भोजन मिलता है। मगर जो बात सदासुखके जीवन-कालमें थी, वह अब कहाँ? उस समय इस झोंपड़ेकी शोभा ही कुछ और थी।

समाप्त

सुदर्शनकी और किताबें

कहानियाँ	पुष्पलता	...	...	२)
	सुदर्शन-सुधा	...	...	३)
	तीर्थ-यात्रा	...	...	३)
	सुप्रभात	...	...	२॥)
	नगीने	...	...	३)
	चार कहानियाँ	...	...	३॥)
	पनघट	...	...	३)
	सुदर्शन-सुमन	...	...	३)
नाटक	अंजना	...	...	२)
	भाग्य-चक्र	...	...	२)
	आनरेरी मजिस्ट्रेट	...	...	।।।)
	सिकंदर	...	...	२।।।)
बच्चोंकी किताबें	पारस	...	...	१)
	सात कहानियाँ	....	...	॥=)
	अंगूठीका मुक़दमा		...	१)
	बच्चोंके लिए हितोपदेश		...	१)
	राजकुमार सागर		...	॥।)
	फूलवती	...	...	१)
	रुस्तम सोहराब	...	...	१)
	खटपट लाल	...	...	१॥)
लेख	झरोखे	...	...	१॥)
	मनकी मौज	...	...	२)
गीत	झंकार	...	...	१)
	दिलके तार	...	...	१)
संकलन	हिन्दुस्तानी गद्य-पद्य संग्रह		...	१॥)
	मानसी	...	...	१॥)